Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमचन्द सृजन-पीठ की वार्षिकी

# संवाद-सृजन

अंक - ४ (२०११-१२)

प्रेमचन्द सृजन-पीठ, उज्जैन

(म.प्र. संस्कृति परिषद्, म.प्र. शासन, भोपाल)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

प्रेमचन्द सृजन पीठ द्वारा विश्वविद्यालयीन छात्रों के लिए आयोजित कहानी लेखन प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण शहीद भवन, भोपाल में सम्पन्न हुआ। मंचस्थ अतिथिगण - डॉ. श्रीराम तिवारी, श्री जगदीश तोमर, श्रीमती मृदुला सिन्हा, माननीय श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा (मन्त्री, संस्कृति, जनसम्पर्क, उच्च शिक्षा), डॉ. रामेश्वर मिश्र पंकज, डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल, डॉ. विनय राजाराम, पीछे खड़े हुए - पुरस्कृत कथा लेखक-लेखिकाएँ

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
Jamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# संवाद-सृजन

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

सम्पादक
जगदीश तोमर

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 4331
Dated 14.12.2023

प्रकाशक
प्रेमचन्द सृजन पीठ, म.प्र. संस्कृति परिषद्, म.प्र. शासन, भोपाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# संवाद-सृजन

सर्वाधिकार सुरक्षित

सम्पादक
जगदीश तोमर

मुखपृष्ठ : गोदान की भावभूमि
मुखपृष्ठ आकल्पन : बलवन्त सिंह भदौरिया

प्रकाशक
प्रेमचन्द सृजन पीठ, म.प्र. संस्कृति परिषद्, म.प्र. शासन, भोपाल
एफ-२, विक्रम विश्वविद्यालय परिसर
उज्जैन - ४५६ ०१०
सम्पर्क - ९४२५७-११७८४

मुद्रक
ग्राफिक्स पार्क
१६०, तीन बत्ती चौराहा
साँवेर रोड, उज्जैन
सम्पर्क - ९८२७०-७००७०

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# अनुक्रम


निदेशकीय १

- **वसीयत**

१. नमक का दरोगा - प्रेमचन्द ३

२. प्रेमचन्द की रचनाओं की दुनिया जीवंत दुनिया है - डॉ. रानू मुखर्जी ९

- **भारतीय कथा परम्परा**

१. संस्कृत कथा साहित्य - प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल १३

२. हिन्दी कहानी की परम्परा - डॉ. राजरानी शर्मा २३

३. हिन्दी कहानी का नया परिदृश्य - डॉ. अवधेशकुमार चन्सौलिया २९

४. तमिल का कथा साहित्य - डॉ. एन. लक्ष्मी अय्यर ३३

५. तेलुगु कहानी - प्रो. शेषारत्नम् ३९

६. ओड़िआ कहानी साहित्य की उपलब्धियाँ - डॉ. विजय कुमार महांति ४७

७. गुजराती कथा यात्रा - शिरीष पंचाल ५२

- **विशेष लेख**

१. कथा सम्प्रेषण की गर्हितता - श्रीधर पराडकर ५८

- **प्रेमचन्द**

१. 'कफ़न' कहानी : मृत्यु नहीं, जीवन की कहानी है - डॉ. कमलकिशोर गोयनका ६१

२. प्रेमचन्द के कथा-साहित्य में नारी चेतना - प्रो. एस. शेषारत्नम् ६९

३. प्रेमचन्द का सामाजिक विधान : सन्दर्भ : गोदान - क्रांति ७५

- **कहानियाँ**

१. उड़िया कहानी / कारगिल की गोद - पारमिता शतपथी ७९

२. पलायन - राम बरन शर्मा ८५

३. बगुला बैठा ध्यान में - डॉ. मीनाक्षी स्वामी ८९

४. मुक्ति - नियति सप्रे ९२

५. अंतिम निर्णय - श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी ९६

६. गुजराती कहानी / खून में धँसी कील - वन्दना शांतुइन्दु १००


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

७. जलसमाधि - पद्मा शर्मा १०७
८. प्रभात स्वप्न - अंजनी शर्मा ११३
९. भिखारी का अर्थशास्त्र - राजकिशोर बाजपेयी 'अभय' ११७
१०. शब्दान्तर - डॉ. भारती पुजारी ११९
११. संस्कार - डॉ. आशारानी १२०
१२. खुशियों के फूल - सुनीता पाठक १२२
१३. और अम्मा जीत गयीं - श्रीमती आशा पाण्डेय १२८
१४. तेलुगु कहानी / दो अंतर्लोक - जयन्ति पापाराव १३१
१५. असमी कहानी / सोने की बाँसुरी - विमल कुमार हाजरिका १३४
१६. किसान - प्रमोद भार्गव १४०
१७. एक बार फिर - कुन्दा जोगलेकर १४५
१८. डायनिंग टेबल सूनी है - डॉ. प्रतिभा त्रिवेदी १५०
१९. दाता - अशोक सिंहासने १५४
२०. मराठी कहानी / प्रतिष्ठा १५५
- दिलीप कन्हारकर (अनु. संजय जोशी)
२१. ऐसा भी होता है - भगवत् भट्ट १५९
२२. ओड़ा भर गोइंठा - शिवकुमार पाण्डेय १६०
२३. और अम्मा जीत गयीं - श्रीमती आशा पाण्डेय १६६
२४. कटहल - कमलाशंकर मिश्र १६९

● **समीक्षा**

१. वर्तमान ओड़िया कथा लेखन की पड़ताल : १७१
पारमिता शतपथी की कहानियों के बहाने
- विनय षडंगी राजाराम
२. जीवन का बहुरंगी दस्तावेज : अंतहीन यात्रा - डॉ. कामिनी १७६
३. भूभल : भारतीय संस्कृति की ओर ले जाता १८०
मीनाक्षी स्वामी का सशक्त उपन्यास - डॉ. सुरुचि मिश्रा

● **नवलेखन**

१. दर्द का रिश्ता - अनामिका 'त्रिवि' १८४
२. जिम्मेदारी - कु. शीतल राठौर १८७
३. तलाश - शीतल रघुवंशी १९१
४. बूढ़े वक्षृ - प्रेरणा परिहार १९४
५. फैसला - रेहाना बेगम १९८
६. अन्तर का दर्द - शिखा पंवार २०१

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

# निदेशकीय

प्रेमचन्द सृजन पीठ का 'संवाद-सृजन - ४' उसके पाठकवर्ग को सम्भवत: उसके पिछले अंकों की अपेक्षा कहीं अधिक वैविध्यपूर्ण, विस्तृत और विशिष्ट प्रतीत हो। उसके पृष्ठों में जहाँ प्रेमचन्द और उनकी विरासत की झलक है, वहीं कुछेक प्रदेशों की कथा-यात्राओं के विवरण तथा बहुवर्णी कहानियाँ भी समाहित हैं। उनमें कहानी के क्षेत्र में चल रही साम्प्रतिक चहल-पहल सहज प्रकट है।

संवाद-सृजन आरम्भ से ही युवा लेखक-लेखिकाओं का सृजन-मंच रहा है। और इसलिये इस अंक में भी नये रचनाकारों का योगदान सर्वाधिक है। इनमें भी अधिसंख्य रचनाकार वे हैं जो प्रेमचन्द सृजन पीठ द्वारा, उज्जैन, जबलपुर, सागर, ग्वालियर, मुरैना आदि स्थानों पर आयोजित कथा गोष्ठियों में सहभागी हुए हैं। उनके साथ ही, ऐसे कथाकारों की कहानियाँ भी अंक में सम्मिलित हैं जिन्होंने साहित्य संसार में पर्याप्त प्रतिष्ठा अर्जित कर ली है। और वह इसलिये कि जिससे हमारे नवोन्मेषी लेखक-लेखिकाएँ कहानी की वर्तमान वस्तु और रूप में आ रहे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नित नवीन परिवर्तनों एवं प्रयोगों से अवगत रह सकें।

संवाद सृजन के नये रचनाकारों का वैशिष्ट्य उनकी संवेदनशीलता है। वही उनकी रचनात्मकता का प्रमुख प्रेरक तत्व है। वे मनुष्य की अभावग्रस्तता, असहायता अथवा उपेक्षा से विचलित, उद्वेलित अथवा करुणाद्र होकर लेखन की ओर प्रवृत्त हुए प्रतीत होते हैं। शिल्प उनके लिए बहुत गौण रहा है। परन्तु आशा की जा सकती है कि उनका संवेदन उन्हें देर-सबेर उपयुक्त शिल्प से सुसज्ज करने में सहायक होगा।

इन कथाकारों का एक वैशिष्ट्य और है। और वह है कि वे न तो नारी विमर्श के पैरोकार हैं, न उत्तर-आधुनिकतावादी हैं, न समाज निरपेक्ष आत्मकेन्द्रित जीवन शैली के ध्वजवाहक हैं और न ही स्वच्छन्द भोगवादी मानसिता से उद्भ्रान्त हैं। वे शुद्ध स्वदेशी, नैतिक मूल्यों के हामी, सृजनधर्मी हैं। और ऐसे सृजनमना लेखक-लेखिकाओं के उन्नयन में ही प्रेमचन्द सृजन पीठ की सार्थकता सन्निहित है।

प्रेमचन्द सृजन पीठ की गतिविधियों के संचालन एवं विस्तारण में प्रदेश के संस्कृति विभाग ने सदैव उदारता प्रदर्शित की है। जनसम्पर्क विभाग ने विज्ञापन प्रदान कर संवाद-सृजन का प्रकाशन सम्भव बनाया है तथा अनेकानेक साहित्य मनीषियों एवं रचनाकारों ने बहुमूल्य सहयोग दे कर हमें शक्ति एवं स्फूर्ति प्रदान की है, एतदर्थ हम इन सबके प्रति विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

कुछ और बेहतर कर पाने की आशा-आकांक्षा के साथ -

२५ फरवरी २०१२

जगदीश तोमर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



प्रेमचन्द

# नमक का दारोगा

जब नमक का नया विभाग बना और ईश्वरप्रदत्त वस्तु के व्यवहार करने का निषेध हो गया तो लोग चोरी छिपे इसका व्यापार करने लगे। अनेक प्रकार के छल-प्रपंचों का सूत्रपात हुआ, कोई घूस से काम निकालता था, कोई चालाकी से। अधिकारियों के पौ-बारह थे। पटवारीगिरी का सर्वसम्मानित पद छोड़-छोड़ कर लोग विभाग की बरकंदाजी करते थे। इसके दारोगा पद के लिए तो वकीलों का भी जी ललचाता था। यह वह समय था जब अंग्रेजी शिक्षा और ईसाई मत को लोग एक ही वस्तु समझते थे। फारसी का प्राबल्य था। प्रेम की कथाएँ और श्रृंगार रस के काव्य पढ़ कर फारसीदाँ लोग सर्वोच्च पदों पर नियुक्त हो जाया करते थे। मुंशी वंशीधर भी जुलेखा की विरह कथा समाप्त करके मजनू और फरहाद के प्रेम-वृत्तान्त को नल और नील की लड़ाई और अमेरिका के आविष्कार से अधिक महत्त्व की बातें समझते हुए रोजगार की खोज में निकले। उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे। समझाने लगे, बेटा! घर की दुर्दशा देख रहे हो। ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। लड़कियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं। मैं कगारे पर का वृक्ष हो रहा हूँ, न मालूम कब गिर पड़ूँ। अब


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हीं मालिक मुख्तार हो। नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान् हो, तुम्हें क्या समझाऊँ। इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है। मनुष्य को देखो, उसकी आवश्यकता को देखो और अवसर देखो, उसके उपरान्त जो उचित समझो, करो। गरजन वाले आदमी के साथ कठोरता करने में लाभ ही लाभ है। लेकिन बेगरज को दाँव पर पाना जरा कठिन है। इन बातों को निगाह में बाँध लो। यह मेरी जन्म भर की कमाई है।

इस उपदेश के बाद पिताजी ने आशीर्वाद दिया। वंशीधर आज्ञाकारी पुत्र थे। ये बातें ध्यान से सुनीं और तब घर से चल खड़े हुए। इस विस्त त संसार में उनके लिए धैर्य अपना मित्र, बुद्धि अपनी पथप्रदर्शक और आत्मावलम्बन ही अपना सहायक था। लेकिन अच्छे शकुन से चले थे, जाते ही जाते नमक विभाग के दारोगा पद पर प्रतिष्ठित हो गये। वेतन अच्छा और ऊपरी आय का तो ठिकाना ही न था। वृद्ध मुंशीजी को सुख-संवाद मिला तो फूले न समाये। महाजन कुछ नरम पड़े, कलवार की आशालता लह-लहाई। पड़ौसियों से हृदय में शूल उठने लगे।

२

जाड़े के दिन थे और रात का समय। नमक के सिपाही, चौकीदार नशे में मस्त थे। मुंशी वंशीधर को यहाँ आये अभी छह महीनों से अधिक न हुए थे, लेकिन इस थोड़े समय में ही उन्होंने अपनी कार्यकुशलता और उत्तम आचार से अफसरों को मोहित कर लिया था। अफसर लोग उन पर बहुत विश्वास करने लगे। नमक के दफ्तर से एक मील पूर्व की ओर जमुना बहती थी, उस पर से नावों का एक पुल बना हुआ था। दारोगाजी किवाड़ बन्द किये मीठी नींद से सो रहे थे। अचानक आँख खुली तो नदी के प्रवाह की जगह गाड़ियों की गड़गड़ाहट तथा मल्लाहों का कोलाहल सुनाई दिया। उठ बैठे। इतनी रात गये गाड़ियाँ क्यूँ नदी के पार जाती हैं? अवश्य कुछ न कुछ गोलमाल है। तर्क ने भ्रम को पुष्ट किया। वर्दी पहनी, तमंचा जेब में रखा और बात की बात में घोड़ा बढ़ाये हुए पुल पर आ पहुँचे। गाड़ियों की एक लम्बी कतार पुल के पार जाती देखी। डाँट कर पूछा, किसकी गाड़ियाँ हैं?

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा। आदमियों में कुछ कानाफूसी हुई तब आगे वाले ने कहा - "पण्डित अलोपीदीन की।"

"कौन पण्डित अलोपीदीन!"

"दातागंज के।"

मुंशी वंशीधर चौंके। पण्डित अलोपीदीन इस इलाके के सबसे प्रतिष्ठित जमींदार थे। लाखों रुपयों का लेन-देन करते थे, इधर छोटे से बड़े कौन ऐसे थे जो उनके ऋणी न हों। व्यापार भी बड़ा लम्बा-चौड़ा था। बड़े चलते-पुर्जे आदमी थे। अंग्रेज अफसर उनके इलाके में शिकार खेलने आते और उनके मेहमान होते। बारहों मास सदाव्रत चलता था।

मुंशीजी ने पूछा, गाड़ियाँ कहाँ जाएँगी? उत्तर मिला, कानपुर। लेकिन इस प्रश्न पर कि इनमें क्या है, सन्नाटा छा गया। दारोगा साहब का सन्देह और भी बढ़ा। कुछ देर तक उत्तर की बाट देखकर वह जोर से बोले, क्या तुम सब गूँगे हो गये हो? हम पूछते हैं, उनमें क्या लदा है?

जब इस बार भी कोई उत्तर न मिला तो उन्होंने घोड़े को एक गाड़ी से मिलाकर बोरे को टटोला। भ्रम दूर हो गया। यह नमक के ढेले थे।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

३

पण्डित अलोपीदीन अपने सजीले रथ पर सवार, कुछ सोते कुछ जागते चले आते थे। अचानक कई गाड़ीवानों ने घबराये हुए आकर जगाया और बोले - महाराज! दारोगा ने गाड़ियाँ रोक दी हैं और घाट पर खड़े आपको बुलाते हैं। कहते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही था। न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हें वह जैसे चाहती है, नचाती है। लेटे ही लेटे गर्व से बोले, चलो हम आते हैं। यह कहकर पण्डितजी ने बड़ी निश्चिन्तता से पान के बीड़े लगाकर खाये। फिर लिहाफ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले, बाबूजी आशीर्वाद...! कहिए, हमसे ऐसा कौन-सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गयीं। हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा दृष्टि रहनी चाहिए।

वंशीधर रुखाई से बोले, सरकारी हुक्म!

पण्डित अलोपीदीन ने हँस कर कहा, हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और न सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है। हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जायें और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावें! मैं तो आपकी सेवा में स्वयं ही आ रहा था। वंशीधर पर ऐश्वर्य की मोहिनी वंशी का कुछ प्रभाव न पड़ा। ईमानदारी की नयी उमंग थी। कड़ककर बोले, हम उन नमकहरामों में नहीं हैं जो कौड़ियों पर अपना ईमान बेचते हैं। आप इस समय हिरासत में हैं। आपको कायदे के अनुसार चलना होगा। बस, मुझे अधिक बातों की फुर्सत नहीं है। जमादार बदलूसिंह! तुम इन्हें हिरासत में ले चलो, मैं हुक्म देता हूँ।

पण्डित अलोपीदीन स्तम्भित हो गये। गाड़ीवानों में हलचल मच गयी। पण्डितजी के जीवन में कदाचित् यह पहला ही अवसर था कि पण्डितजी को ऐसी कठोर बातें सुननी पड़ीं। बदलूसिंह आगे बढ़ा, किन्तु रौब के मारे यह साहस न हुआ कि उनका हाथ पकड़ सके। पण्डितजी ने धर्म को धन का ऐसा निरादर करते कभी न देखा था। विचार किया कि यह अभी उद्दण्ड लड़का है। माया-मोह के जाल में अभी नहीं पड़ा। अल्हड़ है, झिझकता है। बहुत दीन-भाव से बोले, बाबू साहब, ऐसा न कीजिये, हम मिट जायेंगे। इज्जत धूल में मिल जायेगी हमारा अपमान करने से आपके हाथ क्या आयेगा। हम किसी तरह आपसे बाहर थोड़े ही हैं!

वंशीधर ने कठोर स्वर में कहा, हम ऐसी बातें नहीं सुनना चाहते।

अलोपीदीन ने जिस सहारे को चट्टान समझ रखा था, वह पैरों के नीचे खिसकता हुआ मालूम हुआ। स्वाभिमान और धन ऐश्वर्य को कड़ी चोट लगी। किन्तु अभी तक धन की सांख्यिक शक्ति का पूरा भरोसा था। अपने मुख्तार से बोले, लालाजी, एक हजार के नोट बाबू साहब की भेंट करो, आप इस समय भूखे सिंह हो रहे हैं।

वंशीधर ने गरम होकर कहा, एक हजार नहीं, एक लाख भी मुझे सच्चे मार्ग से नहीं हटा सकते। धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव-दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुँझलाया। अब दोनों शक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल-उछल कर आक्रमण करने शुरु किये। एक से पाँच - पाँच से दस, दस से पन्द्रह और पन्द्रह से बीस हजार तक नौबत पहुँची, किन्तु धर्म अलौकिक वीरता के साथ इस बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भाँति अटल, अविचलित खड़ा था।

अलोपीदीन निराश होकर बोले, अब इससे अधिक मेरा साहस नहीं। आगे आपको अधिकार है।

वंशीधर ने अपने जमादार को ललकारा। बदलूसिंह मन में दारोगाजी को गालियाँ देते हुआ


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पण्डित अलोपीदीन की ओर बढ़ा। पण्डितजी घबड़ाकर दो, तीन कदम पीछे हट गये। अत्यन्त दीनता से बोले बाबू साहब, ईश्वर के लिए मुझ पर दया कीजिये, मैं पच्चीस हजार पर निपटारा करने को तैयार हूँ।

"असंभव बात है।"

"तीस हजार पर।"

"किसी तरह भी संभव नहीं।"

"क्या चालीस हजार पर भी नहीं ?"

"चालीस हजार नहीं, चालीस लाख पर भी असंभव है।"

"बदलूसिंह, इस आदमी को अभी हिरासत में ले लो। अब मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता।"

धर्म ने धन को पैरों तले कुचल डाला। अलोपीदीन ने एक हष्ट-पुष्ट मनुष्य को हथकड़ियाँ लिये हुए अपनी तरफ आते देखा। चारों ओर निराश और कातर दृष्टि से देखने लगे। इसके बाद यकायक मूर्छित होकर गिर पड़े।

४

दुनिया सोती थी, पर दुनिया की जीभ जागती थी। सबेरे देखिये तो बालक-वृद्ध सबके मुंह से यही बात सुनाई देती थी। जिसे देखिये वही पण्डितजी के इस व्यवहार पर टीका-टिप्पणी कर रहा था, निन्दा की बौछारें हो रहीं थीं, मानों संसार से अब पापी का पाप कट गया। पानी को दूध के नाम से बेचने वाला ग्वाला, कल्पित रोजनामचे भरने वाला अधिकारी वर्ग, रेल में बिना टिकट सफर करने वाले बाबू लोग, जाली दस्तावेज बनाने वाले सेठ और साहूकार, यह सबके सब देवताओं की भाँति गर्दनें चला रहे थे। जब दूसरे दिन पण्डित अभियुक्त होकर कांस्टेबलों के साथ, हाथों में हथकडियाँ, हृदय में ग्लानि और क्षोभ भरे, लज्जा से गर्दन झुकाये अदालत की तरफ चले तो सारे शहर में हलचल मच गई। मेले में कदाचित् आँखें इतनी व्यग्र न होती होंगी। भीड़ के मारे छत और दीवार में कोई भेद न रहा।

किन्तु अदालत में पहुँचने की देर थी। पण्डित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे। अधिकारी वर्ग उनके भक्त,अगले सेवक,वकील मुख्तार उनके आज्ञापालक और अरदली, चपरासी और चौकीदार तो उनके बिना मोल के गुलाम थे। उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े। सभी लोग विस्मित हो रहे थे। इसलिये नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिये कि वह कानून के पंजे में कैसे आये। ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करने वाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आये। प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था। बड़ी तत्परता से इस आक्रमण को रोकने के निमित्त वकीलों की एक सेना तैयार की गई। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र। गवाह थे किन्तु लोभ से डावांडोल।

यहाँ तक कि मुंशी जी को न्याय भी अपनी ओर से कुछ खिंचा हुआ दिख पड़ता था। वह न्याय का दरबार था। परन्तु उसके कर्मचारियों पर पक्षपात का नशा छाया हुआ था। किन्तु पक्षपात और न्याय का क्या मेल? जहाँ पक्षपात हो, वहाँ न्याय की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। मुकदमा शीघ्र ही समाप्त हो गया। डिप्टी मजिस्ट्रेट ने अपनी तजवीज में लिखा, पण्डित आलोपीदीन के विरुद्ध दिये गये प्रमाण निर्मूल और भ्रमात्मक हैं। वह एक बड़े भारी आदमी हैं। यह बात कल्पना के बाहर है कि उन्होंने थोड़े लाभ के लिए ऐसा दुस्साहस किया हो। यद्यपि नमक के दारोगा मुंशी वंशीधर का अधिक दोष नहीं है, लेकिन यह बड़े खेद की बात है कि उसकी उद्दण्डता और विचारहीनता से एक भले मानस को कष्ट झेलना पड़ा। हम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रसन्न हैं कि वह अपने काम से सजग और सचेत रहता है, किन्तु नमक के मुकदमे की बढ़ी हुई नमक हलाली ने उसके विवेक और बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया। भविष्य में उसे होशियार रहना चाहिये।

वकीलों ने यह फैसला सुना और उछल पड़े। पण्डित अलोपीदीन मुस्कराते हुए बाहर निकले। स्वजन बांधवों ने रुपयों की लूट की। उदारता का सागर उमड़ पड़ा। उसकी लहरों ने अदालत की नींव तक हिला दी। जब वंशीधर बाहर निकले तो चारों ओर से उनके ऊपर व्यंगवाणों की वर्षा होने लगी। चपरासियों ने झुक-झुककर सलाम किये। किन्तु इस समय एक-एक कटुवाक्य, एक-एक संकेत उनकी गर्वाग्नि को प्रज्वलित कर रहा था। कदाचित् इस मुकदमे में सफल होकर वह इस तरह अकड़ते हुए न चलते। आज उन्हें संसार का एक खेदजनक विचित्र अनुभव हुआ। न्याय और विद्वत्ता, लम्बी-चौड़ी उपाधियाँ, बड़ी-बड़ी दाढ़ियाँ और ढीले चोंगे एक भी सच्चे आदर के पात्र नहीं है।

वंशीधर ने धन से बैर मोल लिया था, उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुंचा। कार्य-परायणता का दण्ड मिला। बेचारे भग्न हृदय, शोक और खेद से व्यथित घर को चले। बूढ़े मुंशी जी तो पहले ही से कुड़-बुड़ा रहे थे, चलते-चलते इस लड़के को समझाया था, लेकिन इसने एक न सुनी सब मनमानी करता है। हम तो कलवार और कसाई के तगादे सहें, बुढ़ापे में भगत बनकर बैठें और वहां बस वही सूखी तनख्वाह ! हमने भी तो नौकरी की है और कोई ओहदेदार नहीं थे, लेकिन काम किया, दिल खोलकर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अंधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दिया जलायेंगे। खेद ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया। इसके थोड़े ही दिनों बाद, जब मुंशी वंशीधर इस दुरवस्था में घर पहुँचे और पिताजी ने समाचार सुना तो सिर पीट लिया। बोले जी चाहता है कि तुम्हारा और अपना सिर फोड़ लूँ। बहुत देर तक पछता-पछताकर हाथ मलते रहे। क्रोध में कुछ कठोर बातें भी कही और यदि वंशीधर वहाँ से टल न जाते तो अवश्य ही यह क्रोध विकट रूप धारण करता। वृद्धा माता को भी दुःख हुआ। जगन्नाथ और रामेश्वर यात्रा की कामनाएँ मिट्टी में मिल गईं। पत्नी ने तो कई दिन तक सीधे मुंह से बात भी नहीं की।

इसी प्रकार एक सप्ताह बीत गया। संध्या का समय था। बूढ़े मुंशी जी बैठे राम-नाम की माला जप रहे थे। इसी समय उनके द्वार पर सजा हुआ रथ आकर रुका। हरे और गुलाबी पर्दे, पछहियें बैलों की जोड़ी, उनकी गर्दनों में नीले धागे, सींगें पीतल से जड़ी हुईं। कई नौकर लाठियाँ कंधे पर रखे साथ थे। मुंशी जी अगवानी को दौड़े। देखा तो पण्डित अलोपीदीन हैं। झुककर दण्डवत की और लल्लो-चप्पो की बातें करने लगे, हमारा भाग्य उदय हुआ जो आपके चरण इस द्वार पर आये। आप हमारे पूज्य देवता हैं, आपको कौनसा मुँह दिखावें, मुँह में तो कालिख लगी हुई है। किन्तु क्या करें, लड़का अभागा कपूत है, नहीं तो आपसे क्यों मुँह छिपाना पड़ता ? ईश्वर निस्संतान चाहे रखे, पर ऐसी संतान न दे।

अलोपीदीन ने कहा नहीं भाई साहब, ऐसा न कहिये।

मुंशी जी ने चकित होकर कहा - ऐसी संतान को और क्या कहूँ ? अलोपीदीन से वात्सल्यपूर्ण स्वर में कहा - कुलतिलक और पुरुषों की कीर्ति उज्जवल करने वाले संसार में ऐसे कितने धर्मपरायण मनुष्य हैं जो धर्म पर अपना सब कुछ अर्पण कर सकें ?

पण्डित अलोपीदीन ने वंशीधर से कहा - दारोगा जी, इसे खुशामद न समझिये, खुशामद



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करने के लिए मुझे इतना कष्ट उठाने की जरूरत न थी। उस रात को आपने अपने अधिकार-बल से मुझे अपनी हिरासत में लिया था किन्तु आज मैं स्वेच्छा से आपकी हिरासत में आया हूँ। मैंने हजारों रईस और अमीर देखे, हजारों उच्च पदाधिकारियों से काम पड़ा किन्तु मुझे परास्त किया तो आपने। मैंने सबको अपना और अपने धन का गुलाम बनाकर छोड़ दिया। मुझे आज्ञा दीजिये कि आपसे कुछ विनय करूँ।

वंशीधर ने अलोपीदीन को आते देखा तो उठकर सत्कार किया, किन्तु स्वाभिमान सहित। समझ गये कि यह महाशय मुझे लज्जित करने और जलाने आये हैं। क्षमा-प्रार्थना की चेष्टा नहीं की; वरन् अपने पिता की यह ठकुर-सुहाती बात असह्य सी प्रतीत हुई। पर पण्डितजी की बातें सुनीं तो मन की मैल मिट गई। पण्डितजी की ओर उड़ती हुई दृ ष्टि से देखा। सद्भाव झलक रहा था। गर्व ने अब लज्जा के सामने सर झुका दिया। शर्माते हुए बोले - यह आपकी उदारता है जो ऐसा कहते हैं। मुझसे जो कुछ अविनय हुई है, उसे क्षमा कीजिये। मैं धर्म की बेड़ी में जकड़ा हुआ था, नहीं तो वैसे मैं आपका दास हूँ। जो आज्ञा होगी वह मेरे सिर-माथे पर।

अलोपीदीन ने विनीत भाव से कहा - नदी तट पर आपने मेरी प्रार्थना नहीं स्वीकार की थी, किन्तु आज स्वीकार करनी पड़ेगी।

वंशीधर बोले मैं किस योग्य हूँ, किन्तु जो कुछ सेवा मुझसे हो सकती है उसमें त्रुटि न होगी।

अलोपीदीन ने एक स्टाम्प लगा हुआ पत्र निकाला और उसे वंशीधर के सामने रखकर बोले - इस पद को स्वीकार कीजिये और अपने हस्ताक्षर कर दीजिये। मैं ब्राह्मण हूँ, जब तक यह सवाल पूरा न कीजियेगा, द्वार से न हटूंगा।

मुंशी वंशीधर ने उस कागज को पढ़ा तो कृतज्ञता से आँखों में आँसू भर आए। पण्डित अलोपीदीन ने उनको अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर नियत किया था। छह हजार वार्षिक वेतन के अतिरिक्त रोजाना खर्च अलग, सवारी के लिए घोड़े, रहने का बँगला, नौकर-चाकर मुफ्त। कम्पित स्वर में बोले, पण्डित जी, मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं है कि आपकी उदारता की प्रशंसा कर सकूँ। किन्तु मैं ऐसे उच्च पद के योग्य नहीं हूँ।

अलोपीदीन हंसकर बोले - मुझे इस समय एक अयोग्य मनुष्य की ही जरूरत है।

वंशीधर ने गंभीर भाव से कहा - यों मैं आपका दास हूँ। आप जैसे कीर्तिवान, सज्जन पुरुष की सेवा करना मेरे सौभाग्य की बात है। किन्तु मुझमें न विद्या है, न बुद्धि, न वह स्वभाव जो इन त्रुटियों की पूर्ति कर देता है। ऐसे महान् कार्य के लिए बड़े मर्मज्ञ अनुभवी मनुष्य की जरूरत है।

अलोपीदीन ने कलमदान से कलम निकाली और उसे वंशीधर के हाथ में देकर बोले, न मुझे विद्वत्ता की चाह है, न मर्मज्ञता की, न कार्यकुशलता की। इन गुणों के महत्त्व का परिचय खूब पा चुका हूँ। अब सौभाग्य और सुअवसर ने मुझे वह मोती दे दिया है जिसके सामने योग्यता और विद्वत्ता की चमक फीकी पड़ जाती है। यह कलम लीजिए, दस्तखत कर दीजिए। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी के किनारे वाला, बैमुरौवत, उद्दण्ड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ दारोगा बनाये रखे !

वंशीधर की आँखें डबडबा आई। हृदय के संकुचित पात्र में इतना एहसान न समा सका। एक बार फिर पण्डित जी की ओर भक्ति और श्रद्धा की दृष्टि से देखा और कांपते हुए हाथ से मैनेजरी के कागज पर हस्ताक्षर कर दिए।

अलोपीदीन ने प्रफुल्लित होकर उन्हें गले लगा लिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. रानू मुखर्जी

# प्रेमचन्द की रचनाओं की दुनिया जीवंत दुनिया है

हिन्दी-कहानी की पुष्ट परम्परा का आरंभ प्रेमचन्द से होता है। उनकी रचनात्मकता एक ऐसा मानक स्तर कायम करती है जो निरंतर संघर्षरत भारतीय समाज के ऐतिहासिक बिम्ब को कहानियों के माध्यम से उजागर करती है। प्रेमचन्द ने अपने समय के दृश्य संसार से जो कुछ अनुभव लिये थे, उस आधार पर उन्होंने एक दूसरे संसार की रचना की है। उस संसार में बड़े, छोटे, ऊँचे, नीचे, व्यावसायिक, विचारक आदि अनेक वर्ग के लोग रहते हैं। उनके स्वभाव, उनके कर्म और उनकी अन्य क्रिया-दशाएँ भिन्न-भिन्न हैं, फिर भी अपने समय की एकसूत्रता में निरंतर बँधे हुए हैं। अपनी रचनाओं में प्रेमचन्द ने जिस 'मनुष्य' की स्थापना की है, उनकी रचनाओं में वह उनकी भावनाओं का वाहक है।

प्रेमचन्द की 'रचनाओं की दुनिया' जीवंत दुनिया है। उसमें गाँव मिलते हैं। शहर और कस्बे मिलते हैं और उनके अन्दर की दूसरी दुनिया भी मिलती है जिसमें उस जगह के लोगों का अन्दरूनी जीवन या जीवन-चर्चा का वृत्तान्त मिलता है। कहानियों



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और उपन्यासों की जो दुनिया उन्होंने बनाई थी, उसकी भौगोलिक सीमाएँ नहीं थी। रचनाओं में इलाहाबाद, कलकत्ता, गोरखपुर, बनारस, लखनऊ आदि शहर अगर आए भी हैं तो केवल इसलिए कि जिससे विश्वसनीयता बनी रहे तथा आन्तरिक आत्मीय सम्बन्ध जोड़ने में सुविधा हो सके।

प्रेमचन्द की रचनाओं का संसार जहाँ अनेक स्वभावों, व्यवसायों, वैचारिक प्रवृत्तियों से भरा है वहाँ उनके स्तरों पर विराट परिवर्तन के संकेत भी हैं। व्यवसायी, अधिकारी, नेता, कारिन्दे, जड़-बुद्धि, विलासी, वेश्याएँ, जमींदार, समाज सुधारक, सहज मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत निम्न वर्ग के किसान आदि पात्रों की उपस्थिति प्रेमचन्द के 'रचना संसार' में विविधता के प्रतीक हैं। उन्होंने अपने समय के जिस समाज से ये पात्र लिये थे, उस समाज में मूल-चेतना के रूप में स्वतंत्रता और परिवर्तन के दो मुख्य बिन्दु थे।

प्रेमचन्द अपने समाज से और उसकी गतिविधियों से बहुत प्रभावित थे। उनकी रचनाओं में उनके दृश्य संसार के ये दृश्य बहुतायत से देखे जा सकते हैं। उनके अधिकांश पात्र इस सच्ची दुनिया के पात्र हैं जिन्होंने भारत के इतिहास में संघर्ष की सच्चाईयों को झेला है। यह दीगर बात है कुछ ऐसे भी पात्र हैं जो इस संग्राम के विरोध में भी खड़े थे। पूँजीवादी समाज या जमींदार समाज या अंग्रेजभक्त राय साहब वर्ग जो जन सामान्य के निशाने पर रहे। उनकी सभी कथा-कृतियों का स्वर आदमी की मुक्ति का स्वर है। वह व्यवसायी, नेता, संस्कार, परम्पराओं आदि से या आदि की क्रिया दिशाओं से मुक्ति पाने का ऐसा प्रयास है जिसमें अपनी ही तरह का सर्जनात्मक साहित्य सामने आता है। कायाकल्प में 'चक्रधर' के प्रसंग से सम्बन्धित तमाम राजनैतिक घटनाओं का स्वरूप इसका साक्ष्य है। अत: प्रेमचन्द की रचनाओं की दुनिया अपने समय के घटना-चक्रों से प्रभावित ही नहीं बल्कि उचित सन्दर्भों में उनका कलात्मक पुनर्मुद्रण भी है।

प्रेमचन्द ने अनेक पात्रों को अंग्रेजों की नीति के विरोध में जगह-जगह पर रखा है। 'कर्मभूमि' हो या पूँजीवादी-साम्राज्यवाद के विरोध का स्थल 'रंगभूमि' हर जगह प्रेमचन्द ने वह विरोध जिसका मूल लक्ष्य भारतीय देश-प्रदेश से अंग्रेजों के हट जाने से था, अपने ठोस आधारों पर स्पष्ट होता है। वह संसार जो प्रेमचन्द की रचनाएँ हमारे सामने रखती हैं, विचित्र होते हुए भी, हमारा परिचित ही नहीं बल्कि हमारा आत्मीय संसार है। उसमें हमारी व्यक्तिगत समस्याएँ उन बिन्दुओं से निकलती प्रतीत होती हैं जिनसे हमारी सामाजिक लड़ाई शुरू होती है। उनकी रचनाओं की सफलता का यही रहस्य है।

एक सजग लेखक के नाते प्रेमचन्द ने अपने समय के खोखलेपन को न केवल पूरी तरह से चित्रित किया बल्कि उसका डटकर विरोध भी किया था। उन्होंने उन तमाम चीजों का विरोध किया जो समाज व्यवस्था को पंगु बनाती हैं। हमारी धर्म-संस्कृति का 'फालतू हिस्सा' जो धीरे-धीरे जन-जीवन को रूढ़िबद्ध समाज में बाँटता है- प्रेमचन्द की नजर से छिपा नहीं था। उन्होंने उस हिस्से से प्रभावित होकर सुधार-व्यवस्था में बनने वाली रूढ़ियों तक का विरोध किया था। "सेवासदन" में आश्रम व्यवस्था की असफलता पर करारे व्यंग्य की चोट करने के पीछे यही उद्देश्य था।

गाँव, शहर, कस्बा, व्यक्ति, समाज, परिवार, धर्म, राजनीति, संस्कृति, नियम, आदर्श, कर्तव्य, संघर्ष, विरोध, जन-कल्याण आदि शीर्षकों के अन्तर्गत प्रेमचन्द के रचना संसार की व्यापकता देखी जा सकती है। इन सबमें मानव के सम्बन्ध की खोज, प्रेमचन्द की हर रचना की खोज है और देखा जाय तो मनुष्य के अन्दर की खोज प्रेमचन्द के रचना-संसार का बड़ा दृश्य है। प्रेमचन्द की विचार


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दृष्टि मूलत: मानववादी थी। उन्होंने व्यक्ति और समाज की धुरियों के अन्तर्गत एक ऐसे सामाजिक की स ष्टि की है जो 'गोदान' में होरी की तरह अपनी आस्थाओं का दण्ड भी भोगता है और 'कायाकल्प' में चक्रधर की तरह अपनी मनोकांक्षाओं का शिकार भी बन जाता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्ति या सामाजिक की स्थिति 'प्रतिनिधि-पात्र' के रूप में चित्रित की है। 'व्यक्ति' के रूप में वह वर्ग, समूह या व्यवसाय के किसी-न-किसी क्षेत्र का प्रतिनिधि सामाजिक है।

प्रेमचन्द का रचना संसार मध्यवर्ग का रचना संसार है। मध्यवर्ग के अवतरण में सामाजिक आर्थिक हलचलों का बहुत बड़ा हाथ है। यह संयोग नहीं है कि मध्यवर्ग की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक पदवस्ता का चित्रण करते हुए अपनी प्रत्येक कृति में प्रेमचन्द ने मध्यवर्ग का कलात्मक इतिहास भी रचा है। मध्यवर्ग के उदय के कारणों को और मध्यवर्ग के नए रूप में विकसित होनेके कारणों को उनकी रचनाओं में विस्तृत रूप से देखा जा सकता है। 'गबन' में रमानाथ निम्न-मध्यवर्ग का वह व्यक्ति है जो महत्त्वाकांक्षी और मिथ्याप्रदर्शक भी है। मध्यवर्ग का आर्थिक ढाँचा पतनशील दिखाने के साथ-साथ प्रेमचन्द ने उस सच्चाई से इंकार नहीं किया जो कई रूपों में मध्यवर्ग में विद्यमान है। उसमें आडम्बर और मिथ्या अहंकार जैसे तत्त्व भी विद्यमान हैं। रमानाथ के साथ-साथ उसके पिता दीनदयाल भी प्रदर्शन के चक्कर में फँस जाते हैं। 'सेवासदन' में वकील और उनकी मित्र-मंडली के सभी सदस्य इस प्रदर्शनकारी वर्ग के सबसे बड़े उदाहरण हैं। 'वरदान' में मध्यवर्ग की व्यवहार दिशाएँ भी प्रेमचन्द ने दिखाई हैं।

प्रेमचन्द के रचना संसार में केवल मध्य वर्ग का ही रूपांकन नहीं है बल्कि मध्यवर्ग के अतिरिक्त समाज में जितने भी वर्ग हो सकते हैं उन सबका चित्र हमें प्रेमचन्द के रचना संसार में आसानी से मिल जाता है। अपने समय के कृषक मजदूर समाज के प्रति जिस सहानुभूति का प्रक्षेपण प्रेमचन्द ने किया है, वह अपने समय के यथार्थ के प्रति दायित्व का निर्वाह मात्र नहीं था बल्कि भारतवर्ष के उस सही चित्र का अंकन था जिसकी धारा शोषणवादी साम्राज्य के आतंक से सही दिशा की ओर जाने से रुकी नहीं। उन्होंने मध्यवर्ग, उच्चवर्ग, निम्नवर्ग तीनों के विविध स्तरों को उन तमाम बड़े सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में सही स्थान पर चित्रित किया है जिनका लक्ष्य भारत की आजादी थी। उनके रचना संसार में वर्ग, व्यक्ति, नए अनुभव और विश्वसनीयता की रूपाकृति का जो अंकन मिलता है वह सही अर्थों में प्रेमचन्द की उपलब्धि है।

प्रेमचन्द का विचार-जगत, प्रेमचन्द के पात्रों की आस्था, प्रेमचन्द की कला धारणाएँ, प्रेमचन्द का रचना शिल्प आदि ऐसे केन्द्र हैं जहाँ उनकी रचनात्मक विलक्षणता का स्पष्ट प्रमाण मिलता है। जिस संसार को जीवंत रूप में प्रेमचन्द ने चित्रित किया है वह भारतीय जनमानस की मानसिक क्षमताओं का एक प्रमाण है और यथार्थ के ज्यादा निकट भी है।

यह सच है कि पात्रों, घटनाओं और स्थितियों की जानी पहचानी आवृतियों में प्रेमचंद ने सहज या साधारण का प्रस्तुतिकरण किया है, परंतु एक अलग कोण से देखने पर प्रेमचंद के कथा साहित्य में विलक्षणता या असाधारण होने के अंश भी मिलते हैं। होरी का गाँव या घीसू का गँवईपन जिस वातावरण की उपज हैं वह दृष्य संसार अपने अंदर समस्याओं, मानवीय भावनाओं का एक अनुकूल संसार लिए चलता है, इन दोनों की सार्थकता प्रेमचंद के रचना - संसार में 'संवेदना' के स्तर पर होती है। उनकी रचनाओं में आजादी की एक लहर आरंभ से अंत तक व्याप्त रहती है।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेमचंद ने अपने समय की भाषा को तोड़ा था। उन्होंने उसे नए मुहावरे से सम्पन्न किया था। उनका रचना-संसार अपने समय के उस नए मुहावरे में ढलकर एक ऐतिहासिक दस्तावेज बन जाता है। प्रेमचंद जनवादी क्रांति में आस्था रखते थे। अपनी इस आस्था को उन्होंने ग्रामीण कृषकों की परिकल्पनाओं तथा प्रेमाश्रम में सुरक्षित रखा है। वहाँ बलराज गुलाम और शोषितों की मुक्ति के लिए रूसी जन - क्रांति का हवाला देता है। असहयोग आंदोलन के जमाने में प्रेमचंद ने जिस तरह से अपनी नौकरी त्याग दी, "लाल फीता" नामक कहानी के नायक को उन्होंनें सरकारी नौकरी से अलग होता दिखाया है। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दिनों में अपनी रचनाओं में अपने समय के सच को, समय के मूल स्वर को प्रसारित किया था। 'समय यात्रा', 'जलसू', 'मैकू', 'आहुति', 'जेल' आदि कहानियों में उनके समय के महत्वपूर्ण आंदोलन का प्रभाव छिपा पड़ा है। गहराई से जानने पर यह बात साफ नज़र आती है कि प्रेमचंद का रचना संसार सच्चे मानव अनुभवों के अछूते सौंदर्य से समृद्ध है।

प्रेमचंद पहले उर्दू में लिख रहे थे। फिर १९१५ में उनकी पहली कहानी 'पंच परमेश्वर' हिन्दी में छपी। इस कहानी के छपते ही वे साहित्य चर्चा के केन्द्र में आ गए और लोगों ने उनकी प्रतिभा को स्वीकार कर लिया। उर्दू गद्य का परिमार्जन और लोक-भाषा की सहज अभिव्यक्ति की आधार-भूमि से उठकर प्रेमचंद के ग्रामीण कथानकों ने साहित्य में एक नए युग का सूत्रपात किया। उस समय साहित्य में आदर्श और सुधारवादी उद्बोधन का दौर चल रहा था। लोगों का ख्याल था कि बिना व्यापक जन जागरण के अंग्रेजों का मुकाबला नहीं किया जा सकता और यह जागरण तब तक संभव नहीं था, जब तक सामाजिक कुरीतियों को मिटा न दिया जाय। प्रेमचंद ने इन आंदोलनों से अपने को जोड़े रखा और सामाजिक सच्चाईयों का अध्ययन करते रहे। समाज की कुरीति और जनता की बेपनाह दुर्दशा के प्रति उनके मन में अपार सहानुभूति थी।

समाज की निम्नतम इकाई से उनका सघन संपर्क था। इसलिए उनके प्रारंभिक कथानकों में जहाँ एक ओर आदर्शवादी, सामाजिक दृष्टि का प्राधान्य था, वहीं विवरण और चित्रांकन में वास्तविकता का स्वरूप स्पष्ट उभरने लगा था। सच्चा रचनाकार अपनी पैनी दृष्टि उन स्थितियों पर लगाए रहता है जहाँ सामाजिक परिवर्तन की अमूर्त प्रक्रिया को स्पष्ट लक्षित कर पाना दूसरों के लिए संभव नहीं होता। प्रेमचंद सादे आदमी थे। वे आत्मिक उन्नति के भौतिक पक्ष को अधिक महत्व देते थे। भारतीय जनमानस की तस्वीर ही प्रेमचंद का रचना संसार है।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh, Funding by IKS-MoE-2025-Grant

emorial College C

प्रेमचन्द सृजन पीठ के द्वितीय निदेशक श्री नरेश मेहता की स्मृति में १६ फरवरी २०११ को आयोजित परिसंवाद
अतिथिगण - डॉ. राकेश शर्मा, श्री प्रभात कुमार भट्टाचार्य, डॉ. मोहन गुप्त,
डॉ. बी.एल. आच्छा, डॉ. उमा वाजपेयी, श्री जगदीश तोमर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

श्री नरेश मेहता स्मृति : सम्मान्य अभ्यागत

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

९ अप्रैल २०११ को विश्व संवाद केन्द्र, जबलपुर में आयोजित कथा समारोह में मंचस्थ अतिथिगण
बायें से दायें - श्री जगदीश तोमर, डॉ. सत्यनारायण (पूर्व आचार्य, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय)
श्री श्रीधर पराडकर, डॉ. त्रिभुवननाथ शुक्ल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कथा समारोह (९ अप्रैल २०११) : श्रोतागण

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल

# संस्कृत कथा साहित्य

संस्कृत कथा साहित्य विश्व का प्राचीनतम कथा साहित्य है। इसकी प्राचीनता का प्रमाण वैदिक आख्यानों की सुदीर्घ परम्परा है। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि संस्कृत की गद्य-परम्परा बहुत व्यवस्थित एवं विचार-प्रधान रही है। कथा शब्द 'कथ्' धातु से निष्पन्न है। 'कथ्' धातु का अर्थ होता है - 'वाक्य प्रबन्धन' अर्थात् वाक्यों के प्रबन्धात्मक विवेचन को वाक्य कहते हैं। इसी से सम्बन्ध में दो और शब्द मिलते हैं - 'कथ्य' और 'कथक'। 'कथ्य' का अर्थ है - 'जो कहा जाए' और 'कथक' का अर्थ है - 'कथा कहने वाला'। इस प्रकार - 'कथ वाक्य प्रबन्धे' इति चौरादिक धतोरङि प्रत्यये टापि कथा शब्दों निष्पन्दते।

संस्कृत हिन्दी कोश (प. १३१) में आप्टे ने लिखा है - 'प्रबन्ध कल्पना स्तोकं सत्यं प्राज्ञा: कथा विदु:।' यास्क ने निरुक्त में कथा शब्द को चार प्रकार से स्पष्ट किया है -

१. कैसे के अर्थ में 'कथा जाते' अर्थात् कैसे पैदा हुए।
   - 'कैसे' के अर्थ में 'कथा जाते' (निरुक्त १.८५.१) अर्थात् कैसे पैदा हुए।



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

- 'किसी तरह' के अर्थ में - 'यथा कथा च कृत्यते' (निरुक्त १६४) अर्थात् जिस किसी तरह।
- 'क्यों' के अर्थ में - 'कथा ग्रामं प च्छसिं' (निरुक्त १०.१४६.१) अर्थात् क्यों ग्राम को पूछते हो।
- 'कैसे या कुछ न कुछ' के अर्थ में - 'यथा कथा च विशेष' अर्थात् कैसा या कुछ न कुछ।

ध्यातव्य होगा कि यास्क की निरुक्तियों में कथा साहित्य के सभी संवेद्य भाव सम्पुटित हैं। इससे यह अभिप्रमाणित होता है, उस समय भारतीय 'कथा-स्वरूप' का चिन्तन स्पष्ट हो चुका था।

यास्क के पूर्व 'संहिता साहित्य' में 'कथा' शब्द का प्रयोग हो चुका था। यहाँ कथा शब्द 'आख्यान' का पर्यायवाची न होकर 'कथम्' अव्यय के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। यहाँ इसकी व्युत्पत्ति 'कहने के अर्थ में' 'कथ' से होकर 'किम्' शब्द से 'था' प्रत्यय के योग से किम् क-था 'कथा' के रूप में मान्य की हुई है। इसके कुल सात उदाहरण हमें प्राप्त होते हैं -

१. कथा राधाम सखायः स्तोमं मित्रस्यार्यम्णः। महिप्सरो वरुणस्य। (ऋग्वेद १.४१.७)
२. कथा यजमानो यजमानेन मात व्येन संह सोत्सहं वेद। (मैत्रायिणी सं. १.४.२२)
३. तेबूवनना नरशमनीथा कथा नरशमनोष इति। (काठक सं. १०.७)
४. यत समावद्विदकथा त्वमग निभजोजनोनाहम्। (तै.सं. २.५.८४)
५. कथा न क्षोणभिर्यसा सभारत। (ऋग्वेद सं. १.५४.१)
६. किं स्विदासीदधिष्ठानभारभ्भणं कतमस्चित् कथमासीत्। (मां.सं. १७.१७)
७. किं स्विदासीदारम्भणमधिष्ठानं कतमस्वित् कथमासीत्। (काण्व सं. १८.२.३)

उपर्युक्त सभी सन्दर्भ 'कथा' शब्द अव्ययार्थक प्रयोग के द्योतक हैं।

ब्राह्मण ग्रन्थों में कथा शब्द का प्रयोग मिलता है। शाख्यायन ब्राह्मण में 'कथासु' (२.७.१२) शब्द, जैमनीय ब्राह्मण (६) में और जैमिन्युपनिषद्।

ब्राह्मण (६) में और जैमिन्युपनिषद् ब्राह्मण (४.६.१२) में प्रयुक्त कथा शब्द अव्यय के रूप में प्रयुक्त न होकर 'कथ' से ही बने हैं। यहाँ ध्यातव्य है कि 'कथा' शब्द का यह प्रयोग संहिताओं से भिन्न आख्यान का वाचक नहीं है।

सायणभाष्य में 'कथाम' की व्याख्या की गयी है -

'कथा न वदेत लौकिकी वार्ता न कुर्यात्' सायण के अनुसार यहाँ 'कथो' शब्द लौकिकी व्याख्या न कुर्यात् का वाचक है, आख्यान भी लौकिक वार्ता होती है। स्पष्ट है कि वैदिक साहित्य में सर्वप्रथम 'कथा' शब्द का प्रयोग ऐतरेय आख्यान में मिलता है।

छान्दोग्योपनिषद् में कथा शब्द का प्रयोग मिलता है -

त्रयोहोदगीथे कुशला बभूवतुः शिलकः शालावत्यश्चैकितायनो दालभ्यो प्रवाहणो जैवलिरितिते होचुरुदगीथे वै कुशलाः स्मो हन्तोद्‌गीथे कथां वदाम। (१.८.१)

मनुस्म ति (३.२३१) में कथा शब्द का प्रयोग रचना के अर्थ में प्राप्त होता है।

वाल्मीकि ने रामायण (१.८.६) में कथा शब्द का प्रयोग विवरण के अर्थ में किया है - 'सनतकुमारो भगवान् पुराकथितनानाकथाम्।'

कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य (८.४३१) में 'कथा' शब्द का प्रयोग वार्ता के अर्थ में किया है -

'अभितप्त मायो पि मादैव भजते कैव कथा शरीरिषु।'

सोमदेव भट्ट कृत कथा सरित्सागर में 'कथा' शब्द का प्रयोग गोष्ठी वचन के अर्थ में किया है -

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'मिथः कथा प्रसंगेन विवाद किलचक्रतुः' (४.२.१८१)। कालिदास ने 'कथा' शब्द का प्रयोग अभिज्ञानशाकुन्तलम् में बात अथवा प्रसंग अर्थ में किया है - 'का कथा बाणसन्धाने ज्याशब्देनैव दूरतः' (३.१) माघ ने शिशुपालबध में कथा का प्रयोग प्रसंग के अर्थ में किया है - कथापि खलुपापा नामलम् श्रेयसे यतः (२.४०)

श्रीहर्ष ने भी नैषधीयचरितम् में कथा का प्रयोग प्रसंग के अर्थ में किया है -

कथा प्रसंगेन मिथः सखौमुखात। (१.१)

अग्निपुराण में 'कथा' का अर्थ कथनिका अर्थात् कहने के अर्थ में किया है -

आख्यायिका कथाखण्ड कथा परिकथा।

कथानिकेति मन्यन्ते गद्यकाव्यं च पञ्चधा (३३७.१२)

इस प्रकार कथा का पुष्ट सन्दर्भ हमें संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है।

संस्कृत साहित्य में कथा के अनेक भेद प्राप्त होते हैं। शैली के आधार पर दो भेद हैं - कथा और आख्यायिका। अग्निपुराणकार ने आख्यायिका को परिभाषित करते हुए लिखा है -

कत वंशप्रशंसा स्याद्यत्र गद्येन विस्तारात।
कन्याहरणसंग्राम विपत्रलम्भविपत्तयः।।
भवन्ति यत्र दीप्राश्चरीतिव त्ति प्रव त्तयः।
उच्छ्वासैश्च परिच्छेदो यत्र वा चूर्णेकोत्तरा।।
वक्त्रं वा परवन्त्रं वा यत्र सांख्यायिका स्म ता।
श्लोकैः स्ववंशसंक्षेपात्कविर्यत्र प्रशंसति।।
मुख्यार्थस्यवताशय भवेद्यत्र कथान्तरम्।
परिच्छेदो न यत्र स्याद् भवेद वा लम्बकैः वचचित्
सा कथा नाम तद्गर्भे निबध्नीयात चतुष्पदीम्।
(३३६.१३-१६)

अर्थात् आख्यायिका वह है जहाँ गद्य में विस्तार से रचयिता के वंश की प्रशंसा हो, जिसमें कन्या हरण, संग्राम, विप्रलम्भ, विपत्ति आदि का वर्णन हो जिसमें रीति व त्ति और प्रव त्तियों का प्रदीप शैली में प्रयोग हो जिसके विजय का विभाजन उच्छावासों में हो जिसमें मुख्य रूप से चूर्णक शैली का प्रयोग हो तथा वक्त्र और अपरवक्त्र छन्दों का प्रयोग हो। इसके विपरीत कथा वह है, जिसमें कवि संक्षेप में श्लोकों द्वारा अपने वंश की प्रशंसा करे जिसमें मुख्य कथा के अवतरण के लिए दूसरी कथा का सहारा लिया जाए। यदि विभाजन हो तो लम्बको के आधार पर बीच-बीच में चतुष्पदी पदों का प्रयोग हो।

दण्डी ने माना है कि कथा एवं आख्यायिक संज्ञा भले ही दो हो पर उनकी जाति एक ही है -

तत् कथाख्यायिकेत्येका जातिः संज्ञा द्वयाङ्किता। (काव्यादर्श १.२३.३०)

धनञ्जय ने कथा के तीन भेद दिये हैं - १. ऐतिहासिक कथा, २. काल्पनिक कथा, ३. मिश्रित कथा।

आचार्य आनन्दवर्धन ने भी तीन ही भेद माने हैं। किन्तु उनके भेद भिन्न हैं - १. परिकथा, २. एकता कथा, ३. खण्डकथा।

हेमचन्द ने कथा के ग्यारह भेद किये हैं - १. उपाख्यान, २. आख्यान, ३. निदर्शन, ४. परिकथा, ५. मन्याल्लिका, ६. मणिकुल्ला, ७. प्रवाहनिका, ८. खण्डकथा, ९. सकलकथा, १०. उपकथा, ११. व हत्कथा।

इन भेदों का विकास संस्कृत कथा साहित्य में विस्तारपूर्वक किया गया है। यहाँ संक्षेप में इनका परिचय दिया जा रहा है -

**१. उपाख्यान** - दो संवादों के मध्य परस्पर समझाने के लिए किया गया प्रयोग उपाख्यान है जैसे - महाभारत का नलोपाख्यान तथा शकुन्तलोपाख्यान।

**२. आख्यानक** - ज्योतिषी के द्वारा दूसरों को दिया जाने वाला प्रबोधन। जैसे - गोविन्दोपाख्यान।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

**३. निदर्शन -** इसमें पशु-पक्षियों तथा अन्य जीवधारियों के कार्य, अकार्य, उचित अनुचित का उपदेश दिया जाए। जैसे - पंचतन्त्र, हितोपदेश।

संस्कृत कथा साहित्य की एक सुदीर्घ यात्रा है जो वैदिक काल से लेकर अद्यावधि निरवधि रूप से चली आ रही है। इस पूरे विकासक्रम को पाँच भागों में रखकर देखा जा सकता है।

१. वैदिक कथा साहित्य
२. बौद्ध तथा जैन कथा साहित्य
३. उपदेशात्मक एवं नीतिमूलक कथा साहित्य
४. मनोरंजक कथा साहित्य
५. आधुनिक कथा साहित्य।

यहाँ इन सभी का संक्षेप में उल्लेख किया जा रहा है -

१. वैदिक आख्यानों की समृद्ध परम्परा से इस बात का प्रमाण मिल जाता है कि उस काल में कथा शिल्प का विकास हो चुका था। ऋग्वेद संहिता में इस प्रकार के कुल उन्तीस आख्यान मिलते हैं -

१. सरमा एवं पणि का आख्यान (१०/१०८)
२. शुन:शेप का आख्यान (१/२४)
३. कशीवान् स्वनय का आख्यान (१/१२५)
४. दीर्घतमा का आख्यान (१/१४७)
५. लोपामुद्रा और अगस्त्य का आख्यान (१/१७९)
६. गृत्समद का आख्यान (२/१२)
७. वसिष्ठ और विश्वामित्र का आख्यान (३/५३)
८. सोम के अवतरण का आख्यान (३/४३)
९. वामदेव का आख्यान (४/१८)
१०. यरुण का आख्यान (५/२)
११. अग्नि के जन्म का आख्यान (५/११)
१२. श्यावाश्व का आख्यान (५/५२)
१३. सप्तवधि का आख्यान (५/७८)
१४. बृबु एवं भारद्वाज का आख्यान (६/४५)
१५. ऋजिश्वा और अतियाज का आख्यान (६/५२)
१६. सरस्वती का आख्यान (६/६१)
१७. विष्णु के तीन पादविक्षेपों का आख्यान (६/६९)
१८. बृहस्पति के जन्म का आख्यान (६/७१)
१९. राजा सुदास का आख्यान (७/१८)
२०. नहुष का आख्यान (७/९५)
२१. आसङ्ग का आख्यान (८/१)
२२. अपाला का आख्यान (८/९१)
२३. कुत्स का अख्यान (१०/३१)
२४. राजा असमाति और चार ऋत्विजों का अख्यान (१०/५७)
२५. नाभानेदिष्ट का अख्यान (१०/६१)
२६. वृषाकपि का अख्यान (१०/८६)
२७. उर्वशी एवं पुरूरवा का आख्यान (१०/९५)
२८. देवापि और शन्तनु का अख्यान (१०/९८)
२९. नचिकेता ओर यम का आख्यान (१०/१३५)

सरमा और पणि आख्यान प्रतीकात्मक हैं। सरमा वात्या की देवी का प्रतीक है, पणि मेघ का प्रतीक है। गायें जल की प्रतीक हैं।

शुन:शेप आख्यान में विश्वामित्र का शुन:शेप के प्रति असीम वात्सल्यभाव प्रकट हुआ है। महर्षि विश्वामित्र के अपने पौरोहित्य में शुन:शेप के द्वारा यज्ञानुष्ठान सम्पन्न कराया है। श्यावाश्व के आख्यान में प्राचीन प्रेमकथा के तत्त्वों को स्पष्ट किया गया है। इसमें स्पष्ट किया गया है कन्यादान में कन्या की माता के अभिमत को निर्णायक माना जाता था।

उर्वशी पुरूरवा के आख्यान में प्रेमकथा की अभिव्यक्ति हुई है, जो सुखान्त न होकर दु:खान्त है। इस वैदिक आख्यान की परम्परा ऋग्वेद से प्रारम्भ होकर शतपथ ब्राह्मण, वृहद्देवता, महाभारत, हरिवंशपुराण, विष्णुपुराण, वायुपुराण, विष्णु-धर्मोत्तरपुराण, विक्रर्मोवशीर्य एवं कथासरित्सागर तक फैली हुई है।

कक्षीवान और स्वनय आख्यान में राजा स्वनय की दान-स्तुति का वर्णन मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक समाज में ऋषियों का बहुत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदर था। उन्हें दान में गौ, हिरण्य, अश्व एवं रथ के साथ अपनी कन्याएँ भी प्रदान करते थे।

ब्राह्मण ग्रन्थों में भी कथाएँ प्राप्त होती हैं। इसकी कुछ सूची इस प्रकार है -

१. मन और वाणी में कलह का आख्यान।
२. स्वर्भानु द्वारा सूर्य पर आक्रमण तथा अग्नि द्वारा उसका विनाश।
३. देवताओं के समीप से यज्ञ द्वारा अश्वरूप धारण कर पलायन तथा मुट्ठी भर कुशग्रास का प्रलोभन देकर उसका प्रत्यानयन।
४. असुरों तथा देवताओं के बीच हुए अनेकानेक संग्राम।
५. पुरूरवा और उर्वशी का आख्यान।
६. जलप्लावन का चिरन्तन आख्यान।
७. पुरुष से चातुर्वर्ण्य की उत्पत्ति का आख्यान।
८. शुन:शेप का आख्यान।
९. कमलनाल चुराने वाले चोरों का आख्यान।
१०. कवष ऐलूष का आख्यान।
११. सौपर्ण आख्यान।
१२. यज्ञिप पशु से सम्बद्ध आख्यान।
१३. विश्वन्तर एवं ब्राह्मणों का आख्यान।

उपनिषद् जो वैदिक साहित्य का अन्तिम भाग है। इसीलिए इसे वेदान्त संज्ञा से अभिहित किया जाता है। यह धारा रहस्यवादी आध्यात्मिक चिन्तन धारा का प्रतिनिधित्व करती है। इसके कतिपय आख्यान इस प्रकार हैं -

१. नचिकेता और यम का आख्यान।
२. सत्यकाम जाबाल का आख्यान।
३. आरुणि और श्वेतकेतु का आख्यान।
४. सनत्कुमार एवं नारद का आख्यान।
५. इन्द्र एवं विरोचन का आख्यान।
६. याज्ञवल्क्य एवं मैत्रेयी का आख्यान।
७. प्रवाहण जैबलि एवं आरुणेय श्वेतकेतु का आख्यान।
८. प्रतर्दन एवं इन्द्र का आख्यान।
९. देवासुर संग्राम का आख्यान।
१०. जानश्रुति पौत्रायण का आख्यान।
११. रैक्व का आख्यान।
१२. श्वानों का आख्यान।
१३. उमा हैमवती का आख्यान।

बौद्ध संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत जातकमात्मा, दिव्यावदान, अवदान शतक और अवदान कल्पना आदि उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। कुछ जातक कथाएँ हैं -

| | जातक के नाम | प्रतिपाद्य |
|---|---|---|
| १. | व्याघ्रीजातक | आत्मोत्सर्ग |
| २. | शिबिजातक | नेत्रदान |
| ३. | कुल्माषपिण्डीजातक | भिक्षादान |
| ४. | श्रेष्ठिजातक | भिक्षादान |
| ५. | शशजातक | आत्मोत्सर्ग |
| ६. | अगस्त्यजातक | आहारप्रदान |
| ७. | मैत्रीबलजातक | आत्मोत्सर्ग |
| ८. | विश्वन्तरजातक | दान के कारण प्रजाकोप का वरण |
| ९. | यज्ञजातक | आशय-शुद्धि |
| १०. | शक्रजातक | भूतदया |
| ११. | ब्राह्मणजातक | सदाचार-पालन |
| १२. | उन्मादयन्तीजातक | काम पर विजय |
| १३. | सुपारगजातक | सत्यवचन की महिमा |
| १४. | मत्स्यजातक | शील-विशुद्धि |
| १५. | कुम्भजातक | मद्यपान की हेयता |
| १६. | हंसजातक | सद्वृत्त की महिमा |
| १७. | महाबोधिजातक | बौद्धधर्म विरोधी वादों का खण्डन |
| १८. | महाकपिजातक | परोपकार के लिए प्राणोत्सर्ग |
| १९. | शरभजातक | अपकारी के प्रति भी उपकार की कर्तव्यता |


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

| | |
|---|---|
| २०. क्षान्तिजातक | क्षान्ति-पारमिता |
| २१. ब्रह्मजातक | परलोक की विश्वसनीयता |
| २२. हस्तिजातक | परोपराकार के लिए देहोत्सर्ग |
| २३. सुतसोमजातक | प्राणिहिंसा से विरति |
| २४. अयोग हजातक | जगत् की अनित्यता |
| २५. महिषजातक | क्षमाशीलता |
| २६. शतपत्रजातक | क्षमाशीलता |

हरिभद्रसूरि रचित लघुकथाएँ प्राप्त होती हैं, जो इस प्रकार हैं -

| | |
|---|---|
| १. इन्द्रदत्त-कथा | २. धूर्तराज-कथा |
| ३. शीलपरीक्षण-कथा | ४. विषयासक्ति-कथा |
| ५. शीलवती-कथा | ६. रामकथा |
| ७. वज्रस्वामि-कथा | ८. गौतमस्वामि-कथा |
| ९. आर्यमहागिरि-कथा | १०. भीमकुमार-कथा |
| ११. श्रावकपुत्र-कथा | १२. पाखण्डि-कथा |
| १३. कुरुचन्द्र-कथा | १४. शंखन पति-कथा |
| १५. ऋद्धिसुन्दरी-कथा | १६. रतिसुन्दरी-कथा |
| १७. गुणसुन्दरी-कथा | १८. चण्डकौशिक-कथा |
| १९. गालव-कथा | २०. मेघकुमार-कथा |
| २१. हिंगुशिव-कथा | २२. अश्रुतपूर्व-कथा |
| २३. ग्रामीण शाकटिक-कथा | २४. अभयकुमार-कथा |
| २५. म गावती-कौशल-कथा | २६. श्रमणोपासक-कथा |
| २७. सुलसा-कथा | २८. सोमा-कथा |
| २९. वरदत्त-कथा | ३०. कलि-कथा |
| ३१. कुन्तलदेवी-कथा | ३२. ब्रह्मदत्त-कथा |
| ३३. प्रभाकर-चित्रकर-कथा | ३४. कामासक्ति-कथा |
| ३५. सत्संगति-कथा | ३६. भक्ति-परीक्षण-कथा |
| ३७. सुबन्धुद्रोह-कथा | ३८. द ढ़संकल्प-कथा |
| ३९. मित्रचतुष्टय-कथा | ४०. मूलदेव-कथा |
| ४१. वणिक-कथा | ४२. आर्य सुहस्ति-कथा |

संस्कृत के पश्चात् प्राकृत में जैनाचार्यों द्वारा भी इस दिशा में महत्त्पूर्ण प्रयास हुए हैं। कुछ प्राकृत कथाएँ इस प्रकार हैं -

| | |
|---|---|
| १. जिनेश्वरसूरि | निर्वाणलीलावतीकथा |
| २. वही | कथाकोषप्रकरण |
| ३. जिनचन्द्र | संवेगरंगशाला |
| ४. महेश्वरसूरि | णाणपंचमीकहा |
| ५. देवभद्र-गुणचन्द्रसूरि | कहारयणकोष |
| ६. महेन्द्रसूरि | नर्मदासुन्दरीकथा |
| ७. विजयसिंह | भुवनसुन्दरीकथा |
| ८. अज्ञातकर्त क | मलयसुन्दरीकथा |
| ९. धनेश्वर | सुरसुन्दरी-चरित्र |
| १०. नेमिचन्द्रसूरि | आख्यानमणिकोश |
| ११. सुमतिसूरि | जिनदत्ताख्यान |
| १२. जिनहर्षगणि | रयणसेहरनिवकहा |
| १३. वीरदेवगणि | महिवालकहा |
| १४. सोमचन्द्र | कथामहोदधि |
| १५. धर्मदासगणि | उपदेशमाला |
| १६. जयसिंहसूरि | धर्मोपदेशमालाविवरण |
| १७. हरिषेणाचार्य | ....बृ हत्कथाकोष |
| १८. हैविजयमणि | ....कथा-रत्नाकर |

संस्कृत कथा साहित्य के अन्तर्गत उपदेशात्मक एवं नीतिमूलक कथाओं का अक्षय स्रोत है। इसमें पंचतन्त्र के पाँच परिच्छेद उल्लेखनीय हैं - १. मित्रभेद, २. मिश्र सम्प्राप्ति, ३. काकोलूकीय, ४. लब्ध प्रणाश, ५. अपरीक्षितकारक। मित्र भेद की निम्नलिखित कथाएँ उल्लेखनीय हैं -

१. चित्रग्रीव नामक कपोतराज की कथा
२. ताम्रचूड नामक परिव्राजक तथा मूषिक की कथा
३. शाण्डिली द्वारा तिलविक्रय की कथा
४. शबर शूकर और श्रृ ंगाल की कथा
५. सागरदत्त-नामक व्यापारी के पुत्र की कथा
६. सोमिलक जुलाहे की कथा
७. बल का अनुसरण करने वाले श्रृ गाल की कथा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भिन्न सम्प्राप्ति-नामक द्वितीय तन्त्र में चित्रग्रीव नामक कपोत, हिरण्यक नामक भूषिक, लघुपतनक नामक काक, चित्रांग नामक हरिण तथा मन्थरक नामक कच्छप की कथा मुख्यारम्भ से उल्लेखनीय है। इसमें निम्नलिखित कथाएँ हैं -

१. बाक और उलूक की कलह-कथा।
२. बाघ की खाल ओढ़कर चरने वाले गधे की कथा।
३. चतुर खरगोश और हाथी की कथा।
४. दधिकर्ण नामक न्यायकर्ता मार्जार की कथा।
५. गौरेया और खरगोश की कथा।
६. तपस्वी द्वारा एक चुहिया को युवती का रूप प्रदान करने की कथा।
७. चोर का स्वागत करने वाले वृद्ध वणिक् की कथा।
८. भेकवाहन सर्प की कथा।
९. मित्रशर्मा नामक ब्राह्मण और तीन धूर्तों की कथा।
१०. कृष्णसर्प और चींटियों की कथा।
११. ब्राह्मण और सर्प की कथा।
१२. स्वर्णहंस और स्वर्णविहंग की कथा।
१३. कपोत और व्याघ्र की कथा।
१४. ब्राह्मण, चोर और पिशाच की कथा।
१५. एक राजपुत्र के पेट में रहने वाले सर्प की कथा।
१६. वीरधर रथकार की स्त्री एवं उसके उपपति की कथा।
१७. सिन्धुक नामक पक्षी और व्याध की कथा।
१८. सिंह, शृगाल और गुफा की कथा।
१९. घृतान्ध ब्राह्मण की कथा।

काकोलूकीय नामक तृतीय तन्त्र में काक और उलूक के जन्मजात वैरभाव के दृष्टान्त से युद्ध और सन्धि के सिद्धान्तों का विवरण है; इसके अन्तर्गत अधोलिखित कथाएँ प्राप्त होती हैं।

१. वानर तथा मगर की मैत्री कथा।
२. गंगदत्त नामक भेकराज और कृष्णसर्प की कथा।
३. कराल केसर नामक सिंह और धूसरक नामक शृगाल की कथा।
४. युधिष्ठिर नामक कुम्हार तथा राजा की कथा।
५. सिंहशावक और शृगालशावक की कथा।
६. ब्राह्मणी और लंगड़े की कथा।
७. महाराज नन्द और उसके मन्त्री वररुचि की कथा।
८. गधे और धोबी की कथा।
९. कृषक-पत्नी, ठग और शृगाली की कथा।
१०. घंटे और ऊँट की कथा।
११. सियार और सिंह की कथा।
१२. कुत्ते की कथा।

लब्ध प्रणाश नामक चतुर्थ तन्त्र में खगमुख नामक वानर तथा करालमुख नामक मगर की प्रमुख कथा वर्णित है। इसके निम्नलिखित हैं -

१. मणिभद्र नामक श्रेष्ठी तथा नापित की कथा।
२. ब्राह्मणी और नेवले की कथा।
३. सिद्धच्युत चक्रधर की कथा।
४. सिंहकारक तीन शास्त्रज्ञ ब्राह्मणों की कथा।
५. अलौकिक पण्डितों की कथा।
६. शतबुद्धि और सहस्रबुद्धि मत्स्यों की कथा।
७. संगीतज्ञ गधे और सियार की कथा।
८. मन्थन नामक जुलाहे की कथा।
९. सोमशर्म्मा के पिता की कथा।
१०. चन्द्रन पति और वानर-दल की कथा।
११. विकराल नामक वानर और राक्षस की कथा।
१२. त्रिस्तनी राजकुमारी की कथा।
१३. चण्डकर्म राक्षस द्वारा पकड़े गये ब्राह्मण की कथा।
१४. भारुण्ड नामक पक्षी की कथा।

पंचतन्त्र पर आधृत उपदेशात्मक कथा ग्रन्थ के रूप में हितोपदेश की सर्वाधिक लोकप्रियता है। इनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विभाग हैं - १. मित्रलाभ, २. सुहृदभेद, ३. विग्रह, ४. सन्धि। इसक अन्तर्गत सत्रह कथाओं को समाहित किया गया है। मित्रलाभ के अन्तर्गत कथाएँ हैं -

१. प्रस्तावना
२. लघुपतनक नामक कौए की कथा।
३. वृद्धव्याघ्र एवं लोभी पथिक की कथा।
४. चित्रांग नामक मृग तथा सुबुद्धि नामक कौए की कथा।
५. दीर्घकर्ण नामक विडाल की कथा।
६. चूडाकर्ण नामक परिव्राजक की कथा।
७. चन्दनदास नामक वणिक् की कथा।
८. भैरव नामक व्याप्त की कथा।
९. वीरसेन नामक राजा की कथा।
१०. कर्पूरतिलक नामक हाथी की कथा।

सुहृदभेद में निम्नलिखित कथाएँ हैं -

१. वर्द्धमान नामक वाणिक्, संजीवक नामक वृषभ तथा दमनक एवं करटक नामक श्रृगालों की कथा।
२. कीलोत्पाटी वानर की कथा।
३. कपूररपटक नामक रजक की कथा।
४. दुर्दान्त नामक सिंह तथा दधिकर्ण नामक विडाल की कथा।
५. घण्टाकर्ण नामक राक्षस का प्रवादमूलक आतंक तथा एक कुट्टनी द्वारा उसके आतंक से नागरिकों की मुक्ति।
६. कन्दर्पकेतु नामक संन्यासी, एक वणिक्, ग्वाला और उसकी व्यभिचारिणी स्त्री की कथा - उसमें अनुरक्त एक दण्डनायक तथा उसके पुत्र की कथा।
७. काकदम्पती और कृष्णसर्प की कथा।
८. दुर्दान्त नामक सिंह तथा एक सियार की कथा।
९. टिटहरी के जोड़े तथा समुद्र की कथा।

विग्रह के अन्तर्गत कथाएँ इस प्रकार हैं -

१. हिरण्यगर्भ नामक राजहंस, चित्रवर्ण नामक मयूर तथा दीर्घमुख नामक बगुले की कथा।
२. पक्षी और बन्दरों की कथा।
३. बाघ का खोल ओढ़कर खेत चरने वाले धोबी के गधे की कथा।
४. हाथियों का झुण्ड एवं बूढ़े खरगोश की कथा।
५. हंस, कौआ और एक पथिक की कथा।
६. कौआ, पथिक और एक ग्वाले की कथा।
७. उक बढ़ई, उसकी व्यभिचारिणी स्त्री और उसके जार की कथा।
८. नील में रंगे हुए एक सियार की कथा।
९. वीरवर नामक राजपुत्र एवं उसके द्वारा अपने पुत्र के बलिदान की कथा।
१०. चूड़ामणि नामक क्षत्रिय, नापित तथा भिक्षुक की कथा।

सन्धि के अन्तर्गत कथाएँ हैं -

१. हंस और मयूर के मेल की कथा।
२. संकट एवं विकट नामक हंस तथा उनके मित्र कम्बुग्रीव नामक कच्छप की कथा।
३. अनागत-विधाता, प्रत्युत्पन्नमति तथा यद्भविष्य नामक मत्स्यों की कथा।
४. समुद्रदत्त नामक वणिक्, रत्नप्रभा नाम की उसकी व्यभिचारिणी स्त्री और उनके सेवक की कहानी।
५. बगुले, साँप एवं नेवले की कथा।
६. महातपा नामक मुनि तथा चूहे की कथा।
७. वृद्ध बक, कर्कट एवं मत्स्यों की कथा।
८. देवशर्म्मा नामक ब्राह्मण और कुम्हार की कथा।
९. सुन्द एवं उपसुन्द नामक दो दानवों की कथा।
१०. एक ब्राह्मण एवं तीन धूर्तों की कथा।
११. मदोत्कट नामक सिंह एवं उसके तीन सेवकों कौआ, बाघ एवं सियार की कथा।
१२. मन्दविष नामक सर्प एवं मेंढकों की कथा।
१३. माधव नामक ब्राह्मण और उसके द्वारा पालित नेवले की कथा।

बृहत्कथा भी इस विधा का एक प्रशस्त

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रन्थ है। इसमें मनोरंजक कथाएँ पिरोयी गयी हैं। इस कथाकाव्य में उज्जयिनी नगरी के प्रशस्ति का वर्णन किया गया है। बृहत्कथा मंजरी में निम्नलिखित कथा शीर्षक उपलब्ध हैं -

१. प्रथम लम्बक-कथापीठ (गुणाढ्य का परिचय)
२. द्वितीय लम्बक-कथामुख (उदयन-कथा)
३. तृतीय लम्बक-लावणक (वासवदत्ता का अग्निकाण्ड में निधन)
४. चतुर्थ लम्बक-नरवाहन-जन्म (उदयन को नरवाहन नामक पुत्ररत्न की प्राप्ति जो भविष्य में विद्याधरों का चक्रवर्तित्व प्राप्त करेगा।)
५. पंचम लम्बक-चतुर्दारिका (शक्तिवेग नामक विद्याधर द्वारा आत्मवृत्तकथन के क्रम में चार कन्याओं की प्राप्ति का वर्णन)
६. षष्ठ लम्बक-सूर्यप्रभ (सूर्यप्रभ द्वारा एक सामान्य राजा के पद से ऊपर उठकर सम्राट् पद की प्राप्ति के उपाख्यान का वर्णन)
७. सप्तम लम्बक-मदनमंजुका (नरवाहनदत्त का मदनमंजुका के साथ विवाह की कथा)
८. अष्टम लम्बक-वेला (मानसवेग नामक विद्याधर द्वारा मदनमंजुका का अपहरण)
९. नवम लम्बक-शशांकवती (मदनमंजुका के वियोग से उदास नरवाहनदत्त के सान्त्वनार्थ एक मुनि द्वारा शशांकवती के उपाख्यान का कथन)
१०. दशम लम्बक-विषमशील (टेण्टाकराल, खण्ड कापालिक, यक्षिणीसमागम, कन्याचतुष्टयप्राप्ति तथा मूलदेव प्रभृति की कथाएँ)
११. एकादश लम्बक-मदिरावती (नरवाहन के प्रति द्विजपुत्र द्वारा मदिरावती की प्राप्ति के उपाख्यान का कथन)
१२. द्वादश लम्बक-पद्मावती (गोमुख द्वारा नरवाहन के प्रति विद्याधरेश्वर मुक्ताफलकेतु और पद्मावती की कथा का आख्यान)
१३. त्रयोदश लम्बक-पंच (नरवाहन द्वारा पाँच विद्याधर कन्याओं के साथ विवाह)
१४. चतुर्दश लम्बक-रत्नप्रभा (नरवाहन द्वारा रत्नप्रभा के साथ विवाह, कर्पूरद्वीप की यात्रा और वायुयान द्वारा प्रत्यावर्तन)
१५. पंचदश लम्बक-अलंकारवती (नरवाहन द्वारा अलंकारवती से विवाह, श्वेतद्वीप की यात्रा तथा यहाँ भगवान् श्रीनारायण का दर्शन एवं स्तवन)
१६. षोडश लम्बक-शक्तियशः (नरवाहन द्वारा शक्तियशस् नामक कन्या की प्राप्ति)
१७. सप्तदश लम्बक-महाभिषेक (नरवाहन द्वारा मन्दरदेव का पराजय, पाँच कुमारियों के साथ विवाह तथा उसका महाभिषेक)
१८. अष्टादश लम्ब-सुरतमंजरी (अवन्तिवर्धन का सुरतमंजरी से विवाह)

कथासरित्सागर में कथावस्तु का विभाजन इस प्रकार किया गया है -

| | |
|---|---|
| प्रथम लम्बक | कथापीठ |
| द्वितीय लम्बक | कथामुख |
| तृतीय लम्बक | लावाणक |
| चतुर्थ लम्बक | नरवाहनदत्त की गाथा |
| पंचम लम्बक | चतुर्दारिका |
| षष्ठ लम्बक | मदनमंजुका |
| सप्तम लम्बक | रत्नप्रभा |
| अष्टम लम्बक | सूर्यप्रभा |
| नवम लम्बक | अलंकारवती |
| दशम लम्बक | शक्तियशाः |
| एकादश लम्बक | वेला |
| द्वादश लम्बक | शशांकवती |
| त्रयोदश लम्बक | मदिरावती |
| चतुर्दश लम्बक | पंच |
| पंचदश लम्बक | महाभिषेक |
| षोडश लम्बक | सुरतमंजरी |
| सप्तदश लम्बक | पद्मावती |
| अष्टादश लम्बक | विषमशीला |


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संस्कृत कथा साहित्य की यह धारा अधाधि चलती आ रही है। इस दिशा में प्रारम्भिक प्रयत्न करने वालों में प्रमुख हैं -

म.म.पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, पं. सूर्यनारायणाचार्य, पं. बलदेव उपाध्याय, बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते आदि। इस परम्परा को विस्तार देने वाले लेखकों में पं. गणेश शर्मा (डुंगरपुर, राजस्थान), श्रीधर प्रसाद पन्त सुधांशु (पीलीभीत, उ.प्र.), क्षमाराव, हरेकृष्ण शास्त्री, डॉ. रेवाप्रसाद द्विवेदी, केशवचन्द दास, पद्मशास्त्री, डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, अभिराज राजेन्द्र मिश्र और डॉ. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठी प्रमुख हैं। संस्कृत कथा साहित्य की यह धारा पूरे भारतीय कथा साहित्य को एक सक्षम दृष्टि प्रदान करने की सामर्थ्य रखती है।

*निदेशक, साहित्य अकादमी, भोपाल - ४६२००३*



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. (श्रीमती) राजरानी शर्मा

# हिन्दी कहानी की परम्परा

'कहानी' शब्द के साथ ही एक ऐसा बिम्ब मन प्राण को उत्कंठित करता है जिसमें भाषा सौकर्य भावनाओं की भव्य ललित संकुलता और मनुष्य मन की प्रहेलिकाओं को हल करने की उद्दाम लालसा हो ऐसी रचना... और ऐसी कृति केवल हमारी मनस क्षुधा को ही शान्त नहीं करती बल्कि हमारी चिंतन राशि को भी समृद्ध करती हुई हमारे मन को पर्त दर पर्त समझने की उत्कटेच्छा को ही तृप्त करती है। हिन्दी कहानी भी सरलता के साथ भाव शबलता की साक्षी बनी अपनी विशिष्ट पहचान साहित्य जगत में बनाए हुए है।

हिन्दी कहानी की मणि रत्न गुहा में प्रवेश करें तो पहला आलोक भारत की प्राचीन कथा परम्परा का ही दिखता है जिसमें गुणाढ्य की वृहत्कथा: 'कथा सरित्सागर', 'पंचतंत्र कथाएं', 'हितोपदेश' और जातक कथाएं आती हैं। खड़ी बोली की हिन्दी कहानी का आरम्भ उस समय हुआ जब पाश्चात्य साहित्य के संसर्ग से गद्य लेखन आरम्भ हुआ था। इंशा अल्ला खां की 'रानी केतकी की कहानी' स्वरूप और कथ्य में भिन्न होते हुए भी पहली कहानी मानी जाती है। वास्तव में अंग्रेजी से बंगला में हुए अनुवाद द्वारा


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी में कहानी लिखनेकी प्रेरणा मिली। उन्नीसवीं शताब्दी में अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी आदि भाषाओं में कहानी का अच्छा विकास हो चुका था। एडगर एलेन पो, किंपलिंग, गाल्सवर्दी, वेनेट, एच.सी. वेल्स, मोपांसाँ, अलैक्जैण्डर, पुश्किन, चेखव आदि की कहानियाँ विख्यात हो चुकी थीं। इनका प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव हिन्दी कहानी के विकास में परिलक्षित होता है। इसीलिए हिन्दी कहानी में दिखाई पड़ने वाला कहानी का व्यवस्थित संघटन, घटना का प्रारम्भ, विकास परिणति कथ्य के रूप में जीवन की घटना के किसी अंश का केन्द्रीकरण, प्रतिपादन शैली इत्यादि लक्षण प्राचीन भारतीय परम्परा के आख्यानों से भिन्न प्रकार के हैं। 'नासिकेतोपाख्यान', 'रानी केतकी की कहानी' को कहानी के तत्वों के अभाव में कहानी नहीं माना जा सकता। भारतेन्दु की 'एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न', राधाचरण गोस्वामी की 'यमलोक की यात्रा' हिन्दी की आरम्भिक कहानियाँ कही जा सकती हैं, किन्तु इनमें कहानी कला के उन तत्वों का अभाव मिलता है जो कहानी को कहानी संज्ञा से मण्डित करते हैं। वास्तव में हिन्दी कहानी का प्रारम्भ 'सरस्वती' के सन् १९०० में प्रकाशन से होता है जिसमें 'इन्दुमति' प्रकाशित हुई थी। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह कहानी भी किसी बंगला कहानी की ही छाया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की लिखी मौलिक हिन्दी कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय' (१९०३) माधवराव सप्रे की लिखी 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिन्दी की प्रथम कहानी माना गया है। यह तकनीक और प्रतिपाद्य दोनों दृष्टियों से 'आधुनिक कहानी' से सादृश्य रखती है। 'दुलाई वाली' (१९०७) में छपी श्रीमती बंग महिला की कहानी भी मौलिक मानी गई है।

सन् १९०० में 'सरस्वती' फिर 'इन्दु' पत्रिकाओं के प्रकाशन से हिन्दी कहानी रचना को बड़ा प्रोत्साहन मिला। जयशंकर प्रसाद की 'ग्राम' (१९११), प्रेमचन्द की 'पंचपरमेश्वर' (१९१६), विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' की 'रक्षाबन्धन' (१९१३), चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' (१९१५) उल्लेखनीय हैं। प्रेमचन्द की कहानी 'पंचपरमेश्वर' यद्यपि १९१७ में 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई, तथापि प्रेमचन्द उससे पहले ही इस प्रकार की कहानियाँ उर्दू में लिखते थे। अतएव सन् १९११ में प्रसाद जी की 'ग्राम' कहानी के छपने से यह माना जा सकता है कि हिन्दी में कहानी की परम्परा चलाने का कार्य प्रसाद जी द्वारा हुआ। कहना न होगा कि चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी की तीन कहानियाँ - 'उसने कहा था', 'सुखमय जीवन' और 'बुद्ध का कांटा' में 'उसने कहा था' आरम्भिक काल की रचना होते हुए भी हिन्दी कहानी साहित्य का अमूल्य अंग सिद्ध हुई। कहानी की संरचना, जीवन्त वातावरण, बलप्रेम की अमिट छाप और उसके लिए कुरबानी देशभक्ति और देशकाल के साथ 'सस्पेंस' की दृष्टि से भी यह एक उत्कृष्ट कहानी है।

हिन्दी कहानी ने अत्यन्त तीव्र गति से साहित्य जगत में अपनी प्रतिष्ठा और पठनीयता को सिद्ध किया। प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कथा साहित्य की कृतियाँ संख्या में कम होते हुए भी मील का पत्थर सिद्ध हुईं।

प्रेमचन्दकालीन रचनाकारों में स्वयं प्रेमचन्द, विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' तथा सुदर्शन हिन्दी कहानी साहित्य की वृहत्त्रयी कहलाते हैं।

मुंशी प्रेमचन्द ने कहानियों की दिशा और दशा बदलने के लिए क्रांतिकारी परिवर्तन किये। कहानी समाज का आईना बन गई और संवेदनशील यथार्थ को किसी न किसी सामाजिक पात्र के माध्यम से साहित्य के पृष्ठों पर उतार कर तत्कालीन भारतीय समाज के यथार्थ रूप को अमर करता रहा। गांधीजी के हृदय परिवर्तन के दर्शन को प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की नई सोच के साथ उतारा। वहीं जमींदार, महाजन और अधिकारी वर्ग द्वारा शोषित किसान और मजदूर की छटपटाहट को शब्द देकर अपनी द्रवित हृदय लेखन शैली से कहानियों की दिशा बदल की। सामाजिक रूढियों की चक्की में पिसती पीड़ित गरीब जनता अस्पृश्यता के महारोग को झेलती दलित चेतनाएं अपनी पूरी वेदना को प्रेमचन्द की कलम से मुखर करा पाईं। प्रगति और नारी के अन्तर्द्वन्द्व को विषमताओं और सामाजिक मान्यताओं के दबाव को अपनी सशक्त लेखनी से व्यक्त करते हुए प्रेमचन्द ने प्रेम, करुणा, त्याग के उच्चादर्शों से सच्चो भारतीयता की छवि अपने कथा संसार में उतारी है। अपनी लगभग तीन सौ कहानियों में पूरे समाज की भावनाओं को स्वर देते हुए प्रेमचन्द ने 'पूस की रात', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'नमक का दरोगा', 'पंचपरमेश्वर', 'मंत्र', 'बड़े घर की बेटी', 'कफन', 'सद्‌गति', 'बड़ेभाई', 'ईदगाह', 'बूढ़ी काकी' जैसी अमर कहानियों से हिन्दी कथा साहित्य को घटना प्रधान होते हुए चरित्रप्रधान एवं मानसिक वेदना का साक्षी बनाकर अद्‌भुत कार्य किया है। एक संयत, साफ-सुथरी सहज ग्राह्य एवं सशक्त भाषा का सूत्रपात करके प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य के शिल्प में क्रान्तिाकारी परिवर्तन किया। कहानी को साहित्य की विश्वसनीय, पठनीय एवं हृदय के झकझोरने वाली कृति बना कर अपनी अमिट छाप छोड़ने में प्रेमचन्द असाधारण रहे हैं। इसी प्रकार विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक' की कहानियों में आदर्श और यथार्थ का समन्वय है। 'ताई', 'रक्षाबन्धन', 'माता का हृदय', 'कृतज्ञता' आदि कहानियों में मानव हृदय की छाप तथा भावनाओं की सूक्ष्म व्यंजना है।

इसी वृहत्त्रयी के अन्य कथाकार सुदर्शन की कहानियां भी प्रेमचन्द के समान घटना प्रधान सहज प्रवाहयुक्त और मानवीय संवेदनाओं का मार्मिक अंकन करने वाली हैं। 'घर की जीत', 'अलबम', 'आशीर्वाद', 'न्यायमंत्री', 'एथेन्स का सत्यार्थी', 'कवि की स्त्री', 'राजपूतानी का प्रायश्चित' आदि कहानियाँ अति प्रसिद्ध हुईं।

प्रेमचन्द की शैली और विचारधारा से प्रेरित होकर लिखने वालों में बाबू वृन्दावनलाल वर्मा की शरणागत, कटाफटा झण्डा, कलाकार का दण्ड, शेरशाह का न्याय, आचार्य चतुरसेन शास्त्री की दुखवा में कासे कहूँ, सफेद कौआ, ज्वालादत्त शर्मा की विधवा, गोविन्दवल्लभ पंत की वासवदत्ता, सियारामशरण गुप्त की बैल की बिक्री, भगवतीप्रसाद बाजपेयी की मिठाईवाला, निंदिया आदि तथा रामवृक्ष बेनीपुरी, जहूर बख्श, उषादेवी मित्रा आदि अनेक अन्य कहानीकारों की रचनाएं भी इस समय प्रसिद्ध हुईं।

प्रसाद के समान प्रवृत्ति को लेकर चलने वाले कहानी लेखकों में रायकृष्णदास, चण्डीप्रसाद हृदयेश, विनोदशंकर व्यास, राजा राधिकारमण प्रसादसिंह आदि मुख्य हैं। रायकृष्णदास की कहानियों में प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति का सौन्दर्य दर्शनीय है। चण्डीप्रसाद हृदयेश की रचनाओं में संस्कृत गद्यकाव्य शैली का प्रभाव है। विनोदशंकर व्यास एवं राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह की कहानी कानों में कंगना विशेष लोकप्रिय हुई।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने प्रेमचन्द एवं प्रसाद से भिन्न अपनी एक स्वतंत्र परम्परा चलायी। इनकी कहानियां विशेषत: क्रांतिकारी संघर्ष को लेकर लिखी गई। इनकी अधिकांश कहानियों में मनुष्य की कुत्सित वृत्तियां, अन्तर्द्वन्द्व तथा बलहीनता की भावभूमि पर विलक्ष व्यंग्यात्मक, कुतुहलवर्धक है।

सन् १९३० तक आते-आते हिन्दी कथा रचना संसार में नये स्वर सुनाई दिये। कथा में विस्तार की अपेक्षा मानसिकता चित्रण प्रमुख हो


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया। परिवार एवं समाज, नारी और पुरुष के विभिन्न प्रकार के सम्बन्धों तथा अन्तर्द्वन्द्व का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण करनेकी प्रवृ त्ति चली तो प्रतिनिधित्व जैनेन्द्र ने किया। जैनेन्द्र की 'पत्नी', 'खेल', 'चार', 'जान्हवी', 'पाजेब', आदि कहानियाँ हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखती हैं। जैनेन्द्र ने प्रचुर मात्रा में कहानियाँ लिखीं। इसी प्रकार मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों तथा गूढ़ रहस्यों को परखनेका यत्न अज्ञेय की कहानियों में दिखाई पड़ता है। बाह्य परिवेश में भ्रांत व्यक्ति के आंतरिक अकेलेपन, घुटन एवं अन्तर्द्वन्द्व का सूक्ष्म एवं प्रभावी चित्रण अज्ञेय ने किया। इनकी 'रोज', 'गैंग्रीन', 'कोठरी की बात', 'छोड़ा हुआ रास्ता', 'पगोड़ा वृ क्ष', 'पुरुष का भाग्य' आदि कहानियाँ सुपठित एवं सुप्रसिद्ध रहीं। अज्ञेय ने कहानी शिल्प में 'विपथगा', 'शरणार्थी',' परम्परा', 'अमरवल्लरी' आदि अनेक कहानी संग्रह देकर हिन्दी कथा साहित्य को समृ द्ध किया।

इसी क्रम में फ्रायड के मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्त से प्रभावित होकर इलाचन्द्र जोशी ने मध्यमवर्गीय ह्रासोन्मुख समाज के व्यक्तियों का विश्लेषण किया - 'चरणों की दासी', 'रोगी', 'परित्यक्ता', 'जारज', 'अनाश्रित', 'पतिव्रता' या 'पैशाची' जैसी कहानियों में मानसिक कुंठाओं तथा व्यक्ति की अहंवृ त्ति का चित्रण मिलता है।

इसी श्रृ ंखला में रामप्रसाद घिल्डियाल पहाड़ी की 'राजरानी', 'हिरन की आँखें' तथा 'तमाशा' कहानी मनोवैज्ञानिक चित्रण की दृ ष्टि से पठनीय हैं। यशपाल ने मार्क्सवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हुए कुतुहलवर्द्धक कहानियाँ लिखीं। पठनीयता की दृ ष्टि से सहज शैली में मध्यवर्गीय जीवन को केन्द्रित करके लिखी इनकी कहानियाँ 'आदमी का बच्चा', 'परलोक', 'कर्मफल', 'पतिव्रता', 'प्रतिष्ठा का बोझ', 'परदा', 'काला आदमी', 'फूलों का कुर्ता', 'सच बोलने की भूल' कहानियाँ उल्लेखनीय हैं।

मार्क्सवादी दृ ष्टिकोण तथा मनोविश्लेषणात्मक चरित्र व्याख्या की कहानी लिखने वाले 'उपेन्द्रनाथ अश्क' ने निम्नवर्गीय अभावग्रस्त जीवन संकटों का मार्मिक चित्रण करते हुए उर्दू एवं पंजाबी की छाया में कहानियाँ लिखी हैं। 'डाची', 'आकाशचारी', 'नासूर', 'अंकुर', 'खाली डिब्बा', 'उदासीन शाम' जैसी लगभग दो सौ कहानियाँ लिखकर साहित्य को समृ द्ध किया है। भगवतीचरण वर्मा की भाषा में व्यंग्यात्मक कौतुहल के साथ लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध कहानियाँ दीं जिनमें 'प्रायश्चित', 'मुगलों ने सल्तनत बख्श दी' तथा 'दो बांके' आदि हैं। इसी तरह चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ने रोचक और विशिष्ट प्रतिपादन शैली में 'मास्टर साहब' तथा 'चौबीस घण्टे' जैसी कहानियाँ दीं। विष्णु प्रभाकर ने सामाजिक व्यवस्था पर मार्मिक ढंग से लिखा। उनकी अविस्मरणीय कहानियाँ 'धरती अब भी घूम रही है', 'रहमान का बेटा', 'जज का फैसला', उत्कृष्ट कोटि की हैं। प्रसिद्ध उपन्यासकार अम तलाल नागर की 'गोरखधन्धा', 'गरीब की हाय' आदि अनेक कहानियाँ लोकप्रिय हुईं। प्रगतिवादी कथाकारों में रांगेयराघव की प्रसिद्ध कहानी 'गदल' की प्रसिद्धि सर्वविदित ही है।

सुभद्राकुमारी चौहान, होमवती देवी, कमलादेवी चौहान, उषामित्रा, चन्द्रकिरण, सोनरिक्सा के साथ वर्तमान समय मे महिला कथाकारों में मालती जोशी, उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, दीप्ति खण्डेलवाल, चित्रा मुद्‌गल, निरूपमा सेवती, म दुला गर्ग, कुसुम अंसल, उषा यादव, मेहरूनिसा परवेज आदि का नाम उल्लेखनीय है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में आधुनिक जीवन की संश्लिष्ट मनोवैज्ञानिकता का समस्यापरक यथार्थ उभरकर आया है। निम्नवर्गीय व्यक्ति की अपने विकासार्थ किये जाने वाले यत्नों में उत्पन्न होने वाले अवरोध से लेकर उच्चवर्गीय व्यक्ति के जीवन में विद्यमान विसंगति, कुण्ठा, जीवन की शकुंलता में व्यक्ति का अकेलापन, उद्योगरत नारी के विविध पक्षीय


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सम्बन्ध, राजनीतिक भ्रष्टाचार, परिवारों का विघटन आदि प्रमुखता से चित्रित हैं। रचना परिमाण तथा विषय क्षेत्र की व्याप्ति की दृष्टि से आज की कहानी का कथ्य क्षेत्र विशाल हो गया है। कुछ नाम परिगणन की दृष्टि से मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, कमल जोशी, उषा प्रियंवदा, शिवप्रसाद सिंह, रघुवीर सहाय, रामकुमार भ्रमर, विजय चौहान, धर्मवीर भारती, भीष्म साहनी, लक्ष्मीनारायण लाल, हिमांशु जोशी, हरिशंकर परसाई, महीपसिंह, श्रीकान्त वर्मा, कृष्ण बलदेव वैद, ज्ञानरंजन सुरेश सिन्हा, गिरिराज किशोर, भीमसेन त्यागी, इब्राहीम शरीफ, विश्वेश्वर, महेन्द्र भल्ला, रवीन्द्र कालिया, प्रयाग शुक्ल, गोविन्द मिश्र, विजयमोहन सिंह आदि प्रमुख हैं।

हिन्दी कहानी की परम्परा में 'नयी कहानी' का उदय १९५०-५३ के आसपास प्रचलित हुआ। वास्तव में 'नयी कहानी' एक आन्दोलन के रूप में सामने आयी। इसके विषय में हिन्दी जगत में तर्क वितर्क भी हुआ मगर अपने स्वरूप, कथ्य एवं ध्येय की दृष्टि से नयी कहानी विशिष्ट है। नयी कहानी में व्यक्ति मन के यथार्थ को जगह मिली। वह बाहरी परिवेश के दबाव में बनते बिगड़ते व्यक्ति के जीवन के, मन के विविध सम्बन्धों, मूल्यों एवं संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है। जीवनगत निस्सारता और खोखलेपन को नयी कहानी का लेखक उजागर करता है और पुराने खोखले मूल्यों पर आघात करता है। आज का कहानीकार जीवन के अन्तर और बाह्य में स्थित तनाव, द्वन्द्व और त्रासद स्थिति के प्रति पाठक को और सजग करता है। कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया', मोहन राकेश की 'मलवे का मालिक' राजेन्द्र यादव की 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' अमरकान्त की 'डिप्टी कलेक्टर' जैसी कहानियों में जीवनगत द्वन्द्व और मूल्य विघटन का यथार्थ मार्मिक रूप से अंकित हुआ है। इनमें नये ढंग का आक्रोश और मुक्त चिन्तन है तथा आधुनिकता बोध के साथ-साथ समस्त मानवीय मूल्यों के प्रति नवीन दृष्टि है।

शिल्प की दृष्टि से भी 'नयी कहानी' की अपनी विशिष्ट शैली है। अलंकारविहीन और बोलचाल की भाषा के साथ पात्रों की छोटी-छोटी क्रियाओं में ही पूरी कहानी की सांकेतिकता पूर्ण संरचना रहती है। नयी कहानी के तीन स्थूल वर्ग किये जा सकते हैं।

ग्रामीण वातावरण को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानी 'आंचलिक कहानी' कही जा सकती है। फणीश्वरनाथ रेणु की 'तीसरी कसम', 'ठुमरी', 'लाल पान की बेगम', शैलेष मटियानी की 'प्रेतमुक्ति', 'माता', शिवप्रसाद सिंह की 'नीचजात', 'धारा', 'मुरदा सराय' मार्कण्डेय की 'भूदान', शेखर जोशी की 'तर्पण', राजेन्द्र अवस्थी की 'अमरबेल' तथा रामदरश मिश्र और लक्ष्मीनारायण लाल की अनेक आंचलिक कहानियाँ हैं।

नगरीय परिवेश में निर्मल वर्मा की 'पराये शहर में', 'अंतर', 'परिन्दे', 'लवर्स', 'लंदन की रात', मोहन राकेश की 'वासना की छाया', 'काला रोजगार', भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत', 'खून का रिश्ता' श्रीकान्त वर्मा की 'शवयात्रा' में नगरबोध की अनुभूति प्रधान है।

कस्बे के लोगों की अनुभूति का चित्रण करने वाली कहानियाँ हैं - कमलेश्वर 'मुरदों की दुनिया', 'तीन दिन पहले की बात' धर्मवीर भारती की 'सावित्री नं दो', 'गुलकी बन्नो', कृष्णा सोबती की 'यारों के यार', अमरकान्त की 'जिन्दगी और जोंक', 'दोपहर का भोजन'। वर्तमान समाज की विकृतियों, सामाजिक विषमता, दोहरे मूल्य, आरोपित प्रतिष्ठा, बाजारवाद आदि का उपहास करते हुए अनेक कहानियाँ लिखीं गई हैं।

इस दिशा में अनेक उल्लेखनीय कहानीकार हैं - गंगाप्रसाद विमल, दूधनाथ सिंह, राजकमल


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौधरी, गिरिराज किशोर, सुरेश सिन्हा, ज्ञानरंजन महानगर की भीड़ में विवशता के बोझ से दबे व्यक्ति की घुटन, छटपटाहट, उच्चवर्गीय महत्वाकांक्षाओं को लेकर संघर्षरत व्यक्तिवादी स्वार्थ पर मध्यवर्गीय व्यक्तिकी मनोवृत्ति, परिवार व समाज के बीच चक्कर काटता व्यक्ति, कामकाजी नारी के परिवार व काम केबीच बनते बिगड़तेसम्बनधों की विडम्बनाएं, राजनैतिक नेताओं के दो मुंहे चरित्रों से उत्पन्न हताशा और आक्रोश के भाव इनकी कहानियों में दिखाई देते हैं।

साठोत्तरी कहानी में 'समानान्तर कहानी', 'सचेतन कहानी', 'अकहानी' जैसे अनेक आन्दोलन चलाये गए जिनमें फ्रांस, जर्मनी मेंप्रचलित एक्टिविस्ट मूवमेण्ट और 'एण्टी मूवमेण्ट' का प्रभाव परिलक्षित होता है। इन आन्दोलनों से कमलेश्वर, गंगाप्रसाद विमल, महीप सिंह, रवीन्द्र कालिया, ज्ञानरंजन एवं परेश आदि प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध रहे हैं।

आधुनिक दौर की कहानी अर्थात् इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक तक आते-आते कहानी सूक्ष्म संवेदना को केन्द्र में रखकर लिखी जाने लगी। जिससे कथ्य की कृत्रिमता एवं कथाप्रधानता के अभाव ने विशुद्ध अनुभूति का नया रचना संसार दिया। कहानी में भी 'एक बूंद सहसा उछली' जैसी घटनाओं के सूक्ष्म अति सूक्ष्म रूप को सहजता से चित्रित करने का प्रयास किया गया। उदयप्रकाश की 'पीली छतरी वाली लड़की' हो या 'वारेन हेस्टिंग्स का सांड' हो, कहानी आधुनिक मूल्य बोध और पाठक की मानसिकता का उत्कृष्ट दर्पण रही।

इस प्रकार सम्पूर्ण भारतीय मूल्यों, सरोकारों, आदर्श और यथार्थ के द्वन्द्वों वैयक्तिक विडम्बनाओं, मध्यवर्गीय महत्वाकांक्षाओं के चित्रण से होती हुई हिन्दी कहानी की प्रवाहमान धारा आज भी अपने पर और अपर दोनों छोरों को संभाले हुए है। व्यक्ति मन ही तब उसके केन्द्र में था व्यक्ति मन ही आज उसके केन्द्र में है। तब भी काल सापेक्ष थी आज भी काल सापेक्ष है....। अपने मूल स्रोत से जुड़ कर अपने नवीनतम लक्ष्यों की तरफ उन्मुख परम्परा का यह प्रवाह सत्य का प्रवाह है और यही हिन्दी कहानी का भी प्रवाह है।

*हिन्दी प्राध्यापक, शा. कमलाराजा कन्या*
*स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, ग्वालियर*
*मोबा. ९४२५३३९७७१*


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. अवधेशकुमार चन्सौलिया

# हिन्दी कहानी का नया परिदृश्य

नई कहानी का आरम्भ स्वाधीनता के पश्चात से ही प्रारम्भ हो गया था। क्योंकि मोहभंग की प्रक्रिया स्वतंत्रता के पश्चात सन् १९६० के आसपास प्रारम्भ हो गई थी। सन् १९६२ के चीनी आक्रमण ने भारतीय जनमानस में काफी बदलाव ला दिया था। आजादी के बाद बढ़ती बेरोजगारी, राजनैतिक भ्रष्टाचार, मँहगाई, नौकरशाही, तीसरे महायुद्ध की आशंका, अनैतिकता आदि ने जनमानस को उद्वेलित करना प्रारम्भ कर दिया। यहीं से कहानी के कथ्य एवं शिल्प में बदलाव प्रारम्भ हो गया और ऐसी कहानी नई कहानी या समकालीन कहानी कही जाने लगी। यह कहानी आत्म-सीमित और व्यक्तिवादी न होकर सामाजिक सरोकारों से लैस हो गई। "अब तो वह अपने माध्यम से समय, समाज, परिस्थिति और पूरे परिवेश को मूर्त करने, उसके आमने-सामने आने और उसमें शामिल होकर उसकी चुनौतियों को स्वीकार करने और उनसे टकराने का हथियार हो गई है।"[1] समकालीन कहानीकार अपने समय के प्रति बेहद सजग और सतर्क हैं। वह सामाजिक स्थितियों, परिस्थितियों का चश्मदीदगवाह ही नहीं अपितु भोक्ता भी है। तेजी से बदलते समाज, मान्यताओं और विश्वासों



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को वह पूरी शिद्दत के साथ जी रहा है। वह सामाजिक विसंगतियों से जूझ रहा है, टक्कर ले रहा है और प्राप्त अनुभवों को कहानी में व्यक्त कर रहा है। अनुभव की यही प्रामाणिकता समकालीन कहानी की ताकत है।

आज के तेजी से बदलते सामाजिक परिद् श्य में भोगवादी संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी भोगवादी प्रव त्ति के कारण समाज में भ्रष्टाचार, बेकारी, स्वार्थपरता, मूल्यहीनता, आतंकवाद और स्वच्छंद यौनाचार को बढ़ावा मिला है। स्त्री विमर्श ने स्त्री को इतना अधिक स्वच्छन्द कर दिया कि उसने सारी सामाजिक मर्यादाओं को तोड़कर उन्हें ताक पर रख दिया। अब यह शुचिता, पवित्रता, लज्जा, सहनशीलता जैसे शब्दों की खिल्ली उड़ाती है। समकालीन कहानियों में स्त्री के सम्बन्ध में इतना खुलकर पुरुष लेखक नहीं लिखते, जितना महिला लेखिकाएं लिख रहीं हैं। वे सेक्स की स्वतंत्रता को ही स्त्री स्वतंत्रता समझ बैठी है। "सेक्स और नैतिकता आज के बदलते परिवेश में अपनी पुरानी धारणाओं से मुक्त हैं, क्योंकि आधुनिक युग की द ष्टि विज्ञानवादी, गति विकासवादी, राह भौतिकवादी और गन्तव्य भोगवादी है।"[२] समकालीन कहानी के प्रारम्भ से ही ऐसी कहानियाँ प्रारम्भ होने लगी थीं। कुलभूषण की कहानी 'निश्चय' में अविवाहिता नायिका यह निश्चय करती है कि वह अपने गर्भ को नष्ट करा देगी, लेकिन उस प्रेमी से विवाह नहीं करेगी। कृष्ण बलदेव वैद की कहानी 'त्रिकोण' में पति अपनी पत्नी को दूसरेके साथ बिस्तर पर देखते हुए भी तटस्थ रहता है। स्त्री के नंगेपन को सचित्र विस्तार से वर्णन करने वाली कहानी है नवरंग जायसवाल की - 'तुम अपना बयान जारी रखो'। हंस, जनवरी १९९५ में प्रकाशित इस कहानी की नायिका द्रौपदी को छात्र-छात्राओं और प्राध्यापकों के मध्य नग्न प्रदर्शन करने के अपराध में पुलिस गिरफ्तार करती है। वह अदालत में विस्तार से दंगाइयों द्वारा किये गए अत्याचारों को गुप्तांगों का नाम ले-लेकर बताती है। इस वीभत्सता को इतना विस्तार देने की क्या आवश्यकता थी। कहानीकार एक पंक्ति में बलात्कार का जिक्र कर उसकी मानसिक स्थिति को, उसके परिणाम को विस्तार दे सकता था।

समकालीन कहानीकारों में कुछ ऐसे भी हैं जो श्रेष्ठ सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक कहानियाँ लिख रहे हैं। वे जन समस्याओंका यथार्थ चित्रण कर लोगों को चिन्तन के लिए विवश करती हैं। गिरिराज किशोर की कहानी 'गुलाब जामुन खाइये' एक सामान्य मजदूर की बेबसी की कहानी है। मजदूर के पास सात रुपये हैं, फोटो दस रुपये की खिंचती है। लड़की पर्याप्त रुपयों के अभाव में गुलाब जामुन नहीं खा पाती। धीरेन्द्र अस्थाना की 'भूत', 'मुहिम', 'युद्ध', 'छलावा', शरणबन्धु की 'कुत्ते' और भीष्म साहनी की कहानी 'पटरियाँ' आर्थिक विषमता की द् ष्टि से उल्लेखनीय हैं। गोविन्द मिश्र की 'सुनन्दो की खोली', चित्रा मुद्गल की 'चेहरे', 'भूख', राकेश वत्स की 'ताजा रोटी की महक', 'छुट्टी का एक दिन', सिम्मी हर्षिता की 'भूख की बिक्री' में भी गरीबी की विवशताओं को पूर्ण संवेदना के साथ रेखंकित किया गया है। शिक्षित बेरोजगारी से सम्बन्धित कहानियों में भीमसेन त्यागी की 'जमी हुई रात', मंजू भगत की 'नालायक बहू', सिम्मी हर्षिता की 'चक्रव्यूह', रामदरश मिश्र की 'एक रात', दीप्ति खण्डेलवाल की 'विषपायी' जैसी अनेक कहानियाँ हैं जिनमें बेकारी के कारण सम्बन्धों का रूप अमानवीय हो जाता है।

ग्रामीण समाज की परिवर्तित दशाओं को शिवप्रसाद सिंह, कमलेश्वर, मार्कण्डेय, रामदरश मिश्र, काशीनाथ सिंह, भीमसेन त्यागी, विवेकीराय, असगर बजाहत, मिथिलेश्वर आदि कथाकारों ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी कहानियों में सूक्ष्म और गहन संवेगों के साथ रूपायित किया है। इन कहानियों में ग्रामीण और महानगरीय जीवन-शैली का द्वन्द्व उभरकर सामने आता है। गाँव के बुजुर्ग महानगरीय जीवन को देखकर दाँतो तले उंगली दबाकर वापस गाँव चले जाते हैं।

समकालीन कहानी पाश्चात्य भोगवादी दर्शन से विकसित हुई है। इस दृ ष्टि ने भारतीय मनीषियों की पुरातन अवधारणा को पूरी तरह बदल डाला है। सन् १९९० के बाद से चली उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण की बयार ने कहानियोंकी भाव-भूमि को बहुत अधिक मात्रा में प्रभावित किया है। 'लिव इन रिलेशनशिप' का नया कनसेप्ट अब भारतीय समाज को तेजी से प्रभावित कर रहा है। अब समलैंगिक सम्बन्धों को भी दबे स्वर में ही सही, स्वीकृति मिलने लगी है। उत्तर आधुनिकता में जीने की आजकल मुहिम सी चल रही है। कुछ लोग पुराने जीवन मूल्यों की वकालत कर रहे हैं और कुछ उत्तर आधुनिक जीवन जीना चाहते हैं। कुछ कहानीकार वादों से घिरे हैं तो कुछ स्त्री विमर्श की मुहिम में शामिल हैं तो कुछ दलित विमर्श में, राष्ट्र की चिन्ता करने वाले कहानीकार बहुत कम हैं। सांस्कृतिक क्षरण की चिन्ता भी भोगवादी प्रवृ त्ति में विलीन हो गई। कहानीकार दलों में बंटे हुए हैं। इस सम्बन्ध में सुधीश पचौरी का कथन दृ ष्टव्य है - "समकालीन कथा दृ श्य में जितनी कहानी है उससे ज्यादा है उसकी पैरवी और मुकदमेबाजी। कहानी के बाद उसकी अगली कहानी यानी पैरवी कहीं ज्यादा साधी जाती है। यही तो बाजार का सुप्रबंधन है। कहानी को प्रबंधित किया जा रहा है।"[३] उदारीकरण और निजीकरण के कारण साहित्य पर भी बाजारवाद हावी हो गया है। इसलिए कहानियाँ भी झूठे विज्ञापनों की तरह लुभावनी मुद्रा में प्रस्तुत की जा रही हैं। इक्कीसवीं सदी की कहानियों में नयी छबि उभर रही है। ये कहानियाँ नये जीवन मूल्य गढ़ रही हैं। इन कहानियों में साहस, हठधर्मिता और प्रयोग धर्मिता का आग्रह है। इक्कीसवीं सदी के समकालीन कहानीकारों में मनीषा कुलश्रेष्ठ, अल्पना मिश्र, रवि बुले, प्रभातरंजन, तरुण भटनागर, राकेश मिश्र, पंशुरी सिन्हा, सोनाली सिंह, अभिषेक शुक्ल, मनोज पाण्डेय, दीपक श्रीवास्तव आदि प्रमुख हैं। मनीषा कुलश्रेष्ठ के कहानी संग्रह 'कठपुतलियाँ' में 'रस रूप', 'गंध', 'भगोड़ा', 'अवक्षेप' और 'स्वांग' जैसी कहानियाँ बिलकुल अलग तरह की भावभूमि को रेखांकित करती हैं। शर्मिला बोहरा जालान के कहानी संग्रह 'बूढ़ा चाँद' की कहानियों में विशिष्ट जीवनानुभव और शिल्प समाहित हैं। पंखुरी सिन्हा की कहानियाँ उनके यायावरी जीवन पर आधारित हैं। प्रत्यक्षा की कहानियाँ आधुनिकता एवं परम्परा के द्वन्द्व को दर्शाती हैं ये कहानियाँ ये बताती हैं कि सांस्कृतिक संक्रमण के इस काल में हमें कौनसे मूल्यों को विरासत के रूप में अपनाना है। इसी तरह की एक कहानी स्वाति तिवारी की 'स्त्री मुक्ति' है। पंकज मिश्र की कहानियों में वैश्वीकरण से संग्रसित जीवन की विसंगतियों का यथार्थ चित्रण है। ये कहानियाँ बताती हैं कि बाजारीकरण ने किस तरह हमारे जीवन मूल्यों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। संजय कुन्दन और रवि बुले अपनी कहानियों में मानवीय मूल्यों और समाजिक अन्तर्विरोधों को उद्घाटितं करते हैं। इन कहानीकारों की कहानियों को पढ़कर ऐसा लगता है कि ये समय सापेक्ष होकर लिख रहे हैं। इनमें उत्तर आधुनिकता से उत्पन्न खतरों की भी चिन्ता व्यक्त की गई है।

विदेशी उत्तर आधुनिक कहानियाँ बहिष्कृत लोगों पर लिखी गईं। इनके लेखन के केन्द्र में हत्यारे, वेश्याएं, शराबी, अपराधी, समलैंगिक आदि प्रकार के लोग हैं। भारत में महिलाएं और दलित


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहिष्कृत हैं अत: इन लोगों पर विमर्श सहित कहानियाँ लिखी जा रही हैं। इन कहानियों में परम्परा और उत्तर आधुनिकता का संघर्ष भी है। शहरों की बनावटी संस्कृति और आतंकवाद पर ये कहानियाँ चिन्ता प्रकट करती हैं। मनुष्य के जीवन मूल्य बदल रहे हैं तो ये कहानियाँ भी बदल रहीं हैं। लेकिन कुछ कहानीकार अपनी कहानियों के माध्यम से अनास्था और हताशा को बढ़ावा दे रहे हैं। उत्तर आधुनिकता के कारण नकारात्मकता को परोसा जा रहा है। इसलिए समाज तेजी से विघटन की ओर बढ़ रहा है और राष्ट्रीयता की भावना विलोपित होती जा रही है।। अत: अब ऐसी कहानियों की आवश्यकता है जो समाज से भ्रष्टाचार, आतंकवाद, विघटन और नकारात्मक भाव को समाप्त कर सांस्कृतिक उन्नयन और राष्ट्रवाद को बढ़ावा दे।

**सन्दर्भ**


१. धनंजय वर्मा, समसामयिक हिन्दी कहानियाँ, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, १९८८, पष्ठ १२

२. अमरसिंह वधान, समकालीन हिन्दी कहानी प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, १९८७, पष्ठ १४२

३. सुधीश पचौरी, उत्तर यथार्थवाद, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, २००४, पष्ठ १९५



डी.एम. २४२, दीनदयाल नगर

ग्वालियर - ४७४००५ (म.प्र. )

मोबा. ०९४२५१८७२०३


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. एन. लक्ष्मी अय्यर

# तमिल का कथा साहित्य

भारतीय भाषाओं में अत्यन्त प्राचीन व साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध भाषा तमिल में कथा साहित्य की यात्रा का प्रारम्भ १८वीं शती से ही हुआ था। तमिल में कहानी को सिरुकदै (लघुकथा) एवं उपन्यास को 'पुदिनम' कहने की परिपाटी रही।

रोचकता से पूर्ण घटनाप्रधान वैयक्तिक, सामाजिक संस्कारों से पूर्ण जीवन-अनुभव, जीवन की समस्याओं को चित्रित करने वाली घटना आदि पर लिखी गयी सुव्यवस्थित, मनोरंजक, संक्षिप्त, रोचक, साहित्यिक विधा का नाम 'तमिल सिरुकदै' कहलायी गयी। तमिल भाषा में पंचतन्त्र कहानियाँ, विक्रमादित्य की कहानियाँ प्राचीन तमिल कहानियों की श्रेणी में आती हैं।

अठारहवीं शती में वीरमामुनिवर ने परमार्थ गुरुकदै नामक कहानी-संग्रह की रचना की। अष्टावधानम् वीरस्वामी सेट्टियार, 'विनोद-रसमंजरी' (सन् १८२४-८९), मायूरम् वेदनायकम् पिल्लै 'प्रताप मुदलियार चरित्र', 'सुकन सुन्दरी कदै' की रचना की। लेकिन इन्हें कहानी-साहित्य के अन्तर्गत स्वीकारना असंगत है। तमिल कहानी साहित्य के प्रवर्तक साहित्यकार व.वे.सु. अय्यर ही हैं जिनकी सर्वप्रथम कहानी (१८८१-१९२५) मंगैयर अरसियिनि


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कादल मुदलिय कदैगल (मंगैयखकरणी की प्रेम कहानियाँ) कहानी-संग्रह में उन्हीं की सन् १९२७ में प्रकाशित कुलत्तंगरै अरसमरम सोन्नकदै (तट पर बबूल से बतलायी गयी कहानी) यही तमिल की प्रथम कहानी है - ऐसी भी मान्यता है। राष्ट्रीय कवि, विश्व भर के सुप्रसिद्ध कवि सुब्रह्मण्य भारती की तिण्डिम शास्त्री, स्वर्णकुमारी श्रेष्ठ कहानियाँ होने पर भी विद्वानों ने उन्हें दादा-दादी कहानियों की श्रेणी में रखा था। उस जमाने की प्रसिद्ध पत्रिका 'मणिक्कोड़ि' में जिनकी कहानियाँ छपती थीं उनका नाम 'मणिक्कोड़ि एषुत्तालर' (मणिक्कोड़ि लेखक, मणिध्वज लेखक) के नाम से प्रमुख हुआ। विरुदाचलम् नामक 'पुदुमैपित्तन' (१९०६-१९४८) 'सिरुकदै मन्नन' (कहानी सम्राट्) के नाम से विख्यात थे।

**तमिल के कुछ प्रमुख कहानीकार**

*१. पुदुमैपित्तन*

इन्होंने विश्वभर की श्रेष्ठ कहानियों को विश्व की कहानियाँ, 'दैवम् कोडुत्त वरम्' के नाम से अनुवाद करके कहानी संग्रह प्रकाशित करवाया। 'पोन्नगरम्' (स्वर्णपुरी) इनकी बहुचर्चित कहानी थी।

*२. कु.प. राजगोपालन्*

आप तमिल, तेलुगु, संस्कृत, अंग्रेजी भाषाओं के धुरन्धर विद्वान् रहे। अस्सी से भी ज्यादा इनकी कहानियाँ छह संग्रहों में प्राप्त हैं। १. कनकाम्बरम्, २. काणामले कादल, ३. आट्रामै, ४. पुनर्जन्म, ५. पेण्, ६. सिरिदु वेलिच्चम्, इनकी कहानी विडियुमा? (उदय होगा?) की बराबरी करनेवाली कहानी अब तक अप्राप्य है।

*३. आ. पिच्चामूर्ति (१९००)*

इनकी प्रथम कहानी साईन्सुक्कुम बलि (विज्ञान की भी बलि) जो सन् १९३२ में प्रकाशित हुई। इनकी कहानियाँ कुल १२८ अब तक उपलब्ध हैं। उनके कहानी संग्रह हैं - १. पदिनेट्टाम पेरुक्कु, २. जंबरुम् वेष्टियिम्, ३. मोहिनी, ४. पिच्चामूर्ति कदैगल, ५. मांगाय तलै, ६. इरट्टै विलक्कु।

*४. पी.एस. रामैय्या*

'मणिक्कोड़ि' पत्रिका के सम्पादक रामैय्याजी स्वयं कहानीकार थे, जिन्होंने तीन सौ से ज्यादा कहानियाँ लिखी थीं। उनकी पुरस्कृत कहानी थी 'मलरुम् मणमुम्' (पुष्प व सुगन्ध)।

*५. कल्कि*

'कल्कि' ने तमिल-जनता के मन में कहानी-साहित्य के पिताश्री बनकर अपने लिये एक विशिष्ट स्थान पा लिया। इनका असली नाम रा. कृष्णमूर्ति था। निबन्ध, आलोचना, उपन्यास, कहानियाँ आदि के बहुमुख प्रतिभाशाली लेखक थे। इनके कहानी संग्रह निम्नलिखित हैं - १. अमरवाषवु, २. इषन्द कोट्टै, ३. आट्ट्रै रोजा, ४. कणैयाषियिन कनवु, ५. सारदैयिन चरित्रम्, ६. मयिल विषिमान, ७. मयिलैक्काण, ८. माडदेवन्, ९. वीणै भवानी आदि।

तमिलनाडु के वाल्टर स्कॉट के नाम से ये विख्यात् हैं। श्रीमान् चक्रवर्ती राजगोपालजी (राजाजी) प्रमुख तमिल कहानीकार थे। इनकी कहानियाँ राजाजी कदैगल नाम से विख्यात् हुईं।

*६. क.ना. सुब्रह्मण्यम्*

इनके दैयव जननम्, अषगि, आडरंगु। कि.वा. जगन्नाथन के 'पवल मल्लिगै', 'कलैडन त्यागम्' आदि प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं।

कि. राजनारायणन् (स्थानीय बोलियों पर कहानी लिखनेवाले), मौनि, कु. अषगिरि सामी, ना. चिदंबर सुब्रह्मण्यन् आदि प्रसिद्ध रहे ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

### ७. कु. अषगिरि सामी

कु. अषगिरि सामी के कहानी संग्रह हैं - १. दैय्वम् पिरदन्दु, २. सिरिक्क विल्लै, ३. तवप्पैयन, ४. वर प्रसादम्, ५. इरु सहोदररगल, ६. कालवंडी, ७. कर्पंगव क्षम्, ८. सेविकायक ओरुवन, ९. पुदिय रोजा, १०. कवियुम् कादलुम् और ११. अम्बलिप्पु।

आधुनिक कहानी लेखकों में सोमु के 'कल्लरै मोहिनी', 'केलाद गानम्', क्रान्तिकारी लेखक विंदन के 'मुल्लै कोडियाल', डॉ. मु. वरदराजन् के विडुदलैया, कुरट्टै ओलि आदि प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

### ८. करिच्चान कुंजु

इनका नाम कु.पा. राजगोपालन के नाम के साथ जोड़कर दोनों को द्वय कहानीकार के नाम से अभिहित करते हैं। करिच्चान कुंजु के कहानी संग्रह हैं - पदिणोन्रुम-पन्निरेण्डुम, मानुडम वेण्रदम्मा, सोरणै, आण्गल् आदि। ति.ज. रंगराजन के कहानी संग्रह हैं - चन्दन कावडि, राजत्तिन कूंदल, नोडिकिलि, कालीदरसनम्, मंजल तुजि आदि। तमिल के ऐसी चार पत्रिकाएं थी जो कहानी, निबंध, नयी कविता लेखन के प्रेरणास्रोत बने थे। वे हैं - मणिक्कोड़ी, एषत्तु, कसटतपर, वानंबाडी ।

### ९. चि.चु. चेलप्पा

एक और सफल कहानीकार रहे जिनके कहानी संग्रह थे - सत्याग्रही, मणलवीडु, सरसाविन्, बोम्मै आदि । आर. षन्मुख सुन्दरम् वल्लिकण्णन्, ला.सा. रामामृ तम् कुछ अन्य कहानीकार रहे।

कहानी लेखिकाओं में अनुत्तमा, लक्ष्मी वसुमती रामस्वामी, राजम् कृष्णन्, आर. चूडामणि, लक्ष्मी सुब्रह्मण्यम्, गोमती सुब्रह्मण्यन् कृष्णा कुमुदिनी, एम.एस. कमला, एस. रंगनायकी, आर.एस. ज्ञानबाला, लक्ष्मी नागराजन, कल्की मंगलारा आनंदी, उमा गुरुमूर्ति, कु.प. सेतु अम्माल, सरोजा राममूर्ति, कुयिली, एल.एन. श्यामला, विमला रमणी, कस्तूरी पंजु, कोमगल इन्दिरा, के. जयलक्ष्मी, तुलसी जयरामन, सरस्वती रामनाथ आदि प्रमुख हुईं। वेंकट लक्ष्मी की 'मयिलुम मंगैयुम्' (मोर व महिला) श्रेष्ठ कहानी है ।

लेखक रा.कि. रंगराजन के पल्लक्कु (पुरस्कृत), निला नणैयुगा उल्लेखनीय कहानी संग्रह हैं। अकिलन के 'इदय-सिरैयिल,परिमले' निलविनिले आदि प्रसिद्ध हुए।

समकालीन कहानी लेखकों में जयकान्तन का नाम चिरस्मरणीय है। इनकी कहानी यारुक्कण बषुदाल? (किसके लिए रोई थी?) चलचित्र बनकर विख्यात हुई । इनकी अन्य कहानियाँ - उदयम्, ओरुपिडि सोरु, इनिप्पुम् करिप्पुम्....आदि।

लगभग ६०० से ऊपर ऐतिहासिक कहानियाँ लिखकर तमिल कहानी साहित्य में अपने लिये एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किये प्रमुख कहानीकार को.वि. मणिशेखरन् हैं। उनमें प्रमुख हैं - चरित्तिर कदै कलंजियम् कालैयर कोयिल रदम, उडिरुम ओलियुम. ..आदि। ति. जानकी रामन (चिवप्पु रिक्शा, कोट्टु मेलम) एक और उल्लेखनीय कहानीकार हैं।

नये कहानीकारों में ना.पार्थसारथी (मूवरै-वेण्रान्), टी.के. श्रीनिवासन् (एल्लैकु अप्पाल, तुण्बकदै, कुरल कोडुत्त कुरल) आदि का नाम उल्लेखनीय है । मुंबई परिवेश को आधार बनाकर कहानियाँ लिखनेवाले हैं - मायावी और 'सा.वि.' मणिशेखरन की बादुशाविन् पादुकै, औरंगजेब पर लिखी गयी कहानी 'कण्णे कनिये कर्कण्डे', शाहजहाँ पर आधारित सामाजिक कहानी, अदुवुम अंगे मुडियुमानाल, कडैयेषु वल्लरगलिन् कदैगल आदि प्रसिद्ध हैं। तंजाऊर केआस-पास की बोलियों द्वारा लिखी गयी कहानियाँ सोलै सुन्दर पेरुमाल की हैं । उनके कहानी संग्रह हैं - मण्, उरुवंगल, वण्डल ओराण्काणी, ओरु ऊरुम सिल मनिदरगलुम्।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज तमिल कहानी क्षेत्र में असंख्य कहानीकार हैं । सोमास, सुभश्री, शिवशंकरी, रमणीचन्द्रन, स्व. अनुराधा रमणन्, श्रीरंगम् नरसिंहन्, सु.की. सुब्रह्मण्यन्, तामरै मणालन्, राजेन्द्रकुमार, पुष्पा तंगतुरै, पुनिदन, ऐ.रा. सुन्दउरेशन, पूवै एस. आरुमुगम्, टी.के. पट्टुस्वामी, सुजाता, आदवन, वैयवन, सभामुदलियार, वण्णदासन, अशोक मित्रन, इन्दिरा पार्थसारथी, सौन्दरा कैलाशय, पूमणि, जयप्रकाशम्, जी. नागराजन, तंजैप्रकाश, चा. कंदसामी, सुभाषचन्द्र बोस, पा. चन्द्रशेखरन्, अंबै, यू.मा. वासुकी, जयमोहन, पापलो अरिवु कुयिल्. ...आदि हैं। तमिल कहानीकारों की संख्या का न अंत है और न इति।

## तमिल के उपन्यास साहित्य

*डॉ. लक्ष्मी अयर एन.*

तमिल उपन्यास साहित्य का प्रारंभ सन् १८७६ में वेदनायकम् पिल्लै की रचना प्रताप मुदलियार चरित्र से हुआ। बाद में उनकी सुगुण सुन्दरी कदै औपन्यासिक तत्वों से पूर्ण रचना के रूप में स्वीकार की गई । सन् १८९३ में सु.वै. गुरुस्वामि शर्मा के सामाजिक उपन्यास प्रेमकलावदीयम् पारिवारिक परिवेश पर आधारित हैं । सन् १८९३ में अ. माधवया का उपन्यास 'सावित्री चरित्रम्' अधूरा ही रह गया। प्रबुद्ध भारत नामक अंग्रेजी दार्शनिक पत्रिका के सम्पादक राजम अयर ने 'कमलांबाल चरित्र' नामक उपन्यास लिखा था। पण्डित नरेश शास्त्री के दानवन (१८९४), दीनदयालु (१९००), दिक्कट्र इरु कुषन्दैगल (१९०२), मदिकेट्ट मणैवी (१९०३), माधवया के पद्मावती चरित्र भाग १ (१८९९), भाग २ (१८९९) आदि उपन्यास उल्लेखनीय हैं। आरणी कुप्पुस्वामी जी ने अंग्रेजी भाषा के 'रेनाल्ड्स' के उपन्यास को तमिल में अनुवाद किया।उस जमाने में आरणी कुप्पुस्वामी मुदलियार, वै.मु. कोदैनायकी अम्मैयार वडुवूर दुरैसामी ऐंयंगार इन तीनों मनोरंजन के लिए पत्रिकाओं में उपन्यासों को धारावाहिक के रूप में लिखते थे।

अंग्रेजी उपन्यासों पर आधारित उपन्यास लिखनेवाले लेखकों में दुरैस्वामी अयंगार केमेनका, दिगंबर सामियार (या) कुंभकोणम वकील के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करके चलचित्र केरूप में रूपांतरित हुए। जासूसी उपन्यास लिखनेवाले उपन्यासकारों में जे. आर. रंगराजु ने राजांबाल, चन्द्रकान्ता नामक उत्कृष्ट उपन्यासों की रचना की। इन्होंने तुप्परियुम गोविन्दन उपन्यास केमाध्यम से सामाजिक अंधविश्वास व कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठायी। रंगून ति.म. पोन्नुस्वामी पिल्लै जासूसी उपन्यासकार थे । टी.टी. स्वामी ने करुंकुइले कुण्रत्तु कोलै नामक उपन्यास लिखा।

### *कल्कि*

तमिलनाडु के वाल्टर स्कॉट् के नाम से प्रसिद्ध उपन्यासकार कल्कि ने प्रारंभ में कल्वनिन् कादली (चोर की प्रेमिका), त्यागभूमि आदि धारावाहिक के रूप में लिखे थे। बाद में वीणैभवामी, मुकुटपति, सोलैमलै इलवरखि उपन्यासों की रचना की। स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित इनका उपन्यास अलैओखै (लहरों की ध्वनि) साहित्यिक अकादमी द्वारा पुरस्कृत है। इनकी अंतिम रचना 'अमरतारा' इनके द्वारा शुरू होकर उनकी बेटी आनंदी द्वारा पूरी की गयी। ऐतिहासिक उपन्यासकारों में इनका स्थान सर्वोपरि है। उनके ऐतिहासिक उपन्यास हैं - १. पार्तिबनिन कनक, २. शिवकामिनियिन शपदम (पल्लव राजाओं के वैभव पर), ३. पोन्नियिन सेल्वम् (चोष राजाओं के स्वर्णयुग पर)। कल्कि के बाद ऐतिहासिक उपन्यासकारों में 'कुमुदम' पत्रिका के माध्यम से ख्याति प्राप्त 'शांडिल्यन' प्रमुख रहे। शांडिल्यन के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यास हैं -

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मलैवासलुम, यवनरानी, कडलपुरा, जलदीपम आदि। उसी कोटि में की.वि. मणिशेखरन् के सेंबियन सेल्वि, मुगिलिल मुलैत्त मुगम्, पोर्काल पूंपावै, पोनवेयन्द पेरुमाल, वातापि-वल्लपि, कुबेरनागा, सुमित्रा, अशोक चक्रम्, चेंजि अपरंजि, कुडवायिर कोट्टम आदि उल्लेखनीय हैं। इन्हीं का तेण्रल काद्रु (रूस की ऐतिहासिकता पर) आधारित उपन्यास है। अकिलन के वेंगैयिन मैंदन (साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत), रोहिणी (चोल राजाओं के काल पर), कयल विषि, वेट्रितिरुनगर आदि उल्लेखनीय उपन्यास हैं। अन्य उपन्यासकारों में जय सिर्पियन के तिरुचिट्रंबलम्, नायकी नर्चोलै, आलवाय अषगन, मकरयाष मंगै, पत्तिनी कोट्टम!, अरु रामनाथन के वीर पांड्यन मणैवि, अशोकन कादलि, विक्रम द्वारा लिखित उदय चन्दिरन नंदिपुरत्तु-नायकी, कांची सुन्दरी, सोमु द्वारा रचित कडल कंड कनुवु, वेण्णिलवु पेण्णरसी, पार्थसारथी के पांडिमादेवी, मणिपल्लवम् क आर.वी. के आदित्यन कादल, मायावी के मदुरांतकीयिन कादल कि.रा. गोपालन के मालवल्लियिन त्यागम आदि उल्लेखनीय ऐतिहासिक उपन्यास हैं।

## सामाजिक उपन्यास

चिदंबरम्, रघुनाथन का पुजुम् पसियुम परम श्रेष्ठ तमिल का प्रथम सामाजिक उपन्यास था जिसका अनुवाद कई भाषाओं में हो चुका। सामाजिक उपन्यासकारों में संगम साहित्य के संस्कारजन्य मूल्यों को चित्रित करने वाले श्रेष्ठ उपन्यासकार डॉ. मु.वरदराजन हैं। पावै, अन्दनाल, सेन्दामरै, अल्लि, कयर्मे ओर पुरट्चि वडैप्पु, मलरविषि, करितुण्डु, नेंजिल एरुमुल, वाडामलार इनके प्रमुख सामाजिक उपन्यास हैं। इनके उपन्यास अकलविलक्कु साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत है। अन्य उत्कृष्ट उपन्यास हैं - कल्लो? कावियमो? पेट्रमनम्। ये बीसवीं शती के मुकुटमणि सामाजिक उपन्यासकार हैं। अन्य सामाजिक उपन्यासकारों में ति.जानकीरामन ने जो तंजाऊर जिले के आसपास की जनता की जीवनशैली पर कई उपन्यासों की रचनाएं की।

अम्मा वंदाल, मरप्पसु, सेंबरुत्ति अण्बे आरमुदे आदि उल्लेखनीय हैं ।

ला.सा. रामाम तम् ने दार्शनिकता से भरे पुत्र, अभिदा आकद उपन्यास लिखे। के.देवन (मिस्टर वेदान्तम्), व.रा. (सुन्दरी), विंदन (पालुम-पावैयुम्), अकिलन (नेंजिन अलैगल), बालसुब्रह्मण्यन् (ब्रह्मचारी ओवियम्), कोत्तमंगलम सुब्बु (तिल्लाना मोहनाबाल) आदि प्रमुख हैं।

वर्तमान युग की शुरुआत में 'नाट्य' को प्राथमिकता देकर पल्लवों के राजवैभव पर आधारित उपन्यास लिखे गये। उनमें कौवे मणिशेखरन का राजसिम्मनिन कादलि, शांडिल्य का राजमुद्धिरै, तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. मु. करुणानिधि के रोमापुरी पांडयन, तेन्पांडिसिंगम आदि सर्वोत्कृष्ट उपन्यास हैं । रा.रा.पी. अण्णामलै के कादलेनुम् तीविनले भी श्रेष्ठ उपन्यास है ।

अन्य उपन्यासकारों में निम्नलिखित के नाम उल्लेखनीय हैं । बी.एम. कण्णन (नागवल्लि, निलवे नी सोल), सोमु (नंदवनम्), ना. पार्थसारथी (कुरिंजिमलट, पोनविलक्कु), का.ना. सुब्रह्मण्यन (ओरुनाल्), की. राजेन्द्रन (नेंजिल निटैंदवल), पी. वी. आर. (तंगम), कोणै मणिशेखरन (तेन्नंकीद्रु, तवमो तलुवमो), कु.राजवेलु (कादल तूंगुकिरदु मगिषबू) जेग चिर्पि (स्वर्गत्तिन निषल) रा.कि. रंगराजन (इदु स्वर्गम्, वयदु पदिनेषु पडगुवीडु) तमिष वानन् (मणिमोषी ! नी एन्नै मरन्दु विडु) आदि।

श्रीलंका के तमिल उपन्यासकारों में राज अरियनायकम् (तंगपूच्चि) अरुल सेल्व नायकम् (पासकुरल), से गणेशलिंगम् (नींड पयनम्) नंदी उपनाम से लिखनेवाले से, शिवज्ञान सुन्दरम् (मलैकोषन्दु) आदि हैं ।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

## समकालीन उपन्यास

स्त्री पुरुषों के अवैद्य सम्बन्धों पर आधारित समकालीन उपन्यास लिखनेवालों में जयकातन के 'पारिसुक्कु पो' ओरु नडिगै नाड़गम पार्किराल्, सिलनेरंगलिल सिता मनिदरगल आदि में अति नग्न यथार्थ चित्रण मिलता है। अकिलन के चित्तिरपावै (ज्ञानपीठ पुरस्कृत), मणियन् के मोहम् मुघदु वरुषम्, की. राजेन्द्रन के चारुलता, महिला उपन्यासकार राजम् कृष्णन् के 'अमुदमागिवरुग', एस.ए.पी.के पिरन्दनाल ना.सु. नल्लपेरिमल के कल्लुक्कुल्ईरम् पोराट्टंगल, ना. पार्थसारथी के कपाट पुरम, समुदाय वीदि, आत्माविन रागंगल् आदि उल्लेखनीय हैं।

महिला उपन्यासकारों में तमिलनाडु की 'जेन ऑस्टेन' के नाम से प्रसिद्ध अनुत्तमा, राजम कृष्णन, वसुमती रामस्वामी, लक्ष्मी (पेण्मनम्, कांचनैमिल कनवु, मिथिला विलास, अरक्कुमालिगै), चूडामणि कृष्णा, इन्दिरा पार्थसारथी (तन्तिर भूमि, स्वतंत्र भूमि मायमान वेट्टै, तीवुगल, वेन्दुतजिन्द काडुगल), विमला रमणी (पारिजातम), शिवशंकरी (त्रिवेणी संगमम्, अवन-अवल-अदु, पालगल, पोय), इन्दुमती, अनुराधा रमणन्, रमणीचन्द्रन आदि अनेक नाम उल्लेखनीय हैं।

## अनूदित उपन्यास

अनूदित उपन्यासकारों में का.श्री.श्री. का नाम अमर है। ता.ना. कुमारस्वामी ने बंगाली साहित्य का तमिल में, ता.ना. सेनापति ने टैगूर की रचनाओं को तमिल में अनुवाद किया। तुलसी यमन सरस्वती रामनाथ, रा. विषि नाथन आदि अनूदित उपन्यासकार हैं।

इस प्रकार तमिल में उपन्यास साहित्य दिन दुगुना रात चौगुना होकर निरन्तर विकास के साथ आगे बढ़ रहा है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ


१. डॉ.सी. बाल सुब्रह्मण्यन् (पूर्व उपकुलपति, मद्रास विश्वविद्यालय), तमिल साहित्य का इतिहास

२. तमिष इलक्किय वरलास - प्रोफेसर स. सुभाषचन्द्र बोस, पावै प्रकाशन, चेन्नइ

३. तमिष इलक्किय वरलास - मु. वरदराजन, साहित्य अकादमी प्रकाशन

४. पुदिय नोक्किल, तमिष इलक्किय वरलास - तमिषन्नल, विजया प्रकाशन, कोयम्बतूर -६४१००१


*चैन्नई (तमिलनाडु)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रो. शेषारत्नम्

# तेलुगु कहानी

कहानी का जन्म मनुष्य के ऊहापोह से हुआ है। मौखिक कथा का जन्म मनुष्य के साथ ही हुआ। मानव की अनन्त यात्रा में मौखिक कहानी अनन्त यात्रा करती है। तेलुगु कहानी का इतिहास अत्यन्त वैविध्यपूर्ण एवं समृ द्ध है। तेलुगु कहानी का उद्भव अंग्रेजी साहित्य से नहीं हुआ। वास्तव में कुछ समय तक तेलुगु कहानी पर अंग्रेजी कहानी साहित्य का प्रभाव तो रहा, पर उसका प्रभाव भी अत्यल्प है। यह प्रभाव बहुत कम कहानीकारों पर है। तीन-चार शताब्दियों की कालावधि में वह प्रभाव शान्त हो गया। इसके कई ऐतिहासिक कारण हैं। सुधारवादी तथा प्रगतिशील आन्दोलनों की भावधारा से कहानी के निष्पन्न होने से ऐसा हुआ। व्यावसायिक साहितय पर उसका प्रभाव सदा से रहा है। इक्कीसवीं शती के पूर्व तक का कथा-साहित्य प्रधानत: दो रूपों में मिलता है - १. प्राचीन काव्य कथा-साहित्य और २. प्राचीन गद्य कथा-साहित्य।

प्राचीन काव्य कथा-साहित्य का आरम्भ नन्नय्या (सन् १९५०) से माना जाता है। तेलुगु का प्राचीन पद्य कथा-साहित्य को फिर तीन भागों में बाँटा जा सकता है - १. अनुदित रचनाएँ, २. अनुसरित रचनाएँ और ३. स्वतन्त्र रचनाएँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

केतना के 'दुशकुमार चरित्र' कौरवि गोपराज कृत द्विंत्रिशंतिका तथा पंचतन्त्र अनूदित पद्य कथाएँ हैं। वैसे ही उक्त रचनाओं के अलावा इस काल में उल्लेखनीय मौलिक रचनाएँ भी हैं जिनमें ऐतिहासिकता, नैतिकता एवं हास्य को विषयवस्तु के रूप में ग्रहण किया गया है। ऐसी कथाओं में 'तेनालि रामकृष्णुनि कथलु', 'मर्याद रामन्न कथलु', 'विजयनगर राजुलु कथलु', 'तिम्मराजु कथलु', 'नीतिकथा मंजरि', 'बुद्धुनि पर्व कथलु', 'काशी मजली कथलु', 'गोलकोंड बादुषा कथलु' आदि प्रमुख हैं।

**प्राचीन गद्य कहानी साहित्य**

तेलुगु में कई गद्य रचनाएँ संस्कृत, अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी कथाओं के आधार पर रची गयी हैं। इनमें वेदम वेंकटरामशास्त्री के 'दशकुमार चरित्र', 'कथा सरित्सागर' उल्लेखनीय हैं जिनका मूल संस्कृत में है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए रायपाटि गणपति शास्त्री, श्री परवस्तु चिन्नय्यसूरि, श्री कोक्कड़ वेंकटरत्नम्, श्री कन्दुकूरि वीरेशलिंगम् ने पंचतन्त्र की कथाओं को संस्कृत से तेलुगु में अनूदित किया। इसके बाद अरबी फारसी कथाओं के आधार पर सुरवरम प्रताप रेड्डी ने यवन यामिनी विनोदालु, फारसी विनोद कथलु, चार दर्वेषु कथलु, हातिमताई कथलु और दिल्ली बादुषा कथलु ग्रन्थों का प्रणयन किया। श्री कन्दुकूरि वीरेशलिंगम् ने शेक्सपियर की नाटक कथाओं का और ग्रिम्स फेयरी टेल्स के आधार पर 'दक्कन पूर्व कथलु' का अनुवाद प्रस्तुत किया। 'संस्कर्त हृदयमु' (सुधारक का हृदय), 'मेटिल्डा और पेद्धमसीदु' (बड़ा मसजिद)। इनकी ये कहानियाँ एडगार एलेन पो, ओ. हेनरी, मोपासा आदि पाश्चात्य लेखकों के शिल्प के आधार पर लिखी गयी हैं ये 'आणि मुत्यालु' (अनमोल मोती) के शीर्षक से प्रकाशित हुई हैं।

**प्रथम विकास काल (१९१०-१९३६)**

तेलुगु की आधुनिक कहानी का श्री गणेश सन् १९१० में प्रकाशित गुरजाड अप्पाराव की कहानी दिद्धुबाटु (सुधार) से हुआ है। वेश्यालोलुप पति को सही रास्ते पर लाने के लिए पत्नी के द्वारा किया गया युक्तिपूर्ण व्यवहार ही इस कहानी की विषयवस्तु है। आधुनिक कहानी के सभी पूँजीभूत तत्व इस कहानी में हैं। श्री गुरजाडा की कहानी - 'मी पेरिमिटि' (आपका नाम क्या है?) श्री वन्नेलकंटि अन्नय्या द्वारा विरचित 'षोडषकुमार चरित्र' श्री जक्कना का 'विक्रमार्क चरित्र', श्री अनन्तुडु कृत 'सकल नीति कथा विधानमु' आदि संकल ग्रन्थों के आधार पर लिखी गयी अनुसरित कथाएँ हैं। पालचेकरि कदरीपति द्वारा लिखित शुकसम्पत और अय्यलराजु नारायणामान्युडु कृत 'हंस विशन्ति' आदि स्वतन्त्र रचनाएँ हैं।

तेलुगु की आधुनिक कहानी के विकास के पूर्व गद्य कथाओं में निम्नांकित रचनाओं के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं - पाटूरि रामस्वामी का 'शुकशण्तति' (सन् १८४०) श्री सिंगराज दत्तात्रेयुलु एवं वेंकट सुब्बय्या द्वारा विरचित वचन रामायणमु (सन् १८४०) श्री पैडिपटि सुब्बारामय्या कृत 'हरिश्चन्द्र कथा' (सन् १८४०), श्री पाटूरि नरसिंहशास्त्री विरचित 'रंगनाथ रामायणम्' (सन् १८५०), श्री पाटूरि रंगशास्त्री का 'विजय विलासम्' (सन् १८४१), श्री धूर्जटि लक्ष्मीपति की 'हंसविशान्ति' आदि। इनके अलावा पंचविशन्ति कथलु, काम्भोजराज कथलु, ताताचार्युल कथलु आदि कहानियाँ आन्ध्र के लोगों का मनोरंजन करती आई हैं। वैसे ही १९वीं शती के उत्तरार्ध में प्रकाशित उल्लेखनीय रचनाएँ इस प्रकार हैं - ईसाई धर्म प्रचारक भेषी कृत 'परमानन्दय्य शिष्युलु कथलु' सन् १८६१, श्री ताडकमल्लि वेंकटकृष्णाराव का 'कामरूप कथा', श्री दास और श्री रामुलु के 'अभिनव गद्य प्रबन्धमु'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(सन् १८९३), श्री पानप्पाकम् आनन्दार्चायुलु द्वारा लिखित 'मंजुवाणी विजयम्' (सन् १८९५) और श्री कोमंडूरि अनन्ताचायुर्लु के 'सत्यसेवा विजयम्' (सन् १८९७)।

तेलुगु की आधुनिक कहानी के विकास के चार चरण हैं। इसी क्रम में तेलुगु के बालवाङ्मय ब्रह्म माने जाने वाले 'कथक चक्रवर्ती', श्री चिन्ता दीक्षितुलु का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है। उन्होंने करीब सौ कहानियों की रचना की है। वे अपनी कहानियों में सनातन परम्परा का समर्थन करते हुए नवीन सभ्यता पर मीठे व्यंग्य करते हुए दर्शन देते हैं। 'चेंचु जाति के दम्पति' आदि कहानियों में जंगली जीवन का अतिस्वाभाविक चित्रण मिलता है। उनकी अन्य प्रमुख कहानियाँ हैं - 'दासरी पाट' (जनजाति के भिखमंगों का गीत), 'किष्किंधलो कोति' (किष्किंधा में बन्दर), 'अभिप्राय भेदमु' (मतभेद), 'मोदटि बहुमानमु' (प्रथम पुरस्कार), 'गोदावरि नव्विंदी' (गोदावरी हँस पड़ी), 'चेंचु रानी' (जनजाति की रानी), 'लेडीस कल्चरल क्लब' आदि। इनकी रचनाओं में वस्तुगत वैविध्य के साथ-साथ चमत्कारपूर्ण रचनाशैली उल्लेखनीय एवं हृदयाकर्षक हैं। श्रीपाद सुब्रह्मण्यम् की कहानियों में आन्ध्र की सभ्यता एवं संस्कृति की स्पष्ट झलक मिलती है। उनकी कहानियों का संवाद हृदयाकर्षक है। 'विषभुजंगमु' (विषैला साँप), 'गुलाबि अत्तरु' (गुलाबी इत्र), 'आडपडचु' (ननद), 'विमानमु एक्कबोतु' (हवाईजहाज चढ़ते हुए), 'वडलगिंजलु' (धान), 'कूतुल्ल तल्लि' (बिटियों की माँ) आदि उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

इसी क्रम में एक प्रमुख कहानीकार वेलूरि शिवराम शास्त्री हैं - जिनमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के साथ-साथ वस्तु-वैविध्य एवं विद्वत्ता का परिचयम मिलता है। 'तन्मयता' (तल्लीनता), 'अतिथि देमुडु' (अतिथि भगवान्), 'डिप्रेशन चेंबु' (डिप्रेशन का लोटा) आदि उल्लेखनीय हैं।

इसी पीढ़ी के अन्य कहानीकार मोक्कपाटि नरसिंह शास्त्री ने हास्य रस प्रधान कहानियों के साथ-साथ अनेक शिल्पगत एवं वस्तुगत वैविध्यपूर्ण कहानियों की रचना की है। 'महत', चित्रम्' (चित्र), 'गत्यन्तरम्' (विवशता), 'लक्ष्मि' (लक्ष्मी), 'भिक्षुवु' (भिक्षुक), 'चावु तेलिवि' (म त्यु का अकल), 'गाजुपेंकुलु गाँधी' (काँच के टुकड़ों के गाँधी) आदि प्रचलित कहानियाँ हैं।

सुधारवादी आन्दोलन के अग्रगण्य राजाराममोहन राय के द्वारा स्थापित 'ब्रह्म समाज', ईश्वरचन्द्र सेन के 'प्रार्थना समाज', दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' और गोपालकृष्ण गोखले के 'भारतीय सेवक समाज' आदि के द्वारा अपनाये गये सुधारवादी कार्यक्रमों से प्रेरित नारी १९वीं शती के अन्तिम दशक में कलम पकड़कर अपने विचारों को मौलिक रूप से व्यक्त करने लगी। इसी क्रम में आन्ध्र में ब्रह्म समाज के कर्णधार श्री वीरेशलिंगम पन्तुलु ने 'हितकारिणी समाज' की स्थापना कर सुधारवादी आन्दोलन को आगे बढ़ाया। इन्होंने कहानी लेखन का आरम्भ नीति कथाओं से किया। श्रीमती मतिगुण्डू अक्कमाँबा की 'सत्कथा मंजरी' इसी कोटि की है। सामाजिक इतिव त्त के आधार पर श्रीमती बंडारु अच्चमाँबा कृत 'बीदकुटुम्बमु' (गरीब परिवार) भी उल्लेखनीय कहानी है। एलगुर्ता लक्ष्मीनरसमांबा की पद्य कथ्हा 'अमूल्यमु' समय के मूल्य को अभिव्यक्त करती है। बाद में कांचमपल्लि कनकांबा कृत 'राधा' कहानी भी उल्लेखनीय है।

इसी क्रम को आगे बढ़ाने वाली लेखिकाओं में कनुपर्ति वरलक्ष्म्मा की 'बाल नीति कथावली', 'मा ऊरू' (हमारा गाँव), पिंचिन प्रेमा' (पालन या प्यार), 'ओटटू' (कसम), 'दीर्घ सुमंगलीभव', 'दरिद्र नारायणुडिनि व्यांकु बुच्चिराजु', 'मूडु तीर्मानालु' (तीन फैसले), 'अइते ललित गति एमिटि' (तो ललिता की दशा क्या है?) आदि कहानियाँ कई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं का उद्घाटन करती हैं।

पनवर्ती कमलादेवी के द्वारा रचित ऐतिहासिक कहानियाँ 'तिलोत्तमा' और 'पापय्यशर्मा' भी उल्लेखनीय हैं। इसी काल की और एक प्रमुख लेखिका श्रीमती पद्मावती देवी हैं। 'पोगडदंडा' (मौलसरी की माला), 'बंगारू बोम्मा' (सोने की गुड़िया), आदि उनके उल्लेखनीय कहानी संग्रह हैं। इल्लंदुल सरस्वती देवी कृत 'बलीयसी केवलमीश्वराज्ञा' और 'मुत्याल मनसु' (मोती-मन) उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

इस क्रम को आगे बढ़ाने वाले उल्लेखनीय कहानीकारों में श्री तल्लावज्जुल शिवशंकर शास्त्री, श्री तडपाटि हनुमंतराव पंतुलु, श्री चिलकमर्ति लक्ष्मी नरसिंहमु, श्री पानुगंटि लक्ष्मीनरसिंहराव पंतुलु, श्री बालांत्रपु वेंकटराव, श्री रूपनगुडि नारायण राव, श्री कवि कोंडल वेंकटराव आदि के नाम आदर के साथ लिया जाता है। वैसे ही सामाजिक परिवेश के प्रति विशेष ध्यान देने वालों में कोडवगंटि वेंकटसुब्बय्या एक प्रमुख कहानीकार हैं।

**द्वितीय विकास काल : प्रगतिवादी युग (१९३६-१९४७)**

सन् १९२० के पश्चात् तेलुगु कहानी को आगे बढ़ाने का श्रेय भी गुडिपाटि वेंकटाचलम्, श्री विश्वनाथ सत्यनारायण, श्री करुणकुमार, श्री मुनिमाणिक्यम् नरसिंहाराव, श्री अडिवि बापिराजू आदि को मिलता है।

भाषा एवं भाव की दृष्टि से तेलुगु के क्रान्तिकारी रचनाकार श्री गुडिपाटि वेंकटाचलम् की कहानियाँ भी उल्लेखनीय हैं। आन्ध्र के 'उग्र' माने जानेवाले श्री चलम जी ने सनातन परम्परा के विरुद्ध एक नयी परम्परा की नींव डाली है। वैवाहिक व्यवस्था में उन्हें आस्था नहीं थी। जीवन में प्रेम तत्व को ही वे विशेष महत्व देते थे। 'आ रात्रि' (उस रात), 'विवाहम्' (विवाह), ब्राह्मणीकम् (ब्राह्मणत्व) आदि उनके बहुप्रचलित कहानी संग्रह हैं।

'ज्ञानपीठ पुरस्कार' ग्रहीता श्री विश्वनाथ सत्यनारायण की कहानियों में संक्षिप्तता, अन्विति आदि उल्लेखनीय विशेषताएँ हैं। वे सनातन वैदिक धर्म के उपासक हैं। 'चिन्न कथलु' (छोटी कहानियाँ) शीर्षक से उनका कहानी संग्रह प्रकाशित है। 'नी ऋणमु तीर्चुकुन्ना' (तुम्हारा ऋण चुका लिया), 'ऐमि संबंधमु' (क्या सम्बन्ध), 'जेब दोंगा' (पोकेटमार) आदि उनकी उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

इसी क्रम में और एक प्रसिद्ध कहानीकार हैं श्री अडिवि बापिराजु। उनकी कहानियों में जीवन के प्रति निष्ठा एवं आस्था के साथ-साथ भावुकता एवं हृदय पक्ष की प्रधानता दिखाई देती है। 'तिरुपति कोंड मेटलु' (तिरुपति पहाड़ की सीढ़ियाँ), 'वसुबालुडु' (वसु बालक), 'भोगीरा लोया' (भोगीरा की घाटी), 'वीणा', 'शैलबाला', 'हंपी शिथिलालु' (हंपी के खण्डहर) आदि उनकी प्रचलित कहानियाँ हैं। इनके पात्रों में सजीव रेखाचित्र का पुट मिलता है। राष्ट्रीय विचारधारा की कहानियाँ भी उनकी कलम से निकली हैं।

समकालीन जीवन को प्रतिबिम्बित करने वाले इस पीढ़ी के और एक उल्लेखनीय कहानीकार सुरवरम प्रताप रेड्डी हैं। 'निरीक्षण', 'बारिस्टर गोपाल कृष्णाराव', 'चन्दरय्यभीमा', 'पेंडिल बेरम्' (शादी की सौदा), 'विंत विवाहमु' (विचित्र विवाह), 'बंगारू गाडिदा' (सोने का गधा), 'गणेश', 'गोउजी' (गो माता), 'पीतल दरवाजा', 'फकीरू बिड्ड' (फकीर का बेटा) आदि उनकी उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। सरल भाषा-शैली में तेलंगाना प्रान्त के रीति-रिवाजों का वर्णन करने में वे सिद्धहस्त हैं।

दाम्पत्य जीवन को विषयवस्तु बनाकर हास्यमिश्रित शैली में कहानियाँ लिखनेवालों में श्री

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुनिमाणिक्यम् नरसिंहाराव का स्थान सर्वोपरि है। इनकी 'कान्तम्' तेलुगु साहित्य का ही नहीं, बल्कि भारतीय भाषा-साहित्य में भी एक अमर स्त्री पात्र है जो आन्ध्र नागरिक वधुओं की प्रतिनिधि स्वरूप है। इनकी कहानियाँ मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार का प्रतिनिधित्व करती है। चमत्कारपूर्ण भाषा शैली उनकी विशिष्टता है। 'पिल्लल गल इल्लु' (बच्चों का घर), 'दाम्पत्योपनिषत्', दीक्षितुलु वेंडिकंचमु' (चाँदी की थाली) आदि उनकी बहुचर्चित कहानियाँ हैं।

ग्रामीण जनजीवन एवं निम्न वर्ग की समस्याओं का सहज एवं स्वाभाविक चित्रण करनेवालों में प्रमुख हैं - श्री कन्दुकूरि अनन्तय्या। 'पशुवुल कोट्टमु' (मवेशी खाना), 'टार्चिलैट', 'रिक्षावाला', 'बिल्लले मोलताडु (गिल्टियों का कटिसूत्र), 'आकलि मंटलु' (भूख की ज्वालाएँ) आदि कहानियाँ उनके विचारों की पुष्टि करती हैं।

मल्लादि रामकृष्ण शास्त्री के 'स्वरमेला', 'चेंगल्वा', 'रसमंजरि', 'वनमाला', 'रविचन्द्रिका', 'सर्वमाला', 'अल्लोनेरेडु' आदि कहानी संग्रह उल्लेखनीय हैं। उनकी भाषा मुहावरेदार है।

मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होकर सनातन परम्परा की कटु आलोचना करनेवाले कहानीकारों में कोडवटिगंटि कुटुम्बाराव प्रमुख हैं। उनकी कहानियों में वर्ग संघर्ष के द्वारा साम्यवादी समाज की स्थापना करने का विचार पक्ष प्रमुख है। वस्तु वैविध्य एवं व्यंग्यात्मक शैली उनकी कहानियों की विशेषताएँ हैं। 'कविराट्ट' (कवि श्रेष्ठ), 'निलव नीरू' (जन्मा हुआ पानी), 'आडजन्म' (स्त्री जन्म), 'नुव्वुल तेलकपिंडि' (तिल की खली), 'फलॉट', 'कोत्त जीवितमु' (नया जीवन), 'ओंटि स्तम्भमु मेड' (एक खम्बे का महल) आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं।

इस समय के कथाकारो में श्रीनिवास शिरोमणि, वेंपटि पुरुषोत्तम, श्री अब्बूरि रामकृष्णाराव, पीसपाटि वेंकटरमणय्या, शिष्टला वेंकट सुब्बय्या, सर्वविंकटशैषय्या, सुरबत्तुल सुब्रह्मण्यम्, आचंट जानकीरामम्, पुरिपंड अप्पलस्वामी, टेकुल कामेश्वरराव, अन्देनारायणस्वामी, श्री चक्रपाणि विंजमूडि शिवरामाराव, सहदेवसूर्य प्रकाशराव पालंकि वेंकटरामचन्द्रमूर्ति, कोनकल्ला वेंकटरत्नम्, श्रीरंगम् श्रीनिवासराव, दिगुमर्ति वेंकट सीतारामाराव आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

**त तीय विकासकाल : नवनिर्माण युग (१९४७-१९६०)**

त्रिपुरनेति गोपीचन्द ने तेलुगु कहानी क्षेत्र को एक नयी स्फूर्ति प्रदान की। उन्होंने नये शिल्प विधान को अपनाकर आत्मपरक समस्याओं को बखूबी चित्रित किया है। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं से जूझनेवाले मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण करने में वे सिद्धहस्त हैं। 'धर्मासुपत्रि' (सरकारी दवाखाना), 'भार्यल्लोने उंदि' (पत्नियों में ही है), 'भार्याभर्तलु' (पति-पत्नी), 'तंडूलु कोडुकुलु' (बाप-बेटे) आदि उनके उल्लेखनीय कहानी संग्रह हैं।

तेलुगु कहानी की ख्याति को अन्तराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने वाले प्रमुख कहानीकार हैं - पानुगुम्मि पद्मराजु। उनकी 'गानिवाना' (तूफान) इस द ष्टि से अत्यन्त श्रेष्ठ कहानी है। 'पडवपत्रयाणमु' (नौका यात्रा), ऐदुरुचूस्तुन्न मुहूर्तम्' (मुहूर्त का निरीक्षण), 'वासनलेनि पूलु' (गन्धविहीन फूल) आदि उनकी अन्य उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध को मनोवैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण करनेवालों में बुच्चिबाबु असली नाम 'शिवराज वेंकटसुब्बाराव' का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है। वे भावुक होने के साथ-साथ नवीन शिल्पविधान का प्रयोग कर अपनी कलात्मकता का परिचय देते हैं। यत्र-तत्र हास्य मिश्रित व्यंग्य शैली इनकी कहानियों में द्रष्टव्य हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'आमें नीडा' (उसकी छाया), 'ना गाजु मेडा' (मेरे काँच का महल), 'कालचक्रमु निलिचिंदि' (कालचक्र रुक गया), 'मूडु कोतुलु' (तीन बन्दर), 'अडवि काचिन वेन्नला' (जंगल में छिटकी चाँदनी) आदि उनके प्रसिद्ध कहानी संग्रह हैं।

श्री माधवपेद्दि गोखले ने शिष्टेतर व्यावहारिक एवं आंचलिक भाषा में कालजयी कहानियों का स जन किया है। 'बल्लकट्टु पापय्य कथा' (तव्तों के नाँव के पापय्या की कहानी), 'मूग जीवालु' (गूंगे जीव), 'शिवरात्रि तिरुनाल्लु (शिवरात्रि के मेले), 'अभिमानमु' (अभिमान), 'पट्टनमुलो बोम्मलाटा' (शहर में कठपुतलियों का खेल) आदि उनकी उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

इनके अतिरिक्त श्री पी.ए. सुब्बाराव की 'स्मारक सभा', श्री भास्करभटल कृष्णाराव की 'इज्जत', सूर्यदिवर संजीवदेव की 'प्रोफेसर भार्या' (प्रोफेसर की पत्नी), चेरुकुपल्लि जमदग्नि शर्मा कृत 'चिलका गोरिका (तोना-मैना), 'अन्न दम्मुलु' (छोटे भाई बड़े भाई), 'मरुपुरानी आ ऊरू' (अविस्मरणीय वह गाँव), 'बल्लोकि वेल्लालि' (स्कूल जाना) आदि उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

इसी क्रम में देवरकोंड बालगंगाधर तिलक की 'ऊरू चिवर इल्लु (गाँव के छोर का मकान), 'नल्ल जर्ल रोड्डु' (नल्ल जर्ल की सड़क), 'नव्वु' (हँसी) आदि अन्य लोकप्रिय कहानियाँ हैं।

उपर्युक्त कहानियों के अतिरिक्त इस पीढ़ी के कहानीकारों में पिलका गणपतिशास्त्री, इंद्रगंटि हनुमच्छास्त्रि श्री गुम्मल वेंकटेश्वर राव, श्री रावूरि सत्यनारायण राव, श्रीवात्सव, चमण्डोरि सत्यनारायण राव, कालोजी कृत्तिवास तीर्थुलु, कोडवटिगंटि कृष्णमूर्ति, वट्टिकोटआल्वारू स्वामी, गोवाड निरीक्षणराव, नरहरि नरसिंहराव, वेल्लंकोंड चन्द्रमौलि, धनिकोंड हनुमन्तराव, वी.एस. अवधानि मद्धिपट्ल सूरि, अंगर वेंकट कृष्णाराव, तुम्मलपल्लि रामलिंगेश्वरराव, एन. आर. चन्दूर, दासरी सुब्रह्मण्यम् ने भी कहानी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

**चतुर्थ विकास काल व आधुनिक काल : समान्तर कहानी युग का नवचेतना युग (१९६० से ...)**

इस काल के प्रमुख कहानीकार हैं राचकोंड विश्वनाथ शास्त्री। समकालीन सामाजिक समस्याओं को विषयवस्तु के रूप में चुनकर आंचलिक भाषा एवं विशिष्ट शैली में उन्होंने कहानियों का सृजन किया। 'कथा सरित्सागरम्' संग्रह की आखिरी दशा, 'विलुवलु कोर्टुकि रानी साक्षुलु' (अदालत न जाने वाले गवाही), 'किटिकी' (खिड़की), 'इद्दरु पिल्ललु' (दो बच्चे) आदि कहानियों ने उन्हें तेलुगु साहित्य में अमर स्थान दिया है। इनके अतिरिक्त 'आरू सारा कथलु' (शराब की छह कहानियाँ) 'आरू सारो कथलु' (दु:खभरी छह कहानियाँ) भी उनके प्रमुख उल्लेखनीय कहानी संग्रह हैं।

इसी क्रम में तूलिकाभूषण (बुद्धवरपु चिनकामराजु), 'ऋणानुबंधमु', 'लच्चि तल्लि' (लच्ची की माँ), 'ब्रतिकिन दिनालु' (जिये हुए दिन), 'मेरिना तीरं' (मेरीना के किनारे) आदि कहानियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

अद्भुत वस्तु एवं शिल्प विधान को अपनाकर रूढ़ियों पर प्रहार करनेवाले प्रमुख लेखक हैं चासो (चागंटि सामयाजुलु) 'वायुलीनम्', 'पंपु' (नल), 'परब्रह्मम', 'दुम्मुलुगोंड' (हड्डियों को चबाने वाला जानवर), 'कुक्कुटेश्वरम्' उनकी प्रमुख प्रगतिशील कहानियाँ हैं।

प्रगतिवादी विचारधारा के एक अन्य प्रमुख कहानीकार हैं कालीपट्टणम रामाराव। उनकी 'चावु' (म त्यु), 'संकल्प', 'यज्ञमु' (यज्ञ), 'भयमु' (भय) आदि बहुप्रचलित कहानियाँ हैं।

इसी पीढ़ी के एक अन्य प्रमुख कहानीकार हैं मधुरान्तकम् राजाराव जिन्होंने सैकड़ों कहानियाँ


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रची हैं। उनकी 'कुम्पटलो कुसुमालु' (अंगीठी में कुसुम), 'काटुक कंटि नीरू' (काजल भरी आँखों के आँसू), 'तानु वेलिगिंचिन दीपालु' (अपने द्वारा जलाये गये दीप), 'सर्कस डेरा' आदि इनकी प्रमुख उल्लेखनीय कहानियाँ हैं।

इसी क्रम में ताल्लूरि नागेश्वर राव की कलम से पाँच सौ से अधिक कहानियाँ निकलीं। उनमें 'मानवत्वमु', 'गजिटेड अफीसर भार्या' (गजेटेड ऑफीसर की पत्नी), 'माँ ऊरि कथलु' (हमारे गाँव की कहानियाँ), 'प्रेमिकुनि आंतरंगिक प्रपंचमु' (प्रेमी की आन्तरिक दुनिया), 'स्वामिवारि सन्निधि' आदि उनकी विशिष्ट कहानियाँ हैं।

पुराणम् सुब्रह्मण्यम् की 'नीति' 'कोति' (बन्दर), 'संसारम्', 'सीतजडा' आदि कहानियों के द्वारा उनकी कहानी कला का परिचय मिलता है। वह सूक्ष्म विश्लेषण द्वारा कथोपकथन को आगे बढ़ाते हैं। हास्य एवं व्यंग्य का पुट उनकी कहानियों की विशेषता है।

इस काल के अन्य प्रमुख कहानीकार हैं उनके नाम आदर के साथ लिये जा सकते हैं - दाशरथि कृष्णमाचार्य, तिरुमल रामचन्द्र राव, रामबटला कृष्णमूर्ति, गंडिकोट ब्रह्माजी राव, श्री रापूरि भरद्वाज, आवच्च वेंकटरमण, वाकाटि पांडुरंगाराव, रंधि सोमराजु, पेद्धि भोटल सुब्बरामय्या, मल्लादि रामकृष्ण शास्त्री, उषश्री (श्री पुराण पण्ड सूर्यप्रकाश दीक्षितुलु), कोम्मूरि वेणुगोपालराव, एन. एस. प्रकाशराव, पोतिकूचि सांबशिवराव, दाशरथि रंगाचार्य, सी.एस. राव, वीराजी (पिलका कृष्णमूर्ति), गोल्लपूडि मारूतीराव, आदिविष्णु, बलिवाडा कांताराव, पोलाप्रगड सत्यनारायणा, सुभा ह्विस, मुदिगोण्ड शिवप्रसाद चन्द्र सांबाबू कोलकलूरि इनाकु दक्षिणामूर्ति आदि प्रमुख कहानीकार हैं।

कहानीकार जयन्ति पापाराव, पंजाल जगन्नाथम्, नेमलिकंटि तारकरामाराव, चन्दु सुब्बाराव, के.पी. कूर्मनाथ, कालुव मल्लय्या द्वारा रचित तेलुगु आधुनिक कहानी का २०१० शतजयन्ती वर्ष हैं इस उपलक्ष्य में प्रो. से. शेषारत्नम् और श्री जयन्ति पापाराव के सम्पादन में 'सौ वर्ष - सौ कहानीकार - सौ कहानियाँ' एक व हत् ग्रन्थ तेलुगु में प्रकाशित हुआ है। सम्पादकद्वय ने इस ग्रन्थ को तेलुगु साहित्य जगत् के सामने लाने के लिए अथक परिश्रम किया। यह ग्रन्थ सौ वर्षों के अन्तराल में न केवल साहित्यिक परिणामों को प्रतिबिम्बित करता है, बल्कि वस्तुगत एवं शैल्पिक परिणामों को भी प्रतिबिम्बित करता है। यह ग्रन्थ कालक्रम को द ष्टि में रखकर प्रमुख कहानीकारों की कहानियों को संकलित कर प्रकाशित किया गया है। यह एक प्रकार से साहित्यिक शोध है। इस ग्रन्थ को मैं स्वयं हिन्दी में अनूदित कर रही हूँ। यह एक कालजयी संकलन है।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग सुगम होने के कारण नारी शिक्षित होकर समकालीन समाज को यथार्थ द ष्टि से परखने लगी। संवेदनशील नारी सभ्यता के विकास के साथ-साथ विघटित मूल्यों का आकलन भी करने लगी। इन्हीं परिस्थितियों का सजीव चित्रण करना इस युग की लेखिकाएँ प्रतिबद्धता के साथ प्रस्तुत कर रही हैं। स्वातन्त्र्योत्तर युग की लेखिकाओं ने गुण एवं राशि की दृ ष्टि से तेलुगु साहित्य को सम्‌ द्ध किया। इनमें आचंट शारदा देवी, इधिन्दुला सरस्वती देवी, तेन्नेटि हेमलता, नीना देवी, यद्धनपूडि सुलोचनाराणी, कोडूरि कौशल्यादेवी, मुप्पाल रंगनायकम्मा, मालती चन्दूर आदि के साथ कल्याण सुन्दरी जगन्नाथ, डी. कामेश्वरी, नायनि कृष्णकुमारी, परिमला सोमेश्वर, भानुमति रामकृष्ण, तुरगा जानकीराम, शिवराज सुब्बलक्ष्मी, श्री आनन्दरामम्, द्विवेदुल विशालाक्षी, मादिरेड्डी सुलोचना, ओल्गा, पाटिबंडल रजनी, पेरूमण्डल श्रीदेवी, कंदुकूरि महालक्ष्मी, कोवूरि पुष्पादेवी, अब्बूरि छायादेवी आदि प्रमुख हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस काल में वस्तु एवं शिल्प अत्यन्त शीघ्र गति से परिवर्तित हो रहे हैं। अतियथार्थवादी रचनाकारों में चरबंडराजू, नग्नमुनि आदि क्रान्तिकारी लेखक संघ के रचनाकारों का नाम भी उल्लेखनीय है।

अत: संक्षिप्त रूप में कहा जा सकता है कि स्वतन्त्रतापूर्व कहानियों में नैतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, सामूहिक, पारिवारिक आदि समस्याओं को कहानीकारों ने उजागर किया है। वैसे ही बालविवाह, दहेजप्रथा, विध ावा पुनर्विवाह, स्त्रीशिक्षा आदि समकालीन नारी समस्याओं को भी इस युग के कहानीकारों ने विषयवस्तु के रूप में चुना है। कुछ लेखिकाओं ने उक्त समस्याओं को सुलझाने का मार्ग भी दिखाया। इस काल की कहानियों में विषयवस्तु की विविधता दिखाई देने पर भी शिल्पगत वैविध्य का अभाव है।

स्वातन्त्र्योत्तर काल में मनोवैज्ञानिक और आंचिलक कहानियाँ भी लिखी गयी हैं। इनमें शिल्पगत प्रौढ़ता, शैलीगत वैविध्य दृ ष्टिगोचर होता है। तेलुगु कहानी साहित्य का विहंगम अवलोकन करने के बाद यह स्पष्ट हो रहा है कि तेलुगु कहानीकारों ने शोषण, हिंसा, अपराध, असमानता, दमन, विवशता, परतन्त्रता, मूल्यहीनता, वैश्वीकरण और उनका परिणाम यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

परिणामस्वरूप प्रगतिवादी, विद्रोहवादी, सुधारवादी कहानियों के साथ-साथ स्त्रीवाद, मैनारटीवादी आदि का प्रचलन हुआ। लेकिन अधिक लोग इस को स्वीकार नहीं कर पाये। क्रमशः ये वाद कमजोर होने लगे। वैसे ही स्त्रीवादी साहित्य में बार-बार उन्हीं समस्याओं की पुनराव त्ति नारी स्वतन्त्रता के नाम पर स्वच्छन्दता आदि के कारण इस विधा से भी लोग मुँह मोड़ने लगे। अत: इस विधा के प्रति भी आकर्षण धीरे-धीरे कम होने लगा। प्राचीन पद्य कहानी और गद्य कहानी के बाद आधुनिक युग के प्रथम विकास काल अधिकांशत: १९१०-१९३६ में सुधारवाद, व्यक्ति की मानसिक विचार एवं कमजोरियाँ, हास्य-व्यंग्य, नारी मुक्ति आदि विषयों का चित्रीकरण हुआ।

१९३६-१९४७ द्वितीय विकासकाल (प्रगतिवाद) के अन्तर्गत जमींदारी प्रथा, अधिकारी वर्ग, मजदूरों की छटपटाहट, नारी की संकट स्थिति आदि विषयों से सम्बन्धित कहानियाँ प्रकाशित हुईं। १९४७-१९६० तृ तीय काल में नवनिर्माण युग में विषय वैविध्य एवं शिल्प की प्रौढ़ता को ग्रहण कर तेलुगु कहानी ने जीवन की विद्रूपता असन्तोष एवं कठिनाइयों को समग्र रूप से उजागर करने का सफल प्रयास किया।

१९६० से चतुर्थ विकास काल (समान्तर कहानी युग या नवचेतना युग) में नव उच्च वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ। नौकरशाही वर्ग इस वर्ग के हाथ की कठपुतली बन गया। चारों ओर से शोषण और दबाव ने मनुष्य को घेर लिया। पूंजीवाद का महत्व बढ़ गया। मेधावी वर्ग उद्योगपतियों, सत्ताधारी शासकों के हाथ की कठपुतली बन गये। समग्र रूप से इसके साथ-साथ गाँवों का विघटन मूल्यहीनता, समाजजन्य आतंकवाद, बाजारवाद, हिंसाकाण्ड आदि समस्याओं पर वर्तमानकालीन तेलुगु कहानीकारों ने दृ ष्टि केन्द्रित कर कहानियों का सृ जन करने लगा। सामाजिक समस्याओं का रूप बदल गया। अत: समकालीन कहानीकारों समाज का यथार्थ चित्रण करते हुए समय-समय पर समाज को सचेत करने का सफल प्रयास कर रहे हैं। ऐसा कोई विषय नहीं जिसका स्पर्श तेलुगु कहानिकारों ने नहीं किया। सामाजिक न्याय को साधन के उद्देश्य से तेलुगु कहानीकार अपनी लेखनी चलाते हुए समाज को युगबोध से परिचालित कर रहे हैं।

४-४६-१/४, लासन्स वे कॉलोनी
विशाखापट्टनम - ५३००१७

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. विजय कुमार महांति

# ओड़िआ कहानी साहित्य की उपलब्धियाँ

ओड़िआ कहानी साहित्य अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध है। इसके विकास की एक लम्बी परम्परा है। प्राचीन ओड़िआ साहित्य में सोमनाथ व्रत कथा, खुदरूकुणि ओषा कथा, चकुलिया पंडा कथा, टुआँ टुईं कथा, श्रीया चांडालुणि कथा, जैसी कई व्रत-उपवास सम्बन्धी कथाएँ, लोकजीवन तथा किंवदन्तियों से जुड़ी हुई अनेकानेक कथाएँ पाई जाती हैं। ओड़िआ कहानी साहित्य के विकास की इस परम्परा में तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में अवधूत स्वामी द्वारा लिखी गई 'रुद्र सुधानिधि' एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा रकती है। इसमें एक योग भ्रष्ट ऋषि की कहानी वर्णित है। इसी क्रम में अठारहवीं सदी में व्रजनाथ बड़जेना द्वारा लिखित 'चतुर विनोद' का ओड़िआ साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक समृद्ध गद्य ग्रन्थ है। इसमें मूलतः एक कहानी है। इससे मुख्यतः (हास्य-विनोद, रस-विनोद, नीति-विनोद और प्रीति-विनोद) जैसी चार उपकथाएँ सृष्ट हैं। 'चतुर विनोद' में चित्रित पात्र-पात्राएँ समाज के विविध स्तरों से लिये गये हैं। फलतः तत्कालीन समाज की स्थिति पूरी मात्रा में इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुस्तक में उभर कर आई हैं। ओड़िआ कहानी साहित्य की ऐसी परम्परा में उन्नीसवीं सदी के अन्तिम चरण में परिवर्तन देखने को मिलता है।

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के जन्मदाता प्रेमचन्द की भाँति फकीरमोहन सेनापति को आधुनिक ओड़िआ कथा साहित्य की स्रष्टा माना जाता है। फकीरमोहन उस समय जन्मे थे जब ओड़िआ भाषा और साहित्य की चरम अधोगति हुई थी। तरुण वय में उन्होंने ओड़िआ भाषा और साहित्य के रक्षा समर में सेनापति बनकर उसकी सुरक्षा की थी। उन्होंने सबसे पहले तत्कालीन समाज का चित्र उभारकर ओड़िआ कथा साहित्य को एक नयी दिशा प्रदान की थी। उन्होंने सन् १८६८ से १८७० के बीच 'लछमनिया' नामक एक कहानी लिखी थी। यह उत्कल की प्रथम प्रकाशित आधुनिक ओड़िआ कहानी है। बाद में उन्होंने 'रेवती', 'पैटेण्ट मेडिसिन', 'डाक मुनसी', 'धुलिआ बाबा', 'बगुला बगुली', 'रांडिपुअ अनंना' जैसी बीस कहानियाँ एवं लछमा, मामु, प्रायश्चित और छमाग आठगुंठ (छह बीघे जमीन) जैसे चार उपन्यास लिखकर ओड़िआ कथा साहित्य को सम् द्ध किया। हालांकि उनकी ये कहानियाँ संस्कारमुखी युग में लिखी गयी हैं, फिर भी वे प्रचारमुखी साहित्य के अंगीभूत नहीं हैं। इन कहानियों में साहित्यिक मूल्य के साथ गहरा जीवन दर्शन है। वस्तुतः सन् १८९८ में प्रकाशित फकीरमोहन के द्वारा लिखी गई 'रेवती' कहानी ने ओड़िआ कथा साहित्य में हिन्दी कथाकार प्रेमचन्द की भाँति आधुनिकता का सूत्रपात किया है। यह कहानी नारी की शिक्षा और उसके अधिकार पर लिखी गयी पहली कहानी है। भारत की आत्मा गाँव की धूल-माटि, हवा-पानी में पले फकीरमोहन ने अपने उपन्यास और कहानियों के समस्त चरित्रों को उसी से समेटा है। जहाँ उन्होंने एक ओर तत्कालीन जमींदार, साहूकार, महाजन, सरकारी कर्मचारियों के शोषण, दमन जैसी काली करतूतों को खोलकर दिखाने का प्रयास किया है, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज में व्याप्त अशिक्षा, कुसंस्कार, धर्मान्धता, जाति-पाँति के भेदभाव जैसे विषयों का तीव्र विरोध करते हुए क्रान्ति का मार्ग दिखाया है।

फकीरमोहन की कहानियों के यादुकरी स्पर्श और हृदयस्पर्शी प्रभाव ने बाद में कई कहानीकारों को जन्म दिया। फलतः चिन्तामणि महांति, गोपालचन्द्र प्रहराज, लक्ष्मीकांत महापात्र, दयानिधि मिश्र जैसे कई कहानीकारों ने समाज संस्कार, ग्रामीण समस्या पर बल देकर कहानियाँ लिखीं इसी मसय लक्ष्मीकान्त महापात्र की 'बुढ़ा शंखारी' कहानी ने पाठकों के मन में आलोडन उत्पन्न किया था। शंख की चूड़ी बनाने वाला एक बूढ़ा शंखरी गाँव की एक बहू के लिए चुन-चुन कर चूड़ियाँ बनाकर ले जाता है, परन्तु उसे (बहू को) विधवा होते देख उसका हृदय टूट जाता है। वह अपना पेशा छोड़ देता है इस मनसात्विक कहानी में बहती करुण रस की धारा पाठकों को दुःखाभिभूत कर देती है। फकीरमोहन युग के बाद सत्यवादी युग के कहानीकारों गोदावरीश मिश्र, गोदावरीश महापात्र आदि की कहानियों में राष्ट्रप्रेम, मानवप्रेम, समाज संवेदना, सहानुभूति के सन्देश पाये जाते हैं।

विशिष्ट कहानीकार गोदावरीश मिश्र की तोलाकन्या, परदानसीन और पुआणिघर जैसी कहानियों में जहाँ एक ओर नारी समस्या के विविध रूपों का चित्रण मिलता है वहीं दूसरी ओर पोल उन्मोचन, बन्दी, अन्नछत्र जैसी कहानियों में राजनीतिक नेता और सरकारी कर्मचारियों की असलियत का पर्दाफाश किया गया है। गोदावरीश महापात्र की 'नीलमास्टराणी' और 'पागुणिर शगड़' समाज को प्रभावित करने वाली दो युगानुकूल सार्थक कहानियाँ हैं। 'नीलमास्टराणी' में बाल विधवा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नील परिस्थिति की चपेट में आकर एक धोबी से शादी कर लेती है। किन्तु समाज की द ष्टि से गिर जाने के कारण भयंकर मानसिक संघर्ष का सामना करती है। उसी प्रकार 'मागुणिर शगड़' कहानी में यान्त्रिक सभ्यता के विकास के बाद श्रमजीवियों की रोजी-रोटी छीन जाने की घटना का वर्णन है। खल्लिकोट के राजा द्वारा बस चलाये जाने पर गाड़ीवाला मागुणि आर्थिक संकट का शिकार होकर प्राण गवाँ बैठता है। सत्यवादी युग के कहानिकारों के बाद सबुजवादी युग के कहानीकारों की कहानियाँ ओड़िआ कथासाहित्य सम् द्ध करती हैं। सबुजवादी युग के कहानीकारों में कालिन्दीचरण पाणिग्राही, भगवतीचरण पाणिग्राही, सच्चिदानन्द राउतराय, नित्यानन्द महापात्र, सुरेन्द्र महान्ति, राजकिशोर राय और अनन्त प्रसाद पण्डा आदि प्रमुख माने जाते हैं।

कालिन्दीचरण पाणिग्राही की कहानी 'मांसर विलाप' और 'पुनश्च' में मानवीय संवेदना का मार्मिक चित्र उभर कर आया है। भगवतीचरण पाणिग्राही की कहानी शिकार में साम्यवादी चेतना का परिप्रकाश हुआ है। इसमें अत्याचारी साहूकार के प्रति विद्रोह का स्वर मिलता है। सच्चिदानन्द राउतराम की 'मशाणिर फुल' और 'माटिर ताज' जैसी कहानियों में ग्रामीण जीवन का सुन्दर चित्र चित्रित है। स्वतन्त्रता के पूर्व ओड़िआ कहानियो में मानवतावाद, गांधीवाद, राष्ट्रीय चेतना, मानवीय संवेदना और प्रगतिवादी विचार का प्रबल स्रोत दिखाई देता है। जबकि स्वातन्त्र्योत्तर ओडिआ कहानी साहित्य में मानव मन की प्रव त्तियाँ, रोमांटिक चेतना, आदिवासी जनजीवन का चित्रण, पूंजीवाद का कुपरिणाम, शहरी जीवन का शून्यता बोध, यौनक्षुधा से पीड़ित व्यर्थतापूर्ण जीवन का हूबहू चित्रण देखने को मिलता है। जाने माने कहानीकार गिरजानन्द महापात्र ने बन्दर नचाने वाले एक मदारी के चरित्र के आधार पर उसकी मानसिक क्रिया-प्रतिक्रियाओं का 'मदारी' कहानी में बड़े मार्मिक ढंग से रेखांकन किया है।

ओड़िआ कहानीकारों में गोपीनाथ महांति का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। ऐसे तो आपने स्वतन्त्रता के पूर्व कुछेक कहानियाँ लिखी थीं। पर स्वतन्त्रता के बाद आपसे लिखी गई अधिकांश कहानियों को प्रसिद्धि मिली है। उन्होंने काफी संवेदनशील प्रव त्ति लेकर उत्कल के ग्रामीण और शहरी जीवन के विविध परिवेश, वहाँ की स्थिति और समस्याओं को पूरी विश्वसनीयता के साथ कहानियों में उभारने का प्रयास किया है। आपने सौ से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। जहाँ आपकी 'भिणोइ' कहानी में हिन्दू-मुसलमानों के बीच सुसम्बन्ध को रेखांकित कर मैत्री का सन्देश दिया गया है वहीं गरीब आदिवासियों के प्रति अफसरों की सहानुभूति को 'पिंपुड़ि' कहानी में चित्रित कर मानवीय संवेदना का स्वी झंकृत किया गया है। वस्तुतः महांतिजी ने अपनी कहानियों में मानव जीवन के सामग्रिक रूप को विविध परिस्थितियों से उभारने का प्रयास किया है। आलोचक डॉ. वैष्णव चरण सामल के अनुसार - "फकीरमोहन के बाद क्रान्तिकारी स्रष्टा गोपीबाबू ने उत्कल के परिवर्तित सांस्कृतिक जीवन को जिस प्रकार अनुभव किया है, वैसा ही द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सामाजिक परिस्थितियों, हिन्दू-मुसलमानों के बीच हुए साम्प्रदायिक दंगों (१९४६), स्वातन्त्र्योत्तर नागरिक जीवन में आये संकट और असाहयता तथा सर्वोपरि हमारे समाज के उपेक्षित वर्ग आदिवासियों के जीवन संघर्ष को बहुत गहराई से अनुभव किया है। इन्हें उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में रूपायित किया है।" (डॉ. वैष्णवचरण सामल - 'ओड़िआ गल्प : स्रष्टा मानस' में गोपीनाथ महांति की कहानियाँ एक द ष्टिपात, प ृ. २८९)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वातन्त्र्योत्तर ओड़िआ कहानीकारों में सुरेन्द्र महांति, निमाइ चरण पट्टनायक, अनन्त प्रसाद पंडा, वामाचरण मिश्र, विभूतिभूषण त्रिपाठी, किशोरीचरण दास, देव्राज लेंका, दुर्गामाधव मिश्र, कृष्णचरण बेहेरा, वीणापाणि महांति, विभूति पट्टनायक, प्रतिभा राय, अक्षय महांति, रत्नाकर चइनि, जेनामणि नरेन्द्रकुमार, रवि पट्टनायक, बसंतकुमार शतपथी, मनोज दास, रामचन्द्र बेहेरा, सातकड़ि होता जैसे लब्धप्रतिष्ठ अनन्त प्रसाद पंडा की कहानियों में आधुनिक शहरी जीवन की तस्वीर खींची गई है वहीं विभूति भूषण त्रिपाठी और दुर्गामाधव मिश्र आदि की कहानियों में यौन जिज्ञासा, वैयक्तिक अहम् तथा मानसिक संघर्ष का सूक्ष्म रेखांकन हुआ है। ओड़िआ कहानी साहित्य में फकीरमोहन के बाद कथाकार मनोज दास की एक स्वतन्त्र पहचान है। आप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि प्राप्त करने वाले कथाकार हैं। आरण्यक, कथा ओ कहाणी, धूम्राभ दिगंज ओ अन्य काहाणी जैसे कहानी संग्रह आपकी बहुचर्चित कृतियाँ हैं। इन कहानियों में सामाजिक कुसंस्कार, मानवीय मूल्य बोध का ह्रास, वर्ग संघर्ष आदि बहुविध चित्र उभर कर आये हैं। आपकी कहानियाँ युगानुकूल हैं। स्वातन्त्र्योत्तर ओड़िआ कहानियों में महिला कहानीकार वीणापाणि महांति और प्रतिभा राय की कहानियाँ सशक्त और सार्थक पायी जाती हैं। वीणापाणि की कहानियों में समाज के उच्च वर्ग से निम्न वर्ग तक के अनेकानेक चरित्र उभरकर आये हैं। 'कस्तुरी मृ ग ओ सबुज अरण्य', पांथशालाा ओ रक्त करबी, आरोहण, अंधकार छाइ, मध्यान्तर, वस्त्रहरण, तृ तीय पाद, पाटदेई, अश्रु अनल और एकाकी पराशर आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। हिन्दी नई कहानी में कृष्णा सोबती, मन्नु भण्डारी, और उषा प्रियंवदा जैसी प्रमुख लेखिकाओं की भाँति आधुनिक ओड़िआ कहानी साहित्य में वीणापाणि स्थान है। उनकी कहानियात्रा एक ओर गाँव से लेकर शहर तक के मध्यम वर्ग की जनता की विविध समस्याओं, उनके दु:ख-दर्द की गाथा है, तो दूसरी ओर वेदनासिक्त नारी जीवन की अनकही कथा हैं। उनकी कहानियों में अनुभूति की गहराई है। इस प्रकार ओड़िआ कथाकारों में प्रतिभा राय और एक प्रतिभा है। इनके कहानी संग्रहों में असमाप्त, ऐक्यतान, अलक्त, इतिव त्तक, भगवाँर देश आदि एक-एक सार्थक स ष्टि है। इसी प्रकार ओड़िआ कथा साहित्य में श्रीमती विजयिनी दास एक अनन्य प्रतिभाधर लेखिका हैं। कविता, कहानी और उपन्यास तीनों में उन्हें काफी सफलता मिली है।

इस प्रकार स्वतन्त्रता के पश्चात् ओड़िआ कहानी साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ है। साठोत्तरी ओड़िआ कहानी की रचनाशैली में काफी परिवर्तन हुआ है। कहानयों में कथातत्व का ह्रास, पारंपरिक कथावस्तु का विरोध, प्रतीकात्मकता का व्यापक प्रयोग मिलता है। कहानियों में समकालीन समस्याओं को उभारा गया है। चन्द्रशेखर राय, जगदीश महांति, रत्नाकर चइनि, शुभेन्दु पुण्ड, सातकड़ि होता, अनादि साहु, विश्वरंजन, शांतनु कुमार आचार्य, हृषीकेश पंडा, फनी महांति, हरिहर दास, पद्मज पाल, रामचन्द्र बेहेरा, कविता बारिक जैसे कहानीकारों ने समकालीन समस्याओं को लेकर अनेकानेक कहानियाँ लिखी हैं।

इसी क्रम में आये ओड़िआ कहानीकारों में हास्य-व्यंग्य कहानीकार फतुरानन्द मंगलबारिया साहित्य संसद, अमृ त बेहिया और मुचुकुन्धिआ जैसी हास्य-व्यंग्य कहानी संकलन हास्य-व्यंग्य कहानी की परम्परा में एक-एक मोती है। हिन्दी के प्रख्यात् व्यंग्य कहानीकार हरिशंकर परसाई की तरह उनकी कहानियों में हास्य-व्यंग्य का सफल चित्रण हुआ है।

साम्प्रतिक काल में सर्वश्री प्रदीप दास, विष्णु साहु, देवव्रत मदन राय, ममतामयी चोधुरी,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरोजिनी साहु, दीप्ति रंजन पट्टनायक, भानुमति साहु, सुनील रथ आदि की कहानियाँ ओड़िआ कहानी साहित्य को नयी दिशा दे रही हैं। इस प्रकार देखा जाय तो आज ओड़िआ कहानी साहित्य बहुवस्तु स्पर्शिनी होने के साथ-साथ भाषा और शैली की दृ ष्टि से भी अपना एक अलग महत्व रखता है। नयी-नयी प्रतिभाओं के आगमन और उनकी लेखनी के स्पर्श से क्रमशः ओड़िआ कथा साहित्य विश्व साहित्य में परिचित हो रहा है। फकीरमोहन सेनापति, नित्यानन्द महापात्र, कालिन्दी चरण पाणिग्राही, कान्हुचरण महान्ति, सच्चिराउतराय, गोपीनाथ महांति, मनोज दास, वीणापाणि महांति, प्रतिभा राय जैसे विशिष्ट सारस्वत साधक इसके बलिष्ठ उदाहरण हैं। उनकी कृतियाँ आज केवल ओड़िआ साहित्य में ही नहीं बल्कि भारतीय तथा विश्व साहित्य में स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। ओड़िआ कहानीकारों की निरलस साधना और त्योगपूर्ण निष्ठा से उसके और भी आगे बढ़ने की सम्भावना है।

*प्राध्यापक, हिन्दी विभाग*
*फकीरमोहन महाविद्यालय*
*बालेश्वर - ७५६ ००१ (ओड़िशा)*
*मोबा. : ९७७८३१२०१०*



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिरीष पंचाल

# गुजराती कथा यात्रा

गुजराती उपन्यास की तुलना में गुजराती कहानियों का प्रारम्भ काफी अरसे के बाद हुआ था। हालांकि ज्यादातर भारतीय भाषाओं की कहानियों का स्वरूप रचा गया बीसवीं सदी के दूसरे और तीसरे दशकों में और वो भी पत्रिकाओं द्वारा। अगर हम गुजराती भाषा की बात करें तो कहानियाँ 'बुद्धिप्रकाश', 'सुन्दरी बोध', 'बीसमी सदी' जैसी पत्रिकाओं द्वारा शुरू हुईं। प्रारंभिक दशकों में सुमति, प्रमिला, अरविंदा, विद्या बहन, नीलकण्ठ जैसी लेखिकाएं काफी सक्रिय थीं। इस दौरान लिखी गई कहानियाँ कुरीतियों अंधश्रद्धा, स्त्री-पुरुष समानता और स्त्री शिक्षा जैसे विषयों पर केन्द्रित थीं। इनके अलावा लिखी गई कहानियाँ केवल मनोरंजन के उद्देश्य से लिखी जाती थीं।

अर्थशास्त्रज्ञ अंबालाल देसाई की कृति 'शांतिदास' (१९०८) को गुजराती कहानियों का आरंभ बिन्दु माना जाता है। मगर यह कहानी शहर या यंत्र द्वारा उत्पादित चीजों से हस्तकला की चीजें सामाजिक उत्कर्ष के लिए ज्यादा बेहतरीन हैं यह समझाने के लिए लिखी गई थीं। कहानियों को कला देह (शब्द देह) देने वाले प्रारंभिक कहानीकार थे धनसुखलाल महेता, कनैयालाल मुन्शी,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कंचनलाल महेता, मलयानिल और रणजित राम महेता। कहानी की खुद की विभावना के आधार पर गुजराती भाषा की पहली कहानी कौन-सी है यह तय किया जा सकता है। धनसुखलालजी महेता ने कहानी का स्वरूप रचने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने विविध प्रसंग चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किये। समाज के मध्यमवर्गीय लोगों से बहुत नजदीकियाँ रखती हुई इन कहानियों को पाठक वर्ग मिला। ज्यादातर कहानियाँ विनोद, कटाक्ष से भरी होने के बावजूद 'बा' जैसी कहानी में, धीरे-धीरे अकेली हो जाने वाली विधवा माँ की वेदना को बहुत ही कलात्मक ढंग से बुना गया है तो दूसरी ओर कनैयालाल मुन्शी की कहानियों में प्रासंगिकता के बावजूद गुजराती गद्य के लिए नये परिमाण दिखाई देते हैं। मानव अनुभूति के ज्यादातर चिरंजीव अंश पर रची गई 'गोमति दादानुं गौरव' कहानी उनकी दूसरी कहानियों से एकदम अलग नजर आती है। 'मलयानिल' की कहानियाँ आत्यंतिक परिस्थितियों का विशेष आलेखन है। उनकी सबसे उत्कृष्ट कहानी 'गोवालणी' के केन्द्र में भी कठिन स्थिति में फंसे हुए नायक का हास्यात्मक बयान है। हाँ, उसमें उपदेशात्मक, या चिन्तन बगैर कुछ नहीं। इस प्रारंभिक काल ने कहानी के लिए एक भूमिका तैयार की और तीसरे दशक में 'कथा सम्राट' का खिताब पानेवाले गौरीशंकर जोशी 'धूमकेतु' का प्रवेश हुआ। पाँच सौ से अधिक कहानियों के रचयिता यूरोपियन कहानीकार और रविन्द्रनाथ ठाकुर की कृतियों से बेहद प्रभावित थे। उनकी कहानियों में स्थल वैविध्य देखने को मिलता है। साथ ही साथ उन्होंने अलग-अलग कथनात्मक साँचे का प्रयोग भी सफलता से कर दिखाया। वास्तववाद का समन्वय आदर्शवाद और भावनावाद के साथ रचने की हिम्मत भी उन्होंने ही की। उनकी कहानियों के मुख्य चरित्र आसपास के जीवन से बाहर हो गए हैं। उनका आधुनिक जीवनशैली, यांत्रिकता, प्रकृति का हुआ विध्वंस, कुदरती सौन्दर्य का देशनिकाला होना, शहरी संस्कृति की बर्बरता वगैरह के खिलाफ क्रोध जायज था। वे अपने काल से परे इन सवालों की गंभीरता परख चुके थे। धूमकेतु की नजर में वही उत्कृष्ट कहानी है जिसमें वस्तुविधान, पात्रलेखन (परिचय) और शैली - इन तीनों का सुन्दर संगम हो। और उनका यह भी मानना था कि 'जिस काल में हम रहते हैं, उस समाज को अस्प श्य मानकर कोई भी साहित्यकार अपना उत्तम सर्जन नहीं कर सकता।' उनकी देश परदेश में सराही गई कहानी 'पोस्ट-ऑफिस' में अली नाम के बुजुर्ग जब बेटी का खत न पाकर निराश हो गए हैं और उन्हें अकेलापन खाए जा रहा है, तब उनके दिल के दर्द को और प्रभावित करने के लिए एक और पोस्ट मास्टर का चरित्र बयाँ किया गया है। दोनों को एक-दूसरे का पूरक बनाया, एक-दूसरे का समान तौर पर उपयोग किया। सांस्कृतिक धरोहर, कला की धरोहर बचाने में समाज कितना बेखबर है यह बात बड़ी करुणा के साथ 'विनिपात' कहानी में बताई है। तो 'स्त्री द् श्य' कहानी में निचली जाति का लोकजीवन, कथन पद्धति के विशिष्ट प्रयोग द्वारा प्रकट किया। अपने समय में आगे जाकर 'कविता नो पुनर्जन्म' कहानी में उन्होंने आकाश में बांधे जाने वाले और एक-से चेहरे वाले महल नंबर से पहचाने जाते हैं। ऐसे इंसानों की कल्पना करके भविष्य में लिखे जाने वाले साहित्य की पूर्व भूमिका बनाई। तीसरे दशक में धूमकेतु के साथ में कहानीकार रामनारायण पाठक थे। वे कवि हैं, विवेचक हैं। उनकी कहानियों को इन बातों से बहुत लाभ हुआ। 'खेमी', 'सूरदास' जैसी कहानियाँ उन्होंने धूमकेतु की परम्परा में लिखी हैं, पर उनकी और कहानियों में उनका अलग रूप नजर आता है। कभी अपने पात्र के


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हृदय की वेदना को मूर्त रूप देने के लिए वे द्र ष्टान्त (कथा) सामने रखते हैं (उदा. 'मुकुन्दराय')। तो कभी मनुष्य की प्रकृति में बने रहे दूरत्व की बात वे अपने समय के विरुद्ध जाकर करते हैं (उदा. 'बे भाईओ', 'उत्तर मार्ग नो लोप' 'केशवराम')। जबकि 'छेल्लो दांडक्य भोज' जैसी कहानी गांधीवादी नैतिक जीवन द ष्टि से दूर जातीय विकृति का ब्यौरा देती है। 'वर्ना विनोद मंडल' में वे कहानी और विवेचन दोनों समानान्तर रखते हैं।

गांधीयुग के एक और महत्त्वपूर्ण कहानीकार हैं झवेरचन्द मेघाणी। पब्सन और चेखोव से काफी प्रभावित इस लेखक ने रविन्द्रनाथ ठाकुर की काव्यकृति को अनुवादित किया है। फिर भी वे एक प्रसिद्ध लेखक (कहानीकार) हैं। कहानियाँ लिखने का उनका मुख्य उद्देश्य समकालीन सामाजिक जीवन की समस्याओं को सबके सामने लाना है। वे मध्यकालीन साहित्य और लोक साहित्य के पूर्ण अभ्यासक होने के बावजूद केवल परम्पराओं को जकड़े हुए नहीं थे। सामाजिक विषमता, सामाजिक अन्याय, अंधश्रद्धा और कुरीतियों से निकले अनिष्ट के खिलाफ उनकी कहानियाँ लड़ना चाहती हैं। इसके लिए उनके पात्रों को बहादुर, दरियादिल और त्यागमूर्ति भी बनना पड़ा है। जिसे हम आज प्रतिबद्ध साहित्य के रूप में जानते हैं, उनकी नींव यहाँ गढ़ी है। साथ ही साथ उनके पात्र पाठक के चित्त में प्रवेश करने का सामर्थ्य रखते हैं जो हमें 'बदमाश', 'बहु अने छोड़ो' कहानियों में दिखाई देता है।

गांधीयुग के दो बड़े दिग्गज कवि थे सुन्दरम् और उमाशंकर जोशी, हालांकि उनका काव्य कहानी विश्व से काफी अलग है। सुन्दरम् की एक प्रसिद्ध कहानी 'माने खोले' में सामाजिक वास्तव व्यंजित बनकर उभर आता है। मायके से वापस लेने को आए हुए नायिका शबु के ससुर और पति मही नदी के पाट में ही उसका खून करते हैं। यहाँ ससुर की निर्दयता व हिंसकता और पति की कायरता भरी लाचारी और मगरमच्छ की दुनिया में कदम न रखने की इच्छा होते हुए भी उन्हीं के साथ चलने वाली मासूम नायिका - इन सबकी सन्निधि असामान्य तरीके से की गई है और आखिर में ऐसी लाचार, झूठे इल्जाम को सहती नारी के लिए तो प्रकृति या धरा की गोद ही आश्रय स्थान होती है। 'खोलकी', 'भाजा बेलानुं म त्यु' जैसी कहानियाँ वास्तववादी और निसर्गवादी शैली का समन्वय हैं।

उमाशंकर जोशी की पूर्वकालीन काव्यस ष्टि के केन्द्र में भावनाएँ, आदर्श और मांगल्य की अनुभूति होती है। तो इसी दौरान उनके द्वारा लिखी गई कहानियों में (और एकांकियों में भी) जीवन के भयानक अंधेरे पहलू का आलेखन किया है। 'लोही तरस्यो', 'छेल्लुं छाणुं' जैसी कहानियों में इंसान में छुपी हुई बैर की भावना नाट्यात्मक अभिव्यक्ति के साथ ग्रामीण भाषा का असामान्य कौशल द्र ष्टिगोचर होता है। ये कहानियाँ न केवल सामाजिक वास्तविकता बताती हैं, साथ-साथ मनोगत वास्तविकता भी बताती हैं। इस बात का उत्तम उदाहरण 'मारी चंपानो वर' है। सामाजिक नीतिमत्ता के स्तर को स्पष्ट करने वाली यह कहानी मनुष्य और समाज, मनुष्य और मनुष्य तथा मनुष्य और उसका अपना मन: इन सबके बीच कैसा संघर्ष उठता है इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। इस कहानी में सूक्ष्म भूमिका द्वारा बिना वाच्यार्थ की मदद लिए सास-दामाद के सम्बन्ध की कहानी कही है।

विषय वैविध्य, स्थल-काल वैविध्य तथा पात्र वैविध्य की धूमकेतु की बनायी परम्परा को विस्त त करने का काम चुनीलाल मठिया करते हैं। उनकी कहानियों की भाषा ग्रामीण और नगरीय विशिष्टताओं का वर्चस्व दिखाती है। इनके विशाल अनुभव का फायदा उनकी अनेक कहानियों को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिला है। कहानी के अनुसार वातावरण बनाकर उस कहानी को एक घटक के तौर पर कैसे प्रयोग किया जाये उसका उत्तम उदाहरण है 'वानी मारी कोयल'। इस कहानी में वसुधा की उर्वरता, बेवक्त जन्मी परपुरुष की कामना तथा अन्धे बूढ़े का अफीम का व्यसन - इन सबकी सन्निधि इस कहानी में बनी हुई है। इस वातावरण से ही कहानी का कारुणिक अन्त होता है। 'शरणाई ना सुर', 'अन्त:स्रोता' आदि कहानियाँ उनके चरित्रों का अकेलापन, दु:ख और वीरता स्पष्ट रूप से प्रकट करती हैं।

इन ग्रामीण धाराओं को छोड़ गुलाबदास ब्रोकर अपनी कहानियों को मुम्बई जैसे महानगर के परिवेश में रखते हैं। उनकी कहानियों में फ्रेंच कहानीकार मोपासां की शैली का अनुसरण है। पर उनके पात्र जिस मध्यम वर्गीय समाज से हैं उनकी सामाजिक समस्याएँ महत्त्व नहीं रखती। उनको तो अपने पात्रों के मन की दुनिया के आन्तरिक संचालन में रुचि रही है। यह तो ठीक है कि उनकी 'लता शुं बोले?' कहानी ज्यादा प्रसिद्ध हुई है पर 'नीलीनुं भूत', 'धूम्रसेर' जैसी कहानियों में पात्रों के अपराध- ी मानस का आलेखन करके उन्होंने एक नयी परम्परा बनायी है। इन पात्रों को कृत्रिमता से भव्य या उदात्त बनाने का कोई प्रयास नहीं किया, साथ ही साथ उनको किसी प्रायश्चित की आग से पसार किया गया नहीं है। देखा जाये तो उन्होंने जीवन पर चढ़ाये नकली मुखौटे को उतार कर अपनी दुर्बलताओं के आमने सामने लाकर खड़ा किया है।

कम शिक्षित और मजदूरी करने वाले पन्नालाल पटेल (मनवीनी भवाई के सर्जक) उमाशंकर जोशी की एकांकिकाएँ पढ़कर हाथ में कलम उठाते हैं और गुजरात-राजस्थान के सीमावर्ती प्रदेश के समाज को दिखाते हैं। इस ग्रामीण समाज के पात्र भद्रवर्ग के आचार-विचारों का उल्लंघन करते हैं पर साथ ही अनजाने में अपने जीवन मूल्यों को बराबर निभाते हैं। 'कंकु' कहानी में गाँव के वणिक के सम्बन्ध में गर्भवती हुई विधवा कंकु को लोग नोचते नहीं मगर उसका पुनर्विवाह करते हैं। गिनती में तो पन्नालाल पटेल ने धूमकेतु के बराबर ही (करीब ५००) कहानियाँ लिखीं हैं। वे पात्र के अन्दर तक सहजता से और कलात्मक रीति से पहुँच जाते हैं। 'साची गजियाणी नुं कापडुं' कहानी में नायक अपने पहचान वाली लड़की के लेनदेन के लिए गाँव के व्यापारी के यहाँ कपड़ा खरीदने आता है। पर यह लड़की उसी व्यापारी की नाजायज सन्तान है और नायक भी इसी परिणीता से प्रेम करता है। पर ये बातें कहानी में कहीं भी स्पष्ट या प्रत्यक्ष रूप से नहीं दिखाई देती। 'वात्रक ने कांठे' कहानी में दो पतियों के बीच अटकी हुई नायिका की मनोवेदना मूर्त करने के लिए वात्रक नदी का परिसर के तौर पर उपयोग किया है।

गुजराती कहानी अब अलग (नयी) दिशा में गति करती है। बकुलेश, केतन मुनशी, जितुभाई महेता, वेणीभाई पुरोहित जैसे कहानीकार समाज जीवन के बिल्कुल ही अनभिज्ञ जगह पर ले जाते हैं - खास कर के बकुलेश और केतन मुनशी। अब खनिक, तवायफ, तवायफ के दलालों, गटरों में काम करने वाले मजदूरों, गुनहगारों का आलेखन किया जाता है। १९६० के बाद की कहानियों की पूर्व भूमिका यहाँ रची गयी है। यहाँ प्रत्यक्ष और परोक्ष रीति से मानवतावाद ने प्रवेश किया है। अपने समय से आगे जाकर बकुलेश जैसे कहानीकार अतिवास्तववाद और अस्तित्ववाद की बात करते हैं। बकुलेश की 'किमी चान', 'कादब नां कंकु' या फिर केतन मुनशी की 'फटको' जैसी कहानियाँ समाज की दृ ष्टि से घृ णापात्र हैं पर उनमें दिखने वाली मानवता उनको महान् बनाती है। कभी-कभी विज्ञान कथा के कल्पित विनियोग भी दिखाई देंगे।



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी प्रकार के विस्तार स्वरूप जिनको हम जान सकते हैं वे जयन्त खत्री। वे कच्छ प्रदेश को सजीव करते हैं। 'लोही नुं टीपुं' में वातावरण का विनियोग देखो, 'कृष्ण जन्म' में नवदीक्षा लेने वाला किशोर देखो या कुटुम्ब चलाने के लिए अपना जिस्म बेचने वाली 'खिचड़ी' की नायिका देखो, या रोमांटिक जीवन की ख्वाहिश करने वाली तेज, ध्वनि अने गति की नायिका देखो-पात्रों की दुनिया के अंधि-यारे-उजाले समाज के विधि निषेधों को छोड़कर यह जगत रचा गया है। 'किरपाण', 'महंमद', 'वांसली' कहानियों में भी अब तक स्थान न मिलने वाले इंसान का आलेखन किया है। जयन्त खत्री के साथ ही जिनका नाम लिया जाना चाहिए वे हैं जयन्ती दलाल। आधुनिक कहानी की ठोस पीठिका लिखने वाले इस कहानीकार की 'आ घेर, पेले घेर' में दूसरी औरत के प्यार में बद्ध पति से मिला घर, पैसा सब त्याग कर अपने बलबूते पर खड़े होने का प्रयत्न करती नायिका नारी चेतना की कलात्मक अभिव्यक्ति करती है। पुरुष प्रधान संयुक्त कुटुम्ब में सबकी आवाज को दबाने वाले पुरुष से विद्रोह करने वाली औरत का अपने उजड़ने वाले संसार को फिर से खड़ा करने के लिए प्रयत्नशील स्त्री का आलेखन सहज व्यंग्यात्मक चित्रण है। काल्पनिक तत्त्वों का विनियोग करने वाली 'टपुभाई रातड़िया' भविष्य में लिखी जाने वाली कहानियों की भूमिका बनाती है।

यहाँ पर गुजराती कहानियों का एक दौर समाप्त होता है। इस दौरान के लेखक एक दूसरे से भिन्न नहीं थे इसलिए यह परम्परा पुष्ट होती है। आधुनिक काल की प्रयोगशीलता न होते हुए भी विलक्षण आविष्कार है। केवल कहानियों के क्षेत्र के ही नहीं परन्तु समग्र आधुनिक गुजराती साहित्य के सबसे बड़े प्रवर्तक हैं सुरेश जोशी। पुरानी कहानियों के प्रति वे असन्तुष्ट थे। साथ में अद्‌भुत और भयानकता से दूर जा चुकी और प्रत्यक्षता की बजाय परोक्षता को जिसने स्वीकार किया है ऐसी यान्त्रिक संस्कृति के खिलाफ भी उनको विद्रोह करना था। यूरोप-अमेरिका और जापान की कहानियों से प्रभावित होने के बावजूद उनकी कहानियों में पूर्ण रूप से भारतीय माहौल देखने को मिलता है। परम्परा से सम्पन्न होने के बावजूद अस्तित्ववादी सर्जन और चिन्तन के करीबी परिचय से उनकी कहानियों में नया माहौल दिखाई दिया। वे समूह में कहानियाँ लिखते हैं और उनकी कई कहानियाँ दूसरी कहानियों की पूर्व भूमिका होती हैं। हकीकत से लेकर काल्पनिक तक का विस्तार उनकी कहानियों में दिखाई देता है। 'अपि च' और 'न तत्र सूर्यो भाति' संग्रह में उनकी उत्कृष्ट कहानियाँ समाविष्ट हैं। उनकी कहानियों के पात्रों को भूतकाल में अर्थपूर्ण विश्व को खोने का दुःख है। 'थीगहुं', 'लोहनगर', 'राक्षस', 'वर्तुक', 'बे सूरजमुखी अने. ..' जैसी कहानियाँ अजरामर बनाने को लिखी गयी हैं।

सुरेश जोशी के बाद किशोर यादव और मधु राय गुजराती कहानी क्षेत्र के महत्त्वपूर्ण लेखक थे। किशोर जाटव संकुल रचना रीति का आश्रय लेकर कहानियाँ लिखते हैं। 'सोनेरी माछली' कहानी में नायक से उसका भूतकाल और भविष्यकाल छीन लिया जाता है। केवल वर्तमान के पल और एक ऐसे पल में साक्षात्कार करते समय नायक किसी अनदेखी सत्ता के हाथों फँस जाता है। 'जलचर', 'लेबीरीन्थ' उनकी अन्य प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। मधुराय की कहानियाँ सुरेश जोशी की कहानियों के विरुद्ध छोर से गतिमान होती हैं। उन्होंने घटना के आधार और विशिष्ट कथन रीति द्वारा भी कहानी के क्षेत्र को बढ़ाया जा सकता है, ये सिद्ध किया। हमको उनसे 'काचनी सामे काच', 'इंटो ना सात रंग' और 'कान' जैसी उत्तम कहानियाँ प्राप्त हुईं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परम्परागत शैली का वर्चस्व तो इस दौरान चलता ही रहा। पर सरोज पाठक तथा चन्द्रकान्त बक्षी की शैली पिछली परम्पराओं से अलग है। आन्तरिक चेतना प्रवाह की रचना रीति का विनियोग करने वाली सरोज पाठक की 'न कौंस मां न कौंस बहार' बहुत ही प्रसिद्ध है। उनकी कहानियाँ पाठकों को अनायास मानव चेतना की गहराई में ले जाती हैं। चन्द्रकान्त बक्षी की कहानियों की भाषा में उर्दू की झलक है और कहानी के विषय और पात्रों में अस्तित्ववाद की झलक है।

यह समय आधुनिकता और प्रयोगशीलता का था। राधेश्याम शर्मा, घनश्याम देसाई, सुमन शाह जैसे लेखकों का इसमें समावेश किया जा सकता है। चिनु मोदी, भूपेश अध्वर्यु ने लोककथा-व्रतकथा के ढाँचे का इस्तेमाल किया। भूपेन्द्र खख्खर ने मध्यमवर्गीय और दिखावे की जीवनशैली का हास्य-विनोद की झलक के साथ-साथ लोकप्रियता के अंश को सहजता से कहानी में प्रयुक्त किया। सुधीर दलाल, धीरूबहेन पटेल, विभूत शाह ने परम्परागत ढाँचों के क्षितिज का अलग तरीके से विस्तार किया। विनेश अन्ताणी ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को लाक्षणिक रूप से बयान किया।

इसी कालखण्ड में समाज के उपेक्षित वर्ग के आलेखन करने में अग्रणी रहे हिमांशी शेलत और मोहन परमार। इस तरह नारी चेतना, दलित चेतना के संकुल आलेख होने लगे। स्त्रियों की समस्याओं पर विशेष ध्यान दिया हरीश नागरेचा ने। 'वायु' जैसी कहानी में किरीट दूधाते ने विद्रोहिणी और अशिक्षित नारियों को प्रस्तुत किया। ग्राम चेतना की एक अलग तस्वीर मणिलाल पटेल और अजित ठाकोर की कहानियों में दिखाई देती है।

उत्तरकालीन कहानियों की प्रगति में सुमन शाह, अजित ठाकोर, मणिलाल पटेल, भरत नायक-गीता नायक की कहानियाँ और अन्तर्राष्ट्रीय कहानियों के विवेचन का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

*अनु.*
*प्रतिमा विप्रदास*
*ए-४/३, गणेशकृपा सोसायटी, चीकूवाड़ी,*
*अलकापुरी, बड़ौदा - ३९०००७*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



श्रीधर पराडकर

# कथा सम्प्रेषण की गर्हितता

कथा मानव संवेदना के सम्प्रेषण की सशक्त विधा है। साहित्य से उसका सहज व प्रथम सम्बन्ध कथा के माध्यम से ही होता है। प्रत्यक्ष रूप से कथा सुनना तथा सुनाना मनोरंजन के लिए होता है। परन्तु कथा ही नहीं सम्पूर्ण साहित्य का अन्तर्निहित उद्देश्य मनुष्य को मानवीय संवेदनाओं का सहभागी बनाते हुए सत्कार्य में प्रवृ त्त करना होता है। यहाँ चर्चा कथा की कर रहे हैं। उपदेश कथावस्तु गर्हित भाग है। अत: मनोरंजन, मानवीय संवेदना तथा उपदेश के बिना कथा का मनुष्य मन पर सकारात्मक परिणाम नहीं होता। वैसे कथा की रचना इन तीनों बातों के बिना भी हो सकती है। वह मनुष्य मन को आलोड़ित भी करेगी। लेकिन वह आलोड़न, उत्तेजना, विक्षोभ, विद्रोह, निराशा, हताशा उत्पन्न करने वाला होगा। मनुष्य के मन-मस्तिष्क को गलत दिशा की ओर ले जाने वाला होगा।

मनुष्य जब शैशवावस्था में होता है, तब उसे रात्रि में यथासमय सुलाने के लिए कथा का अवलंब लिया जाता है। ऐसा आदमी ढूँढना कठिन है जिसने कभी कथा न सुनी हो। कथा में प्रतिपादित संदेश की ग्राह्यता सहजता से बुद्धिगम्य होती है। अत: आवश्यक है कि कथा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की प्रस्तुति सहज, सरल व रोचक हो। सुनाने वाला रोचक ढंग से कथा प्रस्तुत करे, सुनने वाला रुचिपूर्वक सुने, तभी सही सम्प्रेषण होता है।

कथा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा बड़ी से बड़ी बात आसानी से कही जा सकती है। आदर्श उदाहरण के रूप में पंचतंत्र की कथाएं हमारे सामने हैं। पंचतंत्र में उल्लेखित राजपुत्र किसी तरह पढ़ने को तैयार नहीं थे। राजा अपने पुत्रों को अनपढ़ कैसे रहने देता। उसने पुत्रों की पढ़ाई के हरसंभव प्रयास किये। लेकिन राजपुत्र भी अपनी धुन के पक्के थे, पढ़ाई से भागने तथा पढ़ाने वालों को भगाने का प्रबंध कर ही लेते थे। अन्त में आचार्य विष्णु शर्मा ने राजपुत्रों को पढ़ाने का जिम्मा लिया और कथाओं के माध्यम से राजपुत्रों को नीतिशास्त्र की शिक्षा दी। कथाओं की रोचकता में खोये राजपुत्र समझ ही नहीं पाये कि खेल-खेल में कब उनकी पढ़ाई पूरी हो गई।

मुझे अपने बचपन का स्मरण है। रात हम भाई-बहनों को कथा सुनाने का जिम्मा हमारी दादी और लगभग समवयस्क चाचा पर था। दोनों कथा सुनाते तो थे, लेकिन दोनों का ढंग अलग-अलग था। दादी का एकमात्र उद्देश्य हमें बटोरकर रखना तथा किसी तरह सुला देना था। वह कहानी सुनाती थी, उसे सुनने में हमें जरा भी रस नहीं आता था। उसका कथाकथन एक रस्म अदायगी मात्र होता था। चाचा बहुत ही रोचक ढंग से कथा सुनाता था। सुनने में भी बहुत मजा आता था। लेकिन उसका अंदाज मास्टराना था। कथा के बाद प्रत्येक को बताना होता था कि कथा से क्या सीख ली। इतना ही नहीं उत्तर न देने पर पीठ में जोर का घूंसा पड़ता था। सब एक ही सीख बतायें यह भी उसे पसंद नहीं था। प्रत्येक कथा के बाद उसका वह सवाल कथा सुनने का मजा खत्म कर देता था। क्योंकि कथा सुनते-सुनते यह भी सोचते रहना पड़ता था कि अपने को क्या उत्तर देना है।

तब हमें भले ही अधिक समझ में नहीं आया हो, मगर आज आवश्यकता पड़ने पर अथवा मुसीबत आने पर कर्तव्यकर्म की प्रेरणा मन में उठती है, उसके पीछे बचपन में सुनी वह कथाएं ही होती हैं। जरूरी नहीं है कि हर बार उन संदेशों के अनुसार कर्म हाथ से होता ही हो, पर जब भी कोई शुभ कर्म हाथ से सम्पन्न होता है, तब कहीं न कहीं उन कथाओं का संदेश ही सत्कार्य की प्रेरणा होता है।

इस अनुभव की अनुभूति तब अधिक तीव्रता से होती है, जब आज की कथाओं को पढ़ता हूँ। इन कथाओं में यथार्थ के नाम पर उद्वेग, रोष, क्रोध, प्रतिशोध, सामाजिक द्वेष, कुरीतियों का वीभत्स चित्रण कर उत्तेजना को भड़काया जा रहा है। समाज की आंतरिक खाई को चौड़ा किया जा रहा है। नारी उत्पीड़न की आड़ में कामुकता व स्त्री-पुरुष संबंधों का रसभरित चित्रण किया जाता है। दलितों का चरित्र चित्रण करते समय गालियों का भरपूर प्रयोग कर कुत्सित भड़ास निकाली जाती है। अपराधी प्रवृत्ति को प्रतिशोध बताकर जायज ठहराया जाता है। आतंकियों का खुला समर्थन करने में भी कथाकारों को संकोच नहीं होता। इन कथाओं के रचनाकार अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को जानते नहीं हैं अथवा समझबूझकर योजनापूर्वक उसकी उपेक्षा कर रहे हैं। लघुकथा यदाकदा ही प्रेरक होती है। अधिकांश तो कुरूपता को इंगित करती हैं। लघुकथा मानों विद्वेष प्रकटीकरण का प्रबल हथियार है।

इस प्रवृत्ति की उपेक्षा ठीक नहीं। इससे समाज पर होने वाले दुष्प्रभाव को समाज को भुगतना पड़ता है। इस प्रवृत्ति का ही परिणाम है कि बुराई को सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त हो रही है। गलत काम करने वाला व्यक्ति आज बुरा नहीं माना जाता। उसे समाज में मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, पद प्राप्त हो जाता है। आम उक्ति सुनी जा सकती है कि ईमानदारी से जी नहीं सकते। भले आदमियों का जमाना नहीं है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह बात सही है कि जो अनिवार्य आवश्यकताएं हैं, यथा रोटी, कपड़ा, मकान, शारीरिक भूख इत्यादि, उनकी पूर्ति होनी चाहिये। परन्तु इसके साथ यह भी मानना होगा कि मनुष्य केवल शरीर नहीं है। इसलिए शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र से उसे संतुष्टि प्राप्त नहीं हो सकती। इतने भर मात्र से मनुष्य, मनुष्य नहीं होता। उसके मन होता है, बुद्धि होती है। उनकी आवश्यकता व तृप्ति पर ही उसे पूर्ण संतुष्टि मिलती है। वह अपेक्षित कार्य कर सकता है। फिर जिस समाज में वह रहता है वह जब सुसंस्कृत, सुशिक्षित, समर्थ, सबल, सुरक्षित होता है तब जाकर मनुष्य निश्चिन्त हो सकता है और यह उसका कर्तव्य कर्म भी है।

मगर आजकल जो कथाएं पढ़ने में आ रही हैं, उनमें भूख को बुराई की जड़, शारीरिक संसर्ग को मनुष्य की अन्तिम आवश्यकता तथा सामाजिक विकृति को प्रत्येक अकर्म का कारण महिमामंडित कर बताया जाता है। कथाओं में न समस्याओं का समाधान होता है, न अच्छा कार्य करने की प्रेरणा होती है और न ही संघर्ष कर जीवन में सफलता पाने का जज्बा होता है।

रामायण और महाभारत भारतीय साहित्य के अमर ग्रन्थ हैं। उनकी रचना हुए हजारों वर्ष हो चुके हैं। उनका पठन पाठन निरन्तर जारी है। उनमें भी यथार्थ का चित्रण प्रकर्ष से हुआ है। फिर भी अच्छाई व बुराई के मापदण्ड स्पष्ट हैं। तभी तो रावण के महापंडित होने के बावजूद आज तक कोई अपने पुत्र का नाम रावण नहीं रखता और न ही महापराक्रमी कुंभकर्ण व कंस के नाम अपनी संतानों को देता है। यही हाल स्त्री चरित्रों का है। कैकेयी, ताड़का, शूर्पणखा, नाम किसी महिला के नहीं मिलेंगे। कारण यह है कि वहाँ अच्छाई व बुराई का अन्तर साफ था। दोनों ग्रन्थों का मतितार्थ ही बुराई से संघर्ष है। फिर अपराधी कितना ही बड़ा क्यों न हो, कितना भी विद्वान क्यों न हो, कितना भी निकट का संबंधी क्यों न हो।

वर्तमान की बात ही और है। आज रचनाकार न केवल खलनायकों का चरित्र चित्रण कर रहे हैं, अपितु उनके गलत कार्यों को तार्किकता प्रदान कर रहे हैं। वे खलनायकों का महिमामंडन करते हैं। इस प्रवृत्ति को उचित तो नहीं ठहराया जा सकता है। यथार्थ के नाम पर कुछ भी लिखना ठीक किस प्रकार हो सकता है। लेकिन हो यही रहा है।

बुराई तथा अच्छाई की प्रवृत्ति समाज में सदैव से विद्यमान रही है। ये मनुष्य की स्वाभाविक तथा सहज प्रवृत्तियाँ हैं। इनके अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता। बुराई से बचने के प्रयास करने वाला समाज ही सभ्य माना जाता है। बुराई रहित मनुष्य ही मनुष्य कहलाने का अधिकारी होता है। जब व्यक्ति स्वयं होकर बुरे कार्यों से अपने को अलग रखता है, उसे सुसंस्कृत व्यक्ति अथवा सभ्य समाज की संस्कृति कहते हैं। प्रकृति को संस्कारित न करने पर वह स्वभावत: विकृति में परिवर्तित हो जाती है और यदि मनुष्य को विकृति की ओर ले जाने का प्रयत्न किया जाए, तब क्या कहने।

अत: साहित्यकार को ध्यान रखना ही होगा कि वह समाज को क्या दे रहा है। समाज को बुराई से बचाने के लिए उसे सकारात्मक लेखन करना होगा। कथाओं के माध्यम से आदर्श, नैतिकता के अंकुर पाठकों के मन-मस्तिष्क में रोपित करने होंगे। लोगों को बुराई से दूर रहने की चेतावनी तथा सत्कार्य करने की प्रेरणा देनी होगी तभी व्यक्ति को बुराई से दूर रखने तथा सद्भावनायुक्त स्वस्थ समाज की कल्पना को साकार करने के प्रयास आगे बढ़ सकेंगे। साथ ही सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाने का संतोष तथा भावी पीढ़ी को अधिक सुसंस्कृत, भयमुक्त समाज सौंप सकेंगे।

*राष्ट्रोत्थान न्यास, ग्वालियर - ४७४००१*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



डॉ. कमलकिशोर गोयनका

# 'कफ़न' कहानी : मृत्यु नहीं, जीवन की कहानी है

'कफ़न' (दिसम्बर १९३५) कहानी प्रेमचन्द की सबसे अधिक चर्चित, विवादास्पद एवं लोकप्रिय कहानी है। 'कफ़न' कहानी पर जितने दृष्टिकोणों, विचारों और वादों से विचार-विवेचन हुआ है, यदि उसे यहाँ उद्धृत किया जाये तो एक पूरी पुस्तक ही तैयार हो जायेगी। इन सभी में राजेन्द्र यादव के इस मत की विवेचना अधिक हुई है कि 'कफ़न' हृदय-स्तब्धता या विजड़ित संवेदना की कहानी है। इस स्थापना के दो आधार हैं - एक, आलू खाने के लालच में घीसू-माधव का बुधिया को मरने देना, और दूसरा, दोनों का कफ़न के पैसों से शराब पीना और मस्ती में झूमना-नाचना। ये दोनों ही अमानवीय एवं संवेदना शून्यता की घटनाएँ हैं, परन्तु कहानी का सारा वातावरण ऐसा नहीं है। उसमें संवेदना और मानवीयता से परिपूर्ण प्रसंगों की कमी नहीं है। घीसू में हमदर्दी का भाव है। उसकी औरत मरी थी तो वह तीन दिन तक उसके पास से हिला भी नहीं था। वह माधव से प्रसव-वेदना से चीखती बुधिया को देखने-सँभालने को कहता है। बुधिया मरती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है तो पड़ौसी सान्त्वना देते हैं और गाँव की नर्म दिल वाली स्त्रियाँ आँसू बहाने आती हैं तथा गाँव के दूसरे लोक कफ़न तथा लकड़ी को एकत्र करने में मदद करते हैं। यह सब गाँव की सामूहिक संवेदना का प्रमाण है। माधव का दो बार रोना भी भावावेग ही है। हँसना और रोना दोनों ही मनुष्य की संवेदनशीलता के अंग हैं। 'गोदान' (जून १९३६) में प्रो. मेहता यही बात गोविन्दी से कहता है, "मैं कहता हूँ, अगर तुम हँस नहीं सकते और रो नहीं सकते, तो तुम मनुष्य नहीं हो, पत्थर हो।" प्रेमचन्द की भी एक लेखक के रूप में भी यही राय है। उन्होंने 'हंस' के मई १९३५ के अंक में लिखा था कि साहित्य भावुकता की वस्तु है, लेकिन आदर्श साहित्य वही है जिसमें बुद्धि और भावुकता का कलात्मक सम्मिश्रण होता है। यदि रचना में हँसने और रोने के भावुक क्षण नहीं हैं तो ऐसा सूखा साहित्य अगर अम त भी हो तो पड़ा-पड़ा भाप बनकर उड़ जायेगा और जनता के मनोभावों का स्पर्श भी न कर सकेगा। स्पष्ट है, प्रेमचन्द अपनी किसी भी रचना को संवेदना-शून्य नहीं बनाना चाहते हैं। माधव के व्यवहार और विचारों में तो मनोभावों और मनुष्यता का रंग है। वह पत्नी के प्रति कृतज्ञ है, क्योंकि उसके कारण ही उसे वह भोज मिला जो उम्र-भर न मिला था। वह 'दुःख और निराशा' में चीख मार-मारकर रोता है यह सोचकर कि बुधिया ने जीवन में कितना दुःख झेला है। उसका मनुष्यत्व एक भिखारी को देखकर जाग्रत होता है और वह बची हुई पूड़ियाँ उसे दे देता है और लेखक इस पर लिखता है कि उसे पहली बार देने' का गौरव, आनन्द एवं उल्लास का अनुभव होता है। यह आत्मिक गौरव और आह्लाद तो माधव को उस समय भी नहीं मिला था, जब वह मधुशाला में बैठकर जीवन की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर रहा था। माधव की यह आनन्दानुभूति चाहे एक-दो क्षण के लिए ही थी, परन्तु लेखक उसके व्यक्तित्व के मानवीय तथा सकारात्मक पक्ष का उद्घाटन कर देता है। ये सारे प्रसंग 'कफ़न' कहानी को विजड़ित संवेदना की कहानी की स्थापना पर प्रश्नचिह्न लगा देते हैं।

'कफ़न' (दिसम्बर १९३५) कहानी में तीन परिच्छेद हैं, दो पात्र और दो ही रंगमंच हैं। कहानी की प्रमुख घटनाएँ गाँव और मधुशाला में घटित होती हैं। घीसू-माधव ही दोनों स्थलों पर कथा का विकास करते हैं, लेकिन उनकी मन:स्थिति, परिवेश और क्रिया-व्यापार भिन्न-भिन्न हैं। गाँव में चीख है, मौत है, अमानुषीय व्यवहार और कफ़न के लिए पैसे एकत्र करने की भागदौड़ है; और मधुशाला में जीवन की जगह मौत को सम्मान देने पर आपत्ति है, मदिरा है, चिर अभिलषित भोजन है, गौरव-आनन्द-उल्लास है, परलोक-वैकुंठ-आत्मा-परमात्मा में विश्वास है, नशे में अस्थिरता, विस्म ति और कृतज्ञता है और अन्त में कबीर का एक पद है जो धार्मिक कर्मकाण्ड को असत्य कहता है। माधव मधुशाला में प्रवेश से पहले एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाते हुए कहता है, "कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते जी तन ढँकने को चीथड़ा भी ना मिले उसे मरने पर नया कफ़न चाहिए।" यह हमारी सामाजिक-धार्मिक व्यवस्था की विडम्बना पर गहरा व्यंग्य है। यह कहानी में पहला बौद्धिक हस्तक्षेप है जो विचार के लिए एक सूत्र देता है। यह वाक्य जीवन और मृ त्यु के सम्बन्ध में हमारी सामाजिक-धार्मिक धारणाओं पर आघात करता है। जीवन से अधिक समाज मृ त्यु को सम्मान देता है तभी म तक को नया कफ़न, और जीवित को फटा वस्त्र भी उपलब्ध नहीं कराता है। यह माधव ही नहीं कहानी भी यह प्रश्न उठाती है कि हमारे समाज में जीवन का महत्त्व एवं सम्मान मृ त्यु से कम क्यों है? हमारी यह परम्परा, विश्वास और कर्मकाण्ड जीवनविरोधी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, क्योंकि मृत्यु जीवन से श्रेष्ठ नहीं है। वास्तव में, जीवन ही श्रेष्ठ है और वही सत्य है। जीवन है तो अभिलाषाएँ और लालसाएँ भी होंगी और उन्हें तृप्त एवं पूर्ण करने के लिए उचित-अनुचित साधनों का उपयोग होता ही रहेगा।

घीसू-माधव के अन्तर्मन की दुनिया कफ़न के लिए एकत्र पाँच रुपये हाथ में आते ही बदलने लगती है। कफ़न खरीदने का विचार कमज़ोर होता जाता है और जीवन की सबसे बड़ी लालसा पंख फड़फड़ाने लगती है। इस लालसा के प्रकट होने से पहले वे नया कफ़न खरीदने के अनौचित्य पर तीन तर्क प्रस्तुत करते हैं - रात को कौन कफ़न देखता है, इसलिए कफ़न कैसा भी हो सकता है, जीवित को जब चीथड़ा भी नसीब नहीं है तो मृतक को नया कफ़न क्यों मिलना चाहिए तथा कफ़न तो लाश के साथ जल जाता है तो वह नया हो या पुराना क्या फ़र्क पड़ता है। इन्हीं विचारों के साथ वे बाजार जाते हैं तथा कफ़न के लिए तरह-तरह के कपड़े देखते हैं, परन्तु उन्हें कोई कपड़ा जँचता नहीं है और वे लेखक के अनुसार 'दैवी प्रेरणा' और 'पूर्व निश्चित व्यवस्थानुसार' एक मधुशाला के अन्दर चले जाते हैं। यहाँ लेखक के ये दोनों कारण बुद्धिगम्य नहीं हैं, क्योंकि कोई दैवी प्रेरणा तथा पूर्व निश्चित व्यवस्था के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करेगा, और यदि कोई दैवी शक्ति है भी तो वह क्यों मृतक के अन्तिम संस्कार की अपेक्षा उन्हें क्यों मदिरालय में भेजना चाहेगी? लेखक ने प्रकट में कोई तर्कसंगत कारण नहीं दिया है, परन्तु कहानी के आरम्भ में हमें एक सबल कारण मिलता है। घीसू आलू खाते समय ठाकुर की बारात में खायी दावत का स्वाद ले-लेकर बखान करता है और माधव इस भोज का मन-ही-मन आनन्द लेता है। इससे माधव के मन में भी ऐसे ही भोज की लालसा उत्पन्न होती है। वह कहता भी है, "अब हमें कोई ऐसा भोज नहीं खिलाता।" माधव की यह लालसा कहानी की भावी घटनाओं को रचती है और उसे चरम परिणति तक ले जाती है। माधव की इस लालसा के उत्पन्न होने के बाद ही बुधिया की मौत होती है, कफ़न के पाँच रुपये बाप-बेटे के हाथ में आते हैं और उनके अन्तर्मन में उभरी लालसा उन्हें मधुशाला के तृप्ति-स्थल पर जैसे खींचकर ले जाती है। घीसू तो ठाकुर की दावत में भरपेट स्वादिष्ट भोज का आनन्द ले चुका था, परन्तु वहाँ शराब नहीं मिली थी। माधव तो इन दोनों ही आनन्दानुभूतियों से वंचित था, परन्तु दोनों के मन एक जैसे ही विचार से आन्दोलित होते हैं। लेखक लिखता है, "दोनों एक-दूसरे के मन की बात ताड़ रहे थे।" दोनों के मन में मधुशाला कौंध रही थी और दोनों एक-दूसरे की इस लालसा को समझ रहे थे। इस कारण वे मधुशाला के सामने पहुँचकर एक साथ अन्दर चले जाते हैं।

घीसू-माधव मधुशाला में पहुँचकर दोनों ज़रा देर के लिए असमंजस में खड़े रहते हैं। उनके अन्दर आने तक उनके मन में कोई ग्लानि, पश्चाताप, दुविधा या अपराध-बोध नहीं है, परन्तु शराब की बोतल खरीदने से पहले असमंजस में खड़े रहते हैं। लेखक इस 'असमंजस' शब्द से उनके अन्तर्द्वन्द्व को प्रकट करता है कि कफ़न के पैसों से शराब पीना पाप-कर्म तो नहीं है? घीसू तो बहुत दुनिया देख चुका था, लेकिन माधव तो ऐसा कार्य पहली बार करने जा रहा था। इसलिए लेखक माधव के मन में पाप-बोध उत्पन्न करता है, क्योंकि मधुशाला का पूरा आनन्द तो पापी मन से लिया नहीं जा सकता था। इसी कारण माधव अपनी 'निष्पापता' के लिए देवताओं को साक्षी बनाता है। कहानीकार ने लिखा है, "माधव आसमान की तरफ़ देखकर बोला, मानो देवताओं को अपनी निष्पापता का साक्षी बना रहा हो।" माधव के मन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में पाप-चेतना नहीं होती तो लेखक यहाँ 'निष्पापता' के लिए देवताओं तक का प्रमाण क्यों देता? माधव अपने जीवन की सबसे बड़ी लालसा की तृप्ति के इस दुर्लभ अवसर का आनन्द पाप की छाया में नहीं ले सकता था। लेखक के अनुसार, मधुशाला वैसे भी अपने प्रेमियों को जीवन की बाधाओं तथा जीवन-मरण की स्मृति तक से मुक्त कर देती है। मधुशाला में जीवन का निर्द्वन्द्व आनन्द है और बाहरी संसार के घोर अभावों, कष्टों और पापों का विस्मरणस्थल है। घीसू-माधव के मधुशाला में आते ही उनके मन से मृत्युशास्त्र हट जाता है। वे अब मौत का मर्सिया नहीं गाते हैं, बल्कि वे जीवन की नयी सरगम छेड़ते हैं। इसमें जीवन की अतृप्त एवं दबी लालसाएँ हैं और उनकी तृप्ति का आनन्द है। यहाँ की आनन्दानुभूति और उल्लास मृत्यु को पराभूत करके उसे चेतना से ही लुप्त कर देता है और यहाँ तक कि अस्तित्व-बोध की चेतना भी यहाँ के सुख-सागर में विलीन हो जाती है।

घीसू और माधव का मधुशाला में प्रवेश भीतरी और बाहरी सभी दबावों से मुक्ति का प्रमाण है। उनके लिए पारिवारिक दायित्व, सामाजिक मर्यादाएँ एवं नैतिक बोध जैसे निरर्थक एवं प्राणहीन हैं। वे जब शराब की बोतल बीच में रखकर पीने बैठते हैं तो वे अपनी व्यक्तिगत लालसाओं की तृप्ति का अनुष्ठान करते हैं। निर्मल वर्मा ने लिखा भी है कि दो हिन्दुस्थनी पियक्कड़ों का श्मशान की छाया में हुआ यह मुक्ति-समारोह है। वे जैसे ही कफ़न के पैसों की शराब का कुल्हड़ मुँह में लगाते हैं, उसी क्षण हिन्दी साहित्य में व्यक्ति अपनी स्वतन्त्रता का स्वाद चखता है। उन्हें यह मुक्ति और स्वतन्त्रता बौद्धिक कौशल एवं आत्म-छल से मिलती है।

वे परिवार और गाँव वालों, दोनों के अपराधी हैं। वे पहले अपराधी अपने परिवार के हैं। बाप-बेटे दोनों घर की बहू को मरने देते हैं और वह भी प्रसव-पीड़ा में चीखती-चिल्लाती बहू को, जो इनकी उपेक्षा और असहयोग के कारण पेट के शिशु के साथ मर जाती है। वे इस अमानुषीय अपराध के दोषी हैं। दूसरे वे गाँव वालों के दोषी हैं। गाँव के लोग उन्हें बुधिया के कफ़न के लिए पाँच रुपये एकत्र करके उनके हाथ में देते हैं, परन्तु वे विश्वासघात करते हैं और मधुशाला में जाकर शराब पीते हैं। गाँव के लोग तो उन्हें पहले से ही कामचोर, आलसी, बेशर्म और झूठे मानते थे और वे भी इस सत्य को जानते थे। अत: उन्हें कोई नया विश्वासघात करने में कोई भय नहीं था। वे जानते हैं और घीसू माधव को समझाता भी है कि गाँव वाले ही दुबारा कफ़न की व्यवस्था करेंगे। इसलिए कफ़न के पैसों से शराब पीना अनुचित इसलिए नहीं है, क्योंकि बुधिया को तो कफ़न मिल ही जायेगा। उनका यह दृढ़ विश्वास उन्हें जीवन के निकृष्टतम अपराध करने के दंश से बचा लेता है। वे मृतक को नया कफ़न देने की धार्मिक, सामाजिक एवं नैतिक अनिवार्यता के दायित्व से भी स्वयं को मुक्त कर लेते हैं और उसके अपराधबोध से भी अपना बचाव कर लेते हैं। इसी कारण वे निर्द्वन्द्व और निश्चिन्त होकर मधुशाला में पहुँचते हैं और अपने जीवन की सबसे बड़ी लालसा की पूर्ति के लिए बोतल खरीदकर पीने बैठते हैं। इस प्रकार उनकी छलपूर्ण तर्कशीलता उन्हें निरपराध रूप में मधुशाला तक पहुँचा देती है।

घीसू-माधव मदिरालय में बोतल लेकर बैठते हैं तो उनके मनोभाव, व्यवहार तथा विचार में परिवर्तन होता है। इस अंश की मूल घटना यह है कि वे अपने जीवन की सबसे बड़ी लालसा की पूर्ति के लिए मन भर कर शराब पीते हैं, भोजन करते हैं, बचा हुआ भोजन भिखारी को देते हैं और आनन्दविभोर होकर मस्ती में गाते, नाचते, कूदते-मटकते एवं अभिनय करते हैं तथा 'नशे से बदमस्त' होकर गिर पड़ते हैं। यह उनके जीवन की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुखानुभूति की चरमावस्था है, जब जीवन के सारे सुख-दुःख मिट जाते हैं, सांसारिक चेतना लुप्त हो जाती है और रहता है केवल आत्मिक आनन्द। इस अनुभूति में एक तो मधुशाला का मादक वातावरण एवं मदिरापान से होने वाली चेतनाशून्यता सहायक बनी है, दूसरे वे धार्मिक एवं दार्शनिक विश्वासों तथा आस्थाओं के संसार में उतरकर स्वयं को पापानुभूति से मुक्त करके निःशंक एवं निर्द्वन्द्व बनते हैं। लेखक ने स्वयं घीसू के 'दार्शनिक भाव' से बोलने तथा माधव पर 'श्रद्धालुता का रंग' चढ़ने का उल्लेख किया है, क्योंकि घीसू-माधव अब अपने पूर्व दुष्कर्मों और उनके दुष्परिणामों को धार्मिक-दार्शनिक शब्दावली में छिपाकर बुधिया को वैकुंठ तक पहुँचा देते हैं। वे दोनों आत्मा-परमात्मा, परलोक, वैकुंठ, पाप-पुण्य, मायाजाल आदि धार्मिक-दार्शनिक शब्दों के प्रयोग से बुधिया की मौत को गौरवान्वित करते हैं और इनकी आड़ में वे एक बार फिर अपने पाप-कर्म को छिपा लेते हैं। घीसू-माधव के वार्तालाप में बुधिया का ही गुणगान है। बुधिया पुण्यवान है, क्योंकि उसकी मृत्यु उनके लिए पुण्य-कर्म बनती है। उसकी मृत्यु से ही उन्हें शराब तथा स्वादिष्ट भोजन मिलता है जो उन्हें उम्र-भर नहीं मिला था। इससे घीसू की आत्मा तृप्त होती है और माधव की तो जीवन की सबसे बड़ी लालसा पूरी होती है। इन दोनों के लिए इससे बड़ा पुण्य बुधिया की ओर से क्या हो सकता था? बुधिया जब जीवित थी तो इनका दोज़ख़ भरती थी और मरी तो इन्हें जीवन का सबसे बड़ा सुख दे गयी। बुधिया निर्मल हृदय थी और मानवता उसकी जीवन-शैली थी। वह न किसी को सताती थी और न दबाती ही थी। अतः वह वैकुंठ न जायेगी तो कौन जायेगा? माधव इसीलिए पूरे विश्वास के साथ घीसू से कहता है, "वह वैकुंठ में जायेगी दादा, वैकुंठ में जायेगी।" माधव घीसू के सन्तोष के लिए एक और नया तर्क लाता है। वह कहता है कि बुधिया वैकुंठ न जायेगी तो क्या ग़रीबों को दोनों हाथों से लूटने वाले मोटे-मोटे लोग जायेंगे जो अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मन्दिरों में जल चढ़ाते हैं। कहानी में इस कथन से कई अर्थ निकलते हैं। एक, गरीबों को लूटने वाले ये मोटे लोग सामाजिक अपराधी हैं। इनके पाप इतने भयानक और गन्दगी से भरे हैं कि गंगा भी उन्हें निर्मल नहीं कर सकती है। दो, जो पापी यह समझते हैं कि गंगा पापों को धो देती है, वे तो अज्ञानी हैं। तीसरा, ऐसे मोटे पापियों और बुधिया में कोई समानता नहीं है। यह उनका कितना बड़ा बौद्धिक छल है कि ये मोटे-मोटे पापियों की तुलना अपने उस पाप-कर्म से नहीं करते हैं जो उन्होंने बुधिया और उसके पेट के बच्चे को मरने देने में किया है। वे उस बुधिया के साथ तुलना करते हैं जो निष्पापी और इनके शब्दों में पुण्यवान है और उसे अवश्य ही वैकुंठ मिलेगा। घीसू के अनुसार वह भाग्यवान भी है, क्योंकि वह इतनी जल्दी संसार के माया-जाल के बन्धन तोड़कर चली गयी। इस प्रकार वे किसी धर्मगुरु अथवा पुरोहित के समान धार्मिक शब्दों और धारणाओं के द्वारा बुधिया को परलोक के सर्वोच्च स्थान पर पहुँचा कर स्वयं भी अपने जीवन का सबसे बड़ा सुख प्राप्त करते हैं। बुधिया तो इनके काल्पनिक परलोक के वैकुंठ में पहुँचती है लेकिन घीसू-माधव को अपने वैकुंठ जैसे सुखानुभव के लिए बुधिया के समान मरने की आवश्यकता नहीं है। वे जीवितावस्था में ही अपने जीवन की सबसे बड़ी लालसाओं को पूर्ण करते हैं और अपूर्व उल्लास एवं आनन्द की अनुभूति करते हैं। असल में भाग्यशाली तो घीसू-माधव हैं जो मौत की काली छाया में भी जीवन का सबसे बड़ा सुख और आनन्द खोज निकालते हैं और बुधिया की मौत के अपराध-दंश से भी अपने का बचा कर रखते हैं। यद्यपि उनकी यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आनन्दानुभूति अल्पावधि की है, परन्तु वे क्षण उनके जीवन के सर्वोत्तम क्षण हैं। उनका यह सुख एकदम निजी है। वे ही उसके नियन्ता और नियोजक हैं। वे इसके लिए पारिवारिक दायित्वों एवं सामाजिक नैतिकता को नकारते हैं और लोक-परलोक आदि की धार्मिक एवं दार्शनिक शब्दावली का दुरुपयोग करके इस बाहरी दुनिया को एकदम अदृश्य कर देते हैं। प्रेमचन्द की कहानियों में यह व्यक्ति की निजी सत्ता का आरम्भ है।

प्रेमचन्द चाहते तो कहानी का अन्त यहीं कर सकते थे, क्योंकि मृत्यु पर जीवन की विजय का उत्सव अपनी अन्तिम परिणति पर पहुँचकर मूर्छित होकर गिर पड़ता है। यह आनन्दानुभूति की चरम अवस्था है जब अस्तिव की संज्ञा भी शून्य हो जाती है। घीसू-माधव के लिए तो यह लोक में लोकोत्तर आनन्द जैसा ही है, जो बुधिया की लोक से वैकुंठ यात्रा से कहीं श्रेष्ठ एवं अनुभूतिजन्य है। घीसू-माधव का आनन्द वास्तविक जगत का आनन्द है और बुधिया का वैकुंठ कहाँ है, इसे कोई नहीं जानता है। प्रेमचन्द इसी स्थिति को सिद्ध करने के लिए कबीर के पद की आरम्भिक पंक्ति को उद्धृत करते हैं। घीसू-माधव कहानी के अन्त में 'नशे में बदमस्त' होकर गाते हैं - "ठगिनी! क्यों नैना झमकावै! ठगिनी!" कहानी में यह पर पूरा नहीं है, लेकिन 'अग्नि-समाधि' (जनवरी १९२८) कहानी में इसे इस प्रकार दिया गया है -

ठगिनी! क्यों नैना झमकावै!  
कद्दू काट मृदंग बनावे, नीबू काट मंजीरा  
पाँच तरोई मंगल गावें, नाचे बालम खीरा।  
रूपा पहिर के रूप दिखावे, सोना पहिर रिझावे  
गले डाल तुलसी की माला, तीन लोक भरमावे।।

कबीर की ठगिनी माया है, जो मनुष्य को अनेक रूपों में भरमाती है। इनमें धर्म के कर्मकाण्ड और लोकोत्तर विश्वास भी भ्रमोत्पादक हैं। कबीर जिसे 'गले डाल तुलसी की माला' से सम्बोधित करते हैं, उनमें पाप-पुण्य, आत्मा-परमात्मा, लोक-परलोक-वैकुंठ आदि हमारी परम्परागत धारणाएँ एवं विश्वास हैं, वे सब छलनाएँ हैं जो भरमाती हैं। इस संसार के अतिरिक्त और कोई पारलौकिक संसार नहीं है, इसलिए ऐसे सभी विश्वास भी सत्य नहीं हैं। इसलिए बुधिया की वैकुंठ यात्रा तथा माया-जाल का भंजन आदि में कोई सत्यता नहीं है, वे मिथ्या और भ्रामक हैं। सत्य है तो जीवन ही सत्य है। कहानी जिस कफ़न पर लिखी गयी है, वह न खरीदा जाता है, न इस्तेमाल होता है। बुधिया का मृत शरीर बिना कफ़न के पड़ा रहता है, और न उसका अन्तिम संस्कार ही होता है, लेकिन वह कहानी में मृत्यु और जीवन के सत्यासत्य के बड़े सवालों से रूबरू करता है। कफ़न तो मृत्यु का साथी है, लेकिन लेखक कफ़न से ही जीवन का आनन्द-रस निकालता है। इस प्रकार कहानी में दो पक्ष हैं - एक मृत्यु और परलोक (वैकुंठ) का तथा दूसरा लोक तथा जीवन का। इन दोनों के द्वन्द्व में मृत्यु पर जीवन की जीत होती है। अतः 'कफ़न' कहानी को मृत्यु पर जीवन की तथा परलोक पर लोक की विजय की कहानी मानना पूर्ण रूप से औचित्यपूर्ण एवं तर्कसंगत है। जयशंकर प्रसाद ने एक स्थान पर लिखा है कि दुःख दग्ध धरा और आनन्दपूर्ण स्वर्ग के एकीकरण का नाम ही साहित्य है। कहानी में बुधिया की जिस अमानवीय एवं हृदयद्रावक स्थिति में मृत्यु होती है, उससे अधिक दुःखदग्ध घटना और क्या हो सकती है? इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद जिसे 'आनन्दपूर्ण स्वर्ग' कहते हैं, वह घीसू-माधव के मदिरापान की चरमावस्था के आनन्द के अतिरिक्त और क्या है? यही विरुद्धों का सामंजस्य है और यही प्रसाद की धरा और स्वर्ग का तथा दुःख और आनन्द का एकीकरण है। इसमें प्रेमचन्द अपनी परम्परानुसार मृत्यु को अस्वीकार तथा जीवन को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वीकार करते हैं। 'कफ़न' (दिसम्बर १९३५) से लगभग दो वर्ष पूर्व लिखी गयी उनकी कहानी 'रंगीले बाबू' (२६ जनवरी १९३३) में भी एक ओर मृ त्यु है जो बुधिया की मृ त्यु के समान ही भयावह एवं त्रासद है और दूसरी ओर त्रासद मृ त्यु की छाया में जीवन को जीने की उत्कटता एवं जीवटता है। कहानी में बाबू रसिकलाल के बेटे की बारात निकलने वाली है कि उसका देहान्त हो जाता है, परन्तु रसिकलाल उसकी अर्थी को दूल्हे की तरह सजाकर, उसके सिर पर बेलों का मोर पहनाकर, हाथी-घोड़े, बैंड-बाजों के साथ उसकी बारात निकालता है और अपने मित्र कथावाचक से कहता है, "तुम भूल जाते हो लाला, यह विवाह का उत्सव है। हमारे लिय सत्य जीवन है, उसके सिवा जो कुछ है, मिथ्या है।" यह मृ त्यु पर जीवन की अपराजेय शक्ति और आनन्द की विजय है। जीवन के अतिरिक्त जो कुछ भी है, ईश्वर, परलोक, वैकुंठ सब मिथ्या है। 'गोदान' में प्रो. मेहता गोविन्दी से ऐसे ही विचार प्रकट करता है, "जो यह ईश्वर और मोक्ष का चक्कर है, इस पर तो मुझे हँसी आती है। वह मोक्ष और उपासना अहंकार की पराकाष्ठा है, जो हमारी मानवता को नष्ट किये डालती है। जहाँ जीवन है, क्रीड़ा है, चहक है, प्रेम है, वहीं ईश्वर है; और जीवन को सुखी बनाना ही उपासना और मोक्ष है।" होरी की मृ त्यु के समय में भी प्रेमचन्द जीवन के ऐसे ही उल्लास एवं आनन्द का उद्घाटन करते हैं। उसके छोटे भाई हीरा के लौटने पर, जिसके कारण होरी को अनेक विपत्तियाँ झेलनी पड़ीं, उसका विषाद एवं मृ त्यु-बोध तथा जीवन में पराजित होने का भाव विजय के 'उल्लास, गर्व एवं पुलकता' में बदल जाता है और लेखक के अनुसार उसे स्वर्ग का सुख मिलता है। होरी अपनी इस सुखनुभूति में मौत को भूलकर जीवन के इस आनन्द में मग्न हो जाता है और उसकी आत्मा आनन्दमय हो जाती है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि स्वर्ग का मार्ग नर्क से होकर जाता है। घीसू-माधव ऐसे ही नारकीय मार्ग पर चलकर अपने जीवन की सबसे अधिक सुखद एवं आनन्द की अनुभूति करते हैं जो उनके लिए उस क्षण जीवन का सर्वोत्तम एवं आत्मलीन करने वाला आनन्द था। अत: 'कफ़न' कहानी की आत्मा के सत्य को खोजने में हमें मध्यकाल की उस भक्ति-भावना को भी ध्यान में रखना होगा जिसमें मर्त्यलोक के कष्टों और विपत्तियों से मुक्ति के लिए परलोक की सेवा-साधना का विधान था। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के किष्किन्धाकाण्ड में सुग्रीव से यही कहलवाया है - "तजि माया सेइअ परलोका/मिटहिं सकल भवसम्भव सोका।" प्रेमचन्द की 'कफ़न' कहानी इसी मध्-ययुगीन भक्ति-दर्शन के विरुद्ध आधुनिक चेतना की कहानी है कि परलोक की अवधारणा एवं विश्वास मिथ्या है, इसलिए उसकी कामना एवं उपासना निरर्थक है। हमें जीवन को ही सत्य मानना चाहिए। मैथिलीशरण गुप्त जैसा वैष्णव कवि भी भूतल को ही स्वर्ग बनाना चाहता है। प्रेमचन्द के समय में पश्चिम में ईश्वर की मृ त्यु की घोषणा हो चुकी थी और अपने देहान्त से पूर्व उन्होंने परिपूर्णानन्द वर्मा से कहा था कि उन्हें ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं है, अर्थात् ईश्वर, परलोक या स्वर्ग के अस्त्तिव में उनकी कोई आस्था नहीं थी। प्रेमचन्द की द्रृ ष्टि यही थी कि मृ त्यु एवं परलोक नहीं, जीवन ही वरेण्य है और जीवन ही इस संसार का सर्वांग सत्य है। कहानी में दो ऐसे प्रमुख आधार हैं जिनसे कहानी का यही प्रतिपाद्य सामने आता है। कहानी में कबीर की उपस्थिति परलोक की सत्ता को चुनौती देती है और एक प्रकार से जीवन की सत्यता एवं श्रेष्ठता को स्थापित करती है और मृ त शरीर को नया वस्त्र उपलब्ध कराने तथा जीवित मनुष्य को फटा चीथड़ा भी नसीब न होने का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न भी जीवन से अधिक मृत्यु को अधिक महत्त्व देने के धार्मिक विश्वास तथा पारलौकिक सत्ता का खण्डन करता है। कहानी इस प्रकार ईश्वरीय विश्वास एवं पारलौकिक के मायाजाल के तिलिस्म को निरावृत्त करके मृत्यु तथा उससे जुड़े स्वर्ग-नर्क, वैकुंठ-परलोक आदि की अवास्तविक कल्पना पर जीवन की वास्तविकता एवं श्रेष्ठता को स्थापित करती है। कहानीकार मृत्यु एवं परलोक का गौरव नहीं, जीवन का सम्मान चाहता है और इसीलिए वह 'कफ़न' कहानी को मृत्यु की कहानी न बनाकर जीवन की कहानी के रूप में रचता है। पराधीन भारत के मरणासन्न समाज को मृत्यु के अन्धकार-लोक एवं अस्तित्वहीन परलोक के स्थान पर जीवन के उल्लास की ही आवश्यकता थी।

इस विवेचना के बाद 'कफ़न' कहानी के जो अब तक विवेचन हुए हैं तथा आलोचकों ने जो नयी-नयी स्थानाएँ की हैं, उनमें आपको क्या कोई सत्यता दिखायी देती है? क्या आप अब भी यही मानेंगे कि 'कफ़न' हृदय स्तब्धता या विजड़ित संवेदना की कहानी है? क्या यह अमानुषिक व्यवहार तथा व्यवस्था द्वारा आदमी को चूर-चूर करने की कहानी है? क्या यह विचारधारा अथवा उससे मुक्ति की कहानी है? क्या यह खण्ड-खण्ड होते यथार्थ तथा मनुष्य के मुक्त होने की कहानी है? क्या यह प्रेमचन्द के आदर्शों, विश्वासों, मूल्यों एवं आस्थाओं के भंजन की तथा क्या यह 'प्रोटेस्ट और विद्रोह' की कहानी है? आप एक बार 'कफ़न' कहानी पढ़ें और फिर यह लेख और तब आप अपना निर्णय करें। कहानी का पाठ ही उसकी मूल संवेदना एवं लेखक के मन्तव्य को प्रकट करता है। आप इस प्रक्रिया से गुजरेंगे तो अवश्य ही कहानी का सत्य पा सकेंगे।

*ए/९८, अशोक विहार, फेज प्रथम*
*दिल्ली - ११००५२*
*मोबाइल : ०९८११०५२४६९*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रो. एस. शेषारत्नम्

# प्रेमचन्द के कथा–साहित्य में नारी चेतना

कार्येषु दासी, करणेषु मन्त्री, भोज्येषु माता, शयनेषु रम्भा, क्षमा धरित्री जैसे विभिन्न रूपों में मनसा, वाचा, कर्मणा, परिवार एवं समाज के प्रति अपना सर्वस्व समर्पित कर दायित्व निभानेवाली नारी, अपनी स्थिति के बारे में किस प्रकार प्रतिपादित हो रही है? इसका सजीव चित्र प्रस्तुत करने का सफल प्रयास कई साहित्यकारों ने किया है, उनमें यथार्थवादी साहित्यकार प्रेमचन्द प्रमुख हैं। नारी-जीवन के हर एक अंश का परिशीलन एवं अनुशीलन कर कथाकार प्रेमचन्द ने नारी के यथार्थ रूप का अंकन किया है जो आदर्श की ओर उन्मुख है। समकालीन स्थितिगतियों के प्रति प्रतिस्पन्दित होने वाली लेखक की यही दृष्टि चेतना कहलाती है। वास्तव में चेतना शब्द अंग्रेजी के 'कॉन्शियसनेस' का पर्यायवाची शब्द है। इसे बोध या 'चैत्य' के समानार्थ मानते हैं। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार वस्तुओं, विषयों या व्यवहारों का ज्ञान ही चेतना है।

प्रेमचन्दजी ने बाल्य, यौवन, प्रौढ़ तथा वृद्ध सभी प्रकार की अवस्थाओं में नारी के जीवन को समग्र रूप से अध्ययन कर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नारी जीवन से सम्बन्धित विविध प्रकार की समस्याओं का चित्रीकरण कर नारी को सचेत करने की चेष्टा की है। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक धरातल पर नारी का शोषण किस प्रकार हो रहा है और ऐसी विरोधी परिस्थितियों से संघर्ष करती हुई नारी किस प्रकार अपने उदात्त व्यक्तिव को स्थापित करने के लिए कदम आगे बढ़ा रही है इसका मार्मिक चित्र प्रस्तुत करने में प्रेमचन्द ने न केवल अपनी अद्वितीय प्रतिभा का परिचय दिया बल्कि नारी को सुप्तावस्था से जाग्र त भी किया है। उनकी द ष्टि में नारी त्याग एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति है।

"स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अन्धेरे से। मनुष्य के लिए क्षमा, त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चतम आदर्श हैं। नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है।" गोदान के उक्त कथन के पीछे लेखक प्रेमचन्द का उद्देश्य यह रहा कि मानव जीवन में सात्विक गुणों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय नारी अधिकांश रूप से सात्विक प्रवृ त्ति वाली है। इसीलिए वह आदर्श की प्रतिमूर्ति है। कथाकार प्रेमचन्द ने विविध प्रकार के नारी पात्रों के माध्यम से नारी के उदात्त व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है। गोदान के प्रमुख नारी पात्र धनिया के माध्यम से भारतीय नारी के उदात्त व्यक्तित्व को उजागर करते हुए लेखक का कहना है – "सेवा और त्याग की देवी जबान की तेज पर मोम जैसा हृदय, पैसे-पैसे के पीछे प्राण देनेवाली पर मर्यादा की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व होम करने को तैयार।" प्रेमचन्द के कथा साहित्य में जाग्र त नारी चेतना के विविध रूपों पर प्रस्तुत निबन्ध में प्रकाश डाला जा रहा है।

**सामाजिक चेतना**

पारिवारिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण कार्यभार संभालनेवाली नारी रूढ़िगत सम्प्रदाय एवं मान्यताओं के कारण कई कठिनाइयों का सामना कर रही है। घर की दीपिका स्वयं जल कर औरों के लिए रोशनी दे रही है। इन सारी समस्याओं के मूल में निहित विभिन्न कारण और उनका समाधान भी प्रेमचन्द ने खोजा है।

अधिकांश नारियाँ दहेजप्रथा के करालपाश में बन्दी होकर अनमेल विवाह के शिकार होकर जीवनपर्यन्त इसके बुरे फल भोगती रहती हैं। 'सेवासदन' तथा 'निर्मला' आदि उपन्यासों के पात्र जैसे 'सुमन' का गजाधर प्रसाद से और निर्मला का मुंशी तोताराम से विवाह इस स्थिति का सजीव चित्र खींचता है। प्रेमचन्द ने वृ द्ध पुरुष से विवाहित युवती का असन्तुष्ट जीवनयापन, प्रौढ़ पुरुष की हीन भावना तथा उसके फलस्वरूप उत्पन्न सन्देह का सुन्दर एवं सजीव चित्रण किया है।

सेवासदन उपन्यास में सुमन के पति गजाधर प्रसाद की मानसिकता का चित्रण लेखक यों खींचता है – "जलपान की जलेबियाँ उसे विष के समान लगती थीं। दाल में घी देखकर उसके हृदय में शूल होने लगता।"

इसी प्रकार 'निर्मला' उपन्यास का प्रमुख पात्र निर्मला का विवाह भी दहेज न दे सकने के कारण ही मुंशी तोताराम से होता है। तोताराम चालीस वर्ष के हैं और पहली पत्नी से उनके तीन पुत्र भी हैं। निर्मला को मुंशी तोताराम से हँसने बोलने में भी संकोच का अनुभव होता है।

"अब तक ऐसा ही एक आदमी उसका पिता था, जिसके सामने वह सिर झुकाकर, देह छुपाकर निकलती थी। अब उनकी अवस्था का एक आदमी उसका पति था। वह उसे प्रेम की वस्तु नहीं सम्मान की वस्तु समझती थी।"

भारतीय समाज में नैतिकता का दोहरा मानदण्ड प्रचलित है। प्रेमचन्द के समय में ऐसा और भी अधिक था। जिन कार्यों के लिए पुरुष


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निन्दनीय नहीं होता, उन्हीं के कारण नारी पतिता और कुलटा समझी जाती थी। स्त्री-पुरुष के बीच इन वैषम्यों के कारण उत्पन्न समस्याओं को भी कथाकार ने अपनी गहन सामाजिक दृष्टि से परखा था। प्रेमाश्रम', 'वरदान', 'सेवासदन', 'निर्मला' आदि उपन्यासों के पात्र तथा 'मानसरोवर' कहानी संग्रह में संगृहीत 'सुभागी', 'बेटों वाली विधवा', 'शान्ति' आदि के केन्द्रबिन्दु में ऐसे ही नारी पात्र हैं।

अवैध सन्तान की समस्या पर भी कथाकार प्रेमचन्द ने प्रकाश डाला है। 'मिस् पद्मा' कहानी में प्रेमचन्दजी ने अवैध सन्तान से उत्पन्न होनेवाली समस्याओं का चित्रीकरण कर उन समस्याओं से दूर रहने का सन्देश भी दिया है। मिस् पद्मा पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नवयुवती है जो प्रो. प्रसाद से विवाह किये बिना ही उसके साथ रहने लगती है। प्रसाद कुछ समय तक उसे भोगकर, छोड़कर चला जाता है। परिमाणामत: पद्मा मानसिक क्षोभ का अनुभव करती है, कभी-कभी वह भय से काँप उठती, और उसमें प्रायश्चित करने की भावना जागृत होती है।

भारतीय समाज को प्राचीन काल से वैधव्य की समस्या विचलित कर रही है। अनेक समाजसुधारकों के अथक प्रयास से और वैज्ञानिक प्रगति तथा साक्षरता के परिणामस्वरूप आजकल तो विधवाएँ भी पुनर्विवाह कर रही हैं, लेकिन प्रेमचन्द के समय में ऐसा नहीं था। उन्हें समाज में गौरव नहीं मिलता था, उल्टे निन्दा भी झेलनी पड़ती थी। प्रतिज्ञा उपन्यास की 'पूर्णा' और गबन उपन्यास की 'रतन' आदि भारतीय विधवाओं के जीवन के प्रतीक हैं। 'मानसरोवर' में संकलित 'बेटों वाली विधवा' कहानी में वैधव्य की प्राप्ति के पश्चात् परिवार और समाज में नारी की दीन-हीन स्थिति किस प्रकार होती है, और सन्तान पालन का भार कितना दुष्कर होता है, इसका मार्मिक चित्र भी प्रस्तुत हुआ है।

'धिक्कार' कहानी में विधवा 'मानी' की दशा तथा 'निर्मला' उपन्यास में विधवा रुक्मिणी की स्थिति का चित्रण करके इस कटु यथार्थ का सजीव चित्रण समाज के सम्मुख प्रस्तुत हुआ है। विधवा की दशा आश्रयदाता परिवार में दासी से भी हीन है। धिक्कार कहानी की 'मानी' विधवा होने के बाद अपने चाचा-चाची के यहाँ आश्रय लेती है। चाचा-चाची के यहाँ मानी को जो स्थान प्राप्त है वह प्रेमचन्द के शब्दों में स्पष्ट है। "वह घर का सारा काम करती, इशारों पर नाचती, सब को खुश रखने की कोशिश करती, पर न जाने क्यों चाचा और चाची उससे जलते रहते। उसके आते ही महरी अलग कर दी गयी। नहाने-धुलाने के लिए एक लौंडा था, उससे भी जवाब दे दिया गया।"

प्रेमचन्दजी के उपन्यास 'प्रतिज्ञा' का केन्द्रबिन्दु विधवा समस्या ही है। इस उपन्यास की नायिका पूर्णा विवाह के दो वर्ष बाद ही विधवा हो जाती है। पूर्णा अपने जीवन निर्वाह करने के उद्देश्य से लाला बदरी प्रसाद का आश्रय लेने को तैयार हो जाती है। बदरी प्रसाद उदार और सज्जन पुरुष हैं। इसलिए विधवा पूर्णा की सहायता करना वे अपना धर्म समझते हैं। प्रेमचन्दजी स्वयं लिखते हैं - "आश्रयविहीन अबला के लिए उस समय तिनके का सहारा ही बहुत था, तो वह (पूर्णा) नौकर की कैसे अवहेलना करती।" यद्यपि यह नौकर आगे चलकर उसे निगल जाने वाला जलजन्तु ही सिद्ध होता है।

पूर्णा की आर्थिक समस्या तो लाला बदरीप्रसाद की उदारता के कारण हल हो जाती है। लेकिन युवती विधवा की समस्या मात्र आर्थिक नहीं है। 'प्रतिज्ञा' में पूर्णा के माध्यम से प्रेमचन्द ने यह स्पष्ट कर दिया है। पुरुष जब वृद्धा अवस्था में भी पत्नी की मृत्यु होने पर विवाह कर लेता है तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विधवा होने मात्र से ही युवा-नारी की सारी आकांक्षाएँ मिट्टी में मिल जाती हैं क्या? प्रेमचन्द ने प्रतिज्ञा में अपना यह अभिमत प्रकट किया है कि जीवन निर्वाह का उचित प्रबन्ध हो जाने पर ही विधवा समस्या को पूर्णरूपेण सुलझा सकते हैं। विधवा पुनर्विवाह को भी उन्होंने स्वयं प्रोत्साहन दिया है। उनकी दृष्टि में विधवाओं के उद्धार के लिए पुनर्विवाह ही श्रेष्ठ माध्यम है। 'प्रतिज्ञा' कहानी का प्रमुख पात्र अमृतराय आजीवन विधवाओं के उद्धार के लिए प्रयासरत रहा और नगर में कविता आश्रम की स्थापना की। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र अमृतराय ने अपनी पहली पत्नी की मृत्यु के बाद विधवा से ही विवाह करने की प्रतिज्ञा की।

**वेश्या समस्या**

स्त्री जाति को कलंकित करने वाली और एक जघन्य समस्या वेश्या प्रथा है। इस प्रथा के प्रति प्रेमचन्द घृणा प्रकट करते हैं किन्तु वेश्याओं के प्रति नहीं। अनमेल विवाह, वैधव्य, आर्थिक विषमताएँ, अत्याचार आदि के फलस्वरूप स्त्रियाँ विधवा होकर इस वृत्ति का आश्रय लेती हैं। लेखक की मान्यता है कि वेश्याओं के हृदय में भी सामान्य नारी की भाँति प्रेम प्राप्त करने की प्रबल आकांक्षा रहती है। साधारणत: पुरुष वेश्या के यहाँ कामलिप्सा से प्रेरित होकर जाता है इसलिए नारी सुलभ प्रेमभावना पर पुरुष की दृष्टि जाती ही नहीं।

'सेवासदन' में 'सुमन' सरल हृदय 'सदन' पर मुग्ध होकर उनसे प्रेम करने लगती है। पर सदन उपहार देकर उसे प्रसन्न करना चाहता है। लेकिन सुमन में उसके उपहारों की भूख नहीं। लेकिन दूसरी ओर सदन सामान्य पुरुषों की भाँति धन के बल से सुमन का प्रेम खरीदना चाहता है।

'वेश्या' कहानी की माधुरी भी दयाकृष्ण के निश्छल व्यवहार से मोहित होकर उससे प्रेम करने लगती है। वह दयाकृष्ण का साहचर्य पाने के लिए वेश्यावृत्ति त्यागने को तैयार हो जाती है।

वेश्याओं के प्रति समाज की कठोरता के विषय में 'वेश्या' कहानी की 'माधुरी' का कहना है कि "पुरुष इतना निर्लज्ज है कि उसकी दुरवस्था से अपनी वासना तृप्त करता है और इसके साथ ही इतना निर्दय कि उसके माथे पर पत्तिा का कलंक लगाकर उसे दुःखद स्थिति में देखना चाहता है। क्या वह नारी नहीं है। क्या नारीत्व के पवित्र मन्दिर में उसका स्थान नहीं।"

वेश्या समस्या को हल करने के लिए प्रेमचन्दजी ने वेश्याओं को समाज सेवा करने का सुझाव दिया है। सेवासदन' की सुमन और 'गबन' उपन्यास की जोहरा भी अन्त में समाज सेवा करने लगती है। प्रेमचन्दजी का यह सुझाव समर्थनीय है, फिर भी वेश्या समस्या तो आर्थिक समस्या पर आधारित है। कोई भी स्त्री वेश्यावृत्ति को अपनाना नहीं चाहती। इसलिए उसे पहले आर्थिक स्वावलम्बन की ओर अग्रसर करना चाहिए।

सामाजिक विडम्बनाओं तथा रूढ़िगत मान्यताओं से नारी को मुक्त करने के प्रयास में प्रेमचन्दजी रूढ़ियों के प्रति विद्रोह करने के लिए नारी समाज को प्रोत्साहित करते हैं। गोदान की धनिया विधवा झुनिया को बहू के रूप में स्वीकार करने के लिए सामाजिक रूढ़िगत सम्प्रदायों पर तीखा प्रहार करती हुई कहती है - "हम को कुल परितिष्ठा इतनी प्यारी नहीं है महाराज, कि उसके पीछे एक जीव की हत्या कर डालते। ब्याहता न रही पर उसके बाहों को पकड़ी है मेरे बेटे ने..."

महिलाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से साक्षरता तथा समाज सेवा की ओर आकृष्ट करने का सफल प्रयास इन्होंने किया। गोदान उपन्यास की मालती शिक्षित वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है जो पहले चंचल त्तिली की भाँति दिखायी देती है लेकिन बाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में प्रो. मेहता के सम्पर्क में आकर समाज सेविका बन जाती है। स्वयं प्रेमचन्द कहते हैं-"मालती बाहर से तितली और भीतर से मधुमक्खी।" वह शिक्षित होकर परिवार का पोषण भार अपने कन्धों पर लेती है। यहाँ स्त्री के सबल पक्ष को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना कथाकार का लक्ष्य रहा है।

मानवतावादी कलाकार होने के कारण प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में स्त्री-स्वातन्त्र्य पर अधिक जोर दिया था। प्रेमचन्द पहले संयुक्त परिवार पद्धति के समर्थक थे। संयुक्त परिवार में कम लोग मेहनती होते हैं और बाकी सभी आलसी तथा कामचोर। इस पद्धति में प्रमुखतः सास, बहू, बहिनें और ननद आदि में आपस में अनावश्यक झगड़े होते रहते हैं। इससे परिवार की शान्ति भंग हो जाती है। व्यष्टि-परिवार में परिवार का मालिक खूब मेहनत करके धन कमाता है। अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सुखपूर्वक जीवन निर्वाह करता है।

समाज की इस स्थिति को देखकर कथाकार प्रेमचन्द के विचार में परिवर्तन आ गया है। धीरे-धीरे वह व्यष्टि परिवार के समर्थक बने। यही भावना उनके कथनों में ध्वनित होती है। गबन उपन्यास की रतन स्त्रियों को यह सन्देश देती है - "बहिनों, किसी सम्मिलित परिवार में विवाह मत करना, अगर करना हो, तो जब तक अपना घर अलग न बना लो, चैन की नींद मत सोना.... परिवार तुम्हारे लिए फूलों की सेज नहीं काँटों की शैया है। तुम्हारी पार लगानेवाली नौका नहीं, तुम्हें निगल जाने वाला जन्तु है।" रतन के इस कथन के द्वारा मालूम होता है कि स्त्रियों को पारिवारिक जीवन में अधिक स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

### राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत नारी

प्रेमचन्द का युग राष्ट्रीय आन्दोलन का युग था। गाँधीजी के प्रभाव से स्त्रियाँ शासनोल्लंघन तथा बहिष्कार आन्दोलन में भाग लेने घरों से बाहर निकल आयीं। १९३० के नमक सत्याग्रह में प्रेमचन्द की पत्नी शिवारानी देवी ने भी भाग लिया। कई बार स्त्रियाँ जेल भी गयी थीं, यह विषय उनके लिए गर्व की बात थी। राष्ट्रीय आन्दोलन में नारी के इस सक्रिय सहयोग का यथार्थ चित्र तो प्रेमचन्दजी ने अपने उपन्यास तथा कहानियों में विशेष रूप से खींचा है। 'रंगभूमि' उपन्यास की इन्दु ऐसी ही राजनीतिक चेतना सम्पन्न नारी है। विद्रोही शासन की कठोरता का स्वयं विरोध करती है, इसीलिए अपने पति महेन्द्रकुमार सिंह का अंग्रेज शासकों से डरना, सदैव उनका रुख देखकर चलना उसके लिए असहनीय है। जिलाधीश मिस्टर क्लार्क के प्रभाव में आकर महेन्द्रकुमार सुन्दरदास की भूमि जनसेवक को दिलवाने का निर्णय लेते हैं तब इन्दु उनका विरोध करती हुई कहती है - "केवल अधिकारियों के भय से या बदनामी से बचने के लिए न्याय पथ से मुँह फेरना अत्यन्त अपमानजनक है। आपको नगरवासियों और विशेषतः दीन जनों के स्वत्व की रक्षा करनी चाहिए। निजी हानि-लाभ की चिन्ता न करके हुक्म का विरोध करें चाहे इसके लिए पद त्याग ही नहीं, किसी बड़ी से बड़ी विपत्ति का सामना करना पड़े।"

इन्दु की तरह 'गबन' की जालपा भी देश की राजनीतिक परिस्थितियों के प्रति सचेत है। रमानाथ लोभवश क्रान्तिकारी नवयुवकों के विरुद्ध गवाही देने को तैयार हो जाता है। जालपा इस तथ्य से परिचित है कि सरकार दुर्बल मनोव त्ति के नवयुवकों को प्रलोभन देकर मुखबिर बना लेती है और उनकी आड़ से देशसेवकों पर अत्याचार करवाती है। जालपा के प्रभाव से रमानाथ जज के सम्मुख सच्चाई प्रकट कर देता है जिससे निरपराधी नवयुवक फाँसी की सजा से बच जाते हैं।

'माँ' कहानी की 'करुणा' ऐसी देशभक्त नारी है जो अपने देश की रक्षा के लिए पति और पुत्र दोनों को अर्पित करने के लिए तैयार हो जाती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। 'समरयात्रा' कहानी ग्रामीण भारतीय नारी में निहित राष्ट्रीय भावना को व्यक्त करती है।

'कर्मभूमि' उपन्यास भारतीय नारी की राष्ट्रीय चेतना एवं राजनीतिक जागृ ति का सजीव चित्र है। इस उपन्यास की स्त्रियाँ पुरुष के कन्धे से कन्धा मिलाकर राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेती हैं और सफल भी हो जाती हैं। अछूतों पर अत्याचार होते हुए देखकर सुखदा उनका पक्ष लेती है। उसके बाद वह नगर के सभी आन्दोलनों का नेतृ त्व करती है।

**आर्थिक चेतना**

आर्थिक विषमताओं से ग्रस्त भारतीय समाज में परिवार का भार पुरुष से भी अधिक नारी को ही अपने कन्धों पर उठाना पड़ता है। उच्च तथा मध्य वर्ग की नारियों से भी ज्यादा भार निम्न-मध्यमवर्गीय तथा निम्नवर्गीय स्त्रियों पर ही अधिक रहता है। अपने परिवार के सुख के लिए स्त्री इन विषमताओं का सामना करने के लिए सिद्ध हो जाती है। इसी विषय को प्रेमचन्दजी ने गोदान की 'धनिया' के माध्यम से प्रकट करने की चेष्टा की है।

"विपन्नता के इस अथाह सागर में सोहाग ही वह गुण था जिसे पकड़े हुए वह सागर को पार कर रही थी।" आर्थिक अभाव के कारण कम उम्र में ही धनिया वृ द्ध सी जान पड़ती है -

"सारे बाल पक गये थे, चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयीं थीं। सारी देह ढल गयी थी। सुन्दर गेहुआँ रंग साँवला हो गया और आँखों से गम सूखने लगा।"

इतनी समस्याओं को झेलती हुई भी वह मर्यादा की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व होम कर देती है। अपने पति होरी की मृ त्यु पर उसकी अन्तिम आकांक्षा 'गोदान' की पूर्ति के लिए धनिया के पास आवश्यक पैसे नहीं हैं तो वह पण्डित दातादीन से कहती है - "महाराज! घर में न गाय है न बछिया, न पैसा, यही पैसे हैं, यही उनका गोदान है।" कहकर ऐसी स्थिति में भी अपनी ओर से भारतीय आचार व्यवस्थाओं का आदर करने का प्रयास करती हुई दिखायी देती है।

इस प्रकार आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कथाकार प्रेमचन्द अपने पात्रों के माध्यम से समकालीन समाज का बोध कराते हुए उसमें नारी को दिये गये स्थान को परखते हुए उसके उद्धार में जनता को कर्तव्य की ओर उन्मुख करने के सफल प्रयास में अग्रसर हुए। उनमें नारी के प्रति अपार श्रद्धा एवं गौरव की भावना है। उनमें नारी जागरण और स्त्री स्वातन्त्र्य की भावना अधिक है। स्त्री स्वातन्त्र्य के लिए वे वनिता आश्रमों की स्थापना की आवश्यकता पर मौन हैं। प्रेमचन्द का अन्तिम एवं अधूरा उपन्यास 'मंगलसूत्र' भी मानवता से ओतप्रोत है। इस उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र पुष्पा एक बार अपने पति से कहती है - "अगर मैं तुम्हारी आश्रित हूँ तो तुम भी मेरे आश्रित हो। मैं तुम्हारे घर में जितना काम करती हूँ, उतना ही काम दूसरों के घर में करूँ तो अपना निर्वाह कर सकती हूँ या नहीं, बोलो।"

प्रेमचन्द का अभिमत यह है कि स्त्री-पुरुष दोनों का समानाधिकार हो। उनका अभिमत यह भी है कि स्त्री पर पुरुष का अधिकार सिर्फ प्रेम तक ही सीमित हो। सन्तकुमार और पुष्पा के वार्तालाप से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अब तक स्त्री पर अधिकार चलाकर पुरुष आगे आया है। अब स्त्री को अधिकार सौंप दें। अर्थात् अन्त में हम निःसन्देह कह सकते हैं कि प्रेमचन्द की दृ ष्टि में स्त्री पुरुष की अनुगामिनी नहीं सहगामिनी है।

विशाखापट्टनम ५३००१७

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रांति

# प्रेमचन्द का सामाजिक विधान
## सन्दर्भ : गोदान

अंग्रेजी साहित्य में आलोचना को एक महत्वपूर्ण विधा माना गया है और इसे अत्यन्त गंभीरता से लिया जाता है। इसीलिए वहाँ गद्य-पद्य की सारी विधाओं के आलोचना सम्बन्धी सिद्धान्त हैं, वाद हैं, प्रतिवाद भी हैं परन्तु आलोचना के सन्दर्भ में एक उक्ति सर्वविदित है और निर्विवाद है वह यह कि जब भी किसी लेखक की सर्वश्रेष्ठ कृति पर विचार किया जाता है तो कहा जाता है कि इस रचना को लिखते समय लेखक की काव्यात्मक प्रतिभा अपने सर्वोच्च शिखर/चरम बिन्दु पर थी। इधर हिन्दी में हम लेखक की सशक्त तथा कमजोर रचनाओं को क्रमश: दायें हाथ की या बायें हाथ की लिखी रचना की तरह सम्बोधित करते हैं। कभी-कभी तो लेखक स्वयं ही प्रस्तावना में स्वीकार कर लेता है कि यह मेरी बायें हाथ से लिखी गई कथा/कविता है। इस मामले में प्रेमचन्द सव्यसाची थे। एक तो उनके समस्त लेखन में यह दायें-बायें हाथ वाला अन्तर नहीं है और यह भी कि उनका समस्त सृजन काल लेखन का चरम बिन्दु रहा है। उन्होंने जो लिखा वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किसी न किसी रूप में, किसी न किसी अर्थ में एक सीमा चिह्न (मील का पत्थर) रहा। हिन्दी जगत में यह खेद प्रकट किया जाता रहा है कि प्रेमचन्द के जीते जी उनके साहित्य के महत्त्व को नहीं आंका जा सका, उसका मूल्यांकन नहीं हो सका (यूँ भी हिन्दी में यह सैभाग्य बहुत कम रचनाकारों के हिस्से में आया है।) क्या यह संभव था कि पराधीन भारत का तमाम उथल-पुथल से भरा समाज तत्कालीन समय में प्रेमचन्द के क्रान्तिकारी लेखन को ठीक से समझ भी पाता जो उसका महत्त्व आंकता ! अब भी जब उनके लेखन को वर्ग विशेष का लेखन या किसी वाद, समूह से जुड़ा लेखन कहा जाता है, माना जाता है तो तब का तो प्रश्न ही नहीं उठता। सही अर्थों में प्रेमचन्द का लेखन समग्र मानव जाति को समान दृष्टि से देखने वाले एक मानवतावादी संवेदनशील हृदय की अभिव्यक्ति है। उसे खाँचों में बाँटना स्वयं को छोटा करना होगा।

प्रेमचन्द साहित्य में हमारे समाज में व्याप्त असमानता के प्रति, वर्ण भेद के प्रति, छूआछूत के प्रति एक छटपटाहट दिखाई देती है। यहाँ चूँकि सन्दर्भ गोदान तक ही केन्द्रित रखा गया है तो कहना होगा कि गोदान में होरी महतो की महाकरुण गाथा के माध्यम से लेखक न तो मात्र अपने समाज को चित्रित करता है अपितु अपना एक सामाजिक विधान भी स्थापित करता है। हम इसे प्रेमचन्द की सामाजिक अवधारणा कहें या मान्यता या कि सामाजिक संकल्पना, बात उस विधान की, उस प्रबन्ध की, उस प्रणाली की है जिसकी पैरवी प्रेमचन्द करते हैं। यहाँ खलनायक कोई एक व्यक्ति न होकर वह व्यवस्था है जो सदियों से हमारे यहाँ व्याप्त है और जिसके चलते यह समाज खोखला हो गया। आदि से अन्त तक यह कथा एक विशेष प्रयोजन को लेकर चलती है, यहाँ लेखक का उद्देश्य अवर्ण होने के नाते अथवा अशिक्षित गरीब होने के नाते होरी पर हुए अत्याचारों की कथा भर कहना नहीं है। यहाँ उसका संघर्ष भी है। इन सबके चलते गाँव की चौपाल पर या घर आँगन में होरी यदि रायबहादुर की जीवनशैली की आलोचना करता तो वह अत्यन्त स्वाभाविक होता। परन्तु जब स्वयं रायबहादुर अपने पाखण्डपूर्ण जीवन की सविस्तार चर्चा करते हैं और वह भी होरी से, तो लगता है यह एक बड़ा साहसिक कदम था जो प्रेमचन्द ने सात-आठ दशक पहले उठाया था। जब रायबहादुर कहते हैं – "मुझे तो आश्चर्य होता है कि क्यों तुम्हारी आहों का दावानल हमें भस्म नहीं कर डालता, मगर नहीं, आश्चर्य करने की कोई बात नहीं, भस्म होने में तो बहुत देर नहीं लगती .... हम जौ-जौ और अंगुल-अंगुल और पोर-पोर भस्म हो रहे हैं।" तब लगता है प्रेमचन्द एक ऐसे समाज की कल्पना कर रहे थे जहाँ बड़े से बड़ा व्यक्ति अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा, अपने अहंकार को परे रखते हुए अपने जीवन की विडंबनाओं को, अपनी भूलों, गलतियों को बड़े सरल मन से स्वीकारता है मात्र स्वीकारता ही नहीं बल्कि अपने से बहुत छोटे वर्ग के आदमी के सामने स्वीकारता है। "जिसे दुश्मन के भय के मारे रात को नींद न आती हो, जिसके दुःख पर सब हँसे और रोने वाला कोई न हो, जिसकी चोटी दूसरों के पैरों के नीचे दबी हो जो भोगविलास के नशे में अपने को बिल्कुल भूल गया हो, जो हुक्काम के तलवे चाटता हो और अपने अधीनों का खून चूसता हो, उसे मैं सुखी नहीं कहता।" (प. १६) रायबहादुर का यह कथन उनका नीर-क्षीर विवेचन है। यह गोदान का आरम्भिक प्रसंग है और रेखांकित करने योग्य है। लेखक ने कथा की शुरूआत में ही अपनी यह मान्यता स्पष्ट कर दी है कि आत्म-मंथन और आत्म स्वीकृति के बल पर ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण संभव है, यही नहीं सामाजिक जीवन में प्रमाणिकता और पारदर्शिता का प्रवाह हमेशा ऊपर



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के तबके से नीचे की ओर आयेगा। उन्होंने रायबहादुर से कहलाया – "जब तक सम्पत्ति की यह बेड़ी हमारे पैरों से न निकलेगी, जब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मँडराता रहेगा, हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे, जिस पर पहुँचना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है। तब लगता है वे उस समाज का स्वप्न देख रहे थे जहाँ सम्पत्ति वरदान स्वरूप हो, वह मानवता का लक्ष्य पाने में बाधक न होकर साधन स्वरूप सिद्ध हो। "व्यक्ति जिस व्यवस्था में पलता-जीता है उससे घृणा होने पर भी उसका मोह त्याग नहीं सकता।" का यह सच मात्र रायबहादुर के जीवन का सच नहीं है। आज भी हमारे आसपास ऐसे बहुत से रायबहादुर हमें दिख जायेंगे और इसीलिए रायबहादुर की तुलना में होरी एक सशक्त व्यक्ति के नाते हमारे सामने आता है जो अपने सरल स्वभाव, अपनी धर्मभीरुता और असहायता के बावजूद पहले झुनिया को स्वीकारता है और फिर सिलिया को अपने घर में आश्रय देता है। अपनी कथा में प्रेमचन्द दरअसल यहाँ एक बहुत बड़े समाज की नींव रखते हैं जहाँ चरित्र का सारा दोष स्त्री को देकर न तो उसे बहिष्कृत किया जा सकता है न अपमानित।

तत्कालीन परिस्थितियों में ये दोनों ही निर्णय बहुत मायने रखते हैं। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि प्रेमचन्द आलेखित समाज में कहीं भी स्त्री, स्त्री की शत्रु नहीं है, धनिया बड़े मन से अपने बेटे की अविवाहित पत्नी को स्वीकारती है, स्वयं छोटी जाति की है, असमर्थ है परन्तु सिलिया के प्रति सहानुभूति रखती है। धनिया हो, या मालती या गोविंदी, झुनिया हो या सिलिया सारे नारी पात्र संवेदना और मानवता से भरे हुए हैं। स्त्री के हक में लेखक एक नई दृष्टि लेकर हमारे सामने उपस्थित हुए हैं। मालती का यह कथन आज भी विचारणीय है – "नारी को समाज कल्याण के लिए अपने अधिकारों की रक्षा करनी पड़ेगी, उसी तरह जैसे इन किसानों को अपनी रक्षा के लिए इस देवत्व का कुछ त्याग करना पड़ेगा।" (पृ. २८१) दुःख की बात है कि कालान्तर में स्त्री अपने अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ने तो लगी परन्तु उसमें 'समाज कल्याण' की अवहेलना हो गई।

गोदान के मूल तत्वों में एक तत्व है – सभी के अपराधों को समान दृष्टि से देखना, गरीब-अमरी, शिक्षित-अशिक्षित, सवर्ण-अवर्ण, स्त्री-पुरुष जब इन सबके लिये एक जैसा मापदण्ड होगा तभी तो समाज खुशहाल होगा। किसी भी वर्ग के प्रति एकांगी दृष्टिकोण समाज के हित में नहीं होता यह बात प्रेमचन्द अच्छी तरह से जानते-समझते थे। इसीलिए वे अपने इस उपन्यास के माध्यम से समाज का ध्यान बहुत-सी असमानताओं और विसंगतियों की ओर खींच रहे थे। अपराध के प्रति क्षमा की हमारी मूल भारतीय भावना यदि समाज में होगी तो ही परिवार और समाज सारे संघर्षों का सामना कर पायेंगे।

समाज में अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार होना ही चाहिये इसे प्रेमचन्द ने अत्यन्त सशक्त तरीके से सिलिया के माता-पिता के माध्यम से बताया है। बेटी को न्याय दिलाने के लिए उन्होंने जो मातादीन दातादीन को ललकारा है, उनका जनेऊ तोड़ डाला, मातादीन के (बलात्) मुँह में हड्डी का टुकड़ा डाल दिया, यह घटना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है।

यदि किसी व्यक्ति पर उसकी जाति के कारण अन्याय, अनाचार, अत्याचार हो रहा है तो लेखक ने उसका विरोध किया अन्यथा व्यक्ति की तुलना में समाज के हित को बड़ा माना गया है। मेहता का यह कहना – "विवाह को मैं सामाजिक समझौता समझता हूँ और उसे तोड़ने का अधिकार न पुरुष को है न स्त्री को। समझौता करने से पहले आप स्वाधीन हैं, समझौता हो जाने के बाद आपके



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाथ कट जाते हैं।" दर्शाता है कि विवाह स्त्री-पुरुष दोनों ही के समान बंधन और समान उत्तरदायित्व का नाम है - उसका निर्वाह दोनों ही को समान रूप से करना होगा। इसी सन्दर्भ में जब मेहता कहता है कि वे समाज की दृ ष्टि से विवाहित जीवन को श्रेष्ठ मानते हैं और व्यक्ति की दृ ष्टि से अविवाहित जीवन को तो महादेवी वर्मा का स्मरण स्वाभाविक है जिन्होंने कहा था - "विवाह की संस्था पवित्र है परन्तु वही व्यक्ति के नैतिक पतन का कारण बने तो उसमें अनिवार्य संशोधन की आवश्यकता को समझा जाना चाहिये" (शृंखला की कड़ियाँ, १९४२ में प्रकाशित से) ऐसे कितने ही विचार बिन्दु 'गोदान' में हैं जिनके माध्यम से प्रेमचन्द की सामाजिक मान्यताओं पर विचार किया जा सकता है। जब धनिया दातादीन से कहती है, "हमको कुल-परतिसठा इतनी प्यारी नहीं है महाराज, कि उसके पीछे एक जीव की हत्या कर डालते" तो याद आते हैं जॉन डन, सुप्रसिद्ध अंग्रेजी रहस्यवादी कवि जिन्होंने १६२४ में 'डिवोशंस अपॉन इमर्जंट' में कहा था, "कोई मनुष्य अपने आप में पूर्ण एक द्वीप नहीं होता, हर व्यक्ति महाद्वीप का एक हिस्सा है। मिट्टी का ढेला भी यदि समुद्र बहा ले जाता है तो यूरोप छोटा हो जाता है जैसे किसी मीलों लम्बी फैली जमीन के जाने से हो जाये, जैसे आपके मित्र की, आपकी जमींदारी चली जाये। मृत्यु किसी की भी हो मुझमें से कुछ घट जाता है क्योंकि मानवजाति से मेरा नाता है अतः घंटा किसके लिए बज रहा है यह जानने के लिए किसी को मत भेजना क्योंकि यह तुम्हारे लिये बज रहा है।" (पुराने समय में इंग्लैंड में किसी की मृत्युपर चर्च में जाकर घंटा बजाने की परम्परा थी, गाँव के लोग तब चर्च में जाकर पता करते थे कि किसकी मौत हुई है।)

गोदान को पढ़ते हुए बार-बार यह लगता है कि इस कथा के माध्यम से प्रेमचन्द का इंगित कुछ और था जैसे आकाश में अरुंधती एक सूक्ष्मतारा है उसे सीधे-सीधे नहीं दिखाया जा सकता है। उसकी दिशा का निर्धारण सप्तर्षि के माध्यम से किया जाता है वैसे ही होरी महतो की कथा के माध्यम से 'गोदान' में प्रेमचन्द और बहुत कुछ कहना चाहते थे जिसे अब भी पूरी तरह से उकेला नहीं गया है।

*२०३, टॉवर-३, साईनाथ स्क्वेयर*
*मदर्स स्कूल के पीछे, जलाराम चार रास्ता*
*बड़ौदा - ३९००२१*
*मोबा. ०९९०४२३६४३०*


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पारमिता शतपथी

*उड़िया कहानी*

# कारगिल की गोद

कितने खुश थे उस दिन तेरे पापा !

उनके पैर जमीन पर पड़ भी रहे थे या नहीं।

उस पूरे केबिन में बस कूद रहे थे, नाच रहे थे वे - हँसी का फव्वारा फूट रहा था उनके मुख से। अस्पताल से डिस्चार्ज होकर स्टेशनवैगन में बैठकर हम जो पन्द्रह किलोमीटर घर तक आये थे - तेरे पापा ड्राइव कर रहे थे - रास्ते भर गीत गुनगुनाते रहे और बायें पैर से ताल मिलाते रहे। मैं बगल में अगली सीट पर बैठी थी - मुलायम कपड़ों में लिपटा तू मेरी गोद में था - सिर्फ तीन दिन का था तू, आँखें मूंदे आराम से सो रहा था। मैं जबर्दस्ती हँसी दबाये, होठ दबाये बैठी थी।

उसके बाद जितनी मिठाईयाँ बँटी हैं, जितने फोन किये गये हैं, क्या बताऊँ अब ? इनकी खुशी देखकर बर्तन माँजने वाले और बावर्ची, दोनों ने नये कपड़े माँगे। लेकिन मैं अधिक खुश नहीं हो रही थी- डर रही थी कि कहीं किसी की नजर न लग जाए। दो दिन बाद, लगता है सचमुच किसी की नजर लग गई, सूखकर अपने से गिरने से पहले न जाने तेरी नाभि में क्या लग गया कि


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह थोड़ी-सी फट गई। उसमें से खून की एक पतली सी धर बह निकली - पाँच-छह बूंदें होंगी शायद। मानो मेरे शरीर का खून सूख गया। तेरे पापा को भींचकर पकड़े हुए मैं झर-झर रो रही थी और वे मुझे समझाने में लगे थे - रुको-रुको रोना बंद करो - धीरज रखो, चार-पाँच बूंद ही तो बहा है.... किन्तु तेरे नन्हें से शरीर का खून! भला मैं कैसे सह पाती, बोल तो?

तब से पल-पल, दिन-दिन, माह-माह, वर्ष-वर्ष,पूरे बाईस वर्षों में तेरे शरीर में मैंने कितनी बूंदें खून बनायी होंगी रे मुन्ने? कितनी बूंदे? मेरे लाड़ले, कितनी बूंदें बोल तो ?

खाते समय जिद करने पर, खाने की थाली में जूठन छोड़ने पर, गुस्से से नीचे बिखेर देने पर कितनी बार तुझे समझाया है ! किसान बड़ी मुश्किल से बीज जुटाता है। जमीन जोतकर, धूप-बारिश का सामना करके बीज बोता है, पौधे लगाता है, उन्हें धूप से बचाता है - खेत में बारिश का पानी इकट्ठाहोने पर मेड़ काटता है, कीड़े लगने पर दवा लाकर छिड़कता है- रात-रात भर रखवाली करता है - कहीं कोई फसल बर्बाद न कर दे- खा न जाए। धन की पकी बालियाँ काटता है, धान की झड़ाई करता है, उसोता है, कूटता है, चावल बनाता है। हम उसे खरीदकर, पकाकर खाते हैं। कितनी मुश्किलें हैं - मेहनत है मुट्ठी भर भात के लिए। इतनी आसानी से उसे बर्बाद नहीं करते बेटे। बर्बाद करने से पहले एक बार सोचकर देखना कितनी मेहनत, कितना पसीना, कितनी उनींदी रातें बीतती हैं सिर्फ उतनी बनाने के लिए।

कल सुबह जब कॉलिंग बेल बजी, मैं डायनिंग टेबल पर चाय लगा रही थी। तेरे पापा ने अखबार छोड़कर जल्दी से जाकर दरवाजा खोला। सामने कोई खड़ा था। तुम लोगों जैसी पोशाक पहने एक युवक शायद तेरी ही उम्र का होगा। तेरे पापा ने तुरंत मुड़कर मेरी ओर देखा - मेरी आँखें उनसे मिल गयीं - तब तक मैं भी कुर्सी छोड़कर खड़ी हो चुकी थी - मानों एक काली परछाई जैसा कुछ गुजर गया हम दोनों के बीच से होकर। चट् से मुँह घुमा लिया मेरी ओर से तेरे पापा ने। उस युवक को अन्दर बुलाया, शायद कुछ बातें करने लगे। मैं उसी तरह खड़ी रही - याद करने की कोशिश कर रही थी, उस युवक को पहले कहीं देखा है क्या? मैं जानबूझकर तेरे पापा की ओर नहीं देख रही थी। उस युवक से वे ही बात करें - मुझे उससे क्या! चार-पाँच मिनट बाद वह युवक उठकर खड़ा हो गया - उसके साथ-साथ कुछ गिरने जैसी आवाज आई - तेरे पापा सोफे से उठते समय लड़खड़ाकर गिर पड़े कार्पेट पर - दाहिने हाथ का भार टी पॉट पर रख लिया था। मेरे दौड़कर उनके पास पहुँचते ही तेरे पापा ने सिर उठाकर मुझे देखा। अचानक चौंक उठी मैं ! इस तरह तो कभी नहीं देखा उन्होंने? फिर से मानो परछाईं सा कुछ गुजर गया हमारे बीच से ! उस युवक ने तेरे पापा को उठाकर सोफे पर बिठाया। मुड़कर मुझे नमस्कार किया और न जाने क्या कुछ कहता जा रहा था।

क्या कुछ कहता चला जा रहा थ वह?

मुन्ना रे, मेरे लाड़ले, तू कहाँ है? कहाँ है तू? मैंने उसकी कोई बात नहीं सुनी - वही तुम्हारे उस युवक की बात - तेरी ही उम्र के युवक की बात।

दुनियाभर की नदियाँ, नाले तालाब कहाँ सूख गये मेरे लाड़ले ! एक बूंद पानी तक नहीं दिया तुझे उन्होंने ! छह दिन, छह रातें - बूंद भर पानी के लिए तरसता रहा तू। रात को नीचे लुढ़ककर बर्फ चबाता रहा - तेरे हाथ बाँध दिये गए थे। कहाँ सूख गया सूर्यदेव को मेरा चढ़ाया प्रतिदिन का भर-भर अंजुली पानी ! खाना तो दूर एक बूंद पानी तक नहीं दिया। मेरे लाल रे, तेरे लगाये


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नारियल के पेड़ हाथ से भर गये हैं। घर के पिछवाड़े बावड़ी में तूने जो कमल छोड़ा था आजकल एक-दो रोजाना खिलते हैं। ऐसी लबालब भरी दुनिया में तुझे एक बूंद पानी नहीं मिला ! वह भी लगातार छह दिन, छह रात तक ! कैसे विश्वास करूँ मैं इस पर ! कौन थे वे लोग? क्यों था इतना क्रोध? क्यों थी उनमें इतनी घृणा तेरे प्रति? यह सच है या झूठ?

आज सुबह-सुबह तेरे पापा एयरपोर्ट गये। घर लोगों से भर गया था। न जाने उनके साथ और कौन-कौन गये हैं - मुझे कुछ मालूम नहीं। क्या तू आ रहा है मेरे लाडले? आ जा मेरे बेटे ! दरवाजा धकेलकर खड़ा हो जा मेरे सामने आकर। कोंपल निकल रहे तरोताजा हरे लम्बे केले के पेड़-सा, गड़गड़ाहट और बिजली के साथ सारी दुनिया को चमकाते झर-झर झरती बैसाखी की बारिश-सा, हमारे छत पर पड़ती जाड़े की नर्म धूप-सा-चला आ मेरे पास, मेरे दुलारे- जिस तरह दो महीने पहले गया था, ठीक उसी तरह।

डॉक्टर गुप्ता सुबह-सुबह मुझे एक इंजेक्शन लगा चुके हैं। वो देख, एक और ला रहे हैं। कहते हैं ये मेरे स्नायु को शान्त करेंगे।

तू नौ साल का था तब तेरे पापा की पोस्टिंग अलवर में थी। टाउनहॉल में बच्चों की ड्राइंग प्रतियोगिता हो रही थी। विषय था - आई एम ए हीरो। तुझे उसमें प्रथम पुरस्कार मिला था। तेरी ड्राइंग थी हरे रंग की टोपी, हरी पोशाक पहने कन्धे पर रायफल रखे, मोटी काली मूँछवाले एक युवक का चित्र ! वह चित्र कितना सुन्दर था, मुझे याद नहीं। किन्तु वे काली मूँछें और कन्धे पर रायफल अब भी मेरी आँखों के आगे नाचती रहती हैं। तेरे पापा को बहुत गर्व हुआ था, कहते फिर रहे थे - माई सन विल बी ए फाइटर। मुझे लेकिन उस दिन अच्छा नहीं लगा था, इस तरह इतने बचपन से ऐसी शिक्षा देना ठीक नहीं है। वह क्या करेगा, देखा जायेगा।

कहा जाता है, सात पुश्तों का खून लेकर जन्म लेता है बच्चा। न जाने क्यों तेरी आँखों की पुतलियाँ गाढ़ी नीली थीं - फक्क सफेद आँखों में नीली पुतलियाँ और घनी काली भौहें। तेरे पापा कहते, तेरे दादाजी का चेहरा भी ऐसा ही था। तेरी नानी कहती, उनकी माँ जैसा है देखने में तू। जिसकी तरह भी हो - सरल, चौकन्नी और विश्वास भरी थीं तेरी निगाहें। बर्फ के पहाड़-सा कठोर, गहरी नीली झील के पानी-सा निर्मल- कभी-कभार शरारत के कारण चंचल हो उठता था तू ! जिस दिन से तूने आँखें खोली हैं, मैं देखती आ रही हूँ - वही हँसमुख, स्नेहभरी निगाहें तेरी - कितनी परिचित - वाह ! तेरे दूर होने पर भी दिख जाती हैं मुझे। बाईस वर्षों की आस्था, विश्वास से बनी हैं वे दो उज्ज्वल मणियाँ, मेरे हीरा....

बेटे रे ! क्या बातें कर रहें हैं ये लोग.... एक-एक करके उन्होंने निकाली हैं तेरी आँखें ! यह सब झूठ है ! तू एक बार देख ले तो दुश्मन भी पसीज जाए। ऐसा कौन करेगा? दुनियाभर की न शंसताएँ तो हार मान जाएँगी तेरी तरल, निर्मल निगाहों के आगे। बेटे रे, तो क्या जब तू सो रहा था - तेरे अनजाने में....मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा। इन्तज़ार कर रही हूँ तुझसे ही पूछने के लिए। तू कहाँ है रे मुन्ने!

मजबूत बनता जा रहा था तू मक्खन का पुतला! आखिर कितना बोझ होगा तेरा पृथ्वी पर बाईस साल की उम्र में! सच, क्या सह नहीं पाई पृथ्वी इतना भी! कोई तो बताए मुझे - सच-सच बताए!

"इसे ऐसे सीधे पकड़कर सू-सू करना - तब ठीक जाकर टॉयलेट में गिरेगा।" मैं तुझे पहली-पहली बार सिखा रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"उससे और भी क्या-क्या करेगा, सीखा दो उसे।" तेरे पापा टॉयलेट की चौखट पकड़े खड़े, होठ दबाए मुस्कुरा रहे थे।

"चुप रहो, बड़े बेशर्म हो तुम।" मैने सिर घुमाकर कहा था और मुस्कुराने लगी थी।

"मम्मी, क्या कहा पापा ने?" तूने सू-सू करते हुए सिर घूमाकर पूछा।।

"कुछ नहीं रे तू अपना काम करके फलश चला दे।" मैने कहा था और रसोई में चली गई थी।

- राक्षस हैं! जानवर हैं! कैसे हिंसक जानवर हैं वे लोग! टुकड़े-टुकड़े करके काटा तुझे - तूने किसी का क्या बिगाड़ा था रे बाबू....।

रत्ना आज सुबह आयी थी, तेरे पापा के एयरपोर्ट चले जाने के बाद। अपने पतले गले में वही सोने की चेन और डायमंड का लॉकेट पहने थी, जो हमनें उसे एंगेजमेंट में दिया था। शादी एक साल बाद करने के लिए उस दिन उसके माता-पिता ने कहा था। लेकिन तेरे पापा ने बाद में कहा- नहीं हम इसी दिसम्बर में कर देंगें। आर्मीवालों की शादी जल्दी हो जानी चाहिए। मैने मुँह पर हाथ लगा दिया था उनके - वह हमेशा ऐसी ही अमंगल बातें करते थे। तुझे खबर मिल तो गयी ना? तेईस दिसम्बर की होगी शादी। आज मैने रत्ना को बतायी थी यही बात। वह तो बस मुझे भींचकर पकड़े हुए थी। उसके बाद मैं बड़ी अलमारी खोलकर पुराना एलबम निकाल कर लायी। चाबी कहीं रख दी थी, ढूँढ़ने में पन्द्रह मिनट लग गए। रत्ना बीच-बीच में आया करती है - तेरे बचपन के फोटो देखने के लिए लालायित रहती है। लेकिन आज मैंने हमारा-यानी तेरे पापा और मेरा पुराना एलबम निकाला। तब तू सात साल का था-तेरे पापा तैंतीस के। हम कुछ ही दिनों पहले मुंबई आए थे। पहली बार मैं नेवीबॉल गयी थी; तुझे आउट हाऊस में दीदी के पास छोड़कर, तेरे पापा नाराज हो रहे थे। साड़ी पहनकर क्यों गयी - एक गाउन क्यों नहीं बनवाया। तब मुझे बहुत शर्म आती थी - गाउन पहनकर बाहर कैसे जाती? तेरे पापा बन्द गले का सफेद कोट पहने हुए थे - उसी तरह साड़ी में ही नेवीबॉल के फ्लोर पर खींच ले गए।शायद उनके किसी दोस्त ने फोटो खींचा था - वही दिखा रही थी रत्ना को। उससे बोली - तुमलोग भी इसी तरह के फोटो खिंचवाना। इससे और भी जीवन्त। तुम लोग हनीमून से जल्दी लौट आना। पहली जनवरी की शाम आर्मीबॉल में जरूर शामिल होना है। रत्ना एक मेरून रंग का गाउन बनवाएगी। मेरून रंग उसके गोरे रंग पर खूब फबेगा। अपने छोटे घुँघराले बाल समेटकर एक टॉपनॉट बना लेगी। डान्स फ्लोर पर जब तू उसे अपनी बाँहों में लिये होगा और वह अपना सर पीछे की ओर झुकाये होगी, किसी से कहना फोटो खींच ले। तू....मुन्ने, तू किस रंग का सूट पहनेगा.... मैं एक मिनट सोच ही रही थी कि अपना दुपट्टा मुँह में दबाए रत्ना वहाँ से दौड़ती हुई चली गई। बरामदे में डॉ. गुप्ता से न जाने क्या बोली - गुप्ता अंकल ने आकर फिर से इंजेक्शन लगा दिया। मेरी आँखें तो मूँदने लगीं - अलमारी उसी तरह खुली रह गई....।

जानता है मुन्ने--

जब तू बिल्कुल छोटा-सा था - खाट पर लेटे-लेटे काफी देर तक स्थिर द ष्टि से सिलिंग फैन की ओर देखते हुए हाथ-पैर हिलाकर खेलता रहता था। तेरे पास बैठकर एक नॉवेल पढ़ते हुए मैं खाट की पाटी से टिक जाया करती थी। आतंकित हो जाया करती थी कि तुझे बड़ा करने के दौरान मुझे कहीं कुछ हो गया तो ! ऐसा कुछ हो जाए कि मैं बचूँ ही नहीं ...तुझे अकेला छोड़कर....। नॉवेल आधा खोलकर खाट पर रखकर मैं तेरे मुँह की ओर ताकती बैठी रहती थी। तेरे ये ताँबे के रंग के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाल तिरुपति में चढ़ेंगे। तु घुटरूँ चलेगा - खटिया का पाया पकड़कर खड़ा होगा। धीरे-धीरे हिल-हिलकर चलेगा। नर्सरी स्कूल जाएगा, छोटे-छोटे यूनिफार्म पहनकर। एक छोटी-सी साइकिल होगी तेरी। तेरे पापा तो ऑफिस में रहेंगे - तुझे साइकिल पर बिठाकर, पीछे से पकड़े हुए मुझे ही पूरे बरामदे में चलाना होगा। पर यदि उससे पहले मुझे कुछ हो गया तो ....क्या करेगा रे तू अकेले-अकेले !

स्कूल से लौटने के बाद तूझे भूख लगने पर किसी से माँग तक नहीं सकेगा ! तेरे हिलने लगे दाँत को हलके से गिरा देने की किसी को फुर्सत नहीं होगी ! मूसलाधर बारिश के समय बादल जोर से गरजने पर भींचकर पकड़ने के लिए कोई नहीं होगा ! अहा ! बिन माँ का बच्चा होकर कितने दुःख और भय से तू रो रहा होगा ! यों सोचकर मैं रो पड़ती। लेकिन तू उसी तरह नन्ही-नन्ही मुस्कान बिखेरता हाथ-पैर हिला-हिलाकर खेलता रहता। मैं अपने आँसू पोंछकर उपन्यास पढ़ने लग जाती।

मुन्ना रे, मेरे बेटे, मैं थोड़ी स्पर्धा भी करने लगी थी। आजकल छुप-छुपकर प्रार्थना करने लगी थी, पोता या पोती के साथ खेलने से पहले ईश्वर मुझे न ले जाएँ। लेकिन नन्हे पोते या पोती का चेहरा मैं भय से आँक नहीं रही थी - पहले से ऐसा नहीं करना चाहिये - नजर लग जाएगी।

बेटे रे, ये देख ! झोली भर पके सपने किस तरह अंगोरे बैठी हूँ, देख !

तेरे पापा शायद लौट आये हैं। ढेरों लोग इकट्ठे हैं गेट के पास, बाहर, पर आवाज नहीं आ रही किसी की बिलकुल। तेरे आर्मीवाले लोग भी आए हैं उनके साथ। चमकती बिजली की तरह तू चंचल है मुन्ने ! तू तो गेट खोलकर कभी चलकर नहीं आता - उछलते-कूदते सीधे घर के अन्दर हाजिर हो जाता है। बायें हाथ से म्यूजिक सिस्टम ऑन करता है और दाहिने से मुझे भींच लेता है। मैं अपनी कमर से चिपकी तेरी पतली-पतली लम्बी अँगुलियाँ सहलाने लगती हूँ।

कौन है....न जाने कौन कह रहा है, पहले तेरी अँगुलियाँ उन लोगों ने एक-एक करके काटीं, और उसके बाद ....मैंने उसको चुप रहने केलिए कहा। इस पृथ्वी पर ऐसा कोई नहीं है - न ईश्वर, न शैतान, कोई ऐसा नहीं कर सकता तेरे साथ। तेरा तो कोई दुश्मन है ही नहीं। मुझे तो जरा भी विश्वास नहीं होता - मैं जानती हूँ, मुझे थोड़ा विचलित करने के बाद तू अपने बचपन की तरह पीछे से आकर दोनों हाथें से मेरी आँखें बन्द कर लेगा....।

राष्ट्रीय ध्वज में लिपटा छह फुट लम्बा लकड़ी का बक्सा बैठकखाने में लाया गया। शायद तेरे ही चार-पाँच दोस्त होंगे, उसे खोलकर पकड़े हुए थे। सफेद कपड़े में बँधी तीन फुट लम्बी, लगभग डेढ़ फुट चौड़ी कुछ ऊँची कोई चीज बहुत सहेजकर रखी गयी थी - शायद - कोई बहुमूल्य चीज थी- न जाने क्या है, भीतर से कुछ दिख नहीं रहा था।

घुटनों से दोनों पैर काट लिये हैं।

किसने कहा यह? जब मैंने पलटकर देखा, तेरे पापा एक घायल जानवर की तरह तड़प रहे थे - किसी को काट खायेंगे या खुद को ही काट लेंगे। मैंने उनके पास दौड़कर जाने की कोशिश की, पर जरा भी हिल न सकी। गुप्ता अंकल और न जाने किस-किस ने पकड़ रखा था मुझे - दो-दो इंजेक्शन लगा दिये थे। क्या करती - सो जाऊँगी अब। शायद तेरे साथ बात नहीं कर पाऊँगी।

भला नींद मुझे कहाँ आएगी रे ! तुझे देखे बिना कैसे सो सकती हूँ, बोल तो ? अँधेरा छाता जा रहा है आँखों के आगे। चेहरा नजर नहीं आ रहा था। लेकिन मैं तेरा नाम ले-लेकर पुकारती जा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रही थी। जानती हूँ, तू जहाँ भी होगा, दौड़ आएगा मुन्ने, मेरी पुकार सुनकर तू चैन से कहाँ बैठ सकता है ? सामने यह कौन खड़ा है ? मैं चौंक उठी। तुझ जैसा तो नहीं लग रहा। कुछ करीब गई। फक्क सफेद बर्फ-सा चमक रहा था उसका बदन, पतले घने पाइन वन जैसे फैले हुए थे उसके बाल - कोई महिला ही थी - मैं किनारे से होकर आगे जाने को हुई। शायद तू कहीं आगे होगा। हाथ बढ़ आए उस महिला के मेरी ओर - ऊँचे पहाडों के सन्धि-स्थल से नीचे छलाँग लगाती शुभ्र झरने जैसी थीं उसकी बाँहें।

"कौन हो तुम ? मैं मुन्ने को ढूँढ़ रही हूँ- कहाँ है मेरा मुन्ना, मुन्ना रे...."

"चुप-चुप" मेरे आगे से हाथ हटाकर अपने होठों पर अँगुली लगायी उसने - मुझसे कुछ न कहने का इशारा किया।

मैं कुछ करीब गई उस महिला के।

"देख मुझे, मैं तो करगिल माँ हूँ। तीन सौ छप्पन गोलियाँ निकाली है मैंने - ये देख।"

मैंने गौर से देखा। उसकी पूरी देह खून से सराबोर है। न जाने किस रंग की साड़ी, किस रंग का ब्लाउज पहने है! पूरी देह में गोलियों के निशान हैं। इंच भर भी नहीं बची। उसका चेहरा देखा - पूरे ललाट पर गोलियाँ दागी गई हैं - खून झर-झर बह रहा है - हर ओर लाल ही लाल, अब फक्क सफेद नहीं दिख रही थी वह।

"वे सभी सो रही हैं वहाँ - उस ओर..." झर-झर खून बहता हाथ उठाकर मुड़कर पीछे की ओर दिखाया उसने। कितने थके-हारे, सिकुड़े-सिमटे सो गये हैं, देख ना ...उठा मत उन्हें।

"मुन्ना, मुन्ना कहाँ है ?"

"वो वहाँ।"

तो तू उन लोगों के बीच सोया है ! अकसर तेरे बेड-रूम में आकर तेरा टेबल लैम्प बुझाया करती थी मैं। तू पढ़ते-पढ़ते सो जाया करता था। गर्दन तक ओढ़ी रजाई कान तक खींच दिया करती थी.... ।

"उसे जरा रजाई ओढ़ा देना। चुभता है, इसीलिए उसे कम्बल अच्छा नहीं लगता । इस बार श्रीनगर पोस्टिंग से पहले एक बड़ी रजाई बनवा दी थी मैंने, और हाँ, बीच-बीच में जरा ऊपर कान तक खींच दिया करना। ठंड लग जाएगी वरना, वह कभी कान नहीं ढाँकता..." मैं घबराई हुई-सी कहती जा रही थी।

"तुम निश्चिन्त होकर लौट जाओ, वह मेरे पास आराम से सोएगा।" करगिल माँ मुड़कर धीरे-धीरे चली गई।

एक चिट्ठी लिखी है तुझे। किस पते पर भेजूँ ? ९९ ए.पी.ओ. या १३ जम्मू कश्मीर राइफल्स - किस पते पर भेजूँ, रे बाबू---?

चलती हूँ, करगिल माँ का ही नाम लिख दूँगी। वह जरूर पहुँचा देगी मेरी चिट्ठी तेरे पास।

*४ आर/११, यूनिट -९*
*भुवनेश्वर (उड़ीसा) ७५१०२२*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम बरन शर्मा

# पलायन

---

रात के दस बज चुके थे किन्तु अंजलि को किसी तरह नींद नहीं आई। उसका इकलौता बेटा रोहित सो गया। पर वह समझ नहीं पा रही थी कि उसके पति को आज इतनी अधिक देर क्यों हो गई। उसके दिमाग में कई विचार आने लगे। उसके भाई ने बोनीगुंड काण्ड की घटना सुनाई थी। वह घटना उसके मन में आज फिर ताजा हो गई। दिनदहाड़े सात घरों को जला दिया गया। लोगों को लूटा गया। दुकानें जलायी गईं। तीन मंदिरों में तोड़-फोड़ हुई। लोग तमाशा देखते रहे। किसी की हिम्मत नहीं हुई कि कोई कुछ भी बोल सके।

अचानक दरवाजा खटका। अंजलि उठ खड़ी हुई। उसने पति की आवाज को पहचानकर द्वार खोल दिया। राजेन्दर कौल अपनी पत्नी की उदासी का कारण समझ गए। सधे हुए स्वर में उसने कहा - "बैंक ड्यूटी पूरी करने के बाद मैं प्रेम टपलू के घर चला गया। उसके बड़े भाई अपने बच्चों के साथ श्रीनगर छोड़ने की सोच रहे हैं। उन्हें बहुत समझाया पर मानते नहीं।"

"अगर मेरी मानो तो हमें भी इस घाटी को छोड़ देना चाहिये। इसी में भलाई है।"



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"नहीं अंजलि, मैं और प्रेम टपलू कश्मीर नहीं छोड़ सकते। यह हमारे पुरखों की भूमि है। सदियों से इस भूमि ने हमें पाला पोसा है। इस भूमि पर हमने अपना सब कुछ लुटाया है।"

अंजलि कुछ देर चुप रही। फिर, भोजन की थाली अपने पति के सामने रखते हुए बोली - "पर हमारे पूर्वजों के सामने ऐसे बुरे हालात नहीं थे।"

"अंजलि तुम्हें इतिहास नहीं मालूम। दादाजी कहा करते थे कि सल्तनत काल में धर्म परिवर्तन के लिए हम कश्मीरी पंडितों पर अत्याचार हुए। तलवार के बल पर धर्म परिवर्तन कराया। कुछ लोगों ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। ऐसे बुरे समय में भी हमारे पूर्वजों ने इस भूमि को नहीं छोड़ा।"

पति-पत्नी के बीच देर तक बातें होती रहीं। फिर पता ही नहीं चला कि वे कब सो गए।

आखिर प्रेम टपलू के बड़े भाई ने अपने बच्चों सहित घाटी को त्याग दिया। पर प्रेम और राजेन्दर अपनी बात पर अडिग रहे। घाटी छोड़ने का विचार तो उनके मन में कभी नहीं आता। वे दोनों गहरे मित्र थे। किन्तु दिन-प्रतिदिन घटनेवाली घटनाओं से उनका मन हमेशा विचलित बना रहता था। दोनों एक ही बैंक के कर्मचारी थे। आपस में विचारों का तालमेल भी ठीक था। वे लोगों को समझाते रहते। पर घाटी में शांति के प्रयास सफल न हो सके। लोगों के आँसू थमने का नाम नहीं लेते। चारों ओर भय का वातावरण था। लोग तनाव में रहने लगे थे।

अंजलि का मन चिन्ता से ग्रसित बना रहता। पर राजेन्दर के सामने उसकी एक न चलती। आये दिन होने वाली घटनाएं उसे और अधिक परेशान कर देतीं। घाटी छोड़ने वले लोगों की संख्या निरन्तर बढ़ने से वह और उदास हो गई थी। उसके मन में एक अज्ञात भय था जो मिटने का नाम न लेता था।

उसे पति से ज्यादा चिन्ता बेटे की थी। अखबारों में छपने वाले समाचार उसके दुःख को और बढ़ा देते थे। यहाँ कोई किसी पर दया करने वाला नहीं था। सबकी गिद्धदृष्टि हिन्दुओ के घरों और धन-दौलत पर लगी रहती।

अचानक दिसम्बर महीने में एक घटना और घटी। शोपियां में कट्टरपंथियों ने हिन्दुओं पर हमला किया। महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया गया। महंत केशवनाथ, टिक्कालाल, प्रेमनाथ भट और अजय कपूर जैसे कई लोगों की हत्या कर दी गई। इन हत्याओं का एकमात्र उद्देश्य कश्मीरी हिन्दुओं को बाहर खदेड़ना था। सबसे दुःखद बात यह थी कि हमला करने वालों में से किसी को भी नहीं पहचाना गया। सरकार की घोषणा खोखली साबित हुई। घाटी की इंसानियत तार-तार हो गई।

इस घटना ने राजेन्दर को उदास कर दिया। अंजलि घाटी छोड़ने के लिए उस पर निरंतर दबाव बना रही थी। पर वह हर बार उसकी बात को टाल देता था। रविवार का दिन था। अंजलि अपने पति और बच्चे के साथ घर से कहीं बाहर जाने वाली थी। अचानक दौड़ता हुआ प्रेम आया। वह बुरी तरह से हांफ रहा था।

राजेन्दर ने पूछा - "क्या बात है, प्रेम ?"

"कवि सर्वानंद कौल की हत्या कर दी। कई वर्षों से वे अपने परिवार के साथ शाली गांव में रहते थे। हिन्दु-मुसलमान सबके परम हितेषी थे। उन्होंने काश्मीरी भाषा में श्रीमद्भगवत गीता का अनुवाद किया था। रात को तीन सशस्त्र आदमियों ने उनका और उनके बेटे का अपहरण कर लिया।"

राजेन्दर सर्वानंद कवि की प्रतिभा से परिचित था। हिन्दु मुसलमान एकता के लिए उन्होंने वर्षों से प्रयत्न किया था। वे कश्मीर छोड़कर बाहर जाने की बात तो स्वप्न में भी नहीं सोचते थे। वे कहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते थे - "यहाँ की मिट्टी से मेरी जड़ें अधिक गहरी हैं, मैं उससे अलग नहीं हो सकता हूँ।"

उनकी हत्या के समाचार से राजेन्दर को बहुत दुःख हुआ। "अपहरण के बाद क्या हुआ प्रेम?" राजेन्दर ने फिर पूछा।

"अपहरण के दो दिन बाद पिता-पुत्र के शरीर फांसी पर लटके पाये गये। बालों को उखाड़ दिया गया। कुछ अंग जले हुए थे। किसी ने भी डर के मारे इस घटना की पुलिस में रिपोर्ट दर्ज नहीं करायी।"

कुछ देर के लिए घर में सन्नाटा पसर गया। सब चुप हो गए।

राजेन्दर का मन किसी कार्य में नहीं लग सका। उसे घुटन-सी महसूस हो रही थी। बिना किसी कारण दो दिन का बैंक से अवकाश ले रखा था। पर घर में उसका मन नहीं लग सका। वह डल झील की ओर निकल गया। झील के किनारों पर हरे-भरे बगीचे सुन्दर लग रहे थे। कुछ समय वह झील के सौन्दर्य को निहारता रहा। फिर, उदास मन से एक स्थान पर बैठ गया। उसके मन में कई विचार तैर रहे थे। कश्मीर की भूमि पर कुषाण आए, हूण आए और मुगलों ने राज्य किया, पर ऐसी बुरी दशा कभी नहीं रही। छुटपुट व्यवस्थाओं के बाद शांति व्यवस्था कायम हो जाती थी। हिन्दु, मुस्लिम सब मिलजुलकर रहते थे। पर अब क्या हो गया है ? महर्षि कश्यप की भूमि क्यों सुलग रही है? उसके मन में आया कि अब और कुछ सोचा तो वह पागल हो जाएगा।

वह घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे अपने परिचय वाले कई लोग मिले। पर उसने किसी से अधिक समय बात नहीं की। लोगों ने उसे समझाया कि वह अकेला नहीं रहा करे। उनकी बातों से उसे डर भी लगा। फिर अंजलि की कही बात उसे याद आई, "कवि सर्वानंद तो सम्पूर्ण कश्मीर के भले थे। कभी किसी का बुरा नहीं किया किन्तु हत्या के बाद उनकी तरफदारी करने वाले मुसलमानों ने भी थाने में रिपोर्ट दर्ज नहीं करायी।"

उसने अपने घर के पास चार कश्मीरी पंडितों को बात करते देखा। वह उनके पास जाकर खड़ा हो गया। उसे देखते ही एक बोल उठा - "कहो राजेन्दर ! क्या घाटी में रहना अब भी उचित है ? तुम्हारे और प्रेम टपलू के उपदेश किसी का भला नहीं कर सकते। अब घाटी में रहना सम्भव नहीं।"

"लेकिन हमें धैर्य रखना चाहिये।" राजेन्दर बोला।

दूसरे व्यक्ति ने कहा - "कितना धैर्य रखोगे ? कवि सर्वानंद और उनके बेटे की हत्या को दो दिन भी नहीं हुए----और ये प्रो. के.एल. गंजू और उनकी पत्नी की हत्या हो गई। रात में चार सशस्त्र व्यक्ति उन्हें अपने साथ ले गए। उनके शरीर में कई गोलियाँ उतार दी गईं। उसके बाद पति-पत्नी दोनों के शवों को झेलम में बहा दिया।"

राजेन्दर के सामने आसमान चक्कर खाने लगा। उसे लगा, वह अब खड़ा नहीं रह सकता। उसके कदम अब घर की ओर बढ़ने लगे। गंजू दम्पति की हत्या से उसकी आँखें गीली हो गईं। वह भलीभंति जानता है कि सोपोर कृषि महाविद्यालय के इस सम्माननीय प्राध्यापक ने समाज की बहुत सेवा की। घर पहुँचकर बिना भोजन किये वह शीघ्र ही सो गया।

रात में अचानक राजेन्दर की नींद टूटी। वह जोर से चिल्लाने लगा----"झेलम उबल रही है-----डल झील का पानी बर्फ बन गया।"

सहसा अंजलि जाग पड़ी। उसने अपना हाथ राजेन्दर के सिर पर रखा। तब पता चला, उसका बदन ज्वर में तप रहा था। वह निरंतर बोले जा रहा था - "श्रीनगर, अनंतनाग, डोडा----हत्या, लूटपाट---सर्वानंद, गंजू----।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर उसने अंजलि का हाथ पकड़ते हुए कहा - "वादा करो, हम घाटी नहीं छोड़ेंगे।" वह कुछ न बोल सकी। उसने एक नजर अपने बेटे रोहित पर डाली। वह नींद में डूबा हुआ था।

वह कुछ देर ऐसे ही बकता रहा। फिर, उसे गहरी नींद आ गई। अंजलि रात भर उसे बार-बार देखती रही।

सुबह राजैन्दर देर से जागा। अंजलि ने पूछा - "तबियत कैसी है ?" उसने धीरे से कहा - "ठीक हूँ।"

राजेन्दर ने देखा उसका बेटा कागज पर रंगों से कोई चित्र बना रहा है। उसने बेटे से पूछा - "क्या बना रहे हो ?" बेटे ने उत्तर दिया - "डल झील, देखो यह बड़ी सुन्दर है।"

बेटे की बात सुन वह हँस पड़ा। फिर उस चित्र को हाथ में लेकर देखने लगा। उसने चित्र की तारीफ की, जिसे सुनकर रोहित खुश हो गया।

बाहर कुछ शोरगुल सुनाई दिया। राजेन्दर घर से निकला। लोगों से उसने सुना - "प्रेम टपलू की हत्या कर दी। उसका शव सड़क किनारे पड़ा हुआ है। अब पुलिस उसे लेने आयी है।" वह जोर से चीख पड़ा। उसके सबसे प्यारे मित्र को हत्यारों ने छीन लिया।

राजेन्दर भागता हुआ घर आया। उसने अंजलि से कहा - "प्रेम की हत्या हो गई। इसी समय हमें कश्मीर छोड़ना है। सहन करने की एक सीमा होती है। अंजलि अब कुछ नहीं सहा जाता। मुझे नौकरी छूटने की भी चिन्ता नहीं है।"

दोनों सामान बांधने लगे। आवश्यक वस्तुओं के अलावा बहुत कुछ यहीं छोड़ना पड़ा। लकड़ी व धातु की कलाकृतियाँ, पेंटिंग्स, किताबें सब छोड़ दिया।सामान उठाते समय राजेन्दर ने एक दृष्टि अपने घर डाली और तुरंत मुँह फेर लिया।

सब कुछ पीछे हटता जा रहा था। बर्फ से ढँकी पहाड़ियाँ, कलकल करते झरने, चीड़ और देवदार के वृक्ष सब पीछे छूट गए।

ट्रेन दिल्ली की ओर दौड़ी जा रही थी। राजेन्दर ने देखा, कई कश्मीरी पंडित उस डिब्बे में बैठे हैं जो घाटी छोड़कर आए हैं। अंजलि अनमनी सी बैठी थी। वह घाटी छोड़ने के लिए राजेन्दर से बार-बार आग्रह करती पर आज इच्छा पूरी होने पर भी वह खामोश थी।

स्टेशन से उतरते ही रोहित ने पूछा - "हम कहाँ रहेंगे ?"

अंजलि बोली - "बेटा अब हम दिल्ली में रहेंगे।"

रोहित ने दूसरा प्रश्न किया - "हम श्रीनगर कब जाएंगे ?"

पर इस प्रश्न का उत्तर राजेन्दर और अंजलि के पास नहीं था। वे उसका मुँह ताकते रह गए।

*बाबू सिंह की गली, पुराना चुंगी नाका रोड़,*
*गोपाल पुरा, मुरैना (म.प्र.) - ४७६००१*
*मो. ९३२९८८७८५१*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. मीनाक्षी स्वामी

# बगुला बैठा ध्यान में

यूँ तो मैं एक जिम्मेदार पुत्र, पति और पिता हूँ। नौकरी भी पूरे मनोयोग से करता हूँ पर शुरू से ही एक आदत मुझमें रही है। यह बुरी है या अच्छी, इस संबंध में तो देश, काल और परिस्थितियों के अनुसार मनीषियों के भिन्न-भिन्न मत हैं या यूं कहें कि वे भी एकमत नहीं हैं। तब मैं कैसे कह दूँ कि यह आदत अच्छी है या बुरी। आप भी चाहें तो अपनी मानसिकता के अनुसार उस आदत को अच्छी या बुरी कह सकते हैं। मगर इतना तो तय है कि यह आदत विवादास्पद जरूर है।

खैर, जो भी हो, हम इसमें उलझने के बजाए मुद्दे पर आ जाएँ। हाँ, तो मेरी जो विवादास्पद आदत है वह है - स्त्रियों के प्रति विशेष रुझान। जो स्त्री मुझे थोड़ी भी अच्छी लगती है, मैं उससे अवसर के अनुरूप नज़दीकी कायम करने में जरा भी देर नहीं लगाता हूँ। इस मामले में मेरी स्थिति को शायर महोदय ने वर्षों पहले ही लिख दिया था-

"बगुला बैठा ध्यान में प्रात: जल के तीर।
मानो तपसी तप करे मलकर भस्म शरीर।।
मलकर भस्म शरीर तीर जब देखी मछली।
कहे मीर ग्रसि चोंच समूची फौरन निगली।।"

मैं कभी मछली निगल लेता हूँ, तो कभी फिसल भी जाती है।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गटकने में आ जाए तो बहुत ही अच्छा, पर जैसा कि ज्यादातर होता है फ़िसल ही जाती है। मगर इन सिलसिलों से मै ज्यादा विचलित नहीं होता हूँ, अपना प्रयास जारी रखता हूँ और मुझे जिससे भी जितना भी सुख मिलता है बटोर लेता हूँ। अपनी इस चतुराई पर में आत्ममुग्ध हूँ और आनंद विभोर भी।

मगर एक अजीब वाकया पिछले दिनों घट गया। हुआ यूँ कि जब मैं पिछले दिनों टूर पर चैन्नई गया, तो मुझे तमिलनाडु एक्सप्रेस से, चैन्नई से भोपाल के लिए आना था। ट्रेन निकलने का समय लगभग दस बजे का था। अपनी आदतानुसार मैं नौ बजे ही पहुँच गया। गाड़ी लग चुकी थी। सामान अपनी सीट से बाँध, निश्चिंत हो, चैन्नई सेंट्रल स्टेशन पर दूध पीकर आने का कार्यक्रम निपटाते हुए अच्छी - खासी चहलकदमी कर चुका था और सोने की मन:स्थिति में था। स्लीपर में मिडिल बर्थ पर मेरा रिज़र्वेशन था। नीचे की बर्थ खाली थी, सो मैं उस पर सो गया। रात जाने कब मुझे महसूस हुआ की कोई जोर से मेरा पैर हिला रहा है। मै गहरी नींद में था, चौंक कर उठ बैठा। एक युवक मेरा पैर पकड़, हिलाकर मुझे उठा रहा था। यह बर्थ उसकी पत्नी की थी, साथ में छोटा बच्चा भी था। मैं फुर्ती से उठा। मैंने अपनी मिडिल बर्थ पर देखा, उस पर कोई और सोया था। मैंने भी ठीक वैसे ही उसका पैर हिलाया जैसे कि मेरा पैर हिलाया गया था। वह भी मेरी तरह ही फुर्ती से उठा और सबसे ऊपर की बर्थ पर चला गया। सबसे नीचे वाली सीट पर वह युवती याने उस युवक की पत्नी अपने बच्चे के साथ सो गयी और मै अपनी बर्थ पर। यह विजयवाड़ा था।

सुबह हुई तो अपनी मिडिल बर्थ बन्द करके मैं सामने की निचली सीट पर जा बैठा। वह युवती मेरे सामने वाली सीट पर अपनी बच्ची के साथ बैठी थी। उसे देखते ही मेरे भीतर का बगुला जाग गया और फड़फड़ाने लगा। वह युवती बड़ी शालीन और सौम्य थी, अपनी बच्ची में मगन। मगर मैं ऐसा थोड़े ही था। मैं तो उसकी हर गतिविधि पर लगातार नजर रखे था। यह बात और है कि उसने मेरी तरफ आंख उठाकार भी नहीं देखा था। उसका पति शायद उसे बिठाने भर को आया था क्योंकि इतनी देर से एक बार भी अभी तक दिखाई नहीं दिया था। तब तो पह युवती अकेली, अपनी बच्ची के साथ...! क्या पता उसका पति दूसरे डिब्बे में हो! मन में दूसरा विचार आया, पर यदि होता तो अब तक एकबार तो आकर दोनों की खोज खबर जरूर लेता। मेरे भीतर का बगुला थोड़ा असमंजस में था पर जल्दी ही वह असमंजस, धैर्य में बदल गया क्योंकि वह स्थिति थोड़ी बहुत देर में तो स्पष्ट होनी ही थी। रुकते और देखते हुए थोड़ा ही समय बीता, उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने और बातचीत का सिलसिला शुरू करने की गरज से मैं पूछ बैठा - "आप कहाँ से बैठी हैं?"

"विजयवाड़ा"

"दिल्ली जा रही हैं?"

"जी नहीं।"

उससे नपा तुला उत्तर पा पल भर को निराशा ने घेरा पर मैंने तुरंत उस पर काबू पा अगले प्रश्न का जाल फेंका - "फिर कहाँ जा रहीं हैं?"

"भोपाल"

कहकर वह डिब्बे में घुम रहे चायवाले को बुलाने लगी। चायवाले की अपनी ही, तेज गुहार में उस व्यक्ति की धीमी आवाज दब गई और वह आगे बढ़ गया। तब मैंने चायवाले को अपनी तेज आवाज में बुलाया। मगर उसने अब भी नहीं सुना, सुनता भी कैसे ? वह तो हांक लगाने में ही तन्मय था। तब मैं फुर्ती से उठा और दो-तीन केबिन आगे पहुँच चुके चायवाले को बुला लाया! पहले तो मैंने सोचा कि दो चाय का बोलूँ क्योंकि चार तो मैं भी पीना चाहता था। मगर तभी ख्याल आया कि एक चाय का बोलूँ तो उस युवती पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा कि मैंने केवल उसी के लिए चायवाले को बुलाने की इतनी मशक्कत की। सो मैंने एक ही कप का बोला। युवती ने उससे चाय ली और मुझे


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अवसर दिये बिना तुरंत पैसे भी दे दिये। फिर चुपचाप चाय पीने लगी। और तो और उसने एक बार भी मुझसे चाय के लिए नहीं पूछा।

चलो कोई बात नहीं। यदि वह स्ट्रिक्ट है तो चुनौती अच्छी रहेगी। फिर भी इसलिये भी खुश था कि वह अपनी बच्ची के साथ अकेली है, यह पक्का हो चुका था। मेरे भीतर का बगुला अब कुलांचे मारने लगा। अब मैंने बच्ची के बहाने उससे बातें करने की कोशिश की। पर बच्ची भी अपनी माँ में मगन थी, माँ के सिवाय कहीं देखती तक नहीं थी। पर मैं भी बिल्कुल ताक लगाये बैठा था और मौका मिल ही गया जो मैं चूका नहीं। बच्ची खिड़की से बाहर कटोरी फेंकने को हुई कि मैंने तुरंत उसे पकड़कर रोका और कहा - "बेटा, ऐसा नहीं करते।" फिर मैंने बच्ची को अपनी गोद में लेने की कोशिश की, मगर वह रोने लगी और अपनी मां से चिपक गई। जब बच्ची ने मेरी तरफ नाराजगी भरी निगाहों से देखा तो मैं समझ गया कि यह अवसर व्यर्थ गया। मैंने युवती की तरफ देखा, शायद अब वह कोई बात करे मगर वह अपनी सहज सौम्यता से बात खतम कर चुकी थी।

पूरा दिन ऐसे ही बीत गया। मेरे भीतर बैठा बगुला भीतर ही भीतर बैचेन हुआ जा रहा था कि गाड़ी लेट होने की हलचल ने मुझे पुनः अवसर दिया। मैंने कई बार घड़ी देखी और साथ के अन्य यात्रियों से गाड़ी के लेट हो जाने की चर्चा कुछ ज्यादा ही बढ़ा-चढ़ाकर की। एक यात्री कह रहा था कि कवर हो जाएगा, पर मैंने पूरे विश्वास के साथ कहा "सुबह दिल्ली तक भले ही कवर हो जाए पर भोपाल तो देर रात तक ही पहुँचेगी।"

फिर मैंने कनखियों से देखा और पाया कि वह मेरी बात से बेखबर है। सचमुच या जानबूझकर बन रही है, मैं समझ नहीं पाया। तब मैंने स्थिति को सायकोलॉजीकल ट्रीटमेंट के तौर पर भयावह बनाना शुरू किया - "लेट नाईट में तो बसें वगैरह भी बंद हो जाएंगी..... अकेले टेक्सी से ही जाना पड़ेगा, लेने आने वाले भी......।" कहते हुए मैं चुप हो फिर उसके मनोभावों का जायजा लेने लग। वह चुप थी शायद कोई लेने आने वाला हो भाई या पिताजी.....। पर फिर भी मुझे लगा कि रात बढ़नेके साथ उसकी चिन्ता का साया भी बढ़ता जा रहा है। वह विचलित होती जा रही थी। मैं अधमुंदी आँखों से, उसे देखते हुए शरारती कल्पनाओं में खोया, अपनी योजना मजबूत कर रहा था। साथ ही पुरानी घटनाओं की याद से वर्तमान के इस तार को जोड़ने का प्रयास कर रहा था। फार्मूला नम्बर चौपन, जो मैंने खण्डवा से अकोला जाते समय बस में सुनीता के साथ सफलतापूर्वक आजमाया था, वही यहाँ भी फिट हो सकता है। यह सोच मैंने अपने पैर सामने की उस सीटपर रख दिये, जहाँ वह सीट पर पैर फैलाए अपनी बच्ची के साथ बैठी थी और इस फार्मूले की सफलता में खो गया।

तभी अचानक उसका पैर मेरे पैर से लगा। बगुले भाव से बंद, अधमुंदी आँखों से मैंने देखा, उसने पैर पूरी तरह पीछे किये और चुपचाप हाथ बढ़ाकर मेरे पैरों को छुआ फिर माथे से लगाया, जैसे क्षमायाचना कर रही हो।

मैं हैरान था। उस संस्कारित स्त्री के शालीन आचरण से, मैं भीतर ही भीतर आंदोलित हो चला। भीतर जमी शरारतों की शिला, ग्लानि के ताप से बर्फ सी पिघलने लगी। तभी तेज हवा का झोंका आया और मेरे भीतर का बगुला उड़ गया। बगुले का उड़ जाना अच्छा कहूँ या बुरा, यह लोकद ष्टि से तो अभी भी विवादास्पद है। मगर यह तय है कि उसके बाद मेरे भीतर बगुला नहीं रहा। उसकी जगह यह एहसास आ गया कि नारी और भी कुछ है, स्त्री के अलावा।

*सी.एच.७८, एच.आई.जी., दीनदयालनगर, सुखलिया, इंदौर - ४५२०१० (म.प्र.)*



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नियति सप्रे

# मुक्ति

अमूमन जैसे सब घरों में होता है वैसा ही मेरे घर में होता था। मसलन पिताजी बात-बात पर माँ को बुरा-भला कहते रहते थे, माँ गलती न होने पर भी चुपचाप सुनती रहती थी। मतलब मेरा परिवार भी सामान्य था लेकिन उसमें एक असामान्य घटना घट गई। उसी वजह से तो मैं आपको यह कहानी सुना पा रही हूँ। वह भी उसी दिन जब मेरी माँ का देहान्त हुआ है। आपको ये बात शायद उचित न लगे पर आज मुझे इतना इत्मीनान, इतनी शांति लग रही है कि मैं आपको कुछ कह पा रही हूँ। वर्ना अभी तक तो मैं बौराई सी घुमती थी।

माँ की मृ तदेह मेरे सामने थी। बाबूजी बिलख-बिलखकर रो रहेथे। बाबूजी का पूरा अस्तित्व केवल आधे घंटे में भर-भराकर बिखर गया था। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि इतने कड़क मिजाज बाबूजी का आधार क्या ये जाहिल, गंवार, असहाय, निर्बल माँ थी ? आधे घंटे पहले माँ ने अपने कमजोर हाथ में मेरा हाथ लेकर दबानेकी कोशिश की थी। लेकिन उनकी कृषकाया में उतना भी जोर नहीं था। हमेशा बोलने वाली आँखें भी निस्तेज थीं। बाबूजी तो माँ के गुजर जाने के बाद से बदहवास से हो गए थे।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैंने ही समझदारी दिखाते हुए बुआजी को फोन कर दिया था। उनके आते ही दोनों बहन-भाई गले मिलकर खूब रोए। फिर बाबूजी ने बुआजी को कुछ कहा। मैं समझ गई कि मेरा न रोना उन लोगों के लिए चिन्ता का विषय था। पर हकीकत आपको बताई ही कि आज सदियों बाद मेरा मन स्थिर हुआ था। मैं बुआजी की गोद में सिर रखकर लेट गई। वे सिर पर हाथ फेरते हुए समझाने की कोशिश करती रहीं कि मेरी माँ अब इस दुनिया में नहीं है ....पर उनका करुण निवेदन भी मेरी नींद नहीं रोक पाया और मैं आज तक जिस नींद को तरस जाती थी वैसी गहरी नींद में डूब गई। फोन की घंटी से मेरी नींद खुली। फोन भैया का था। रात के समय स्टेशन पर उन्हें कोई वाहन नहीं मिल रहा था। "मैं अभी स्कूटर लेकर आता हूँ।" बाबूजी के शब्द मेरे कानों में पड़े और मैं घबराकर स्कूटर की चाबी देखने के लिए उठ गई। माँ के ठंडे हाथ से टकराने पर मैं वास्तविक स्थिति में आ गई "अरे, अब तो माँ नहीं है। चाबी जगह पर हो न हो, स्कूटर में पेट्रोल खतम हो..... मुझे कुछ भी फरक नहीं पड़ेगा। अलबत्ता पहले तो बाबूजी ने कुछ मांगा तो मैं घबरा जाती थी। यदि वह चीज जगह पर न मिली तो, घर में न हुई तो..... ऐसे अनेक 'तो' मुझे घेर लेते थे और मुझे लगता था कि अब बाबूजी माँ पर चिल्लाएंगे, माँ बिचारी सुनती रहेगी। इस तरह बिना माँ के कहे मैं उसकी चौकीदारिन बन गई थी। यह जिम्मेदारी मैंने एक घटना के बाद से ओढ़ ली थी। उस वाकए के वक्त मैं इतनी छोटी थी कि उस अकेली घटना के अलावा उस दरमियान की अन्य कोई भी बात मुझे याद नहीं। लेकिन उस बात ने मेरे बालमन पर अमिट छाप छोड़ दी और मेरे बचपन को अच्छी तरह से जकड़ लिया। उस दिन माँ अपेक्षाकृत खुश थी। उसका काम चल रहा था। मैं वहीं बैठी थी। इतने में बाबूजी किचन में आए और बोले - "मेरे कुछ घनिष्ट दोस्त आए हैं। जरा तमीज से पेश आना। जल्दी से नाश्ता भी बनाना।"

माँ ने मौन स्वीकृति देते हुए नाश्ता बनाना शुरू कर दिया। अलमारी से बहुत सुंदर-सुंदर प्लेटें निकालीं। उनको बहुत करीने से सजाते हुए मुझे बताने लगी "ये क्राकरी तेरे बाबूजी ने विदेश से मंगवाई है।" इतने में बाबूजी माँ के पीछे खड़े होकर खीजते हुए बोले "कितनी देर हो गई, क्या कर रही हो जब से...?" माँ एकदम से दचक गई। माँ का घबराना, प्लेट का फिसलना और कहीं विस्फोट हुआ हो इस तरह बाबूजी का गरजना। "तुम्हें जरा सी भी तमीज नहीं है। क्यों हाथ लगाती हो इन सब चीजों को। इतनी मंहगी क्राकरी बर्बाद कर दी। पता नहीं कब अकल आएगी, गंवार कहीं की...." बाकी का मुझे सुनाई नहीं दे रहा था, सुनाई दे रहा था तो सिर्फ माँ का दयनीय, कातर स्वर "गलती हो गई।"

"गलती होती कब नहीं है तुमसे। अब खड़ी-खड़ी मुँह क्या देख रही हों, दो नाश्ता जल्दी से, वे सब इंतजार कर रहे हैं।"

माँ ने धीरे से बुदबुदाते हुए अपने आत्म-सम्मान की रक्षार्थ कहा, "धीरे बोलिये वे लोग सुन लेंगे।" आश के विपरीत माँ के सम्मान की धज्जियाँ उड़ाते हुए बाबूजी का पारा और चढ़ गया, "अब तुम मुझे सिखओगी मैंने कैसे बोलना चाहिये। वे सब लोग शादी में आए थे। देख चुके हैं कि मैंने कितनी बड़ी मूर्खता की है तुमसे शादी करके...." बाबूजी चले गए। माँ स्तब्ध खड़ी थी। मैं ओटले पर से उतरी और माँ के पैरों से लिपट गई। माँ ने मुझे गोद में लेकर भींच लिया और अपने आँसुओं से मेरा छोटा सा कंधा गीला कर दिया। मेरे बचपन को यह बहुत बड़ा आघात था। यह सब बहुत क्षणिक था पर परिणाम दूरगामी थे। माँ ने


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी तरफ देखा। बाल-बुद्धि से इतना समझ सकी कि उन आँखों में कुछ निवेदन है। बस मेरे नन्हें से दिल ने माँ को संभलने की चुनौती स्वीकार कर ली और उस दिन से मैं माँ की "केयर टेकर", चौकीदार, सुरक्षाकर्मी.... सब कुछ बन गई। मैंने माँ का पीछा ही शुरू कर दिया। बाबूजी माँ को बुलाते, मैं कहीं भी रहती दौड़कर वहाँ पहुँच जाती। मुझे लगता कि बाबूजी ने माँ को डाँटा तो मैं माँ से लिपट जाऊँगी। ये बात मेरे मन में इतनी समाती गई कि मैं स्कूल में भी बैचेन रहने लगी। दिन भर लगता रहता कि कब छुट्टी हो और माँ के पास पहुँच जाऊँ। इस वजह से कोई सहेली भी नहीं बन पाई। स्कूल के किसी भी प्रोग्राम में भाग नहीं लिया। कभी पिकनिक नहीं गई। एक अस्वस्थता, घबराहट, बोझ दिल पर बना रहता। दीदी, भैया मुझे 'माँ की पूँछ' कहकर चिढ़ाते पर मैं जानती थी कि मैं माँ की आधरशिला हूँ। याददाश्त जब से साथ दे रही है। याद नहीं है कि पूरी रात गहरी नींद से सोई हूँ। दीदी तो हमेशा कहती "इसे मेरे साथ मत सुलाओ सारी रात चक्कर लगाती रहती है।"

सच बात है। मैं माँ-बाबू जी के कमरे के बाहर खड़ी रहती। जब तसल्ली हो जाती कि माँ सो रही है मैं वापस चली जाती। कभी बाबूजी की छुट्टी होती तो मैं इस ख्याल से घबरा जाती कि अब माँ बाबूजी के साथ दिनभर अकेली रहेगी। फिर मैं स्कूल न जाने के अलग-अलग बहाने बनाती। कभी मेरी चाल कामयाब हो जाती। कभी-कभी रोते-रोते स्कूल जाना पड़ता। भैया दीदी को लगता कि अकेले में बाबूजी से लाड़ करवाना है इसलिए मैं घर रहना चाहती हूँ। ये बातें सुनकर मुझे मन ही मन हंसी आती। वैसे दीदी की बात ठीक थी। बाबूजी मुझे बहुत लाड़ करते थे पर माँ के ऊपर उनका चीखना उन्हें कभी मेरे करीब नहीं ला पाया।

भैया माँ के हाथों को माथे से लगाकर फूट-फूटकर रो रहे थे। मुझे समझ नहीं आया कि माँ के निर्जीव होते ही भैया को ये कैसे सूझ गया कि माँ के हाथों को थामना है। उसका माथा सहलाना है। जीवित माँ को यह सुकून कभी नहीं मिला। भैया माँ से केवल एक शब्द से जुड़े थे। जिसे माँ कहते हैं। पर उस श्ब्द को धारण करने वाले शरीर से उनका कोई वास्ता नहीं था। तभी तो माँ की भावनाओं से उनका कभी सारोकार नहीं रहा। उस समय एकाध बार भी भैया माँ का हाथ सहला देते तो शायद भैया के आज विलाप को न्याय मिल जाता। दीदी शायद उस श्ब्द के अधिकार से जुड़ी थी। बाबूजी की असहायता अब देखने लायक हो गई थी। अवसाद से घिरी माँ से उनको ताकत मिलती थी। जानकर बहुत अचरज हो रहा था। पर मैं माँ से कैसे जुड़ी थी। क्या उस श्ब्द से या उस शरीर से या इन सबसे परे....।

भैया की ऐसी विवशता दीदी की शादी.... इन सब बातों ने माँ को मेरे और भी नजदीक ला दिया था। पहरेदारी ने अब भावनात्मक घेराव भी शुरू कर दिया था। माँ सिर्फ इतना चाहती थी कि उसका स्वाभिमान और इज्जत बरकरार रहे। लेकिन इन दोनों ही बातों के लिए बाबूजी का रुख आक्रमक ही था। वे हर समय माँ को नीचा दिखाते रहते थे। मैं जरूर माँ के स्वाभिमान को बचाये रखने के लिए अपने अधकचरे प्रयास करती रहती। माँ से उसके बचपन की बातें करती। माँ नानाजी की बहुत लाड़ली थी। लेकिन यह सुख उसे ज्यादा नहीं मिल पाया। नाना-नानी एक दुर्घटना में मारे गए। वह दूसरों के सहारे पलती रही। सभी रिश्तेदारों के रूखे व्यवहार ने उसके सारे सृ जनात्मक गुणों को रौंद डाला। माँ को विश्वास था कि अच्छी जमीन मिलने पर उसके अंदर के बीज अंकुरित होंगे। लेकिन शदी के बाद उसकी आशाओं पर


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुषारापात हो गया। वह सिमटती चली गई। सिर्फ मेरे दरबार में ही वह अपने गुणों को बखान करके प्रफुल्लित हो जाती थी। बाकी समय तो वह आत्मविश्वासविहीन मशीन बन गई थी।

अगले दिन दीदी भी आ गई। भैया दीदी से मिलकर खूब रोए। आने-जाने वले सभी लोगों को मेरा व्यवहार अचरज में डाल रहा था। दीदी भी इस बात से दुविधा में थी कि हर वक्त रात को इधर-उधर भटकती रहने वाली मैं अब बिना करवट बदले सुबह तक कैसे सोती रहती हूँ। मेरे अंदर का तनाव, चिन्ता, घबराहट का खतम होना मैं स्वयं ही अनुभव कर सकती थी। गुब्बारे से हवा निकलने पर वह जैसा हो जाता है। मैं बिलकुल वैसी ही हो गई थी।

तेरहवां होने के बाद मैंने कहा - "बाबूजी मैं दिल्ली जाकर आगे की पढ़ाई करना चाहती हूँ।"

बाबूजी भौचक्के रह गए। भैया बोले "कैसी बातें कर रही हो? अभी तक हम सब कह रहे थे पर तुम्हें नहीं जाना था।"

"अब मुझे जाना है।"

"उस कोर्स की तो डेट भी निकल गई है।" बाबूजी ने कहा।

"मैंने लेट फीस का फार्म भर दिया है।"

"पर अब ऐसा क्या हो गया। ऐसी भी नहीं कि तुम्हारी माँ की इच्छा थी जो तुम पूरी करना चाहती हो। वह भी तुम्हें मना ही कह रही थी।"

"मुझे जाना है।" कहकर मैं कमरे में आ गई। मैं क्या बताती कि मेरी मर्जी तो थी पर माँ को नहीं छोड़ सकती थी और माँ मेरी इच्छा नहीं है, ऐसा जानकर मेरा साथ दे रही थी। हम दोनों ही एक-दूसरे का मन संभाल रहे थे।

जाते वक्त सबके पैर छुए। बाबूजी के हाथों का कम्पन महसूस हुआ। एक क्षण मेरा मन डगमगा गया। पर.... पूरे घर पर एक निगाह डालकर फुर्ती से ऑटो में बैठ गई। माँ उस घर के सारे सामान, धूल, जाले, छिपकली, क्राकरी.... सबसे मुक्त हो गई और मैं पहरेदारी से। मुझे लगा अब उस घर में दो निरीह आँखें कभी मेरा इंतजार करती नहीं मिलेंगी। माँ का चला जाना मुझे क्यों विचलित नहीं कर पा रहा है, क्यों रुला नहीं रहा। क्या मैं माँ को दूर गया महसूस नहीं कर पा रही हूँ। हाँ शायद यही सच है। अब उस मुक्त माँ को मैंने सबसे बचाकर अपने सीने में कैद कर लिया है।

९७-९८, श्रीनगर मेन,
१०४, अल्का अपार्टमेंट, इन्दौर
मो. ९४२५० ८२३७२

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी

# अंतिम निर्णय

कॉलेज से लौटी थी। लगभग बारह बज रहे थे। आँगन में जमा भीड़ देखकर घबरा उठी। अनहोनी की आशंका से लगभग दौड़कर आँगन में जा पहुँची। एक पल को लगा कि कहीं बाबा तो नहीं...? वे काफी समय से बीमार चल रहे थे। पर आगे बढ़कर देखा, वे सिर झुकाए कुर्सी पर बैठे हैं और उनके सामने खाट पर एक अपरिचित व्यक्ति साधु के वेश में चुपचाप ताकता बैठा है। मै हतप्रभ रह गई। कौन हो सकता है यह व्यक्ति? लम्बी दाढ़ी, गेरुआ वस्त्र, उन्नत ललाट, बड़ी-बड़ी आँखें, जिनमें शून्यता का भाव। किससे पूछूँ, कौन है, हमारे घर में क्या कर रहा है? माँ भी उस व्यक्ति के पास आँखों में आँसू लिए बैठी थी, दौड़ कर अंदर गई, बड़ी भाभी से पूछती हूँ। अंदर दूसरे ही सच से मेरा साक्षात्कार हुआ। दरवाजे की ओट लिये वे स्तब्ध खड़ी थीं। उनकी आँखों से अश्रुओं की धारा बह रही थी, जिसे वे आँचल से पोछती जा रहीं थी। उनके चेहरे पर छाया बेचारगी का भाव पहले कभी नहीं देखा था। अब धीरे-धीरे मुझे माजरा समझ में आने लगा था। अच्छा तो यह हमारे बड़े भई साहब हैं जो बीस बरस पहले अपने तीन बच्चों, पत्नी को बेसहारा छोड़कर गायब हो गए थे। उस वक्त क्या हुआ होगा, मैं


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं जानती, जानने लायक उम्र भी नहीं होगी। बाद में उनके विषय में कई कहानियाँ सुनने में आई थीं। कोई कहता, किसी जादूगरनी ने भेड़ा बनाकर रख लिया है। कोई कहता साधु की संगत में पड़ गए होंगे, कोई कहता गलत हाथों में पड़ गए होंगे। जितने मुँह उतनी बातें थीं। पर भाभी बतलाती थीं काफी खोजबीन की गई पर सब व्यर्थ। अंत में सब दिल पर पत्थर रख कर बैठ गए। उनके पलायन का कारण किसी को पता नहीं था। दबे स्वरों में भाभी को कारण बताया जाता रहा। पर पिताजी के डर से सामने कहने का साहस किसी में नहीं था। पानी में फेंके पत्थर की तरह कुछ दिन हलचल मचती रही। फिर वक्त के साथ सब कुछ शांत हो गया। बच्चे बड़े होते गए, भाभी ने इसे अपना प्रारब्ध स्वीकार कर लिया। अपने को घर के कामों में झोंक दिया। एक तरह से देखा जाए तो अपने दु:ख का विकल्प उन्होंने व्यस्तता में ढूँढ़ लिया था।

भाई को लेकर मेरे मन में भी एक सहज उत्सुकता थी पर घर में उनके विषय में काई बात नहीं करता था। मन की जिज्ञासा अंत में वक्त की शिला के नीचे दब गई। मैं अपनी पढ़ाई, केरियर को लेकर व्यस्त हो गई। जिन्दगी अपनी रफ्तार से चल रही थी कि अचानक यह दृ श्य परिवर्तन? माँ उनके साथ खटोले पर बैठीं उनके सिर पर हाथ फेरती नि:शब्द रो रही थीं। हिचकियों से उनका पूरा शरीर हिल रहा था। सम्पूर्ण वातावरण शोक में डूबा प्रतीत हो रहा था। आसपास सिमट आई भीड़ के अस्फुट स्वर मेरे कानों में गूँज रहे थे। कोई रोग पाल बैठे हैं शायद तभी घर और मेहरिया की याद आई है, दूसरा स्वर था - बीस साल से बिचारी न विधवा में रही न सधवा में, अब कौनसा मुँह लेकर सामने जाएंगे। तभी कोई बोल उठा - बच्चे अब बड़े हो गए हैं, बाप का दुलार आज तक जाना नहीं, अब इन्हें कौन पूछेगा? प्रतिरोध में तुरंत एक स्वर उभरा - अरे नहीं, घर के इकलौते पूत हैं, ममता थोड़े ही मुँह फेर लेगी। देख नहीं रहे अम्मा कैसे सिर पर हाथ फेर रही हैं। आशंकाओं का दौर जारी था। अचानक सब पर विराम लगाते बाबा उठ खड़े हुए। हाथ जोड़कर बोले - यह हमारे घर का मामला है, पंचायत का नहीं कृपा करके आप लोग अपने-अपने घर को जाएं। बाबा की बात सुनकर कुछ क्रोधित, कुछ उपेक्षा का भाव और कुछ लोग तमाशे से वंचित कर देने का दु:ख लिये एक-एक कर चलते बने। गलती उनकी भी नहीं थी। मानव का स्वभाव है दूसरों का तमाशा देखना भला किसे पसंद नहीं होगा। बाबा ने मुझे दरवाजा बंद करने का इशारा किया। मैंने तुरंत दौड़कर दरवाजा बंद कर दिया। इस अचानक उत्पन्न हो गई परिस्थिति ने मुझे भी विचलित कर दिया था। उनके बच्चे बड़े हो चुके हैं। बड़ा बेटा भोपाल से बी.ई. कर रहा है और छोटा होटल मैनेजमेंट का कोर्स दिल्ली से कर रहा है। सबसे छोटी बेटी रेखा ने बस कॉलेज ज्वाइन ही किया है। वह भी हतप्रभ होकर यह तमाशा देख रही थी। सच में हम लोगों के लिए तो तमाशा ही था क्योंकि बीस साल पहले जो कुछ हुआ होगा उसकी तो कुछ भी याद नहीं थी। बस कल्पनाही की जा सकती थी। मैं इन्हीं विचारों में डूबी थी कि बाबा का गंभीर स्वर गूँजा - बहू। इधर आओ। भाभी मुँह पर पर्दा किये चुपचाप बाबा के सामने जा खड़ी हुई। उनका शरीर आवेग से काँप रहा था। पता नहीं मन में उनके क्या चल रहा था? आज अचानक एक तूफान उनके जीवन में आ खड़ा हुआ था। बाबा ने भाभी को बैठने का इशारा किया। वे आँगन में चुपचाप सिर झुका कर बैठ गईं। अब सिर्फ घर के सदस्य उपस्थित थे। माँ, बाबा, चाचा-चाची, भाभी-भइया, छोटी बेटी रेखा और मैं। बाबा की धीर गंभीर आवाज गूँजी - हाँ तो देबू, अब बीस साल बाद यहाँ क्या लेने आए हो ? जिस दिन तुम यह घर छोड़कर गए, पलटकर नहीं देखा। तुम्हारे छोटे-छोटे बच्चे जिनकी जिम्मेदारी तुम हमारे कंधों पर डाल गए, हमने बखूबी निभाई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इतने अशक्त भी हम नहीं थे कि अपने पोते-पोतियों को हवा के थपेड़ों के साथ बह जाने देते। हमारे बूढ़े कंधों में अब भी ताकत है बेटा। माँ-बाप के तो तुम गुनहगार हो ही, बेटा। चलो, मान लो हम तुम्हें एक बार माफ कर भी दें तो क्या ? असली गुनहगार तो तुम बहुरिया के हो बेटा। क्या वह तुम्हें माफ कर देगी? तुमको कुछ हो जाता तो पहाड़ जैसी रो-धोकर बच्चों के सहारे काट लेती। पर तुम तो उसे अधमरा कर के छोड़ गए। अचानक बातों का सूत्र माँ ने अपने हाथों में थाम लिया - हाँ बेटा बतलाओ तो तुम इतने निर्मोही कैसे हो गए? न तुमने माँ के आँसुओं की परवाह करी न बहुरिया के। कभी एक चिट्ठी तो डाली होती, कैसे-कैसे जतन हमने नहीं किये, कितनी भाग-दौड़ कितने गण्डा-ताबीज? जो जहाँ जैसे बताता, दौड़ पड़ते। पर सब व्यर्थ। बेटा सबसे ज्यादा लांछन हमारी बहुरिया पर लगे। अब कहने वाले की जबान तो पकड़ी न जाये। लोग दबी जबान में बहुरिया को कुलक्षणी, अपशगुनी, न जाने क्या-क्या कहते रहे, पर मजाल है सामने कोई एक शब्द कह जाये। उसी समय मुँह न नोच लेते उसका। आधी रात को उठकर बैठ जाती। पत्ते की तरह काँपती, अम्मा देखो साँकल खटक रही है, कहीं आकर न लौट जाएं। हम कैसे-कैसे धीरज बँधाते थे। बेटा हम ही जानते थे, मन ही मन रोते थे। कैसे कहते बेटा - रास्ता नहीं भूला है। जान- बूझकर सारी मोह-ममता त्याग कर गया है। वापस आना होता तो जाता ही क्यों? बाकी के शब्द अपना अर्थ खोकर हिचकियों में डूब गए थे। द् श्य जैसे फ्रीज हो गया था। भैया हाथ जोड़े नि:शब्द रो रहे थे। अपने समस्त गुनाहों की माफी चाह रहे थे। अचानक उन्होंने अम्मा के पैर पकड़ लिये। पहली बार मैंने उनकी आवाज सुनी-अम्मा हमने जो अपराध किया है वह क्षमा के योग्य तो नहीं है पर तुम समझ लो कि सुबह का भूला शाम को वापस लौट आया है। माँ की ममता उन्हें अपने आँचल में समेटने को आतुर हो उठी। अचानक बाबा उठ खड़े हुए।

"नहीं देबू, माफी हमसे या अम्मा से नहीं, अपनी बहुरिया से माँगो, इन बीस वर्षों में तिल-तिलकर जो जलती रही है, उसे हम पूरा अधिकार देते हैं। वही आज तय करेगी तुम्हारा अपराध क्षमा-योग्य है या नहीं? और एक बात, बहू का निर्णय हम सबको मान्य होगा। उस पर किसी किस्म का दबाव नहीं होगा।" माँ ने बाबा को बीच में रोककर कुछ कहना चाहा पर बाबा ने हाथ के इशारे से उन्हे बरज दिया। मेरी निगाह में बाबा की इज्जत कई गुना और अधिक बढ़ गई। भाभी घूँघट की ओट किये वैसे ही निश्चल बैठी थीं। बीच-बीच में उनका हाथ आँसू पोंछने के लिए अवश्य उठता था। मेरी तरह शायद सब यही सोच रहे थे कि आँसुओं के साथ भाभी का क्रोध भी बह जाएगा। एक आम पतिव्रता नारी की तरह अचानक घर लौट आए पति को वे क्षमा कर देंगी। जीवन की गोधुलि में ही सही पति वापस लौट आया है जिसके सानिध्य को वे बीस बरस से तरस रहीं थी। कितनी रातें उन्होंने रोकर काटी थीं, कितनी रातों जागकर आत्ममंथन किया था, पर कहीं भी अपना कसूर नहीं ढूँढ पाई थीं। बच्चों को छाती से लगाकर सारे दु:ख भूलने का प्रयास करती थीं। आज वह सुख अचानक उनकी झोली में आ गिरा है। सोच यही रहे थे कि सुख के भाव से उनका चेहरा दिपदिपाने लगेगा और नाटक का सुखान्त हो जाएगा। हाँ, देखा जाए तो यह प्रहसन ही तो था, जिसका क्लाइमेक्स बाकी था। सभी परदा गिरने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

भाभी ने घूँघट अचानक पलट दिया, तनकर वे भइया के साने खड़ी हो गईं - पहचानते हो मुझे? यदि भीड़ में कहीं दिख जाती तो पहचान पाते। आज से बीस बरस पहले मेरा रंग-रूप छोड़कर गए थे। देखो मेरे ये सफेद बाल, गड्ढों में धंसी आँखें, लावण्यहीन निस्तेज चेहरा, मेरे वे



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनहरे सपने जो तुमने धूल में मिला दिये, क्या तुम मुझे लौटा सकते हो ? यदि हाँ तो मैं तुम्हें क्षमा-योग्य समझती हूँ, अन्यथा मेरी इस बची हुई जिन्दगी में तुम्हारा कोई स्थान नहीं है। बाबा ने मुझे अधिकार दिया है, उसी अधिकार से कह रही हूँ, अभी इसी वक्त हमारी जिन्दगी से हमेशा के लिए चले जाओ और फिर कभी पलटकर मत देखना। मेरा पूरा परिवार मेरे साथ है, अब मुझे तुम्हारे साथ की कोई जरूरत नहीं है। जब जरूरत थी, बच्चे छोटे-छोटे थे, तुम्हारा सहारा चाहिये था, तब तुम कायरों की तरह मुँह छिपाकर भाग गए थे। इन बीस वर्षों में जानते हो रात-रात भर अपना अपराध खोजती थी। मैंने अपने जानकर तुम्हारे प्रति कोई अपराध नहीं किया था, फिर किस बात की सजा मुझे मिली? दुनिया की नजरों में अपने लिये बेचारगी का भाव देखती तो मेरा सर्वांग जल उठता था। मेरे आस-पास प्रश्नों की बाड़ उग आई थी। सब तुम्हारे पलायन का कारण जानना चाहते थे जो मैं खुद ही नहीं जानती थी दूसरों को क्या बतलाती। माँ ने हस्तक्षेप करने की कोशिश भी की पर भाभी ने हाथ के इशारे से उन्हे बरज दिया। मुझे भी भाभी के इस रूप को देखकर आश्चर्य हो रहा था। ऐसा लग रहा था, किसी और काया ने उनके अन्दर प्रवेश कर लिया है। इतनी तल्खी उनके स्वभाव का हिस्सा नहीं थी। भाभी कहे जा रही थीं - तुमने क्या सोचा, तुम गौतम बुद्ध बनकर आओगे और मैं तुम्हारे भिक्षा-पात्र में क्षमा-दान डाल दूँगी, पर मैं यशोधरा नहीं हूँ। सुना तुमने, आज मैं अपनी जिन्दगी से सदा के लिए तुम्हें निष्कासित करती हूँ। आज से मैं विधवा वेश धारण करूँगी। भाभी के चिल्लाने से लग रहा था जैसे उन्हें हिस्टीरिया का दौरा पड़ गया हो। उन्हें न परिस्थिति का ध्यान था, न अवसर का। आज पहली बार उन्होंने बाबा के सामने घूँघट पलटा था। माँ क्रोधित मुद्रा में भाभी को देख रहीं थीं, उन्हें ऐसी उम्मीद भाभी से बिल्कुल नहीं थी। होती भी कैसे, भाभी एक संस्कारवान परिवार से थीं पर बीस वर्षों से जो वह जिल्लत सह रहीं थी आज वह आक्रोश बनकर कटुता के साथ बह निकली थी। बाबा की आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे। बाबा ने भाभी के सिर पर आशीर्वाद का हाथ फेरा। चुपचाप बैठक में चले गए थे। उनका मूक समर्थन भाभी को वरद-हस्त के रूप में मिल चुका था। आँगन में सन्नाटा खिंच आया था। भइया शायद सीता मइया की तरह सोच रहे थे। यह धरती फटकर उन्हें शरण दे दे तो कितना अच्छा हो, पर ऐसा कुछ तो होना नहीं था। उन्होंने निरीह दृष्टि से सबकी ओर देखा। रेखा से उनकी नजरें मिलीं पर वहाँ भी उपेक्षा का भाव ही नजर आया। चुपचाप माँ के चरण-स्पर्श किये और दरवाजे की ओर कदम बढ़ा दिये। माँ का विलाप जारी था - बेटा अब आ गये हो तो वापस मत जाओ। घर तो तुम्हारा ही है, हम कह रहे हैं बहुरिया अभी क्रोध में है धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा। पर अब उनके बढ़ते कदम को रोकने वाला कोई नहीं था। माँ भाभी को झकझोर रही थीं - बहुरिया तुम ही रोक सको हो, देखो वे चले जा रहे हैं। भाभी प्रस्तर की तरह बैठी थीं। धरती खामोश, आसमान बिल्कुल चुप था। प्रहसन का पटाक्षेप हो चुका था। सभी दर्शक मूक और स्तब्ध रह गए थे। कोई नहीं समझ पा रहा था, जो हुआ है वह अच्छा है या बुरा। मंथन सबके मन में चल रहा था। पर जुबान सबकी खामोश थी।

*बी-५ राजेन्द्रप्रसाद कॉलोनी, तानसेन मार्ग, ग्वालियर*

*मो. ९४२५१११६३३*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वन्दना शांतुइन्दु

*गुजराती कहानी*

# खून में धँसी कील

कोने में पड़ा टेबल खींचकर रमण ने राजी से हथौड़ी और सँडसी माँगी। रमण क्या कर रहा है, यह राजी की समझ में नहीं आ रहा था। सँडसी-हथौड़ी लाकर वह देखती है कि रमण दीवार पर टँगा चित्र उतारने की कोशिश कर रहा था। राजी को आश्चर्य हुआ कि एकाएक ये चित्र क्यों उतार लेना चाहते हैं?

"पर क्यों? क्यों यह चित्र उतार रहे हो? कुछ कहो तो, मैं देख रही हूँ कि ऑफिस से आये हो तब से गुस्से में हो। और यह क्या सूझा? कुछ कहोगे भी कि यूँ ही ऑर्डर करते रहोगे?"

"तू चुप रहेगी? बड़ी आयी है समझने वाली।" तुनकमिजाज रमण गुस्से में राजी को बोला। राजी के लिए यह नया नहीं था। रमण का स्वभाव बात-बात में राई का पर्वत बनाने वाला था। उसे छोटी-छोटी बातों में बुरा लग जाता था।

राजी हँसते-हँसते टेबल के पास आई। दोनों हाथों से टेबल को पकड़ कर बोली -

"अब करो जो करना है वह। चित्र उतारना हो तो चित्र उतारो और मेरा माथा उतारना हो तो उसकी भी छूट है। पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कारण बताने की शर्त पर। बाकी गिरोगे तो हड्डी-पसली....।" राजी हँसना रोक न पाई। रमण को गुस्सा आता देख राजी बात को हँसी में ले लेती थी।

"तेरा माथा क्यों उतारूँ? माथा तो उतारूँगा वह भट्टणा का। बम्मन साला..." रमण दाँत पीस कर बोला।

"एक बात कहूँ? कितना भी झगड़ा हो, गुस्सा आये तो भी किसी की जाति विषयक बुरा बोलना अच्छा नहीं लगता। हमें कोई ऐसा कहे तो...?"

"बोल-बोल, अटक क्यों गई? बोल दे। वह ...वही बोला था। सीधा नहीं पर उसका इशारा वही था, हमारी जाति। मैं समझूँ ना? उम्र पानी में फेंकी है क्या? साले को एट्रोसिटी में न डाल दूँ तो मेरी जात....।"

बाहर जोर से बवंडर उठा। वातावरण धुँधला हो उठा। बाहर का कचरा उड़ कर घर में आया और साथ ही खिड़की जोर से टकराई और बन्द हो गयी। खिड़की के काँच में दरार पड़ गयी। राजी काँप गयी। सेमीट्रान्सपेरेंट काँच में से धुँधला उजाला दिख रहा था। उसने घड़ी में देखा -

"अब उतरो भी... अभी बेटा आयेगा स्कूल से। मुझे नाश्ता बनाना है। आप भी क्या छोटी-छोटी बातों में बिगड़ते हो। समाज में कैसे रहना चाहिए यह बच्चे को कैसे सिखाओगे?" वह आगे कुछ बोल न सकी। उसकी नजर में घर में पैक होता सामान, ट्रक में भरा हुआ सामान और नये ठिकाने पर उतारा जाता सामान आ गया। उसने भी अनुभव किया हुआ था कि वो लोग जब कोई नयी सोसायटी में रहने जाते तब वहाँ की आँखों में सत्कार पढ़ा जाता और घर को व्यवस्थित कर रहे होते तब कोई न कोई बच्चा नाक पोंछता या कान खुजलाता दरवाजे पर आ ही जाता -

"आन्टी, मम्मी ने कहा है कि कुछ काम हो तो बताना। हम आप की बगल में रहते हैं।"

और धीरे-धीरे ऊपर चढ़ते सूरज की तरह उसकी जाति प्रकाशित हो जाती और... बाद का व्यवहार...।

डोरबेल बज रही थी। राजी चमक उठी। गुस्से में आकर बड़बड़ाई -

"दरवाजा खुले नहीं तब तक स्विच पर से हाथ न उठाये वह श्याम ही हो सकता है।" उसने दरवाजा खोला। बवंडर और बवंडर जैसा श्याम अन्दर घुस आया। राजी ने फिर दरवाजा बन्द कर दिया। रमण अभी तक टेबल पर खड़ा था। खूँटी निकालने का प्रयास करता हुआ।

"पप्पा, क्या कर रहे हो? खूँटी निकल कई क्या? चित्र गिर गया क्या? हवा से? टूटी तो नहीं न?" श्याम की प्रश्नोत्तरी शुरु हो गई। इसलिए तो रमण उसे सोक्रेटीस कहता था।

रमण ने श्याम की ओर देखा, फिर चित्र की ओर देखा। पर यह क्या? चित्र के अन्दर का चित्र दिखता ही नहीं था। वह देखता रह गया, दीवार पर खूँटी के सहारे लटक रहा ब्लेकहोल। जिसमें उसकी पीढ़ियों की पीढ़ी खिंच कर गुम हो गईं। खुद भी और श्याम भी ऐसे ही इस ब्लेकहोल में खिंचकर 'स्वाहा' हो जायेंगे। उसका सिर चकराने लगा। उसने माथा पकड़ लिया। राजी ने रमण का हाथ थाम लिया।

"उतर जाओ। नहीं निकालनी है खूँटी। देखते नहीं हो, वह चुनाई में ही गाड़ी गई है। चुनाई में लिया हुआ क्या सँडसी से निकलता है कभी? कब से कह रही हूँ, सुनते ही नहीं हो।"

"पर पप्पा, खूँटी क्यों निकालनी है?"

"यह चित्र उतारने..."

"तो खूँटी क्यों निकालते हो? क्या पप्पा आप भी...तार क्यों नहीं काट देते? तार काट दो तार..."

रमण आश्चर्य में श्याम के सामने देखता रहा। तार काटने का उसे क्यों नहीं सूझा?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तार काट देने का... तार... काट देने का... तार... तार" रमण दूसरे ही विचार में पड़ गया। पिछला घर खाली किया था तब मदद में आये हुए दोस्त मेकवान की कही हुई बात अभी उसके दिमाग में छा गयी।

"देख रमण! यह बार-बार घर बदलते रहना यह कोई उपाय नहीं है। कब तक जात छिपा कर रहने का? जात छुपाने के लिए तूने तेरा सरनेम बदल डाला। 'पटेल' हो गया, फिर भी तेरी परिस्थिति बदली क्या? तेरे पड़ौसियों को तेरी जात के बारे में पता चले कि तुरन्त नजर चुराने वाले ब्राण्डेड जीन्स और लिपिस्टिक 'उंह... आह' के पाउच के अन्दर समा जायेंगे। ढक्कन बदलने से अन्दर रखी हुई चीज थोड़ी बदल जाती है?" आक्रोश मेकवान की जीभ पर ही नहीं, आँखों में भी बैठा था।

"तू क्या कहना चाहता है यह मेरी समझ में नहीं आ रहा। कुछ समझ में आये ऐसा बोल। मेरे घर बदलने को और ब्राण्डेड को क्या? तू गोल-गोल ही बोलता रहता है। मुझे यह समझ में नहीं आता। यहाँ तो दो टूक...।"

"तार तोड़ दे तार... देख फिर।" मेकवान अंगुलियाँ कैंची की तरह चलाता हुआ बोला। रमण न समझा। वह बात राजी तुरन्त समझ गई। सँभलकर हथेली में लेकर खड़ी 'लल्ला' (बालकृष्ण) की मूर्ति को मुट्ठी में बन्द कर दिया। गर सरक जाये तो...! मुट्ठी को छाती में दबा दिया। बाबा-साधु को देख माँ जैसे बच्चे को आँचल में छुपा देती है।

"नहीं मेकवान भाई! ऐसी बात भी न करना। यह नहीं हो सकता। यह तार कदापि नहीं टूटेंगे। साँस छूटे तो भी नहीं।" उसका हाथ ज्यादा दबा, जैसे लल्ला को हृदय में उतार देना चाहती हो। शादी करके ससुराल आई तब उसकी पड़ौसी विद्यामौसी ने उसे यह कह कर मूर्ति दी थी कि हम तो बेटी को 'लल्ला की सेवा' देते हैं। तू मेरी बेटी है, व न्दा जैसी ही। व न्दा तो नहीं रही...। विद्यामौसी आगे बोल नहीं पायीं थी। राजी भी व न्दा को याद करके रो पड़ी थी। राजी और राजी हो गई थी जब ससुराल में सास का हुलास देखा -

"बहू, तू ने तो हद कर दी। इस कालिया ठाकोर (द्वारकाधीश श्रीकृष्ण) को लल्ला कह कर पल्लू में बाँध लिया। तेरी सेवा में मेरा भी हिस्सा, हाँ..." बस तब से राजी-माजी की जोड़ी जम गई थी।

राजी को लगा कुछ ज्यादा ही बोल गई। अपनी बात को टालते हुए वह बोली - "आप बुरा मत मानिये मेकवान भाई, पर... आप जब... मतलब आप के दादाजी जब मकवाणा में से मेकवान बने होंगे तब की बात अलग थी। तब हमारे जातवालों के साथ बाकी समाज का व्यवहार असह्य था, अकथ्य है। ऐसे हालात में आपके पुरखों ने तार तोड़ डाले वह समझ में आये ऐसी बात है। वह जो कुछ हुआ गलत नहीं था। पर आज? आज आप को लग नहीं रहा कि समाज बदल रहा है? दो पीढ़ी पहले जो कुछ था, ऐसा आज कहाँ है? और दो पीढ़ी के बाद बिल्कुल नहीं रहेगा, शायद...। पूरा समाज समरस हो जायेगा।" बोलते बोलते अटकना पड़ा, 'शायद' कहना पड़ा, यह राजी के अलावा किसी की नजर में नहीं आया। थोड़े दिन पहले ही बच्चों को लेकर सोसायटी में झगड़ा हुआ था और तब सामनेवाली जो बोली थी उसकी पीड़ा अभी भी कलेजे को खाये जा रही थी। कातिल थे शब्द -

"ऐसे ही घुस जाते हैं हमारे उच्च वर्ण की सोसायटियों में, साल्ले... आरक्षण खा-खा के स्मार्ट तो इतने हो गये हैं कि पहचाने नहीं जाते कि आरक्षित हैं?"

राजी को कहने का मन हुआ था कि अच्छा है न। आप जैसे साफ-सुथरे दिखें, उसमें


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गलत क्या है? समाज का स्तर ऊपर उठना चाहिए, समरस होना चाहिए। इन्द्रधनुष ठीक है, अपनी जगह, पर सूरज की धूप सफेद के बजाय सप्तरंगी फैलती तो? तो क्या सृ ष्टि का विकास सम्भव था? यही बात समाज के लिए भी सच है। समरस समाज ही प्रगति कर सकता है। पर वह कुछ बोली नहीं। वह जानती थी कि भैंस को भागवत सुनाने का अर्थ नहीं। इसलिए श्याम को लेकर घर में आ गई थी।

राजी अब भी यूँ ही खड़ी थी। उसकी नजर शटलकॉक की तरह कभी रमण की ओर तो कभी मेकवान की ओर घूम रही थी। उसने सोचा कि इन दोनों के तार जुड़ने नहीं चाहिए, देखना पड़ेगा।

मेकवान नजर की भाषा समझ गया। उसे भी हुआ कि गलत व्यक्ति की हाजिरी में रमण का दिमाग धोने बैठा, पर अब क्या? बात बदलनी तो पड़ेगी। राजी की नजर हटानी तो पड़ेगी। "आप को पता नहीं भाभी कि मेरे दादाजी के साथ क्या हुआ था?"

"नया कुछ नहीं घटा होगा। मेरे, रमण के और अपनी जात के सभी दादा-परदादाओं के साथ वही हुआ होगा। मानती हूँ कि वह सब अमानवीय था। इसलिए तो हमारे कितने ही पूर्वजों ने तार तोड़ डाले थे। मैं जानती हूँ, भाई मैं अच्छी तरह से जानती हूँ। तब उन लोगों ने जो किया वह गलत किया ऐसा मेरे कहने का अर्थ नहीं है, पर अब? अब इस इक्कीसवीं सदी में! और हमारे जैसे पढ़े-लिखे लोग ऐसी बातें करें ये मुझे ठीक नहीं लगता। हाँ, गाँवों में स्थिति अब भी पुरानी सही, इसलिए वह लोग ऐसे बोले तो माफ, लेकिन ...हमें... हमें ये शोभा देता है क्या? आरक्षण का फायदा लेकर उजले हुए, ऊपर उठे, और अब तार तोड़ डाले तो अहसानफरामोश न कहलायेंगे? हमारा फर्ज नहीं बनता कि आरक्षण जहाँ नहीं पहुँचा ऐसे निचले लोगों को जाग त करें, उन्हें पढ़ायें?"

"टूट गया... टूट गया..." श्याम तालियाँ बजाता, कूद रहा था। उसकी चीख-पुकार से राजी का विचार-तार टूटा। उसने श्याम की ओर देखा और कहा -

"श्याम क्या है? यूनिफॉर्म नहीं निकालना क्या? हाथ-पाँव धो लो, चलो। रोज कहना पड़ेगा क्या?"

हाथ में आये चित्र को रमण अपनी लुंगी से पौंछने जा रहा था और अटक गया। उसके चेहरे पर विचित्र भाव उभर आये। वह चित्र को फेंकने जा रहा था, कि शाम की माला-जाप करके अपने कमरे में से बाहर आ रही अपनी माँ को सामने पाया। वह अटक गया। खिसियाना पड़ गया।

"क्या करने जा रहा था रमण?" माँ की रुआबदार आवाज रमण को और शर्मिन्दा करती गई।

"कुछ नहीं..." कह कर रमण ने चित्र टेबल पर रख दिया। अपने बेडरूम में जाने के लिए मुड़ा। क्योंकि वह खुद जब लाइट मूड में हो तब बोलता था कि, राजी-माँजी की जोड़ी, रमण सके न तोड़ी। कभी इससे भी आगे बढ़कर बोलता था कि मेरे और मेरे बाप के भाग्य एक सरीखे। दोनों की औरतें जबरदस्त मिली, बाकी तो... तब राजी तो कुछ नहीं बोलती पर माँ जरूर जवाब देती थी -

"ये तो है न बिटवा, जो पुरुष नसीबवाला होता है उसे ही जबरदस्त पत्नी मिलती है। और जबरदस्त हो तो सब ठीक चलता है, नहीं तो राम-राम... करते बैठो। चला के देखो संसार की गाड़ी। हम जबरी हैं, लुच्ची नहीं। लुच्ची मिली होती तो पता चलता बाप-बेटे को कि कैसे परिवार के साथ तार जुड़े रहते।"

रमण बेडरूप के दरवाजे तक पहुँच गया और माँ की आवाज आई - "चला कहाँ?"

रमण ने पीछे देखा। माँ अपने पल्लू से चित्र पौंछ रही थी। रमण को आदेश दिया - "यहाँ आ।" रमण टाल न सका। दूसरे तार वह तोड़ ले


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किन्तु राजी-माँजी से जुड़ा तार वह थोड़े ही तोड़ सकता था। वह वापिस आया। माँ के सामने खड़ा रहा। राजी माँ की बगल में खड़ी हो गयी थी। श्याम को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ खड़ा रहे, मम्मी के साथ कि पप्पा के साथ। वह दादी का पल्लू पकड़े दादी को चिपककर खड़ा हो गया।

"यह चित्र क्यूँ उतार लिया?"

"... ... ..."

"इस चित्र का इतिहास तुझे पता है न, कि नहीं?"

"हाँ..."

"तो भी...?"

"हाँ माँ तो भी। अब घर नहीं बदलेंगे, घर में रखा चित्र बदल जायेगा। इसलिए यह... समझीं?" रमण की आवाज में इतनी दृढ़ता। सास-बहू के लिए यह नया अनुभव था। राजी घबरा उठी। माँ थोड़ी ढीली हुई।

"फिर कुछ हुआ क्या?"

"और होना क्या था? वही... वह साल्ला भट्टणा... घर आ कर खा-पी जाता है और फिर मुझे..."

राजी फिर से सामने आ गई, "वह घर आकर खा-पी जाते हैं वही बताता है कि उनके मन में ऊँच-नीच का भेद नहीं है। वो जात-पांत नहीं मानते। बाकि उनको पता है कि हम कौन हैं और आप उस पर 'एट्रोसिटी' लगाना चाहते हो? आप को शर्म नहीं आती?"

"ना नहीं आती, साल्ला दम्भी कहीं का। मेकवान भी कह रहा था कि उससे दूर रहना। दम्भी... बदमाश..."

राजी को बहुत कुछ समझ में आ गया। वह रमण के पास आई।

"ऑफिस में क्या हुआ कहो तो सही। आते ही तले-ऊपर हो रहे हो।"

"अरे! हमारे ऑफिस में जो स्वीपर आता है उसे मैं थोड़ा डाँट रहा था। तब ये दम्भी, बदमाश आ गया। सबके सामने मुझसे बोलता है कि रमण तुझे तो उसकी परिस्थिति समझनी चाहिए। सबके सामने मुझे खुल्ला कर दिया। पर मैं उसे छोड़ूँगा नहीं।"

"तो उसमें उसने गलत क्या कहा? हम भी सफाई कर्मचारियों को समझ नहीं सकेंगे, यह हद नहीं हुई? दूसरे लोग जो व्यवहार करते हैं उनके साथ, वह हम भी करें! तो औरों से क्या आशा रखें? और सबसे पहले तो आप अपने दिमाग से यह जात-पांत का भूत निकाल दो। कभी भी झगड़ा होता है तो जात-पांत को न पकड़ो। खुल्ले दिल से रहना सीखो। इन्सान है कभी लड़-झगड़ भी पड़े तो उसका मतलब यह नहीं है कि दो जात या दो कौम लड़ने बैठी हैं।"

संस्कृत में बी.ए. हुए राजी को रमण के ऐसे विचारों से विरोध था। इस विषय पर वो हमेशा रमण को क्रॉस करती थी। रमण हमेशा गुस्सा करता,

"मेरी समझ में नहीं आता कि तू इतनी पॉजिटिव क्यों है? तेरी विद्यामौसी तो लाखों में एकाध होती है। ज्यादा पॉजिटिव होना भी निर्माल्यता की निशानी है। और तेरी विद्यामौसी भी कम नहीं थीं। वह बुढ़िया बेटी... बेटी... करके तेरे पास से अपने घर का काम करवा लेती थी। उन लोगों का दिमाग ही सामन्ती है। अपने को उनके नौकर समझते हैं।"

कौन जाने किस मिट्टी की बनी थी राजी कि वह जरा सा भी गुस्सा नहीं करती थी। उसमें भी रमण के सामने तो नहीं ही। वह जानती थी कि रमण का बचपना गया नहीं है। वह हँसते-हँसते बोली,

"बेचारी विद्यामौसी स्वर्ग में बैठे-बैठे भी हिचकियाँ लेती होगी। आप उसे बुढ़िया कह के याद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो करते हैं।" इतना बोलते ही उसकी आँखें भर आईं।

"रमण, विद्यामौसी काम करवा नहीं लेती थीं, मैं ही कर देती थी। हमारी मँगनी हुई, तब विद्या मौसी ने हमको उनके घर खाने के लिए बुलाया था तब चन्दन का हार चढ़ाया। वृ न्दा का फोटो देखकर मैंने आप से कहा था कि मेरी इस प्रिय सखी की वजह से मैं आपसे मिली हूँ। मैं सोमनाथ के समन्दर में डूब रही थी तब वृ न्दा ने मुझे बचाया था। मुझे डूबते देख वह समन्दर में दौड़ी थी। उसे तैरना आता था। उसके सामने पड़ कर उसने मुझे बचाया था और किनारे की ओर धकेला था। पर ...उस दौरान वह थक गई होगी, एक विकराल मौज की चपेट में वह आ गई। दो दिन बाद उसकी लाश मिली थी।" यह सुनकर रमण की आँखें भी भीग गई थीं।

हर थोड़े दिन के बाद खड़े होती बवाल को आज राजी मूल से निकाल देना चाहती थी। उसने माँ को कुर्सी में बैठाया और बोली,

"माँ आप चिन्ता मत करिये, जब तक आप मेरे साथ हैं तब तक यह जंग मैं ही जीतूँगी। कब तक कहाँ तक यह चलेगा? इसका अन्त आज ही होगा। इसकी छाया मैं श्याम तक लम्बी नहीं होने दूँगी।" वह रमण की ओर घूमी। रमण की नजर मक्खी की तरह तोड़े हुए तार पर भिनभिना रही थी।

"रमण..."

रमण ने राजी की ओर देखा। उसकी नजर की नाराजगी राजी से सहन न हुई। वह भी तार के सामने देख बैठी। फिर अपनी बात का तार जोड़ते हुई बोली,

"रमण, विद्यामौसी की स्थिति मैं जानती थी। वृ न्दा की जगह मैं भी कभी न ले सकूँगी। पर मुझे प्रयत्न तो करना चाहिए न? मेरे श्वास व न्दा की ऋणी है और जीवन भर रहेगी। मौसी ने अपनी बेटी की शादी में देने की लल्ला की सेवा मुझे दी, वृ न्दा को याद करके। उस लल्ला को मैं घर से निकाल दूँ!" राजी की आवाज काँप रही थी। "और यह एक कारण नहीं है मेरी पॉजिटिवनेस का, समझे? पर सबसे जोरदार बात तो यह है कि मैंने देखा है कि उच्च हो कि नीच हो, औरत की स्थिति हर जगह समान है। उच्च-नीच के भेद लिए फिरते, और आप जैसे बात-बात में अन्याय होने की बात करने वाले हर एक पुरुष स्त्री के साथ अन्याय करते समय एक कतार में आ जाते हैं। तब तो सब एक ही बात मानते हैं कि स्त्री मतलब कार्येषु मन्त्री, शयनेषु रम्भा... दूसरा कुछ नहीं। बोलो ऐसा क्यों? बात-बात में आप कितनों को मनुवादी-मनुवादी कहकर नीचा दिखाते हो पर इस विषय में आप भी मनुवादी नहीं हो? रमण, आप भूल गये कि मुझे नौकरी नहीं करनी है वह आपका निर्णय था, मुझे पूछे बगैर। हम औरतें भी हमारे साथ होते अन्याय का उपाय आपके रास्ते से ढूँढें तो? तो क्या होगा सोचा कभी?"

श्याम दुविधा में था। क्या हो रहा है, उसकी समझ में नहीं आ रहा था। अपनी मम्मी को कभी इतना बोलते हुए नहीं देखा था। वह बावरा हो उठा था। जोर से दरवाजा खोल के "ए...ह..." कर के ठोका। किसी ने उसकी ओर न देखा। टेबल पर चढ़ गया, वहाँ से कूदा फिर भी किसी का ध्यान न खींच सका। कुछ याद करता हो, ऐसे माथे पर हाथ रखा हो "ए... ह..." कर के रसोईघर में गया। अगरबत्ती जला के ले आया, तीनों की अर्चना कर रहा हो, ऐसे घूमा फिर बाहर जाके तुलसी के गमले में लगा आया। अगरबत्ती की सुगन्ध से माँ भूतकाल की गुफा से बाहर आई। रमण की ओर देखा। फिर अक्कड़ हो गई,

"देख रमण, इस घर में तुझे जिस का चित्र टाँगना हो टाँग। ना नहीं है, पर यह चित्र तो रहेगा ही रहेगा। जब तक मैं जिन्दा हूँ। बाद में तू जाने और राजी जाने। श्याम बेटा, तेरे पप्पा ने तो तुझसे इस चित्र



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की बात नहीं की होगी, उसने राजी को भी नहीं बताई होगी, मैं तुझे बताऊँगी। राजी तू भी आजा। घर की बहुओं को भी यह अधिकार है कि परिवार में घटी घटना के बारे में जानने की। भविष्य के लिए यह जरूरी है।"

"रमण के दादाजी की बात है। तब अंग्रेजों का राज था। वो लोग हमारी कुरीतियों का बराबर फायदा उठाते थे। और समाज भी कैसा! कहने को उच्चवर्ण के लोग नीचवर्ण के साथ जानवरों से भी बदतर व्यवहार करते थे। इसलिए धर्मान्तरण जोर से चल रहा था। वह सब याद करने जैसा नहीं है। बीती बातें भूल जाने में ही भलाई है। अपने दादाजी कृष्ण भगवान् के पक्के भक्त थे। पूरा दिन नरसिंह मेहता के भजन गुनगुनाते रहते थे। ऐसा भक्त भी एक बार भड़क उठा था। हुआ यूँ कि बासी माँगने गये थे तब किसी को भूल से छू लिया होगा। फिर क्या होगा बाकी? दादाजी पर क्या बीती होगी, पूछ मत बेटा... घर आकर टूटी हुई उंगलियों से कृष्ण के सब चित्र उतार डाले। ईसाई बन गये। चमत्कार तो यह था कि उनके प्रति लोगों का व्यवहार बदल गया। छुआछूत कहाँ गई जाने। पर खून में मिल गया वह नरसिंह मेहता बारबार होंठों पर आ कर गा उठता था, 'भणे नरसैया... भणे नरसैया...!' दादाजी अर्ध पागल हो उठे थे। पशु को पड़ने वाली मार सहन कर गया वह आदमी अपने हाथों से अपने हृदय पर किया हुआ घाव सहन न कर पाया। दिमाग फट गया। एक दिन कृष्ण...कृष्ण... रटते जा रहे एक ब्राह्मण को उसने बाजार में रोका, पण्डितजी, यह कृष्ण-कृष्ण जपना बन्द करो।"

"क्यों भाई? तुझे कहाँ बीच में आया मेरा भगवान्?"

"पण्डित, मैं जब कृष्ण... कृष्ण रटता था तब मैं अछूत था। आज मैंने कृष्ण को छोड़ दिया तो छूत हो गया। आपके भगवान् पर आपको भरोसा नहीं? तो ही उसके भक्त को आप अछूत मानो? और वह भक्त कृष्ण को छोड़ दे तो उच्च वर्ण का हो जाये?"

"पण्डित की आँखें खुल गईं। भविष्य की विभीषिका पा गये। दादाजी का हाथ थामकर अपने घर ले गये। अपने घर की दीवार से यह कालिया ठाकोर (द्वारकाधीश श्रीकृष्ण) का चित्र उतारकर अपने घर आये। अपने हाथों से चित्र हमारे घर की दीवार पर टाँगा और मुझे बोले कि बहू तेरे हाथ की चाय पिये बगैर नहीं जाऊँगा हाँ... और दादाजी की ओर देख बोले कि भगत, क्या कबसे मूढ़ होकर देख रहे हो? होने दो... वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीड़ पराई जाने रे...। दादाजी की आँखों में से सावन-भादों बह रहे थे। फिर भी गाया। पूरा गाँव इकट्ठा हो गया था। बाद में पण्डितजी को भी नरसिंह मेहता (गुजरात के आद्यकवि) की तरह जाति बाहर कर दिया था। यह... वह चित्र है। दादाजी ने कहा था कि बहू, जान की तरह सँभालना इसे। यह हमारी अमूल्य विरासत है। अब भाड़ में जाये दुनिया। मेरे साँवरे ने मेरी हुण्डी स्वीकार ली..."

माँ रमण की ओर मुड़ी, "बेटा तोड़ने से तार टूटे पर चुनाई में ली गई खूँटी की तरह खून में गड़ी भावना कैसे टूटे? और बेटा, पुरखों के सहन किये अन्याय को हथियार न बना और न बना ढाल। जिसे जो करना है वह करे पर हमारे घर में तो..." वह आगे बोल न पाई। आवाज रुँध गई। पर उनकी गोद में रही कालिया ठाकोर के चित्र पर किसी अन्य के ही अश्रु का अभिषेक हो रहा था।

*१, कल्याण नगर, दिवालीपुर, बड़ौदा - ३९००१५*
*मोबा. ०९४२८३०१४३७*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पद्मा शर्मा

# जलसमाधि

बोलेरो जीप शहर की फोरलेन सपाट सड़कों को पीछे छोड़ती हुई तहसील की उथली सड़कों पर थिरकने लगी थी। कभी किसी बड़े गड्ढे में पहिया आ जाता तो जीप जोर से हिचकोला खाती और परेश का समूचा शरीर हिल जाता। उसने अपनी नजरें सड़क पर जमा दीं... किसी बड़े गड्ढे को देखकर वह अपनी शरीर को संयत करता और गेट के ऊपर बने हैण्डल पर अपनी पकड़ मजबूत कर लेता। छोटे-बड़े गड्ढे सपाट सड़क का भूगोल बिगाड़े हुए थे जैसे गोरे चेहरे पर मुहाँसे या चेचक के निशान। कभी धुएँ का गुबार उठता तो कभी कचरे का ढेर दिखायी देता। शीशे चढ़े होने के बावजूद परेश रूमाल नाक पर रखता। माथे पर शिकन गहरी हो जाती। यहाँ तक आने में ट्रेन का सफर तो ठीक रहा पर अब यह सफर परेशान कर रहा है।

परेश एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में कार्यरत है। चार दिन पहले मैनेजर ने एक लिफाफा थमाते हुए कहा था, "यह तुम्हारा नया प्रोजेक्ट है। कम्पनी वाटर फिल्टर का नया कारखाना खोलने जा रही है। उसकी साइट को देखना और तय करना सारी जिम्मेदारी तुम्हारी है। सरकारी अनुमति की प्रक्रिया आदि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम देख लेंगे।" परेश ने लिफाफा खोलकर पढ़ा तो उसकी आँखें हैरत से फैल गयीं...। 'चक्ख' गाँव की ओर नदी पर यह कारखाना बनना था। एक अजीबोगरीब कशमकश में था वह। उस स्थान पर वह जाना नहीं चाहता था, दूसरी ओर कम्पनी के आदेश को मानने की बाध्यता...। यह एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट था जो उसके कैरियर को ऊँचाइयाँ प्रदान कर सकता था। "यह प्रोजेक्ट तुम्हारी किस्मत बदल सकता है।" मैनेजर का यह वाक्य उसके कानों में रह-रहकर गूँज रहा था।

जीप एक छोटे से होटल के बाहर आकर रुक गयी। कम्पनी ने कमरा पहले से बुक करवा दिया था। इसी होटल में उसे ठहरना था। उसने होटल पर एक नजर डाली... होटल बड़े क्षेत्र में फैला हुआ था। पर दीवारों का रंगरोगन धुल चुका था। उसने बुरा सा मुँह बनाकर ड्रायवर से कहा, "कोई बढ़िया होटल नहीं है यहाँ?"

"ये यहाँ का सबसे अच्छा होटल है" उसने दलील दी।

परेश जीप से उतरकर काउन्टर पर आ गया। अपना नाम और कम्पनी का नाम बताया... होटल के मैनेजर ने उसे कमरे की चाबी थमा दी। रूम में आकर उसने अपना ट्रॉली बेग खोला... नहाने के कपड़े निकालकर बाथरूम की ओर चल दिया। देशी लोग विदेशी सुविधाओं की कितनी ही नकल कर लें पर कोई न कोई चूक अवश्य हो जाती है जिससे सुविधा असुविधा का रूप अख्तियार कर लेती है। कमोड लैटरीन आज की आवश्यकता और विदेशी नकल है, पर वैसी ही व्यवस्था और वैसा ही उपयोग सबके बस की बात नहीं। अन्दर गन्दगी देख उसकी त्यौरियाँ चढ़ गयीं। जल्दी नहाकर बाहर आ गया।

लगभग दो घंटे बाद एक कॉल मोबाइल पर उभरा। दोनों के बीच बातचीत हुई। पन्द्रह मिनट बाद वह व्यक्ति होटल के गेट पर था। उसने अपना दायाँ हाथ आगे बढ़ाकर परिचय देते हुए कहा, "महेन्द्र"। परेश ने भी दायाँ हाथ आगे बढ़ाकर कहा, "परेश"।

महेन्द्र स्थानीय नेता है उसकी गहरी पैठ है सरकारी महकमों में...। वह इस डील का मीडियेटर है। गाँववालों और कम्पनी के बीच सहमति और सरकारी अनुमति दिलवाने में उसकी अहम् भूमिका अदा होना है। महेन्द्र परेश को लोकेशन दिखाने ले गया। परेश गाड़ी में बैठा अपने बचपन की यादों को ताजा कर रहा था। खेत, पगडंडियाँ, कच्चे-पक्के मकान, सब अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे थे। गाँव में बीस सालों का बदलाव साफ दिखाई दे रहा था।

महेन्द्र ने जीप रुकवाकर हाथ का इशारा करते हुए बताया, "देखो ये है ओर नदी"

परेश ने देखा नदी सागर जैसी इठला रही थी। उसका ओर-छोर दिखाई नहीं दे रहा था। लहरें तेज गति से बह रही हैं... लगता था अपने बहाव में सब कुछ बहाकर ले जायेंगी। उसकी धड़कनें तेज हो गयीं... यही वह नदी है जिसने... जिसने उसका सब छीन लिया। उसके चेहरे पर भाव बनने बिगड़ने लगे। नदी के तेज बहाव की झरने-सी आवाज उसका मन मोह रही थी।

"इतनी मधुर आवाज और मोहक द श्य को देख महानगर में तो पिकनिक स्पॉट बन गया होता।" वह महेन्द्र की ओर मुखातिब हुआ।

"अरे सर! इसके प्रबल वेग के कारण संक्रान्ति पर्व पर भी सब गाँव वाले एक दूसरे का हाथ पकड़कर समूह में घुड़की (डुबकी) लगाते हैं। यह इस गाँव की ही नहीं आसपास के क्षेत्र की पुण्यसलिला है... जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी धार्मिक एवं अन्य आयोजन इसके घाट पर होते हैं। बच्चा पैदा होने के बाद घाट पूजन (घटबरिया) हो या मृत्यु के बाद मृत देह का अस्थि-विसर्जन, सब काम इस नदी में होते हैं।"


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसने अपने का सँभाला और पूछने लगा, "इसके उस पार क्या कोई बस्ती है?"

"यह आदिवासी बहुल इलाका है, जंगल की जड़ी-बूटियों से दवाई बनाते हैं वे लोग... नदी पास होने से जड़ी-बूटी भी खूब फल-फूल रही है। ये नदी उनकी जीवनदायिनी है।"

"... यह नदी तो गाँव से बहुत दूरी पर थी। वहाँ जाने का रास्ता भी सँकरा था।"

"हाँ। पर अब इसका क्षेत्र यहाँ तक फैल गया है। इस नदी के कारण ही यहाँ फसल अच्छी हो रही है। आसपास के लोग भी इसका पानी लेने आ जाते हैं। पूरे संभाग में यहाँ की फसल का नाम है।"

"यह नदी मई-जून में तो सूख जाती होगी?"

महेन्द्र उत्साहित होकर बोला, "नहीं सर! गर्मी में आसपास की सब नदियाँ सूख जाती हैं... बोरिंग में भी पानी खत्म हो जाता है, तब भी यह नदी बारिश के मौसम जैसी लबालब भरी रहती है। इसीलिए तो आपकी कम्पनी को मैंने प्लान्ट लगाने की सलाह दी है।"

"इस गाँव का विकास नहीं हुआ... मसलन पक्की सड़कें आदि..."

"सर यह क्या कम बात है कि यह गाँव ट्रेन रूट से जुड़ा हुआ है।"

"नदी के घाट पर गाँव के लोग दिखाई नहीं दे रहे?" परेश ने जिज्ञासा प्रकट की।

"... वे दूसरे घाट पर जाते हैं... यहाँ बहाव तेज है और मिट्टी में फिसलन भी... यहाँ किसी का पैर फिसल जाये तो उसे बचाना मुश्किल होता है।"

परेश को शान्त देख महेन्द्र ने जानकारी देते हुए कहा, "घाट के दक्षिणी ओर एक मन्दिर है इसके पुजारीजी कभी गाँव में प्रवेश नहीं करते... गाँव वाले ही हर पर्व, मावस (अमावस) और पूनो (पूर्णिमा) पर सीधा (आटा, घी, शकर या गुड़, नमक, मिर्च आदि) दे जाते हैं।"

परेश ने बात बदलते हुए कहा, "अच्छा ये बताओ पूर्वी ओर बिजली के खम्भे तक किसी-किस के खेत हैं?"

महेन्द्र उसका मतलब समझ गया, उसने उंगलियों पर नाम सहित गिनती की और बताया, "लगभग पन्द्रह लोगों के खेत लेने पड़ेंगे।"

परेश के माथे पर बल पड़ गये... महेन्द्र ने परेश को ध्यान से देखा... थोड़ा रुककर वह फिर बोला, "लेकिन ये प्रॉब्लम आप की नहीं है। मैंने उन लोगों से बात कर ली है, उन लोगों से लिखित सहमति ले लूँगा और खेत के कागज भी...।"

"बदले में उनको कितनी कीमत मिलेगी ये मालूम है उन्हें..." परेश ने बीच में टोका।

"कीमत...!" वह हँसा, "अरे सर! आपके मैनेजर साहब ने आश्वासन दिया है कि जिनकी जमीन ली जायेगी उन लोगों को कारखाने में नौकरी दी जाएगी।..."

"...और दाम कुछ भी नहीं..."

महेन्द्र ने उसे विस्फारित नेत्रों से देखा, कोई उत्तर नहीं दिया।

"ठीक है सर... आप शाम को सरपंचजी से जरूर मिल लेना।"

वह गाँव में जहाँ जाता, लोग उसके सम्मान में खड़े हो जाते और राम जुहारू करने लगते। कुछ लोगों ने उसे आग्रहपूर्वक बिठाकर मठा पिला दिया। ऐसा सम्मान पाकर वह अभिभूत था... उनके लिए तो वह जैसे ईश्वर का भेजा हुआ दूत. .. इस गाँव को महानगर में बदले हुए देखने की कल्पना को साकार करता हुआ प्रतिरूप...।

उसने एक युवक से पूछा, "बद्रीप्रसाद का मकान कौन-सा है?" उस युवक ने उसे ऐसे घूरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे किसी अपरिचित व्यक्ति का नाम ले लिया हो। वह बोला, "सर इस नाम का तो कोई नहीं इस गाँव में।" एक बुजुर्ग की ओर इशारा करके बोला, "आप उनसे पूछ लीजिए।"

परेश ने देखा नीम के पेड़ के नीचे एक व द्ध बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। परेश ने नमस्ते करते हुए वही प्रश्न दोहराया, "बाबा बदरीप्रसादजी का मकान कौन-सा है?"

बुजुर्ग में बूढ़ी मिचमिची आँखों से उसे ऊपर से नीचे तक ऐसे देखा जैसे उसने कोई गुस्ताखी की हो, बुजुर्ग रुक-रुककर बोला, "ऊ के मकान की का कहें तुमसे... मुकते सालन से यहाँ नहीं रहतौ कोई. एक बिटवा हतौ बाये बाकी नानी लै गयी।"

फिर एक पुराने खण्डहरनुमा कमरे की ओर इशारा करके बोला, "वो रही बदरी की मढ़इया..."

"... उसमें कोई रहता नहीं है?"

"... ऊ के जावे के बाद खाली पड़ी रहतै..."

वह अधिक देर वहाँ नहीं ठहर पाया। होटल के कमरे में लौट आया...। स्म ति की काली परछाइयाँ उसका पीछा कर रही थीं। उसे कभी गाँव के खेत दिखायी देते तो कभी कुआँ, कभी पगडंडी तो कभी इमली के पेड़... जिन पर वह चढ़ जाया करता था। उसकी माँ खेती करती... वो ही कमाती... घाट के मन्दिर के पुजारी से दीक्षा लेकर पिता साधु वेश में रहने लगे थे। वो आठ वर्ष का ही तो था जब उसकी माँ चल बसी थी। पिताजी उनकी अस्थियाँ लेकर इसी 'ओर नदी' में विसर्जन के लिए गये तो वापस ही नहीं लौटे।

लोगों ने कहना शुरु कर दिया था कि उसके पिता बद्रीप्रसार अकर्मण्य थे... बेटे को पालने-पोसने का जिम्मा लेना नहीं चाहते थे इसलिए उन्होंने नदी में डूबकर मुक्ति पा ली... आत्महत्या कर ली... जलसमाधि ले ली... अरे साधु थे तो भक्ति की समाधि लेते... अध्यात्म की... ये तो घोर पलायन है जिन्दगी से... कैसे साधु थे... कोई भी धर्म पलायन करना नहीं सिखाता... धर्म तो कर्म पर जोर देता है... वो न धर्मयोगी रहे न कर्मयोगी बन सके... इस बालक के बारे में तो सोचा होता... न जाने कैसा बाप था... अरे हम सबसे ही कह देता कि जिम्मेदारी उठाने में असमर्थ है... गाँववाले दो जून की रोटी का इन्तजाम कर देते... कम से कम लड़के के सिर से बाप का साया तो न छिनता...

जितने मुँह उतनी बातें... सुन-सुनकर परेश का दिमाग खराब हो जाता। ये वाक्य आज तक परेश के मन पर हथौड़े के समान चोट करते हैं। तभी से वह अपने पिता से और इस गाँव से नफरत करता है। किसी भी फार्म या आवश्यक जानकारी की पूर्ति में पिता का नाम भरते समय मन में अजीब-सी कसक और पीड़ा रहती थी... उसका वश चलता तो पिता के नाम वाला कॉलम खाली ही रहने देता...।

वो तो उसकी नानी उसे अपने साथ ले गयीं। उन्होंने ही पढ़ाया-लिखाया, पालन-पोषण किया। वो न होतीं तो... सोचकर ही सिहर जाता वह... आज इस गाँव में भीख माँग रहा होता...। अन्दर ही अन्दर बहुत कुछ खदबदा रहा था। उसने दोपहर का भोजन भी नहीं किया। उसमें मन में द्वन्द्व चलता रहा... गाँव वालों को धोखा मिले तो मिलता रहे... मेरी बला से... गाँव के खेत उजाड़ हो जायेंगे... उन पर कारखाने की दीवारें खड़ी हो जायेंगी, इससे मुझे क्या?... इस गाँव से मेरा रिश्ता ही क्या है? इस गाँव ने मुझे दिया ही क्या है - दुःख-दर्द, उत्पीड़न और मानसिक क्लेश के सिवाय...।

...मेरे लिये जो जी न पाया वह इसी गाँव का था। यदि नानी न ले जाती तो मैं इसी गाँव में


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भटकता... दूसरों के टुकड़ों पर पलता... अच्छा है अब ये गाँववाले भटकेंगे... ये भी मोहताज होंगे...।

...पर जल्द ही उसका इंसान उस पर हावी होने लगा... गाँववालों ने उसका क्या बिगाड़ा है... वे सब लोग तो उसे सम्मान दे रहे हैं।...

मोबाइल की घंटी ने उसकी विचार-तन्द्रा भंग कर दी। महेन्द्र याद दिला रहा था, आज रात का उसका भोजन सरपंचजी के यहाँ है।

वह अनमने भाव से सरपंचजी के यहाँ भोजन करने आया। रामसनेहीजी को गाँव वालों ने एकमत से अपना सरपंच स्वीकार कर लिया था और मतदान की स्थिति नहीं आयी थी। सरपंचजी ने उसका खूब अतिथि सत्कार किया और खुशी से बोल पड़ा, "पूरा गाँव जश्न मना रहा है कि यहाँ कारखाना खुलेगा, गाँव का नाम रोशन होगा और जिनके खेत लिए जायेंगे उन लोगों को काररखाने में काम भी मिलगा...।"

"हूँ..."

"ये आपकी कम्पनी का दूसरा प्लांट है... पहला प्लांट कैसा चल रहा है?"

परेश बड़ी सहजता से बोला, "देखिये सरपंचजी, ये प्लांट तब तक चालू रहते हैं जब तक पानी का स्रोत बना रहता है... फिर कोई नदी कितने वर्षों तक पानी दे सकती है?... आखिर देते-देते तो कुबेर का खजाना भी खाली हो जाता है।"

सुनकर चौंक गये सरपंचजी, बोले, "फिर क्या हुआ वहाँ के लोगों का...?"

"कुछ नहीं... बदहाल हो गये हैं वो लोग। पानी का नामोनिशान नहीं है अब वहाँ... फसल, खेत, जानवर सब चौपट हो गये हैं।"

उसने ध्यान से सरपंचजी का चेहरा देखा, अप्रत्याशित उत्तर सुनकर उनका चेहरा सफेद हो रहा था। अपनी बात जारी रखते हुए वह बोला, "आप कह रहे हैं, गाँववाले जश्न मना रहे हैं क्योंकि आप सब हकीकत से अनजान हैं...। कम्पनी ट्रेन्ड लोगों को काम पर रखती है इसलिए यहाँ के लोगों को काम मिलना मुश्किल है। ... कारखाना खुलने के बदले इन लोगों का क्या-क्या छिन जायेगा इसकी कल्पना तक नहीं है सबको... जनजीवन पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा कारखाने से...। बिजली, स्वास्थ्य, पानी, पर्यावरण सब प्रभावित होंगे।... जानवर और फसल क्या आदमी भी बूँद-बूँद को मोहताज होंगे और कम्पनी कीमती दामों में पानी बेचेगी।"

उनके चेहरे पर चिन्ता की लकीरें दिखने लगीं... लेकिन महेन्द्र तो कह रहा था गाँव का नाम पूरे देश में छा जायेगा... गाँव का विकास हो जायेगा ...महानगर जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हो जायेंगी...।

"पानी के बिना यदि जीवन की कल्पना की जा सकती है तो कोई परेशानी नहीं है... भविष्य में जब पानी ही नहीं बचेगा तो इन सुविधाओं का लाभ कैसे उठायेंगे आप... पानी के अभाव में गाँव के गाँव खाली हो रहे हैं, लोग वहाँ से पलायन कर रहे हैं... जब आपको और आपकी फसल को पानी नहीं मिलेगा तो जीवन जी पायेंगे क्या?... रही बात महेन्द्र की तो उसको इस डील पक्की करवाने के बीस लाख रुपये कम्पनी दे रही है... इतना ही नहीं आप सबको झाँसा देकर खेतों को औने-पौने दामों में खरीदा जायेगा... पानी के इस स्रोत की अन्तिम बूँद तक चूस लेंगे ये व्यावसायिक लोग...। उस प्रदेश की इरावती नदी को बहुराष्ट्रीय कम्पनी ने अधिगहीत कर लिया था। अब वहाँ के निवासी बूँद-बूँद के लिए संघर्ष कर रहे हैं... जो कम्पनी के खिलाफ आवाज उठा रहा है उनको झूठे केस में फँसाया जा रहा है... यही सब आप लोगों के साथ होगा...।"

पूरी हकीकत सुनकर सरपंचजी के पैरों तले जमीन खिसक गयी। वे बोले, "लेकिन डील नहीं हुई तो तुम्हारी नौकरी का कुछ बिगड़ेगा तो नहीं...?"

परेश चिन्ति होकर बोला, "ये सही है, यह खबर जल्द ही उन तक पहुँच जायेगी और मुझे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कम्पनी से निकाल दिया जायेगा... पाँच वर्षों से यहाँ काम करते हुए प्रमोशन का ख्वाब मन में पलने लगा था... मैनेजर ने भी यही कहा था कि यह डील मुझे ऊँचाइयों तक पहुँचा सकती है..."

"फिर क्यों ले रहे हो तुम ये रिस्क..."

"... बस कुछ कर्ज उतार रहा हूँ..."

"मैं समझा नहीं..."

"...छोड़िये इन बातों को... अब ये सोचो आपको कोशिश कैसे करना है..."

"...आप ठीक कह रहे हैं... मैं सब गाँव वालों को समझाता हूँ... बल्कि मैं अभी एक बैठक बुला लेता हूँ..."

"...आप साथ रहेंगे तो वो लोग जल्दी समझ जायेंगे... आप जब तक पौर में बैठिये मैं तैयारी करता हूँ..."

"आपका गाँव आदिवासी बहुल इलाका है ...नदी उनके लिए जीवनदायिनी है और अपनी जीवनदायिनी के लिए वो कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहते हैं..."

सरपंचजी उसका इशारा समझ गये, वे उसे लेकर पौर में आये तो दरवाजे पर वही वृ द्ध बैठे मिले जिनसे वह दिन में मिल चुका था। सरपंचजी ने कहा, "इनसे मिलो... ये मेरे पिताजी हैं।"

उसने उन्हें नमस्ते किया।

वृ द्ध ने उसके सर पर हाथ फेरते हुए कहा, "बिटवा तुम बदरीपरसाद को कैसे जानत हो?"

"बस यों ही... सुना था उन्होंने आत्महत्या की थी इसलिए जिज्ञासा थी मन में..."

वृ द्ध हड़बड़ा गया, अपने पोपले मुँह से बोला, "न... नई बिटवा... लोगन ने बात फैलाई हती कि ऊ जान समझकर नदी में डूब गया... आतमहत्या कर लई...। पर बाद में घाट के पुजारी से पतौ पड़ौ कि ऊ को पैर फिसल गयो हतो... वो तैरवो नहीं जानतो हतो सो बहौ चलौ गयो... पंडज्जी पुकारत रह गये वा बखत..."

वृ द्ध की आँखें नम हो गयी थीं...

सुनकर परेश के दिल पर पड़ा वर्षों पुराना बोझ हट गया था।

...सब लोग इकट्ठे हो गये थे पंचायत मैदान में... सरपंचजी के साथ परेश बैठा था। सरपंचजी ने सारी हकीकत उन लोगों के सामने रखते हुए कहा, अब आप लोग ही बतायें क्या करना है?

महेन्द्र के एक रिश्तेदार ने प्रतिप्रश्न किया, "लेकिन हम इसकी बात पर कैसे विश्वास कर लें?"

सरपंचजी के चेहरे पर क्रोध का भाव झलकने लगा। परेश ने उनके कन्धे पर हाथ रखकर शान्त रहने का इशारा किया और कहने लगा, "आप लोग ही बतायें इसमें मेरा क्या फायदा हो सकता है...बल्कि मेरी तो नौकरी चली जायेगी..."

"वही तो...! फिर आप क्यों हमारा भला चाह रहे हो...?"

"अपनी जन्मस्थली का कर्ज जो मुझ पर था, वही उतार रहा हूँ... मैं बद्रीप्रसादजी का बेटा हूँ जिन्होंने वर्षों पहले इसी नदी में जलसमाधि ले ली थी... मैं नहीं चाहता आप लोग जल के बिना समाधि लेने को मजबूर हो जाएँ और ये गाँव उजाड़ हो जाए..." उसकी आँखें भर आयीं थी। खुद को बदरीप्रसाद का बेटा कहने में अब कतई शर्मिन्दगी नहीं हो रही थी।

सब हैरत से उसे देख रहे थे। सरपंचजी आश्चर्यचकित थे... थोड़ा रुककर वह बोला, "आप लोगों का जो भी निर्णय हो मुझे कल सुबह तक बता देना..." कहकर वह अपनी गाड़ी की ओर चल दिया।

*एफ-१, प्रोफेसर कॉलोनी, शिवपुरी - ४७३५५१*

**मोबा. ०९४०६९८०२०७**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंजनी शर्मा

# प्रभात स्वप्न

यूँ तो पूरी बालकनी से ही बगीचा नज़र आता था पर बालकनी के इस कोने में पता नहीं क्या आकर्षण था जो वह सुबह की चाय यहीं पीती थी। इतनी लम्बी-चौड़ी बालकनी जिसमें चन्दू ने छोटी सी बैठक व्यवस्था भी कर रखी थी, उसकी चौड़ी मुंडेर पर बैठकर सुबह की चाय पीना उसे दिन भर के लिए ऊर्जा से भर देता था।

बालकनी के इस कोने से फुदकी का घोंसला साफ नज़र आता था। आज शायद फुदकी अभी तक सोकर नहीं उठी थी। उसने मुंडेर पर बैठे हुए ही बालकनी के खम्भे से लिपटे मोगरे के झुरमुट में झाँकते हुए सोचा।

फुदकी घोंसला तैयार कर रही थी, अब जल्दी ही छोटे-छोटे चूजों के चहकने की आवाज़ सुनाई देगी। फुदकी पालतू नहीं थी। अभी कुछ ही दिनों से उसकी आवाजाही शुरु हुई थी, शायद इस भीड़ भरे शहर के बीचों-बीच इस सरकारी अस्पताल के स्टाफ क्वार्टर की हरियाली ने उस नन्हीं गौरेया को भी आकर्षित कर लिया था।

पर सिर्फ स्टाफ क्वार्टर में ही नहीं, हरियाली तो पूर परिसर में फैली हुई थी। यदि इस अस्पताल से बाहर निकल कर



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दो कदम दूर जाकर ही देखें तो कोई भी नहीं कह सकता कि सीमेंट-कांक्रीट के समन्दर में उसने कोई हरा-भरा द्वीप देखा है।

अस्पताल के आस-पास भले ही कितना भी शोर हो परन्तु अस्पताल के छोटे से प्रवेश द्वार के भीतर शायद इन सारी आवाज़ों का प्रवेश निषेध था। इस बड़े से प्रांगण में अस्पताल और उसके ऊपर स्टाफ क्वार्टर व नर्सों के लिए होस्टल। बीच में लम्बा-चौड़ा बगीचा था, जहाँ कुछ मौसमी फूलों के पौधे, कुछ गुलाब, कुछ नागचम्पा और कई पुराने नीम के पेड़ थे। उनकी छाया तले मरीजों के रिश्तेदार अस्पताल के बोझिल वातावरण से कुछ देर के लिए राहत पाते। दो साल पहले उसने एक बेलिया मोगरा भी लगाया था जिसकी लम्बी होती बेल को चन्दू ने बालकनी पर चढ़ा दिया था। बालकनी के खम्भे से लिपटे मोगरे की खशबू पूरे घर में बिखरी रहती थी। इसी मोगरे की बेल के झुरमुट में नन्हीं गौरेया फुदकी ने अपने घोंसले की नींव रखी थी।

जब से फुदकी आई थी रोज चाय पीते हुए फुदकी के क्रिया-कलापों को देखना उसकी दिनचर्या का हिस्सा बन गया था। सुबह के उस थोड़े से हिस्से के बाद उसका दिन उसका अपना कहाँ रहता था, वह तो पूरा मरीजों के नाम ही रहता था। यही तो उसे अच्छा भी लगता था। उसकी जिन्दगी से यदि अस्पताल, दवाइयों और मरीजों को हटा दें तो मात्र शून्य ही बचेगा। यही तो कहता है चन्दू। और चन्दू के इस कथन पर वह हमेशा की तरह मुस्कुरा भर देती थी। वह जानती थी कि किसी बात का जवाब देना यानी कि एक लम्बी-चौड़ी बहस को जन्म देना था। आखिर बचपन से वह चन्दू को जानती थी और चन्दू उसे। पिताजी ने उसकी देखभाल के लिए चन्दू को उसके पास छोड़ रखा था जो कि मात्र नौकर नहीं था, समय-समय पर घर का बड़ा-बुजुर्ग होने का फर्ज़ भी अदा करता था। जब भी पिताजी राजधानी से यहाँ आते तो चन्दू उसकी शिकायतों का पुलिन्दा पिताजी के सामने रख देता था। उसे चन्दू की इस बात पर गुस्से के बजाए प्यार ही ज्यादा आता था। माँ की म त्यु के बाद पिताजी की राजनीतिक सक्रियता के चलते उसे बच्ची से बड़ा करने वाला भी तो चन्दू ही था। सच भी है शायद चन्दू ना हो तो वह ब्लैक टी पर ही दिन निकाल दे।

पर चन्दू को भी तो उसके साथ-साथ अस्पताल के सारे मरीजों की फिक्र रहती थी। किसे क्या तकलीफ है? कौन कब डिस्चार्ज होगा? किस मरीज के घरवाले उसका ध्यान नहीं रखते। वह सब जानता था। घर में दो लोगों के नाममात्र के काम से फुरसत पाकर वह मरीजों व उनके साथियों का दु:ख-दर्द अपने ठहाकों से कम करने की कोशिश करता था।

वह कई बार चन्दू को टोकती थी उसके ठहाकों के लिए कि यह अस्पताल है, यहाँ पर हो-हल्ला करना ठीक नहीं। मरीजों को परेशाली हो सकती है।

इस पर चन्दू का जवाब होता - "भला हँसने से भी किसी को परेशानी हो सकती है। बेबी, तुम भले ही डॉक्टर हो पर तुम्हें कुछ नहीं पता। इंसान हँसता रहे तो मरने में भी कोई तकलीफ नहीं होती।"

चन्दू का यह दर्शन उसकी समझ में नहीं आता और बहस तो चन्दू से की ही नहीं जा सकती थी।

शुरू-शुरू में फुदकी भी चन्दू के ठहाकों से डर जाया करती थी। पर अब तो शायद उसे भी चन्दू के ठहाकों की आदत सी पड़ गई थी। चन्दू ने भी फुदकी के लिए दाने-पानी की व्यवस्था कर दी थी, फुदकी के घर में अब नन्हें मेहमान जो आ गये थे।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चन्दू के कामों में घर के साथ फुदकी की देखभाल भी जुड़ गई थी। इस नन्हीं गौरेया को फुदकी नाम भी चन्दू का ही दिया हुआ था। रोज फुदकी के घोंसले को निहारने के बाद भी उसे सारी खबरें, चन्दू से ही मिलती थीं, "आज फुदकी के बच्चों ने आँखें खोली, आज नन्हा घोंसले से गिर गया था। आज बिल्ली बच्चों की ताक में घूम रही थी। अब तो नन्हें और छोटू दोनों के पंख भी आ गए हैं। अब कुछ ही दिनों में दोनों उड़ना सीख जायेंगे।" कहते-कहते चन्दू अनमना सा हो जाता।

पिछले कई दिनों से चन्दू के ठहाके कम से हो गये थे और वह खोया-खोया सा रहता था। वैसे तो मुस्कान उसके स्वयं के होंठो पर भी कम ही आती थी पर जब से अस्पताल की इस पुरानी इमारत को गिराकर यहाँ बहुमंजिला पार्किंग बनाये जाने की बात सामने आई है तब से वह भी खुद को अनमना सा महसूस कर रही थी।

इस बार जब पिताजी आए, तब पिताजी से उसकी कहा-सुनी भी हो गई। अबके तो चन्दू भी पिताजी के बदले उसके साथ था। पिताजी से उसने कहा भी – "बाबा, यदि आप चाहो तो अस्पताल की इमारत नहीं टूटेगी, अस्पताल यहीं रह सकता है। आपके ही मन्त्रालय का काम है।"

"मैं जानता हूँ, यहाँ अस्पताल की इमारत के साथ कितनी खुली जमीन है। करोड़ों की जमीन बीच शहर में एक अस्पताल ने रोक रखी है और पूरा शहर पार्किंग के लिए परेशान है, गाड़ियाँ खड़ी करने को ही जगह नहीं है। तुम खुद ही सोचो।" पिताजी ने तर्क दिया।

"शहर में पार्किंग की जगह नहीं है, ठीक है। पर क्या यही उपाय बचा है?" हताशा से उसने कहा।

"पर बेबी, तुम्हें क्या तकलीफ है? अस्पताल तो तुम्हारा यहीं पर रहेगा। कई मंजिले पार्किंग के ऊपर। एक तुम्हारे ही कहने पर तो पार्किंग के ऊपर अस्पताल की अनुमति दिलाई है। वरना विरोधी तो इस मुद्दे को भी उछाल रहे हैं।" पिताजी का जवाब था।

"अस्पताल तो आप यहीं रहने दे रहे हो, पर इस शहर को भी जी लेने दो। ये हरियाली साँस लेने के लिए भी छोड़ दो।" चन्दू ने गुज़ारिश की।

इस बहस का नतीजा निश्चित था। वह मायूस हो गई। वह जानती थी कि पिताजी ने वही किया है जो उन्होंने एक बार तय कर लिया। पिताजी के मंत्रित्व के विराट् आभामण्डल के सामने एक अदने से अस्पताल का अस्तित्व ही क्या? जाते वक्त उसका व चंदू का पिताजी से अबोला ही रहा। मुँह अन्धेरे ही पिताजी वापस राजधानी के लिए निकल गये। पर वो खुद और चंदू अस्पताल के जल्द ही बदलने वाले हालात को लेकर सहज नहीं हो पा रहे थे।

सुबह चाय पीते हुए रोज की तरह बालकनी का वह कोना मन को सुकून नहीं दे पा रहा था। रह-रह कर फुदकी के घोंसले पर उसकी नजर जा रही थी। इस सबसे बेखबर फुदकी अभी-भी घोंसले में अपने बच्चों के साथ दुबकी हुई थी। मोगरा भी रोज जैसी ही अपनी खुशबू बिखरे रहा था।

बालकनी के दूसरे कोने में बैठा हुआ चन्दू अपनी ठण्डी हो चुकी चाय को और ठण्डा कर रहा था। वह अपनी चाय का कप मुंडेर पर रख कर तख्त पर लेट गई। पिछली रात के घटनाक्रम से सिर अभी तक भारी था। विचारों की उधेड़बुन में पलकें कब नींद में डूब गई उसे पता ही नहीं चला।

नींद की गहराई में वह समझ ही नहीं पा रही थी कि वह कहाँ है? कभी उसे दूर से फुदकी के बच्चों की किलकारी सुनाई दे रही थी। कभी पिताजी की गाड़ी का कर्णकटु हॉर्न चीख रहा था।

चन्दू नीम के पेड़ पर चढ़ा बैठा था। पेड़ के तने पर रेंगती हुई दीमक उसकी ओर बढ़ रही


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by.IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थी और चन्दू दीमक को देखकर ठहाके लगा रहा था। उसके ठहाके धीरे-धीरे दूर होते जा रहे थे। कुछ डरावने हाथ मोगरे की बेल को खींच रहे थे और मोगरा अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जी-जान से खम्भे को जकड़े था। खम्भा बालकनी के ढहते छज्जों को थामने की कोशिश में लगा था।

फुदकी का घोंसला गिरने को था। उन डरावने हाथों की परछाई से बचती हुई फुदकी अपने बच्चों के साथ अपने घोंसले को मजबूती से जकड़े थी। उसके बच्चे अपने कोमल पंखों से उड़ नहीं पा रहे थे।

सब कुछ एक दूसरे में गड्ड-मड्ड हो रहा था। वह एक सिरे को पकड़ने की कोशिश करती तो दूसरा हाथ से फिसल जाता। आँखें फाड़-फाड़ कर देखने के बाद भी कुछ नजर नहीं आ रहा था।

अस्पताल की इमारत की ईंटें एक-एक कर गिरती जा रही थीं।

जब वह वापस जाग्र त अवस्था में लौटी तो वह पसीने से लथपथ थी। उसने देखा, फुदकी उठकर अपने कार्य-कलापों में व्यस्त है। चन्दू अभी तक उसी कोने में बैठा ठंडी चाय सुड़क रहा है।

सुबह के सपने सच होते हैं। कहीं ये सपना भी तो... यह सोचते ही उसका सिर घूमने लगा। उसने सुना था कि बुरा सपना देखने पर, वह बुरा सपना किसी को सुना देने से उसका बुरा फल नष्ट हो जाता है।

वह झटके के साथ उठ खड़ी हुई पर वह तय नहीं कर पा रही थी कि अपना सपना किसे सुनाए, चन्दू को या फुदकी को।

*१९९, साकेत नगर, इन्दौर*
*मोबा. ९८२७४-४४०६०*


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजकिशोर बाजपेयी 'अभय'

# भिखारी का अर्थशास्त्र

मोक्षदायिनी शिव की जगत् प्रसिद्ध नगरी वाराणसी को कौन नहीं जानता? धार्मिक हिन्दू तो अपनी मृ त्यु की कामना हेतु भी वाराणसी नगरी को ही पंसद करते हैं क्योंकि मान्यता है कि जो यहाँ प्राण त्यागता है उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसी नगरी में जब अनिकेत को, जो एक बड़ी कम्पनी का मुख्य कार्यपालन अधिकारी है, कुछ पदों की रिक्तियों पर साक्षात्कार कर नियुक्ति देने हेतु आना हुआ तो उसके मन में सहज प्रसन्न्ता प्रस्फुटित हो उठी थी। हो भी क्यों न? वह इसी नगरी में पला बड़ा व शिक्षित हो, देश की राजधानी की एक प्रतिष्ठित कम्पनी का प्रमुख अधिकारी बन गया था। उसे याद है जब उसने "भिक्षावृ त्ति मानवता का अभिशाप'' विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया था।

वही अनिकेत जब वाराणसी रेल्वे स्टेशन, जहाँ भारत भर के विभिन्न प्रांतों के हजारों लोग प्रतिदिन काशी दर्शन व गंगा स्नान को आते हैं, ट्रेन के वातानुकुलित कोच से उतरा तो सामने ही उसको याचक की मुद्रा में 'बाबू! एक रुपया दे दो - भगवान् आपका भला करेगा'' कहते एक व्यक्ति का स्वर सुनाई पड़ा। जैसे



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही उसने भिखारी पर नजर डाली उसकी संवेदनायें भिखारी के कल्याण हेतु द्रवित हो उठीं। उसकी अंतरात्मा संकल्पित हो उठी उस भिखारी को रोजगार प्रदान करने के लिये क्योंकि वह भिक्षाव त्ति को मानवता का अभिशाप मानता था। अनिकेत ने भावपूर्ण स्वर में उस अनाम भिखारी को कहा 'आपका एक रुपये से क्या भला होगा?' चलो, तुम भीख माँगना छोड़ नौकरी कर लो। नौकरी तुम्हें मैं दूँगा, तीन हजार रुपये माह पर आज से ही चपरासी की नौकरी शुरू कर सकते हो। कहते-कहते अनिकेत के स्वर में अधिकारों का दर्प प्रकट हो ही गया। भिखारी पर मानों अनिकेत की बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। भिखारी ने उसे घूरकर देखा और अपनी ही रौ में पुन: कहा 'बाबू! देना है तो दे दो। काहे फोकट समय खराब करते हो, फिर कुछ रुक कर बोला - 'जब एक रुपया नहीं है तो तीन हजार कैसे दोगे? और फिर तीन हजार रुपये से होगा क्या?' वह भिखारी अपने आप बड़बड़ाने सा लगा था। अनिकेत अचकचाये, कुछ-कुछ स्तम्भित.... उन्हें लगा कि कहीं वे कुछ गलत तो नहीं कह गये। उन्होंने अपने अधिकार सुलभ व्यवहार को सरल रूप में रख उस भिखारी से कहा 'भाई! कुछ गलत तो नहीं कह दिया मैंने तुमसे।' भिखारी ने उपेक्षा से कहा कि गलत ही तो कहा है .....क्या तुमसे तीन हजार माह की नौकरी के लिये ही इस प्लेटफार्म पर भीख माँगता हूँ..... क्या होगा तुम्हारी तीन हजार की नौकरी से? अभी जो मैं भीख माँगता हूँ उसमें समय की कोई पाबन्दी नहीं है, जब इच्छा है तब माँगता हूँ, कोई रोक-टोक नहीं है। दिन भर में आठ-दस हजार की भीड़ रोज उतरती है, उससे मुझे एक हजार-आठ सौ की भीख सहज प्राप्त हो जाती है। पुलिस व अन्य खर्चे के दो सौ काटकर पॉच-छह सौ बच ही जाते हैं। फिर तुम्ही बताओ क्या होगा तुम्हारी तीन हजार रुपल्ली से, जो महीने भर की ताबेदारी के बाद मिलेंगे। यह कहते हुये भिखारी ने फिर अपना वाक्य दोहराया कि ' बाबू! देना हो तो दो-चार रुपये जो भी इच्छा हो दे दो, नहीं तो समय बरबाद न करो।

भिखारी के दिये अर्थशास्त्र के ज्ञान से अनिकेत अवाक थे। वे सोचते ही रह गये कि भिखारी क्यों सही है? और वह कहाँ गलत हुये जा रहे हैं, उन्हें उत्तर नहीं सूझा।

*बी २/२१, सेक्टर -४, विनय नगर*
*ग्वालियर ४७४०१२*
*मो. ०९४२५००३६१६*


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. भारती पुजारी

# शब्दान्तर

"दीदी, प्रायवेट परीक्षा फार्म मिलना तो बन्द हो गये हैं। मैंने कई जगह से फार्म लाने की कोशिश की, परन्तु सब बेकार।" कोई बात नहीं, मैंने मुस्कुराते हुए आगे कहा - "लेकिन आश्चर्य है, कल ही तो मेरी शुची से बात हुई थी। उसने तो नहीं बताया कि फार्म मिलना बन्द हो गये हैं?" "दीदी, मैंने तो हरसम्भव स्थान पर प्रयास किया। फिर भी नहीं मिला।"

मोहन भाई के इस उत्तर को सुनकर, हम लोगों ने इस विषय को यहीं बन्द कर दिया। फिर इधर उधर की न जाने कितनी ही चर्चाएँ कीं। समय में मनोरंजन के पंख लगाकर, हमने उसे एक घंटे ऊपर उड़ा दिया था। इस चर्चा से सन्तुष्ट व प्रसन्न होकर, समय के पाबन्द मोहन भाई, अपने कमरे पर जाने के लिए उठ खड़े हुए। हम सभी ने उनसे शीघ्र ही दुबारा आने का आग्रह किया। अभी वे दरवाजे पर ही पहुँचे होंगे कि मैंने अपनी माँ के कान में कहा - "अम्मी, इन्होंने फार्म के रुपये भी वापस नहीं किये। फार्म नहीं मिला, तो कम से कम रुपये तो वापस करने चाहिए थे न?" माँ ने कहा - हाँ सच? मैं तो भूल ही गई थी। माँ ने धीरे से ही मेरी बड़ी दीदी से पूछा - "क्यों प्रभा, मैं माँग लूँ रुपये?" मुझसे न रहा गया और मैंने पुनः माँ के कान में कहा - "मम्मी, माँगना हो तो जल्दी करो। वरना मोहन भाई जा चुके होंगे।" तभी अचानक मोहन भाई ने कमरे में प्रवेश किया, और मुस्कुराते हुए मम्मी से बोले - "आन्टी, ये रुपये तो मैं लौटाना ही भूल गया - लीजिये।" माँ ने सस्नेह कहा - "कोई बात नहीं, रुपये तुम्हारे पास रहें या हमारे पास? तुम भी तो घर के ही हो।" "वो तो है ही आन्टी। तभी तो न आपको माँगने की याद रही, न मुझे देने की। अब चलता हूँ - नमस्कार।" कहकर मोहन भाई फुर्ती से बाहर चले गये। हम सब एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कुरा दिये।

*लक्ष्मीनारायण मन्दिर, ग्वालियर - ४७४००९*


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. आशारानी

# संस्कार

नदी के किनारे सुरम्य वादियों के बीच बसा था, गाँव अमरपाटन। औसत आबादी के इस गाँव में पढ़े-लिखे, नौकरी-पेशे -लोगों के साथ-साथ मेहनतकश किसान और मजदूर भी अपना घोंसला बनाये थे। चौधरी रायबहादुर उस क्षेत्र के सरपंच उसी गाँव में रहते थे। चौधरी रायबहादुर ऊपरी मन से तो बड़े मिलनसार और प्रजापालक प्रतीत होते थे पर थे बड़े संकीर्ण विचारों वाले। निम्न वर्ग के साथ उठने-बैठने या भोजन-पानी के अवसर पर बहाने बनाने में माहिर थे।

गाँव अमरपाटन में ही चमार जाति की एक विधवा रहती थी। नाम था कमला। कमला को अपने विधवा होने का उतना अफसोस नहीं था जितना घर में पुत्री के न होने का। क्योंकि उसके दो बेटे थे - बड़ा बीस वर्ष का रमेश, छोटा चौदह वर्ष का राकेश।

कमला सोचती थी, बेटे का विवाह कर दूँ तो घर में बहू के रूप में एक बेटी आ जाए।

धूमधाम से बेटे का विवाह हुआ, बहू आई, दो-चार दिन में रीति-रिवाज निभाकर अपने मायके चली गई। दूसरी विदाई पर


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे आए दो दिन भी नहीं हुआ था कि रमेश दुर्घटना का शिकार हो गया और उसकी मृत्यु हो गई।

विवाहित पुरुष की शव-यात्रा के पूर्व पत्नी की माँग का सिन्दूर उतारने की रस्म के अवसर पर कमला दहाड़ उठी - "जो अपने पति की सुहागन होने का सुख उठा न सकी, वह उसकी विधवा कैसी?"

रीति-निभाकर दाह संस्कार पूरा किया गया। लेकिन कमला के मन में प्रश्न बार-बार उठता रहा। पिण्डदान के अवसर पर सिन्दूर चढ़ाने की बारी आई, उसी समय कमला ने अपनी 'ममता' और 'नारी शक्ति' को जुटा कर एक बहुत बड़ा फैसला किया।

पिण्डदान कर रहे राकेश को कमला ने आदेश दिया - "ये जो तुम्हारी भाभी है, तुम्हारी भाभी थी, जो सिन्दूर तुमने गणपति को अर्पित किया वही सिन्दूर उसकी 'माँग' में भरकर उस पर चादर डालो।" नासमझ नाबालिग राकेश कुछ समझ न पाया। लेकिन गाँव के जो लोग एकत्र हुए थे सभी हक्के-बक्के रह गए। खबर सरपंच चौधरी के पास तक पहुँची। सरपंच आए और कमला से कहने लगे - "तुम यह क्या पागलपन कर रही हो? जो औरत इतनी मनहूस है कि आते ही अपने पति, तुम्हारे पुत्र को खा गई, उसी को छोटे एकमात्र बचे पुत्र के गले बाँधना चाहती हो?"

कमला ने उत्तर दिया - "चौधरी, में पढ़ी-लिखी तो नहीं हूँ, लेकिन बाप-दादा के जमाने से सुनती आ रही हूँ कि जीवन और मृत्यु ऊपर वाले के हाथ है! तो भला इसमें इस बेचारी का क्या दोष?

यह तो अभी सुहागन भी नहीं हुई थी तो विधवा कैसी...? (थोड़ा साँस लेकर) इसकी माँ ने खूब सजा सँवारकर मेरी झोली में इसे डाला था, तो मैं वैसा ही इसे देखना चाहती हूँ इसकी देखभाल के लिए रमेश न सही राकेश तो है।"

इतना कहकर कमला राकेश की ओर मुड़ी और कहने लगी - "यदि तुमने इसकी माँग में सिन्दूर नहीं डाला तो मैं तुम्हें अपनी जायदाद से बेदखल कर दूँगी...!"

राकेश सबकुछ सुनता रहा और समझने की कोशिश करता रहा। वहीं १५ वर्षीय विधवा बहू सास को बिसूरती रही और मन ही मन इस सास रूपी माँ को धन्य कहती रही।

चौधरी ने एलान किया अगर कमला इसी जिद पर अड़ी रही तो यहाँ कोई भी भोजन नहीं करेगा। इतना सुनते ही नदी के किनारे डेरा डाले सन्त-समाज के लोग इकट्ठा हुए और कमला को हिम्मत और ममता की देवी का दर्जा देने लगे। सराहना करते हुए बोले "माता तुम धन्य हो, श्रेष्ठ हो। ऊँचे कुल में जन्म लेके ही कोई श्रेष्ठ नहीं होता, श्रेष्ठ होता है कर्म करके।

जिस श्रेष्ठता और ज्ञान की तलाश में हम साधुजन वन-वन भटक रहे हैं उसका पुण्य लाभ तुम इसी झोपड़ी में रहकर ले रही हो.... धन्य हो माता!"

वे बोले तुम संस्कार कराओ, इस द्वार पर भोजन करके हम भी कुछ पुण्य अर्जित करेंगे।

सन्त समाज की वाणी सुनकर राकेश और उसकी माँ फूले नहीं समाए।

एक तरफ जहाँ त्रयोदश संस्कार हुआ, वहीं दूसरी ओर विवाह संस्कार।

*हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विभाग*
*रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर*
*मोबा. ९९०७८८३२२३*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनीता पाठक

# खुशियों के फूल

"रश्मि आंटी...." ये पुकार सुनकर लगा जैसे ये मेरा सात समुन्दर पार बेंकूवर में किसी अपने की मिठास भरी पुकार का भ्रम मात्र है। परदेस में भला मुझे कौन पहचानता है। लेकिन अपने भ्रम को भ्रम साबित करने के लिए पीछे मुड़कर देखना तो जरूरी ही था न।

पीछे मुड़कर देखा तो एक ३०-३५ वर्षीय सौम्य सी युवती मुझे पुकार कर मुझे जी भर अपनी ओर देख लेने के लिए प्रेरित कर रही थी। चेहरा कुछ जाना पहचाना लगा। दूर यादों के जंगल में रिश्तों की बेल सुलझाने की कोशिश की तो लगा ये तो "लिपि-सी" है और फिर तुरंत पहचानने की उलझन सुलझ गई। हां ये तो लिपि ही है। मेरे चेहरे पर पहचानते ही आई मुस्कान को देखकर वो अपनी वही पुरानी मुस्कान लेकर बाहें फैलाकर मेरी ओर बढ़ी। इतने बरसों से मिलने की चाह ने मेरे कदम भी तेजी से उसकी ओर बढ़ा दिये। वो दौड़कर मेरी बाहों में सिमट गई। हम दोनों की बाहों की कसावट ये जतला रही थी कि आज के इस मिलन की खुशी जैसे सदियों की तपस्या का परिणाम हो।

बीते दिनों की बातें तो होती रहेंगी। हम दोनों इस दुनिया में हैं, एक दूसरेके करीब हैं इस एहसास को जीने के लिए बस गले



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगे रहना ही सबसे जरूरी लगा। मेरी बहू मिताली पास ही खड़ी खुश थी थी कि माँ को दूर देश में कोई अपना परिचित तो मिला वरना माँ तो हमारी खुशी के लिए इन अनजानों के बीच हमारे साथ घूमती रहती हैं।

"बेटी कहाँ चली गई थी तुम अचानक? कितना सोचती थी मैं तुम्हारे बारे में। जाने कैसी होगी? कहाँ होगी मेरी लिपि? कुछ भी तो पता नहीं चला था तुम्हारा।" मेरे हजार सवाल थे और लिपि की बस गर्म आंसुओं की बूंदे मेरे कंधे पर गिरती हुई जैसे सारे जवाब बनकर बरस रही थी। मेर सीने से लगी लिपि मुझे जी भर कर महसूस कर लेना चाहती है हां यह सपना नहीं हकीकत है।

मैंने लिपि को बाँहों से दूरकर सामने किया, देखना चाहती थी कि इस वक्त के अन्तराल ने उसे कितना कुछ बदलाव दिया।

"आंटी मेरा भी एक पल नहीं बीता होगा आपको बिना याद किये। दुख के पलों में आप मेरा सहारा बनी। मैं इन खुशियों में भी आपको शामिल करना चाहती थी। मगर कहाँ ढूँढ़ती? बस ईश्वर से प्रार्थना ही करती थी कि कभी तो आंटी से मिल सकूँ और आज मेरी यह प्रार्थना स्वीकार हो गई।" भरे गले से लिपि कहती जा रही थी।

"लिपि ये मेरी बहू मिताली है, इसकी जिद पर ही मैं कनाडा आई हूँ वरना मिलने के लिए मुझे अगला जनम लेना पड़ता।" मैंने मुस्कुराकर माहौल को सामान्य करना चाहा।

"माँ के चेहरे की खुशी देखकर ही मैं समझ गई हूँ कि आप दोनों एक दूसरे से मिलने के लिए कितनी बेताब रही हैं। आप अपना एड्रेस और फोन नम्बर दे दीजिये। मैं माँ को आपके घर ले आऊँगी। फिर आप दोनों जी भर कर गुजरे दिनों को याद कीजियेगा।" मिताली ने नोटपेड निकालते हुए कहा।

"भाभी, मैं हाउस वाइफ हूँ। मेरा घर इस 'प्रेस्टीज मॉल' से अधिक दूरी पर नहीं है। आंटी को जल्दी ही मेरे घर लाइयेगा। मुझे आंटी से ढेर सारी बातें करनी हैं।" मुझे जल्दी घर बुलाने के लिए उतावली होते हुए उसने एड्रेस और फोन नम्बर लिखते हुए मिताली से कहा था।

"माँ लगता है आपके साथ बहुत लम्बा समय गुजारा है लिपि ने। बहुत खुश नजर आ रही थीं आपसे मिलकर।" रास्ते में कार में मिताली ने जिक्र छेड़ा।

"हाँ लिपि का परिवार ग्वालियर में हमारा पडौसी था। ग्वालियर में रिटायमेन्ट तक हम पाँच साल रहे। ग्वालियर की यादों के साथ लिपि का भोला मासूम चेहरा हमेशा याद आता है। बेहद शालीन लिपि अपनी सौम्य, सरल मुस्कान और आदर के साथ बातचीत कर पहली मुलाकात में ही प्रभावित कर लेती थी।"

"हम जब स्थानान्तरण के बाद ग्वालियर शासकीय आवास में पहुँचे तो पास ही दो घर छोड़कर तीसरे क्वार्टर में चौधरी उनकी पत्नी और लिपि रहते थे। चौधरी जी का अविवाहित बेटा लखनऊ में सर्विस कर रहा था और एक बड़ी बेटी शादी के बाद झाँसी में रह रही थी। बहुत कुछ कहकर भी मैं बहुत कुछ छिपा गई लिपि के बारे में।"

रात को एकान्त में यादों के परदे पर लिपि के साथ गुजारे पल समय के सारे बंधन तोड़ मेरे इर्दगिर्द आ गए थे। उन दिनों लिपि का अधिकांश समय अपनी बीमार माँ की सेवा में ही गुजरता था। फिर भी शाम को मुझसे मिलने का समय तो निकाल ही लेती थी। मैं भी मिसेज चौधरी का हालचाल लेने जब तब उनके घर चली जाती थी। श्रीमती चौधरी की बीमारी की गम्भीरता ने उन्हें असमय ही जीवन से मुक्त कर दिया। दस वर्षों से रक्त कैंसर से जूझ रहीं श्रीमती चौधरी जब स्वर्ग


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिधारीं तब लिपि एम.ए. फाइनल में थी। असमय माँ का बिछड़ना और सारे दिन के एकान्त ने उसे गुमसुम कर दिया था। हमेशा सूजी पथराई आँखों में नमी समेटे वो अब शाम को भी बाहर आने से कतराने लगी थी। चौधरी जी ने ऑफिस जाना आरम्भ कर दिया था। उनके लिए घर तो रात्रि भोजन और रैन बसेरे का ठिया मात्र ही रह गया था। ऑफिस जाकर मन बहलाना उनके लिए ठीक ही था। उन्हें तो इस तरह जीवनसाथी के बिछुड़ने के गम से उबरने में मदद ही मिल रही थी। लेकिन लिपि को देखकर लगता था कि वह इस गम से उबरने की जगह दुख के समन्दर में और डूबती जा रही है। सहमी पीली पड़ती लिपि, दुखी ही नहीं भयभीत भी लगती थी। उसकी आँखों में सिमटा भय मुझे उसकी मनोदशा के लिए चिन्तित किये हुए था। आते जाते दी जा रही दिलासा उसे जरा भी गम से उबार नहीं पा रही थी। दुखते जख्मों को कुरेदने और सहलाने के लिए उसका मौन इजाजत ही नहीं दे रहा था।

मुझे लिपि में अपनी दूर ब्याही बेटी अर्पिता की छवि दिखाई देती थी।फिर भला उसकी मायूसी मुझसे कैसे बर्दाश्त होती? मैंने उसकी दीर्घ चुप्पी के बावजूद उसे अधिक समय देना शुरू कर दिया था। मुझे पूरी उम्मीद थी कि मेरा प्यार दुलार उसे दुख के दायरे से जरूर बाहर ले आएगा।

“बेटी लिपि अब तुम अपने पापा की ओर ध्यान दो। तुम्हारे दुखी रहने से उनका दुख भी बढ़ जाता है। जीवनसाथी खोने का गम तो है ही, तुम्हें दुखी देखकर वो भी सामान्य नहीं हो पा रहे हैं। अपने लिए नहीं तो पापा के लिए तो सामान्य होने की कोशिश करो।” मैंने प्यार से लिपि को सहलाते हुए कहा था।

पापा का नाम सुनते ही उसकी आँखों में घ्रृणा को जो सैलाब उफना था उसे मैंने साफ-साफ महसूस किया था। कुछ न कह पाने की घुटन में उसने मुझे अपलक देखा और फिर फूट-फूटकर रोने लगी। मेरे कुछ न छुपाने की विनती पर हिचकियाँ लेते हुए वो अपने अन्दर छुपी सारी दास्तान कह गई - “आंटी मैं मम्मी के दुनिया से जाते ही बिल्कुल अकेली हो गई हूँ। भैया और दीदी तेरहवीं के बाद ही अपने-अपने शहर चले गए थे। माँ की लम्बी बीमारी के कारण घर की सारी व्यवस्थाएं नौकरों के भरोसे बेतरतीब ही थीं। मैंने जब से होश सम्भाला, पापा को मम्मी की सेवा और दवाओं का ख्याल रखते देखा और कभी-कभी खीझकर अपनी बदकिस्मती पर चिल्लाते भी। मेरे बड़े होते ही मम्मी का ख्याल रखना स्वत: ही मेरी दिनचर्या में शामिल हो गया। पापा के झुंझलाने से आहत मम्मी मुझसे बस यही कहती थी - बेटी मैं बस तुम्हें ससुराल विदा करने के लिए ही अपनी साँसे थामे हूँ। वरना अब मेरा जीने को बिल्कुल भी जी नहीं करता।” लेकिन मम्मी मुझे बिना विदा किये ही दुनिया से विदा हो गई।

पापा को मैंने पहले कभी घर पर शराब पीते नहीं देखा था। लेकिन अब पापा घर पर ही शराब की बोतल लेकर बैठ जाते हैं। जैसे जैसे नशा चढ़ता है पापा का बड़बड़ाना भी बढ़ जाता है। इतने सालों से दबाई अतृप्त कामनाएं, शराब के नशे में बहककर बडबडाने में और हावभावों से बाहर आने लगती है। पापा के अनुसार उन्होंने अपनी सारी जवानी एक जिन्दा लाश को ढोने में बर्बाद कर दी। अब वे भरपूर जीवन जीना चाहते हैं रिश्तों की गरिमा और पवित्रता खोकर। वासना और शराब के नशे में डूबे हुए पापा मुझे बेटी के कर्तव्यों के निर्वहन का पाठ पढ़ाते हैं। मेरे आस-पास अश्लील माहौल बनाकर मुझे अपनी तृप्ति का साधन बनाना चाहते हैं। वे कामुक ब्रह्मा बने मुझे पाने का प्रयास करते हैं और मैं सरस्वती बन खुद


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को इस बड़े से घर में बचाती छुपाती भागती हूँ। नशे में डूबे पापा हमारे पवित्र रिश्ते को भुलाकर खुद को मात्र नर और मुझे नारी के रूप में ही देखते हैं।

अब तो उनके हाथों में बोतल देखकर मैं खुद को एक कमरे में बन्द कर सुरक्षित कर लेती हूँ। वे बाहर बैठे मुझे धिक्कारते और उकसाते रहते हैं और कुछ देर बाद नींद और नशे में निढाल हो सो जाते हैं। और सुबह उठकर नशे में बोली गई आधी अधूरी याद बदतमीजी के लिए मेरे पैरों में गिरकर रो-रोकर माफी माँग लेते हैं और जल्दी ही घर से बाहर चले जाते हैं।

ऊँचे परकोटे के सुरक्षित घर में, मैं सबसे सुरक्षित रिश्ते से ही असुरक्षित रहकर किस तरह दिन काट रही हूँ ये मैं ही जानती हूँ। इस समस्या का समाधान मुझे दूर-दूर तक नजर नहीं आ रहा है। कहकर चुप हो सिर झुकाए बैठ गई थी लिपि।

मैं सुनकर आश्चर्यचकित थी कि चौधरी जी इतना भी गिर सकते हैं। लिपि अपने अविवाहित भाई रौनक के पास भी नहीं जा सकती थी झाँसी में उसकी दीदी अभी संयुक्त परिवार में अपनी जगह बनाने में ही संघर्षरत थी, वहाँ लिपि का कुछ दिन भी रह पाना मुश्किल था।

घबराकर लिपि आत्महत्या जैसे कायरतापूर्ण अंजाम का मन बनाने लगी थीं। लेकिन आत्महत्या पीछे बहुत से अनुत्तरित सवाल छोड़ जाती है, ये समझदार लिपि जानती थी। मैंने उसे चौधरी जी और रौनक के साथ गम्भीरतापूर्वक बात कर उसके विवाह के बाद एक खुशहाल जिन्दगी का ख्वाब दिखाकर उसे दिलासा दी। अब मैं उसे अधिक से अधिक समय अपने साथ रखने लगी थी।

मुझे अपनी बेटी की निश्चित डेट पर हो रही ऑपरेशन द्वारा डिलिवरी के लिए बैंगलोर जाना था। मैं चिन्तित थी कि मेरे यहाँ से जाने के बाद लिपि अपना मन कैसे बहलाएगी।

पापा की ओछी हरकतों से बचना तो उसने स्वतः सीख लिया था। कभी कभार आते जाते चौधरी जी से मैं कहना नहीं भूलती थी कि आप लिपि का मन बहल जाए इसलिए उसे उसकी बहन, मौसी, बुआ जैसे नजदीकी रिश्तेदारों के यहाँ क्यों नहीं भेज देते ? वो बहुत दुखी रहती है।

"बस उसके एक्जाम होते ही भेज दूँगा।" कहकर बात समाप्त हो जाती थी। ये एक संयोग ही था कि मेरे बैंगलोर जाने से एक दिन पहले रौनक लखनऊ से घर आया । मेरे पास अधिक समय नहीं था इसलिए मैं उसे निःसंकोच अपने घर बुला लाई। एक अविवाहित बेटे को पिता की विचलित मानसिकता और पिता की छत्र छाया में पिता से असुरक्षित बहन का दर्द कहना जरा मुश्किल ही था। लेकिन लिपि के भविष्य को देखते हुए रौनक को सब कुछ थोड़े में समझाना जरूरी था। सुनकर उसका मन आक्रोश आँसुओं में बह चला था। मैंने उसे समझाइश दी थी कि वो क्रोध और जोश में नहीं बल्कि ठण्डे दिमाग से ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचे जो लिपि के लिए सुरक्षित और बेहतर हो।

अगली सुबह मैं अकेली बैंगलोर के लिए रवाना हो गई थी और जाकर अर्पिता की डिलिवरी पूर्व की तैयारी में व्यस्त हो गई थी कि तीसरे दिन मेरे पतिदेव ने फोन पर बताया कि "तुम्हारे जाने के तीसरे दिन रौनक लिपि को झाँसी भेजने के लिए स्टेशन गया था कि पीछे घर पर अकेले बैठे चौधरी जी की हार्टअटेक से मृत्यु हो गई। रौनक को अन्दर से बन्द घर में पापा टेबल से टिके हुए कुर्सी पर बैठे मिले। बेचारे चौधरी साहब का कुछ पढ़ते हुए ही हार्टफेल हो गया। लिपि और उसकी बहन भी आ गए हैं। चौधरी साहब का अन्तिम संस्कार हो गया है और मैं कल एक माह के टूर पर पटना जा रहा हूँ।"

पत्नी विछोह और अनैतिक लालसाओं की अग्नि ने स्वस्थ चौधरी जी को चिता की अग्नि में


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समाप्त कर दिया। उनके निधन को लिपि के लिए सुखद मोड़ कहूँ या दुखद - ये तय नहीं कर पा रही थी मैं। तब फोन भी हर घर में कहाँ होते थे। मैं कैसे दिलासा देती लिपि को ? बेचारी लिपि कैसे.... कहाँ.... रहेगी अब ? उत्तर को ईश्वर और वक्त के हाथों सौंपकर मैं अर्पिता और उसके नवजात नन्हू में व्यस्त हो गई थी।

तीन माह बाद ग्वालियर आई तो चौधरी साहब के उजड़े घर को देखकर मन में एक टीस पैदा हुई। पतिदेव ने बताया कि रौनक चौधरी साहब की तेरहवीं के बाद घर के अधिकांश सामान को बेचकर लिपि को अपने साथ ले गया है। मैं उस वक्त टूर पर था इसलिए जाते वक्त मुलाकात नहीं हो सकी और उनका लखनऊ का एड्रेस भी नहीं ले सका।

लिपि मेरे दिलोदिमाग पर छाई रही लेकिन उससे मिलने की अधूरी हसरत इतने सालों बाद बेंकुवर में पूरी हो सकी।

सोमवार को नून शिफ्ट ज्वाइन करने के लिए तैयार होते समय मिताली ने कहा - माँ मेरी लिपि से फोन पर बात हो गई है। मैं आपको उनके यहाँ छोड़ देती हूँ। आप तैयार हो जाइये। वो आपको वापस यहाँ छोड़ते समय घर भी देख लेंगी।

लिपि अपने अपार्टमेन्ट के गेट पर ही हमारा इंतजार करती मिली। मिताली के ऑफिस के लिए रवाना होते ही लिपि ने कहा - आंटी आपसे ढेर सारी बातें करनी है। आइये पहले इस पार्क में धूप में बैठते हैं। मैं जानती हूँ कि आप तबसे आज तक न जाने कितनी बार मेरे बारे में सोचकर परेशान हुई होंगी।

"हां लिपि, चौधरी जी के गुजरने के बाद तुम ग्वालियर से लखनऊ चली गई थीं फिर तुम्हारे बारे में कुछ पता ही नहीं चला। चौधरी साहब की अचानक म त्यु ने तो हमें अचंभित ही कर दिया था। ईश्वर की लीला बड़ी विचित्र है।" मैंने अफसोस के साथ कहा।

"आंटी जो कुछ बतलाया जाता है वो हमेशा सच नहीं होता। रौनक भैया उस दिन आपके यहाँ से आकर चुप, पर बहुत आक्रोशित थे। पापा ने रात को शराब पीकर भैया से कहा कि अब तुम लिपि को समझाओ कि ये माँ के गम में रोना धोना भूलकर मेरा ध्यान रखे और अपनी पढ़ाई में मन लगाए।"

सुनकर भैया भड़क गए थे पापा के मेरे साथ ओछे व्यवहार पर उन्होंने पापा को बहुत खरी खोटी सुनाई और कलियुगी पिता के रूप में उन्हें बेहद धिक्कारा। बेटे से लांछित पापा अपनी करतूतों से शर्मिंदा बैठे रह गए। उन्हें लगा कि ये सारी बातें मैंने ही भैया को बताई हैं।

भैया की छुट्टियाँ बाकी थीं लेकिन वे मुझे झाँसी दीदी के पास कुछ दिन भेजकर किसी अन्य शहर में मेरी शिक्षा और हॉस्टल का इंतजाम करना चाहते थे। वो मुझे झाँसी के लिए स्टेशन पर ट्रेन में बिठाकर वापस घर पहुँचे तो दरवाजा अन्दर से बन्द था। बार-बार घंटी बजाने पर भी जब दरवाजा नहीं खुला तो भैया पीछे आँगन की दीवार फाँदकर अन्दर पहुँचे तो पापा कुर्सी पर बैठे सामने मेज पर सिर के बल टिके हुए मिले। उनके सीधे हाथ में कलम था और बाँए हाथ की कलाई से खून बह रहा था। भैया ने उन्हें बिस्तर पर लिटाया। तब तक उनके प्राण पखेरू उड़ चुके थे। भैया ने डॉक्टर अंकल और झाँसी में दीदी को फोन कर दिया था। पापा ने शर्मिंदा होकर आत्महत्या करने के लिए अपनी बाँए हाथ की कलाई की नस काट ली थी। और फिर मेरे और भैया नाम एक खत लिखना शुरू किया। होश में रहने तक वे लिखते रहे। जिसमें वो केवल हमसे माफी माँगते रहे। उन्हें अपने किये व्यवहार का बहुत पछतावा था।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे अपनी गलतियों के साथ और जीना नहीं चाहते थे। पत्र में उनकी आत्महत्या को हृदयाघात से स्वाभाविक मौत के रूप में प्रचारित करने की विनती थी।

भैया ने डाक्टर अंकल से भी आत्महत्या का राज उन तक ही सीमित रखने की प्रार्थना की और छुपाकर रखे उनके सुसाइड नोट को एकबार मुझे पढ़वाकर नष्ट कर दिया था।

हम दोनों भाई बहन शीघ्र ही लखनऊ चले गए थे। मैं अवसादग्रस्त हो गई थी इसलिए आपसे भी कोई संपर्क नहीं कर पाई। भैया ने मुझे बहुत हिम्मत दी और मनोचिकित्सक से परामर्श किया। लखनऊ में हम युवा भाई बहन को भी लोग शक की द ष्टि से देखते थे। लेकिन तभी अंधेरे में आशा की किरण जागी। भैया के दोस्त केतन ने भैया से मेरा हाथ माँगा। सच कहूँ, तो आंटी केतन हाथ थामते ही मेरे जीवन में खुशियों का प्रवेश हो गया। केतन बहुत सुलझे हुए व्यक्ति हैं। मुझे मेरे दुख और एकाकीपन से उबरने में उन्होंने बहुत धैर्य से प्ररित किया। मेरे दुख का स्वाभाविक कारण वे मम्मी-पापा की असामयिक म त्यु ही मानते हैं।

मैंने अपनी शादी का कार्ड आपके पते पर भेजा था। लेकिन बाद में पता चला कि अंकल के रिटायरमेन्ट के बाद आप लोग वहाँ से चले गए थे। मैं और केतन दो वर्ष पहले ही कनाडा आए हैं। अब मैं पिछली जिन्दगी की सारी कड़वाहटें भूलकर केतन के साथ बहुत खुश हूँ। बस एक ख्वाहिश थी - आपसे मिलकर अपनी खुशियाँ बांटने की। वो आज पूरी हो गई। आपके कंधे पर सिर रखकर रोयी हूँ आंटी। खुशी से गलबईयाँ डालकर आपको भी आनन्दित करने की चाह आज पूरी हो गई। लिपि यह कहकर गले में बाहें डाल मुग्ध हो गई थी। मैंने उसकी बाहों को खींच लिया उसकी खुशियों को और करीब से महसूस करने के लिए।

आंटी में पिछली जिन्दगी की ये कसैली यादें अपने घर की दरोदिवार में गूँजने से दूर रखना चाहती हूँ इसलिए पहले आपको यहाँ पार्क में ले आई थी ताकि खुले आसमान के तले मेरी ये कहानी आपको सुनाकर अनन्त में विलीन हो जाए, मेरे खुशहाल घरोंदे में न समाए। आइए आंटी अब चलते हैं। "होम माय स्वीट होम" में। केतन भी आज जल्दी आते ही होंगे खास आपसे मिलने के लिए। लिपि ने उत्साह से कहा और मैं उठकर मंत्रमुग्ध सी उसके पीछे चल दी उसकी बगिया में महकते खुशियों के फूल चुनने के लिए।

*ई-१६ कुशलनगर गांधीनगर*
*ग्वालियर (म.प्र.)*
**मोबा. ९४२५७-७५२०७**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीमती आशा पाण्डेय

# और अम्मा जीत गयीं

आज फिर अम्मा को फोन लगाया। भाभी ने फोन उठाया। बताया - अम्मा सुबह से भागवत सुनने निकली हैं, अब तक नहीं आई हैं।

मैं इस हफ्ते तीन बार अम्मा को फोन लगा चुकी हूँ पर अम्मा हैं कि नदारद रहती हैं घर से।

यूँ तो अम्मा की याद आना एक स्वाभाविक सी बात है पर जब से पिताजी गुजरे हैं अम्मा की याद और भी ज्यादा आती है। पर अम्मा हमेशा मन्दिर या सत्संग में गयी हुई ही मिलती हैं। हालांकि अम्मा की ईशभक्ति हम लोगों के लिए कोई नयी बात नहीं, फिर भी यूँ उनकी ईश भक्ति हम सबको कभी-कभी बहुत परेशान कर डालती थी। सुबह उठते ही अम्मा नित्यप्रति पूजा पाठ करती मिलतीं। हम सबको भी अम्मा के नियमों का पालन करना पड़ता। कितनी भी भूख लगे, बिना स्नान और ध्यान के वह रसोई में न जाने देतीं और बिना भगवान् को भोग लगाये थाली भी न छूने देतीं। मेरे स्कूल या ट्यूशन से लेट हो जाने पर अम्मा घबराकर भगवान् से कितनी प्रार्थना कर चुकीं होतीं। यूँ तो मैं पढ़ाई में अव्वल थी, कक्षा में हमेशा अच्छा स्थान पाती, पर अम्मा इन



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सबसे बेखबर पूरा श्रेय भगवान् को दे डालतीं। हम भी अम्मा को टेस्ट करते रहते। जब भी कोई काम न बनता तो अम्मा को कहते - "कहना जरा अम्मा अपने भगवान् से।"

अम्मा समझाती प्यार भरी डाँट से - "भगवान् का मजाक न बनाया करो, भक्त तो भगवान् को भी जीत लेते हैं। तुम सबको हमें भगवान् ने ही दिया है!"

नवदुर्गे के व्रत से लेकर सूर्य-चन्द्र ग्रहण तक अम्मा के अनिवार्य व्रत उपवास होते। बिना थके, बिना कुछ खाये पिये पूरे घर का काम आम दिन की तरह ही तन्मयता से निपटातीं। पिताजी कहते "क्यूँ इतना कष्ट देती हो शरीर को?" अम्मा कहतीं - "भगवान् की काया है।" हम अम्मा को समझाते - "अम्मा ये सूर्य-चन्द्र ग्रह-नक्षत्र हैं, हमारी प्ृथ्वी की तरह। साइंस ने इसका पूरा अध्ययन कर लिया है।" पर अम्मा को हमारा विज्ञान समझ में नहीं आता और हमें उनकी भगवान् और उस पर उनका अटूट विश्वास।

कड़ी मेहनत और लगर के बाद आखिर मैंने पी.एम.टी. का टेस्ट पास कर ही लिया। परिणाम आते ही अम्मा ने हमें मन्दिर दौड़ाया और पूरा श्रेय फिर भगवान् को दे डाला। हम भाई-बहन नाक भौं सिकोड़ कर उनकी बात मान तो लेते पर उनकी आस्था हमेशा हमारी समझ से परे रहती। शायद पिताजी की वजह से जो अक्सर यह कहा करते - "कर्म करो डटकर, फल खाओ छककर" या "मन चंगा तो कठौती में गंगा"। ऐसा लगता कि जब फल कर्म में ही निहित है तो भक्ति का अतिरिक्त बोझ क्यों उठाया जाये। इसीलिये इन सबसे दूर रहना ही अच्छा लगता। हालांकि हम शायद नास्तिक तो नहीं थे पर अम्मा की तरह घोर आस्तिक भी नहीं।

अम्मा बतातीं - बेटा मेरे बाबू बहुत परेशान हुए मेरी शादी को लेकर क्योंकि पण्डितों ने शादी खूब लेट बताई थी। पर मैंने सोलह सोमवार व्रत किये तो मेरी शादी सोलह साल में ही हो गयी। हम मुस्कुराते रहते। अम्मा बतातीं - अदिति, तू पहली सन्तान हुई तो तेरी दादी बहुत नाखुश हुईं क्योंकि तेरी चार बुआ पहले से ही थीं। पर मैंने पुत्र कामना के लिये पूरे साल व्रत रखे। देख तेरे भगवान् ने दो भाई दिये। तेरी दादी बहुत खुश हुई।

हम जब भी परीक्षा देने जाते, अम्मा भगवान् के आले पर खड़ा करके रोली लगातीं, प्रसाद देतीं। हालांकि हमें वहाँ दो सेकण्ट खड़ा रहना भी भारी लगता, हम फटाफट हाथ जोड़ते प्रसाद लेते और निकल जाते। अम्मा पीछे से कहना न भूलतीं - "प्रबिसि नगर कीजै सब काजा, हृदय राखि कौसलपुर राजा।"

अम्मा की यादों ने बहुत देर तक सोने न दिया। जबसे पिताजी गुजरे, अम्मा मन से बहुत थकी-थकी एवं बुझी-बुझी सी रहतीं। बस मन्दिरों में ही बैठी रहतीं। कभी इस मन्दिर में कभी उस मन्दिर में। भोजन भी एक ही समय लेतीं।

पिताजी की बरसी भी आने वाली है, जाऊँगी समझाऊँगी अम्मा को, इसीलिये फोन किया था भाभी को कि अगले हफ्ते आ जाऊँगी। काम की आपाधापी तो लगी ही रहती है। एकाध हफ्ता रहूँगी अम्मा के पास जाकर - जरूर। बस एक-एक दिन काटे नहीं कट रहे थे। कब शनिवार आये। छुट्टी मैंने ले ही ली है हॉस्पिटल से।

आज जरा जल्दी ही घर से निकलना था पास के कस्बे में जननी सुरक्षा कैम्प का आयोजन होने जा रहा था। बस चप्पल डाल ही रही थी कि फोन की घंटी बजी फोन भाभी का था। बोलीं - "अम्मा की तबियत खराब है। बी.पी. बढ़ गया है, सो हॉस्पिटलाइज्ड कर दिया है।" मेरी एकदम से न जाने क्यों रुलाई सी फूट पड़ी। वो कहते हैं न 'एक तो रुआंसी ऊपर से भैया आ गये।' वैसे भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अम्मा की चिन्ता, इसलिये इस खबर ने मेरी बैचेनी बहुत बढ़ा दी। जैसे तैसे सामान बाँधा और रवाना हो गयी। शाम तक घर पहुँच गई। देखा वहाँ जाकर भाभी बिजी थीं और दुःखी भी। फ्रेश होकर मैं अस्पताल आ गयी। भैया ने बताया - "अम्मा को ब्रेन हेमरेज हो गया है।"

कन्डीशन क्रिटिकल थी। मैं एक डॉक्टर ही थी। बीमारी की गम्भीरता जानती थी। भैया को समझा कर घर भेज दिया। दो दिन से जाग रहा था वो। अम्मा कोमा में थीं। ऑपरेशन करना सम्भव न था। खतरनाक हो सकता था। बैठ गयी वहीं स्टूल डालकर देखले लगी माँ को।

अम्मा वैसे ही गोरी चिट्टी, कुछ झटके स्वास्थ्य वाली पलंग पर शान्त मुद्रा में लेटी थीं। चलचित्र से कुछ दृ श्य और संवाद मन को झकझोर जाते। घर में जब भी कोई ज्योतिषी आता तो वे हाथ दिखातीं। हमेशा यह पूछतीं - ये बताओ मैं इनसे पहले मरूँगी या नहीं। वो कहता - हाँ, हाँ बहन, आप तो पहले ही जाओगी। माँ बहुत खुश होतीं। कहतीं - भगवान् ने मेरी सब सुनी है। देखना, इन्हीं के कन्धों पर जाऊंगी चढ़कर। अम्मा कितने ही जोड़े बिछुये, चूड़ी, बिन्दी-सिन्दूर दान किया करतीं। कहतीं - सुहाग अमर रहता है। उनको गहरा विश्वास था कि वो पिताजी से पहले ही जायेंगी। यहाँ तक कि जर्जर चूनर भी अलग निकाल कर रख ली थी चढ़ावे की। कहती थीं - ये चूनर उढ़ा देना ऊपर से। यूँ चूनर सुहागन को डाली जाती है। हमें आदत थी - अम्मा की ऐसी बातें सुनने की जो केवल बक-बक के अलावा कुछ नहीं लगती थी हमें।

अचानक अम्मा को हिचकी-सी आने लगी और श्वासों की गति कुछ तीव्र हो गयी। तुरन्त डॉक्टर साहब आ गये और उनकी धीमी होती हुई श्वास को गति देने के लिए हार्ट पर प्रेशर देने लगे। हम हक्के-बक्के सिटपिटाये से खड़े थे। आज पहली बार हम भी उस भगवान् से प्रार्थना कर रहे थे जिनसे अम्मा हमेशा किया करती थीं। प्राणों की भीख और कुछ मोहलत माँग रहे थे हम सब। पर नहीं सुनी गयी हमारी फरियाद और अम्मा हमें छोड़कर चली गयीं।

सभी रिश्तेदार इकट्ठे हो गये थे। छोटा भैया भी कनाडा से आ गया था। अर्थी की तैयारी की जा चुकी थी। विधवा स्त्री के अनुरूप साजो सामान के साथ। पर मेरा मन अत्यधिक व्यथित और व्याकुल हुआ जा रहा था। अम्मा की एक और हिदायत रह-रह कर मेरे मन मस्तिष्क पर हथौड़े मार रही थी। चार दिन बाद ही पिताजी की भी पहली बरसी थी। अम्मा कहा करती थीं - "बेटा जो स्त्री पति की मृ त्यु के एक वर्ष के अन्दर उसके पीछे जाती है वो भी सुहागन कहलाती है।"

मैंने अपने टूटे हुए मनोबल को इकट्ठा किया और अम्मा की वो पीले गोटे वाली लाल जर्जर चूनर लाकर सफेद कफन को हटाकर, उनपर डाल दी। सारे रिश्तेदार हतप्रभ हो मेरी इस धृ ष्टता को धिक्कारने लगे। उन्हें क्या पता, सामाजिक परम्पराओं से ऊपर होती हैं मानवीय संवेदनाएँ।

जा रही थीं अम्मा मुस्कुराकर। मानो कह रही हों - "देखा बेटा, मेरा भगवान् और मेरा विश्वास।"

लगा, कुछ क्षणों को ही सही, अम्मा पुनर्जीवित हो गले से आ लगी हैं।

*दीनदयालनगर, ग्वालियर - २०*
*मोबा. ९४२५३४१४८१*


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जयन्ति पापाराव

*तेलुगु कहानी*

# दो अंतर्लोक

दो अंतर्लोक..... एक दूसरे के अंतर्लोक की ओर देखते हुये. .... देखते हुये ढूँढ़ते हुये, ढूँढ़ते हुये..... एक पुराने अखबार वाला रमेश, दूसरा उद्योगपति भूमेन्द्र चौधरी।

मुम्बई, आलीशान बंगला.... सुबह दस बजे। बंगले के सामने चारों ओर फूल के गमले, ऐसे सुहावने फूलों के बीच घुमावदार कुर्सी पर भूमेन्द्र चौधरी बैठा हुआ था। बेटे फैक्टरी चले गये, बच्चे स्कूल चले गये। पत्नी और बहू नौकरों से कामकाज करवा रहे हैं। पिछले छः महीनों के सारे अखबार जम गये। उन्हें बेचने के उ`श्य से चौध ारी ने रमेश को बुलाया।

'क्या भाव है?

तेलगु पच्चीस.... अंग्रेजी पैतीस पैसे।'

'कितने में देंगे?'

पैतीस पैसे..., पैतालीस पैसे....।

'तीस....चालीस पैसे कर लो बाबूजी' आप जैसे बड़े बाबू से... हम क्या कह सकते हैं।'

'ले लो... ले लो'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'छोटे-छोटे अखबार काम नहीं आयेंगे, बाबूजी उन्हें निकाल देता हूँ। बड़े अखबार ही गिनूँगा, आपके सामने ही गिनूँगा, फिर सब गिनकर ही पैसे दूँगा।' भूमेन्द्र ने कुछ नहीं कहा। सिर्फ सर हिलाया। रमेश सीढ़ियों के नीचे से अखबार के बण्डल ले आ रहा था।

'देखो! जानते हो ये बाबूजी कौन है? करोड़पति, फिर भी बेकार अखबारों के लिए भी सौदा कर रहा है। एक पैसा भी छोड़ा नहीं। ये रमेश कौन है? गरीब है। कंठ फाड-फाड़ कर घर-घर घूम रहा है। पाँव थकने तक गली-गली घूमता रहता है। इसको पॉच पैसे भी नहीं छोड़ें तो कैसे जियेगा। इस बाबूजी को इतना भी तरस नहीं। पैसा चाहिये, तरस नहीं चाहिये।' अपने आप में सोचते हुये रमेश बड़े अखबारों को अलग कर रहा है।

घुमावदार कुर्सी पर बैठकर भूमेन्द्र समुन्दर की ओर देख रहा था। 'रमेश, तुम मेरी ओर, घोर घ णा एवं क्रोघभरी द ष्टि से देख रहे हो। पाँच पैसे भी नहीं छोड़ा इसलिये देख रहे हो, है न? जानते हो मैं कौन हूँ? समुन्दर। समुन्दर क्या करता है? नदियाँ आकर उसमें मिल जाती हैं। फिर भी बरसात की बूँदों को छोड़ देता है क्या? नदी कैसे बनी? उसका प्रवाह कैसे बना? समुन्दर कैसे बना? बरसात की बूँदों से ही, है न? मैं भी बिल्कुल वैसा ही हूँ। छोटे-छोटे सिक्कों को छोड़ देंगे तो करोडों रुपये कैसे जम जायेंगे। शायद पसीने की बूँदों को लूटने से ही करोडों में पैसा जमा कर पायेंगे, ऐसा भूमेन्द्र मन-ही-मन सोचते हुये रमेश की ओर देख रहा था।

रमेश छोटे-छोटे अखबारों को एक ओर फेंक कर बड़े-बड़े अखबारों को जमा कर रहा था।

मन-ही-मन सोच रहा था कि ये बाबूजी क्यों ऐसे देख रहा है? मैंने सोचा - सिर्फ चोर ही ऐसा देखते हैं? ये बाबू भी वैसे ही देख रहा है। कहीं उसने मेरी चोरी का काम पहचान तो नहीं लिया? अगर पहचाना तो मेरी खूब पिटाई होगी। मै कितना धोखा दे सकता हूँ, पाँच या दस रुपये। बस इतना ही। ये बाबू तो करोड़ों को लूटता है। छोटा आदमी करे तो कहेंगे धोखेबाजी, अपराधी। बड़े बाबू करें तो व्यापार, कारोबार, विकास। रमेश कौन है? रद्दी के कागज, पुराने समाचारपत्र खरीदकर उनको कवर बनाकर किराना दुकानों में बेचनेवाला, दस सालों से यही काम। अब यह भी नहीं चलेगा, आज इसकी माँग नहीं है। पालीथीन कवर आने के बाद कौन इन्हें खरीद रहा है? सेठ लोग जो निर्धन बने हैं वे ही खरीद रहे हैं। ये बाबूजी बूढ़ा है लेकिन बूढ़ा नहीं लग रहा है। ऐसा लग रहा है कि खून के लिये रोटी खाने के बजाय खून ही पी रहा है। कितने पैसे, कितनी सत्ता, कितना नाम कमाया है? लोग कहते हैं इसके पास ... बहुत ताकत है।' सोचते हुये रमेश पत्रिकाओं को जमा रहा था। भूमेन्द्र अनदेखा सा रमेश की ओर देख रहो है।

'रमेश छोटे पैमाने पर धोखाबाजी का काम कर रहा है, मैं बड़े पैमाने पर कर रहा हूँ। हर कोई अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार धोखेबाजी का व्यवहार कर रहा है। लुटेरी व्यवस्था माने यही है। सागर क्या कर रहा है? मैं तो संघर्ष नहीं कर रहा हूँ लेकिन चुपचाप शांतिपूर्वक वही काम कर रहा हूँ। भूख और ऋण भार से तड़पनेवाला व्यक्ति क्या कर सकता है। पहले आत्महत्या तो नहीं कर सकता। अपनी सारी सम्पत्ति को बेच डालेगा। उस मार्ग में से शांतिपूर्वक थोड़ी सी भूमि कमाई। भूख और ऋण भार से तड़पने वाले व्यक्ति को, उस पीड़ा के अलावा भूमि और सम्पत्ति का मूल्य कैसे मालूम होता है। ऐसी स्थिति में कुछ पैसे फेंककर थोड़ी सी जमीन खरीद ली। कागजात आसानी से जल जाते हैं न, इसलिये हमारे सह-कर्मचारियों की सहायता से चुपचाप और थोड़ा सा संग्रह किया, नहीं.....नहीं, कब्जा कर लिया।

कोई भी कुछ भी लिखे कागजात विरोध किये बिना मान लेते हैं। अत: उन लोगों के सहयोग से नये रिकार्डों का स ृ जन करवाकर और कुछ प्राप्त किया ....नहीं ....नहीं, हड़प लिया। वे भी सुधार गये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और मैं भी सुधर गया हूँ। इसी कारण से हमारा उद्धार करने वाले शासन को ही हम सत्ता में रहने देते हैं जबकि हम ही लोग शासन सत्ता में रहते हैं, रह रहे हैं। हम लोग जो व्यापार कर रहे हैं, शोषण का व्यापार है। इसे प्रगति कहकर शासक वर्ग और व्यवसायी वर्ग प्रचार करते हुये अपनी उन्नति को साध लेते हैं। प्रजा को विश्वास दिलाते रहते हैं। रमेश भी कितना धोखा दे रहा है।.... ऐसा मन-ही-मन सोचते हुये खुशी के साथ भूमेन्द्र रमेश की ओर देख रहा है।

रमेश, भूमेन्द्र की ओर ऐसा देख रहा था जैसे देख ही न रहा हो।

'अगर इस बाबू ने मेरे धोखेबाजी के व्यवहार को पहचान लिया तो मेरी पिटाई खूब होगी। कुर्ता पकड़कर पिटाई करे तो दूसरा कुर्ता भी नहीं। तेलगु अखबारों को छाँट लिया, अब अग्रेजी पत्रिकाओं को भी जल्दी-जल्दी छाँटना है।' मन-ही-मन ऐसा सोचते हुये अंग्रेजी अखबारों को अलग करने लगा।

हे रमेश! अब यह सुस्पष्ट हुआ है कि सब लोग लूटते हैं और लूट रहे हैं..... लोग कहते हैं कि दुनियाँ में कई सत्य हैं। लेकिन ऐसी बातों पर मैं विश्वास नहीं कर सकता। सिर्फ दो ही सत्य हैं... जिन पर मेरा विश्वास है, एक है निवेश दूसरा है श्रम। इस सन्दर्भ में साम्राज्यवादी भाई लोग कई सालों से यही कह रहे हैं कि दो सत्यों में से सिर्फ एक ही सत्य का अस्तित्व होना चाहिये। दूसरे को दुनिया से भगा देना चाहिये। दूसरे को दुनिया से भगा देने के लिये आन्दोलन करना है और कर भी रहे हैं। उनका कहना है कि मात्र निवेश सत्य ही रहना चाहिये। शोषण प्रथा को ही व्यापार मान रहे हैं। हम सब उनकी बातों का आदर कर रहे है, अमल कर रहे हैं। उनके द्वारा दिखाये गये सत्य मार्ग पर चलने के कारण हमारी भलाई हो रही है। अत: इस सत्य के प्रति हमारा प्रगाढ़ विश्वास है, प्रेम है। इसलिये इसका अनुसरण करते हुये उन्नति को प्राप्त कर रहे हैं। आज तक दोनों सत्य को मानने वाले हम लोग, आज एक ही सत्य को चाहते हैं। इसके लिये महान प्रयत्न कर रहे हैं। अरे ...रमेश तुम जो धोखे का काम कर रहे हो, इसे देखते समय अनजान में ही ये सारे विचार मेरे मन में आ गये।' ऐसा भूमेन्द्र ने, रमेश से तो नहीं कहा लेकिन मन-ही-मन सोचने लगा।

'पूरा हो गया?'

'हाँ, बाबू जेब से गिनने की मशीन निकाल कर गिन लीजिये।

'कितने आये'

तेलगु चार सौ पचास और अंग्रेजी चार सौ तिरसठ'

'गलत, हिन्दी पाँच सौ पचास। अंग्रेजी भी उतने ही हैं।'

'समाचारपत्र आपके सामने ही हैं न। गिन लीजिये।'

'छोटे अखबारों को निकालकर बाहर फेंक दिया। बीच-बीच में दो-तीन बड़े अखबारों को जोड़कर मामूली जैसे दिखाई देने के लिये एक कर दिया। इसलिये कम पड़ रहे हैं।

'एक क्षण रुकिये। अभी पेशाब करके आऊँगा। फिर आपके सामने ही गिन लूँगा। मैं आठवीं कक्षा में तीन बार पढ़ चुका हूँ। मेरी गिनती गलत नहीं होगी।' ऐसा कहकर रमेश बाहर चला गया।

भूमेन्द्र चौधरी घुमावदार कुर्सी पर गोल चक्कर मारते हुये रमेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं। कुछ समय तक देखकर गेट के पास जाकर देखा, रमेश दिखाई नहीं दिया। भूमेन्द्र चौधरी जोर से हँसते हुये गेट के पास बहुत समय तक खड़ा रहा।

*अनुवादक : प्रो. एस. शेषारत्नम*
*विशाखापट्टनम ५३००१७*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विमल कुमार हाजरिका

*असमी कहानी*

# सोने की बाँसुरी

रात दस बजते ही सरुकण तैयार हो गया। पत्नी ने कहा कि लोग रात को सो जाते हैं और तुम रोज निशाचर बन कर निकल जाते हो न? पत्नी को चुप रहने का संकेत देकर उसने पत्नी से कानफूसी कर कहा - 'दरवाजा अच्छी तरह से बन्द करके रखना, चार बार दस्तक देने के बाद ही खोलना। याद रहेगा ना? जा, अब सो जा। दीपक बुझा दो। बस, वह चुपचाप निकल गया। बूढ़ा डाङरीया (भगवान्) को समरण कर प्रणाम किया। उसने बुढा डाङरीया की कथा सुनी है परन्तु देखा नहीं उसे अब तक। गाँव के बुजुर्गों से सुना था कि नामघर के सामने जो रात की रानी है, उस पर रहते हैं बूढ़ा डाङरीया। स्वच्छ धवल धोती पहने खराँऊ की खट्-खट् आवाज लगाकर निकलते हैं। उनके भय से रात को लोग बहुत कम निकलते हैं, किन्तु उसकी बात उल्टी है। वह दिन को घर से नहीं निकलता। ढेंकी से चावल निकालना, जंगल से लकड़ी जुगार करना, खाना पकाना आदि सब काम पत्नी करती है। दोपहर तक वह खर्राटे लेकर सोता रहता है। उसका स्वभाव परिवर्तन करने के लिये पत्नी रेवती कोशिश कर रही है,



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परन्तु अबतक सफलता का मुँह नहीं देखा। वह भी अपने भाग्य पर निर्भर रहती है।

गाँव के संकीर्ण मार्ग पर आगे बढ़ते समय उसने सोचा- आज कहाँ किसके घर जायेगा? जीवेश्वर भक्त की कथा का तुरन्त स्मरण हुआ। शास्त्र पाठादि में भक्त के समकक्ष गाँव में कोई नहीं है। गाँव में चाहे सामूहिक हो या किसी के घर में, जीवेश्वर भक्त के बिना काम नहीं चलता है। भक्त का स्वर भी बहुत मधुर है, कठस्थ भी हैं, बहुत सी बातें। भागवत के श्रीकृष्ण-गोपी का पद आप आकर्षक ढंग से लोगों को सुनाते हैं। सरुकण को याद आया जब उसके मित्र मदन के घर में जीवेश्वर भक्त को भागवत पाठ करने के लिये आमंत्रित किया था। भक्त आकर विनम्र भाव से सबको दण्डवत् प्रणाम कर पूछा- बाप-बांधवों और माताओ। आप लोग आदेश कीजिये, कौन सा खण्ड पढ़ा जाय।' मदन ने कहा - आप ! पढ़िये, आप की इच्छानुसार। भक्त ने कहा, आज पूर्णमासी है, श्रीकृष्ण-गोपियों का क्रियाखण्ड ही पढ़ा जाय। भक्त की बात का सबने समर्थन किया। जीवेश्वर भक्त ने मधुर स्वर से पाठ करना शुरू किया। सब लोग तन्मय होकर सुन रहे थे। सरुकण को भी अच्छा लगा। गोपियों के साथ श्रीकृष्ण ने कितना न त्य-गीत किया था।

जीवेश्वर भक्त एकदम तल्लीन हो गये। सरुकण ने सोचा श्रीकृष्ण भी कम डाइल (चालाक) चीज नहीं था। गोपिओं के संग कम उत्पात नहीं किया था उसने।

उस दिन पूर्णिमा थी। बॉसों के जंगल के ऊपर से चन्द्रमा आगे बढ़ रहा था। म दु-मन्द हवा चल रही थी। सरुकण का शरीर और मन भर आया। अपनी झोली में हाथ रखकर अपने कार्य के योग्य ले गई खुरपी को टटोला। उस खुरपी के जरिये ही वह दो मुट्ठी अन्न जुगार कर सकता है। रेवती भूखी नहीं रही। पर रेवती की इस क्षुधा से उसकी क्षुधा ही अधिक है। जिस दिन रात को वह बाहर नहीं जाता उस दिन रेवती उसके पास जाकर उसको अपने बाहों में समेंट लेती हैं। वह यदि मन नहीं करता तो छोड़ती नहीं। उसकी शिकायत है कि सबको लड़के-बच्चे हुए पर उसकी गोद खाली है, उसको भी सन्तान चाहिये। सरुकण समझाता है, सुनो! यह सब ईश्वर पर निर्भर है। समय आने पर हो जायेगा। मेरी म त्यु तो नहीं हुई न? सरुकण गंभीर होकर सोच रहा था।

उसने सुना भक्त मधुर स्वर से भागवत पाठ कर रहे थे। उसने अनुमान किया कि आघोना महरी के घर में ही पाठ हो रहा है। आघोना महरी की तरह दुष्ट बुद्धि के दुर्जन लोग इस तहसील में नहीं है। धान रखने के लिये चार भण्डार ग ह हैं। बीस बीघा से भी अधिक कृषि भूमि, तालाब में मछलियाँ, विराट बगीचा, इस द ष्टि से नफुलनी गाँव में वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है। सरुकण झाड़ियों के बीच से गुजर रहा था। इतने में पालतू कुत्ता भौंक-भौंक करने लगा।

सरुकण जितना ही आघोना महरी के घर की तरफ आगे बढ़ रहा था उतना ही स्पष्ट रूप से भक्त का स्वर सुन रहा था। भक्त ने श्रीकृष्ण का रूप वर्णन करते समय उनकी बाँसुरी का वर्णन भी आकर्षक रूप से किया। बाँसुरी एकदम निर्मल सोने की है। इसकी आवाज सुनते ही गोपियाँ उनके पास दौड़ने लगती थीं। उसने सोचा-उस चमकदार बाँसुरी का वजन कितना होगा? कीमत भी शायद बहुत होगी? जीवेश्वर भक्त के सरस वर्णन को सुनकर वह रुक गया। वह तन्मय होकर सोचने लगा और एक झाड़ी की छाया में बैठ गया। भक्त बहुत जानते हैं। उसके मन में विचार आया कि उस प्रकार की एक बाँसुरी मिलने पर सबकुछ हो जाना है। बाँसुरी कहाँ मिलेगी? इसकी पता निकालना ही पड़ेगा। मिलने पर कुछ दिन-रात घूमना बन्द हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जायेगा। भक्त को ही जानकारी होगी, उनके पास जाकर पूछ लेंगे। पहले प्रार्थना विनयकर प्रयास करेगा, उससे राजी न हो तो कटार निकालना पड़ेगा। डरा-धमकाकर भी काम हासिल करना पड़ेगा। वह एक खूँखार चोर है। यह बात इस तहसील के कौन नहीं जानता परन्तु मुँह खोलने की ताकत किसी की नहीं है। उस समय उसको मच्छर काट रहा था, उठकर खड़ा हो गया। जीवेश्वर भक्त की कथा से उसका मन डावाँडोल हो गया। नहीं, आज और कहीं नहीं जायेगा। वापस घर जाना ही ठीक है। कल सुबह भक्त के पास ही जायेगा। सोने की बाँसुरी उसके मन में सिमट गई। वह वापस चला। रास्ते में शरद काल के चन्द्रमा की मायामय ज्योति का आभास होने लगा। मन कुछ हल्का हुआ। उसने सोचा ऐसे समय में ही कलिया कृष्ण ने बाँसुरी बजाकर गोपियों को उन्मादित किया था। हाँ, याद आया यमुना के किनारे पर स्थित उस कदम्ब के नीचे। भक्त भी कम नहीं है। श्रीकृष्ण और गोपियों की लीला ही उनको पसन्द है, वहाँ से ही रस उभरता है। उनके श्रोताओं में लावण्य और विरजा भी तो आती हैं। पति को खोकर लावण्य इस भर यौवन में ही विधवा हो गई है, उधर सतराम मिस्त्री की तीसरी पत्नी विरजा भी तो कम नहीं है। उमर भी कितनी हुई? चालीस भी नहीं, शरीर के अंग-अंग में सम्मोहन है। सरुकण विरजा को कैसे भूलें? उसको देखते ही इस प्रकार नजर दौड़ती है मानो बहुत दिन खली पेट में है। उसका भी मन फिसल गया था, बीच में रेवती ने आकर गोलमाल कर दिया। वह थोड़ा समय के लिये जब निकल जाता जो रेवती घर-घर जाकर खोजना शुरु कर देती। इस प्रकार सोच-विचार करते हुये घर के द्वार पर खड़ा हो गया। एक-दो करके चार बार उसने दरवाजे पर दस्तक लगा दी। पर भीतर से कुछ सारा नहीं आया। मन-ही-मन सोचा, क्या हो गया उसको? थोड़ा रुका फिर धक्का लगाया, चिल्लाना चाहता था परन्तु इतने में रेवती ने आकर दरवाजा खोल दिया। रेवती ने सरुकण के झोले की तरफ देखा। उसका हिसाब ठीक है। जिस दिन कुछ मिलता उस दिन घर में बड़ा आदमी बनता। कहता - क्या हुआ?

'छोड़ो, बकबक मत करो, सुबह जल्दी उठा देना। जीवेश्वर भक्त के पास जाना है'

'जीवेश्वर भक्त के घर फिर क्यों?

देर रात तेरे साथ बकबक करने का समय नहीं है। मैंने जो कहा वह करो। अब सो जा। इतना कहकर सरुकण ने बिस्तर पर अपना शरीर गिरा दिया परन्तु मन श्रीकृष्ण के बाँसुरी पर रहा। कितनी सुन्दर है बाँसुरी। एकदम सोने की। धीर-धीरे बाँसुरी बड़ी होती जा रही है। वहाँ से मधुर स्वर गूँज रहा है। सुबह भक्त के पास जाना है। नामघर के नागारा बजाकर भक्त बाहर निकलते हैं उससे पहले जाना है। गाँव के घर-घर में जाकर खबर करते हैं। कृष्ण भगवान की कृपा उनपर है, कृपा तो होगी ही। अनवरत उनका ही नाम लेते रहते हैं।

अँधेरे में वह तालाब में जाकर डुबकी लगाया। सुबह उठना और नहाना उसका अभ्यास नहीं है। पता नहीं क्या हुआ? उसकी आँखों के सामने सिर्फ श्रीकृष्ण की बाँसुरी है। बाँसुरी उसको चाहिये। चारों तरफ से केवल बाँसुरी का मधुर स्वर आ रहा है। सुनकर उसका मन भर जाता है। शरीर कुछ हल्का सा लगा। जीवेश्वर भक्त साधरण आदमी नहीं हैं। रेवती सो रही है। एक बार देखा पर नहीं जगाया। सो रहना ही ठीक है, उठेगी तो बकबक करना शुरु कर देगी।

मन-ही-मन कहा - तुझे भी उठने की जरूरत नहीं है। मैं कुछ न कुछ निशिचित कर ही आऊँगा। रेवती की तरफ देखने का समय उसके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पास नहीं है। उसका शरीर मन और आत्मा केवल श्रीकृष्ण की बाँसुरी पर है। भक्त के घर से निकलने के पहले ही मिलना है। वह घर से निकल कर जाने लगा। मृदु-मंद शीतल हवा उसका स्पर्श कर चली गई। उसका शरीर और मन पुलकित हो गये। वैसा अनुभव उसको पहली बार हुआ। सामने से किसी को आते देखा। नजदीक पहुँचते ही पहचान लिया-उसका दोस्त रातिया।

'क्या है रातिया? सुबह-सुबह कहाँ से आया?'

'आज हमारे खेल (दल) में भाओना हो (प्राचीन परम्परा का नाटक) रहा था।'

'मैं भी भाओना में भाओ (अभिनय) लिया था, जरासंध का। मेरी स्त्री इन सब पर ध्यान ही नहीं देती। तिरी भी कुछ समझदार होना चाहिये।'

सरुकण को हँसी आ गई। कुब्ज के साथ शरीर का बोझ न सहन कर पानेवाले रातिया ने जरासंध का अभिनय किया....।

'तू कहाँ जा रहा है।' रातिया ने पूछा।

'जीवेश्वर भक्त के पास।'

'क्या घर में कुछ करना है?'

'नहीं-नहीं, ये सब कुछ नहीं है।' सरुकण ने जाना चाहा।

'रुको ना थोड़ा। रेवती का कुछ हो रहा है क्या?'

' सरुकण को गुस्सा आया।

'नहीं' जोर से कहा।

रातिया को पता चला, सरुकण को गुस्सा आ गया। कहा-'गुस्सा मत करना। तेरी शादी होने को पाँच वर्ष हो गये। संभाई ओजा (वैद्य) को मैं जानता हूँ। आवश्यक होने पर दवा-दारू के लिये मैं भी मदद कर सकूँगा।' सरुकण ने उसकी तरफ तीव्र द ष्टि से देखा।

'तूझे बुरा लगा है न? हम दोनों बचपन में एक साथ पढ़ते थे, इसलिये कह रहा हूँ। जा, मैं भी आता हूँ।'

रातिया चल पड़ा। सरुकण को अच्छी तरह पहचानता है। न-फूलनी गाँव के सभी लोग उससे डरते हैं। एक दिन क्रोधित होकर हुदाइ की बहुत पिटाई की थी उसने।

जीवेश्वर भक्त के द्वार पर खड़ा होकर सरुकण ने एक लम्बी श्वास ली। उसको देखकर भक्त आश्चर्यचकित हो गये। इतने सुबह सरुकण चोर, उनके घर में? क्या हो गया? एक मूढ़ा देकर बैठने को कहा। सरुकण मूढ़े पर बैठ गया। भक्त ने पूछा - 'बताओ, क्यों आया?

सरुकण ने कहा - 'आघोना महरी के घर में रात को भागवत पाठ हुआ था न?'

'हाँ, हुआ था। तुमको कैसे मालूम हुआ?'

'मैं भाओना देखने गया था।' झूठ बोलकर उसने भक्त की तरफ देखा। उसकी व त्ति (चोरी) के बारे में भक्त भी जानते हैं। गाँव के सब लोग जानते हैं। पर उसके भय से कोई कुछ नहीं कहते।

'बताओ, क्या बात है?'

'कृष्ण गोसाँई की कथा कह रहे थे न? उनकी बाँसुरी के बारे में भी कहा था न?'

'कहा तो था। बाँसुरी के बिना प्रभु का वर्णन कैसे होता?'

'बाँसुरी सोने की है न? कितना वजन होगा?' असली सोने की है क्या?'

''प्रभु की बाँसुरी नकली सोने की होगी क्या?'

'वजन कितना होगा?'

'.........कितना होगा, कम-से-कम आधा किलो हो सकता है।'

सरुकण मन-ही-मन सोचा, आधा किलो, हजारों के हिसाब से भी बहुत होगा। साल भर खर्च आ जायेगा। कुछ चिन्ता नहीं। रात को घूमने की भी आवश्यकता नहीं होगी।

'क्या सोच रहे हो' भक्त ने कहा।

'भक्त की कथा से उसको होश आया। कहा - 'भक्त! मुझे वह बाँसुरी चाहिये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भक्त सरुकण की तरफ देखता रहा। पागल हो गया है क्या? जगत् पालक कृष्ण भगवान की बाँसुरी की तरफ भी नजर। ऋषि-मुनि हजारों वर्ष तप-साधना कर भी जिसको नहीं पा सकते, उनकी बाँसुरी चाहिये, इस चोर को। मन की भावना छिपाकर उन्होंने कहा - 'क्या करोगे उस बाँसुरी से?'

'भक्त! मेरी व त्ति के बारे में आप जानते हैं। किसी प्रकार प्राणों की रक्षा करता रहता हूँ। साथ और एक तो है ही। उस सोने की बाँसुरी मिलने पर कम-से-कम साल भर आराम से जी सकूँ। कृष्ण भगवान कहाँ मिलेंगे?'

'भक्त को बहुत धक्का लगा - 'कैसा मूर्ख है। जगदीश्वर से मिलना?'

'क्या हुआ भक्त! चुप हो गये। मैं संकल्प लेकर आया हूँ, प्रभु से मिलकर बाँसुरी लाने का। प्रभु कहाँ है, आप जानते हैं? कहना ही पड़ेगा।

'कैसी मुसीबत' जीवेश्वर भक्त ने मन-ही-मन सोचा। खुलकर कहा-'एक बात है सरुकण! तुम जब संकल्प लेकर आये हो, तो एक काम करो, उ ार दिशा की तरफ जाते रहो, तीन दिन तीन रात जाना पड़ेगा। जाते-जाते एक घने जंगल में प्रवेश करोगे। वहाँ एक विशाल सरोवर के किनारे एक कदम्ब व क्ष देखोगे, उस व क्ष पर प्रभु बाँसुरी बजाते हुये देखोगे'

'तब तो प्रणाम भक्त' प्रभु से मिलकर फिर आऊँगा।

सरुकण झट उठकर चल दिया। भक्त खड़े होकर उसकी तरफ देखते रहे और सोचते रहे कि कैसा मूर्ख है वह। कलयुग में ईश्वर का साक्षात् दर्शन। उससे भी बढ़कर सरुकण जैसा एक मलेच्छ चोर को। विद्रूप की हँसी आई उनको।

सरुकण उत्तर तरफ जाने लगा। पहाड़-जंगल, नदी-नहर पार होकर आगे बढ़ता रहा। कभी-कभी काँटा पाँव में चुभ जाता, खून निकल आता। परन्तु उस पर कुछ परवाह नहीं। भूख-प्यास भी लगी, कभी जंगली फल खाता और कभी झरने का पानी पीने जाता। आगे बढ़ता चला। कहीं भी रुका नहीं। उसके कान सजग रहे, बाँसुरी की मधुर स्वर सुनने के लिये। सरोबर और कदम्ब के व क्ष देखने के लिये उतावला हो गया सरुकण।

एक स्वप्न को हृदय में बाँधकर आगे बढ़ता रहा। ज्योतिष्मान कृष्ण का रूप उसकी आँखों में, सोने की बाँसुरी का मनमोहक स्वर उसके कानों में गूँज रहा था। मन में प्रश्न भी उठता है - क्या प्रभु उसको बाँसुरी देंगे? भक्त ने पाठ करते समय एक बार कहा था कि कृष्ण ने सुदामा नामक एक गरीब बालमित्र के स्वयं पाँव धोकर सोने के बिस्तर पर बिठाया और सब कुछ प्रदान किया था। प्रभु अत्यन्त दयामय हैं। उसकी ओर भी आँखे उठाकर जरूर देखेंगे। वह सचमुच बुरा आदमी है क्या? वह चोर तो है ही, पर पेट के लिये चोरी की। नबोराम भाईसाहब ने उसको इस मार्ग पर लगाया, चोरी की सारी शिक्षा उन्होंने ही दी थी। यह भी कहा था कि उसी के घर जाना, जिसके घर बहुत कुछ है परन्तु दुःखी-गरीब के लिये कुछ नही करना। बड़ों को लूटो। प्रभु पाप नहीं देगा। पहले वह गुरु नबोराम के साथ गया था पर अब नबोराम नहीं है, इसलिये अकेला जाना पड़ता है। गाँव के लोग गरीब होते जा रहे हैं। घरों में है ही क्या? आघोना महरी ने बिल्डिंग बनाया, खुरपी से काम नहीं चलता।

उसने हिसाब लगाया तीन दिन, तीन रात होने वाले हैं। वह सजग सेना की तरह आगे बढ़ता रहा। शरीर जो भी हो, मन ठीक रहना बहुत आवश्यक है। कृष्ण प्रभु उस पर कृपा नहीं करेंगे क्या? जीवेश्वर भक्त के प्रति उसकी श्रद्धा बढ़ने लगी। भक्त दिन-रात शायद प्रभु का ध्यान करते रहते होंगे। प्रभु उनके पास जाते होंगे। सोने की बाँसुरी मिलने के बाद जब पैसा मिलेगा तब घर में


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भक्त को बुलाकर भागवत पाठ करेगा। रेवती कहती रहती है, भक्त को जरूर बुलाना है।

.......उसको महसूस हुआ कि कहीं से बाँसुरी का मधुर स्वर आ रहा है। उसके कदम तेज होने लगे। घनघोर अरण्य का अंघकार भेदकर पूर्णचन्द्र का आलोक आ रहा है।

उसने सोचा - आज पूर्णिमा है क्या? कदम्ब का व क्ष कहाँ हैं? और वह सरोवर? चन्द्रमा के आलोक के बीच वह आगे बढ़ता रहा।

हठात् उसका शरीर और मन रोमांचित हो उठे। वह तो सरोवर है और वह है कदम्ब का व क्ष। उसने सिर उठाकर देखा - सचमुच भगवान श्रीकृष्ण बाँसुरी बजा रहे हैं। उसकी तरफ देखकर प्रभु मुस्कुरा रहे हैं।

आ गया प्रभु। परन्तु आप मेरा नाम....? सरुकण! तू आ गया न। अहो! कितना मधुर स्वर, कैसा मोहक द ष्टि।

'मैं जगदीश्वर हूँ, सरुकण। मैं सबके हृदय में निवास करता हूँ।'

'क्षमा करें प्रभु! आप मेरा नाम जब जानते हैं, तब मेरे आने का उद्देश्य....।'

'जानता हूँ, सरुकण। इसलिये मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ, तूम्हारे लिये।'

सरुकण ने दोनों हाथ उठाकर प्रणाम किया। भगवान कृष्ण कदम्ब व क्ष से उतरकर सरुकण के सामने खड़े हो गये और मुस्कुराते रहे।

'यह लो'

सरुकण ने हाथ आगे बढ़ाया। सोने की बाँसुरी अब उसके हाथों में है। वजन भी बहुत है। वजन बढ़ने लगा। पकड़कर रखना सम्भव नहीं हो रहा है। सर्वशक्ति प्रयोग कर भी वह पकड़ नहीं पा रहा है। इतना वजन? वह शक्ति लगाकर लाने का प्रयास कर रहा है....।

'सुनते हो! दोपहर हो गया, उठो, उठो। वह जग गया। रेवती उसका कंधा पकड़कर धक्का देने लगी, 'उठो, उठो'। वह जग गया। रेवती की तरफ ध्यान से देखने लगा और कहा-'सोने की बाँसुरी कहाँ है? कृष्ण ने जो दिया था।'

'सोने की बाँसुरी'। कृष्ण ने दिया था' रेवती हँसने लगी। फिर बोली 'रात में कहीं से पीकर आये थे क्या?'

रेवती की बातों पर ध्यान न देकर वह घर के इधर-उधर खोजने लगा। घर के अन्दर बीड़ी कम्पनी का एक कलेण्डर था। वहाँ भगवान श्रीकृष्ण का चित्र था, हाथों में बाँसुरी चमक रहा था। उसको महसूस हुआ, जीवेश्वर भक्त कहीं भागवत पाठ कर रहे हैं।

'आज से बस छोड़ दिया'

रेवती आश्चर्यचकित होकर पूछा - 'क्या छोड़ने की बात कह रहे हो?' वह सरुकण की तरफ अपलक द ष्टि से देखने लगी।

'खेती करुँगा, जमीन पड़ी है न।

रेवती समझ गई। वह कुछ बोल नहीं पाई। सरुकण के चेहरे पर एक रोशनी निकल रही थी, जो रेवती ने पहले कभी नहीं देखी थी। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ी, पति के कंधे पर हाथ रखा। सरुकण ने रेवती का हाथ जोर से पकड़ा। उसकी मानसिक द ढ़ता मानो हाथ पकड़ने में आ गई।

धीरे से कहा - रेवती! चिन्ता मत करो, प्रभु की कृपा हुई। अब हमें कुछ भय नहीं है। सोने की बाँसुरी मिल गई। रेवती अत्यन्त प्रेम के साथ पति की तरफ देखती रही।

*अनु. डॉ. देवेन्द्रचन्द्र दास 'सुदामा'*
*ब्रहमसत्र : तेनेलिया, गुवाहाटी ७८१०३३, असम*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रमोद भार्गव

# किसान

शिव प्रसाद की बाखर में कुछ दिनों से कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा परिवार चिन्तामग्न दिखाई दे रहा है। शिव की पैंसठ साल की वृद्धा अम्मा जिसका शिव प्रसाद की पत्नी कमली से कुछ समय से अनबोला सा चल रहा था अब उपतकर बड़ी बहू से बोलने लगी हैं। उनके दैनिक आचरण में अब छोटी बहू से किनाराकशी झलकने लगी है। छोटी बहू सरोज जब ब्याहकर घर में आई तब छोटा बेटा महेश बेरोजगार था और खेती किसानी में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। सो नौकरी की जुगाड़ में भटकता रहता था। अलबत्ता बेरोजगारी के दिनों में माँ का लाड़ महेश पर ज्यादा झरता। आखिरकार जहाँ चाह वहाँ राह की कहावत चरितार्थ हुई और पिछड़े वर्ग को मिले आरक्षण का लाभ उठाकर महेश शिक्षाकर्मी बनने में कामयाब हो गया। बड़े भाई-भाभी को भी प्रसन्नता हुई। बंधी आमदनी घर में आएगी तो परिवार की माली हालत में और सुधार आएगा। आर्थिक हैंसियत बढ़ेगी तो गाँव और जाति बिरादरी में दबदबा भी कायम होगा।

हालांकि शिव प्रसाद भी इंटर थे। वे चाहते तो उन्हें कब की नौकरी मिल गई होती। लेकिन पिता की सीख कह लो अथवा


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिदायत उनके कानों में हमेशा एक आदर्श वाक्य बनकर गूंजती रही। पिता इस लोकोक्ति को दोहराते रहते थे, 'उत्तम खेती, मध्यम बाण (व्यापार), निकृष्ट चाकरी, भीख निदान'। पिता की इस सीख को शिरोधार्य करते हुए शिव प्रसाद ने विरासत संभाल ली। खेती की आमद से तीन बहनों और छोटे भाई का विवाह किया और फिर पिता के पंचतत्व में विलीन होने के साथ त्रिवेणी इलाहाबाद में अस्थियों के विसर्जन के बाद गंगापूजन, त्रयोदशा, भण्डारा और मोक्ष के लिए गोदान भी किया।

इन सामाजिक आयोजनों की यश-कीर्ति से शिवप्रसाद के परिवार की जैसे पूरी पंच महल जाति-बिरादरी में प्रतिष्ठा स्थापित हो गई थी। लेकिन पिता की मौत के बाद जैसे वैभव को नजर लग गई। पिता को स्वर्ग सिधारे छह माह भी नहीं बीते थे कि भाई ने तहसील में जमीन बंटवारे की दरख्वास्त लगा दी। मझले बहन-बहनोई भी बराबर हिस्सेदारी पर अड़ गए। अम्मां की समझाइश पर भी किसी ने कान नहीं दिये। हां दो बहनों ने जरूर दया बरती और हिस्सा लेने से साफ इनकार कर दिया। अम्मां का हिस्सा मिलाकर जमीन पाँच भागों में बंट गई। लेकिन ट्रेक्टर चूंकि पहले से ही शिव प्रसाद के नाम था और पुराना भी हो गया था इसलिए बड़ी कुटिल चतुराई से छोटी बहू सरोज की सलाह पर शिवप्रसाद के नाम ही मढ़ दिया गया। अम्मां ने इसे अन्याय कहा भी, लेकिन अम्मां की कौन सुने ? वे अन्याय को न्याय की वेदी तक नहीं ला पाईं। बड़े की पूर पड़ती रहे इसलिए अम्मां ने अपने खेत शिव प्रसाद को ही खेती के लिए सौंप दिये थे। अम्मां खूब जानती थीं कि बड़े पर बोझ ज्यादा है इसलिए बड़े पर और भार न पड़े वे छोटे के घर ही खाती-पीतीं और बड़ी पर बेवजह तनतनाकर अनबोला साध लेतीं, जिससे छोटी खुश रहे। छोटी की ईर्ष्या-कुढ़न की तुष्टि का लाचार अम्मां के पास यही नुस्खा था।

अम्मां की बूढ़ी आँखें मिचमिचाने जरूर लगीं थीं, लेकिन अभी उनमें अनुभव की इतनी सामर्थ्य बाकी थी कि वे सामने वाले के हाव-भाव से उसकी मनस्थिति का अनुमान लगा लेतीं। सो अम्मां अनुमान लगा रही थीं कि हो न हो बेटा विपदा में है। फिर अम्मां को बेटे की चिन्ता सालने लगी। शिव के प्रति उनकी उदारता बढ़ गई। वे शिव की गतिविधियों पर निगाह भी रखने लगीं और उसके हालचाल की जानकारी तलब करने के प्रति भी सचेत व उत्साहित दिखने लगीं। और फिर एक दिन बड़े सबेरे जब अम्मां चिलचिलाते जाड़े में तापने के लिए बरोसी में आग सुलगाने का उपक्रम कर रही थीं और शिव खेत पर रवानगी डालने की तैयारी में थे, तब अम्मां पूछ बैठी, "क्यों शिबू तू आजकल इतनी जल्दी में क्यों रहता है....?"

- "वैसेईं अम्मां...! इन दिनों उजार का ज्यादा डर है। पैंठ चराने वालों का कोई भरोसा नहीं अपने ...ईं खेत में भैंसें चरा ले जाएं।"

-"सो तो ठीक है बेटा...., पर कछु दिनन से तू मोय परेशान लग रहो है। तेरे मुंह पे खुशी नहीं दिखा रही। कर्ज-अर्ज चुकाने का कछु तकाजा होय तो मोय बता लाला..." वे शिव के बिलकुल निकट आकर (क्योंकि वे जानती थीं कि दीवारों के भी कान होते हैं और छोटी बहू आगखानी है) कान में बोलीं, "मोपे दुकी दुकाई सोने की बज्जटी और चूड़ियां धरी हैं। बंटवारे के समय मैंने छुपा लईं थीं। तेरी मोड़ी के ब्याह में देने के लाने। अब बुढ़ापे में मैं तो पहनने से रही। तोय जरूरत होय तो तू ले जा ...! मैं काऊ से नहीं कहूँगी..., तेरे मरे बाप की सौगंध....!" अम्मां की आँखें डबडबा आईं।

-"बौरा गई है का अम्मां ..., तेरी रकम बेच के कर्जा पटाऊंगा का ...? अभी चैत-वैशाख में फसल आई जात है....सो कर्जा पट जाएगा। रकम संभल के रखे रह, तेरी इच्छा होय तो मुनिया के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ब्याह में दे देई ये...।" और शिव निकल गया। चिंतित अम्मां बरोसी में सुलग आई लौ में तापने लगीं। लेकिन रोज-ब-रोज आसपास के गाँवों से कर्ज में डूबे किसानों की आत्महत्या की आ रही खबरों की आंच जैसे उनकी चिंता का ताप और बढ़ा रही थी।

अम्मां सक्रिय रहीं। शिव के संग उठने-बैठने वालों से अम्मां को जानकारी मिली की चना की पूरी फसल में इल्ली लग गई है। शिव ने सहकारी संस्था से कीटनाशक दवा लेकर छिड़काव भी कराया। शायद दवा नकली थी सो बेअसर रही। संस्था का कर्ज सिर पर चढ़ गया सो अलग। हालांकि इसी दवा के इस्तेमाल के लिए कृषि विशेषज्ञों ने भी कृषक प्रशिक्षण के दौरान सलाह दी थी और प्रयोग के तरीके भी बताए थे। इसी दौरान सहकारी संस्था वाले और दवा कम्पनी के विक्रेता भी आ गये थे। उन्होंने जरूरतमन्द कृषकों को सोसायटी से आसान किश्तों पर कर्ज लेकर दवा खरीदने की सुविधाएँ भी जताई थीं। हालांकि कुछ किसानों को दवा को लेकर आशंकाएँ थीं। किन्तु किसान लाचार थे। सहकारी बैंक संस्थाओं की शर्त थी कि कर्ज केवल बताई जा रही बहुराष्ट्रीय दवा कम्पनी की कीटनाशक दवा लेने पर ही मिलेगा। नकद राशि देने का प्रावधान कानूनन नहीं है। सो यही दवा खरीदना किसानों की लाचारगी थी। किसानों को ये बैंक सीधे कर्ज देते तब न वे जाँच परख कर दवा खरीदने को स्वतन्त्र होते।

अम्मां की कुशंकाएँ बेबुनियाद नहीं थीं। बड़ी बहू कमली आँगन में जब झाडू लगा रही थी तब अनायास ही अम्मां की नजर बहू के रीते गले पर जा टिकी। अम्मां चौंकीं। इसके गले में तो दो तौले की सोने की लर झूलती रहती थी। कहाँ गई? पूछूँ। और अम्मां बहू के पास जा बैठीं। बोलीं, "तेरी लर कहाँ गई बड़ी बहू...?"

बेफिक्र कमली को ऐसी उम्मीद कतई नहीं थी कि अम्मां की बूढ़ी नजर लर पर पड़ जाएगी और वे सवाल भी उठाएँगी। सो कमली सकपका गई। छटपटाते हुए बड़ी सावधानी से उसने धोती के पल्लू में गला और आँचल ढँक लिए। फिर सायास बोली, "लर टूट गई थी, सो जे सुनार के जहाँ सुधरवे डाल आए हैं...।"

"मेरे सिर पे हाथ रख के सौं खा कि तू सच्ची बोल रही है...।" और अम्मा ने बहू की हथेली खुद के सिर पर रख ली। कमली अम्मां की आँखों से आँख मिला पाती इससे पहले वे छलछला आईं। और कमली धोती के पल्लू से आँखें मीड़ते हुए सच नहीं बोल पाने की हिम्मत न जुटा पाने के कारण अटा वाले कोठे में घुस गईं। अम्मां भी पीछे थीं...।

अम्मां हैरान थीं। शिव ने सोने की लर बेच दी थी। जब सहकारी संस्था से खरीदी दवा का असर इल्लियों पर नहीं दिखा तो शिव पत्नी की दो तौले की लर शिवपुरी के सराफा बाजार में बेचकर कीटनाशक बाजार से खरीद लाए थे। पति-पत्नी और बारह साल की बिटिया मुनिया ने मिलकर दो दिन-रात एक करके दवा छिड़की। इस श्रम के लिए मुनिया को दो दिन स्कूल की छुट्टी भी करनी पड़ी। फिर चल रही शीत लहर की जो मार उसके कोमल शरीर पर पड़ी तो बुखार की गिरफ्त में आ गई। दादी अम्मां ने तुलसी की पत्तियों और गिलोय की बेल का काढ़ा पिला-पिलाकर मुनिया का उपचार किया। लोरियाँ सुनाकर वे मुनिया का मन बहलातीं और सिर दबाकर हरारत दूर करने की कोशिश में लगीं रहतीं। शिव मुनिया को शिवपुरी लाकर इलाज कराने की सोचते भी, पर पैसे की जबरदस्त तंगी के चलते वे ऐसा नहीं कर पाए। हालांकि कमली ने बेटी के उपचार के लिए सोने की अंगूठी बेच देने को कहा भी पर इसी बीच भगवान् ने सुन ली।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अम्मां की दवा, दुआ और सेवा रंग लाई। मुनिया की सेहत में सुधार दिखने लगा। हालांकि गाँव में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र है, पर कभी खुलता नहीं। मुसीबत में घिरा किसान कितनी विकट दुविधा में होता है कि फसल की सुरक्षा की चिन्ता की खातिर उसे सन्तान की बीमारी से भी मुँह मोड़ना पड़ता है। इस निष्ठुर और हृदयहीन लाचारी का सामना कर मन ही मन कितना रोये होंगे शिव और कमली।

पूरे इलाके में शीत लहर का प्रकोप बढ़ना शुरु हो गया है। किसान तुषार की आशंका से भयभीत हो रहे हैं। अम्मां बाखर के बाहर कौड़े में आग जलाकर ताप रही हैं। उनके साथ दो-तीन उन्हीं की उम्र की औरतें और कुछ युवक बैठे हैं। सब चिन्तित हैं। चिन्ता का मन-मस्तिष्क पर पर्याप्त दबाव है। सो किसी के बोल नहीं फूट रहे। तभी चार-पाँच लोगों की टोली आई और अम्मां से बोले, "अम्मां गाँव में भील देवता का मन्दिर बन रहा है, शिवप्रसाद से कहा चन्दा दे...।"

"देवता किसान की कछु सनत तो हैं नहीं। मौसम कैसो खराब हो रहो है। पाले को डर सता रहो है। वक्त को मारो किसान कहाँ से चन्दा दे..., तुन्हीं बताओ?"

"अम्मां भगवान् को मत कोस। भगवान् की कृपा पूरे गाँव पर बनी रहे, इसीलिए तो मन्दिर बनवा रहे हैं।"

"चल एक सौ एक रुपया ले जा...। वैशाख में शिव के खेत में मन माफिक फसल निकरी तो पाँच सौ एक देवता पर चढ़ाऊँगी।"

"अम्मां रसीद कौन के नाम से काटूं... तुम्हारे या शिव के या महेश के?"

"घर का बड़ा शिव है तो शिव के नाम काट...। बाके बाप के मरने के बाद वही तो घर का मुखिया है।"

अम्मां भीतर जाकर रुपये लाईं और टोली के लोगों को देकर धोती के पल्लू में रसीद बाँध ली।

अम्मां देख व अनुभव कर रही थीं, शिव पर मुसीबतों का शिकंजा लगातार कस रहा है। कल ही बैंक से ट्रेक्टर पर लिये कर्ज की बसूली का नोटिस आ गया। साढ़े चार लाख से ऊपर का अकेले ट्रेक्टर पर कर्ज बकाया है। अम्मां सोच रही थीं, ये ट्रेक्टरों से खेती, मोटर पंप से सिंचाई और थ्रेसर से दांय का चलन क्या शुरु हुआ है, इनने किसान की जड़ में मठा घोर दओ। धन के सब स्रोत सोख डाले। किसान इनके पेट में डीजल भरे या अपने पेट में रोटी...? हल बैल की खेती भली थी। बिनेई हल में जोत दो तो खेत हाँक लो और रेंहट-चरस में जोत दो तो सिंचाई कर लो। कर्ज लेकर ट्रेक्टर से खेती तो किसान के तिल-तिल प्राण हरने के उपाय हैं।

और फिर तीन दिन से हिमालय में हो रही बर्फबारी से निकलीं उत्तरी हवाएँ दक्षिण की ओर बहीं तो खेतों में कहर ढाती चली गईं। पाले की मार ने फसलों को खेत में बिछा दिया। अम्मां कौड़े पर ताप रही थीं। तभी दौड़ते-हाँफते दो ग्रामीणों के आर्तनादों ने अम्मां का कलेजा चीर दिया, "अम्मां गजब हो गया..."

भविष्य की अनिश्चितता से घिरी अम्मां फुर्ती से उठ खड़ी हुईं...।

"गजब हो गया अम्मां... खेत पर शिव ने कीटनाशक दवा पी लई...। मेड़ पर तड़फ रहो है... जल्दी से ट्रेक्टर-ट्राली निकलवाओ शिवपुरी अस्पताल ले जाना है।"

"हे रामजी... तूने जो कौन से जनम को दण्ड दओ..." फिर वे हड़बड़ाईं। बाखर में भागी, "महेश कहाँ है...जल्दी आ...। बड़े लाला ने जहर पी लओ...। जा मेरी रकम ले जा, बेच के इलाज करा...। जरूरत पड़े तो मेरो खेत बेच देईए..." अम्मां छाती पीटती हुई बक्से से रकम की पोटली निकाल लाईं और महेश को थमाकर गलियारे में लोट-पोट हो गईं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हौसले के पैरों पर शिव की जिन्दगी को दोड़ाने की कोशिशों में लगीं अम्मां मानो हार कर खुद जमीन पर थीं। शिवप्रसाद ने शिवपुरी ले जाने की तैयारियों की शुरुआत में ही दम तोड़ दिया।

अगले दिन के अखबारों के मुखपृ ष्ठों पर खबर थी, 'कर्ज में डूबे एक और किसान ने आत्महत्या की।' समाचार के नीचे कृषि मन्त्री और प्रदेश सरकार के प्रवक्ता का बयान भी था, 'मृ तक किसान शिवप्रसाद की माली हालत सुदृ ढ़ थी। एक ट्रेक्टर, बीस बीघा सिंचित जमीन का मालिक था। अपनी माँ के हिस्से के खेत में भी वही खेती करता था। गाँव में मन्दिर बनवा रहा था। इलाज के लिए उसकी माँ ने सोने के गहनों की पोटली खोल दी थी। वह हर तरह का कर्ज पटाने में सक्षम था। हाँ कुछ दिनों से मृ तक किसान की मानसिक स्थिति जरूर खराब थी। जिससे एकाएक मृ तक का मानसिक सन्तुलन गड़बड़ा गया और उसने कीटनाशक दवा गटक ली। मृ तक के आत्महत्या करने की यही वजह है।'

अम्मां को जब महेश ने यह खबर पढ़कर सुनाई तो उन्होंने अखबार छीन कर आग में झौंक दिया, "मेरे लायक बेटे को पगला ठहरा रही है सरकार...। आग लगे ऐसी सरकार में" एक लाचार किसान बेटे की मौत पर माँ के पास इसके अलावा आक्रोश जताने का और चारा भी क्या था?

*शब्दार्थ, ४९, श्रीराम कॉलोनी, शिवपुरी*



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुन्दा जोगलेकर

# एक बार फिर

धड़धड़ाती हुई रेल जैसे-जैसे एक के बाद एक स्टेशन छोड़ती जा रही थी, मेरी प्रतीक्षा की घड़ियाँ भी समाप्त होती जा रही थीं। आज पूरे दस बरस बाद जा रही थी अपने घर। घर तो नहीं पर हाँ कभी घर रहा जरूर था इस गाँव में। अब तो घर के नाम पर पड़ौस की दुर्गा मौसी रहती थीं। उन्हीं के बुलावे पर जा रही थी। पिछले पाँच-छह महीनों में आठ दस चिट्ठियाँ लिख भेजी थीं। मिलना चाहती थी बस। सच तो ये था कि बचपन उन्हीं की गोद में गुजरा मेरा। सोचा, इतने प्यार और अपनेपन से बुलाता भी कौन है... इसलिए पूरे पन्द्रह दिन की छुट्टियाँ ले ली थीं।

और फिर स्टेशन से घर आने तक, रास्ते भर हर एक दरोदीवार का मुआयना करते-करते कब आ गया था वह छोटा सा 'शिव सदन' पता ही नहीं चला। सब कुछ वहीं था वैसा ही। कहीं कुछ भी तो नहीं बदला। वही बड़ा सा तुलसी कुण्ड, वैसा ही लहलहाता। आले में रखा दिया, कोने में उसी शान से डोलते आम और केले के पेड़, हाँ लिपे-पुते आँगन की जगह जरूर सीमेंट के पक्केपन ने छीन ली थी।

"प्रणाम मौसी।" चहकते हुए सामने आकर खड़ी दुर्गा मौसी के चरण छू लिये थे मैंने।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अरे नीरू बेटी आ गयी... जीती रह बेटी, जीती रह... अरे कित्ती बड़ी लगने लगी है रे तू...।" गद्गद् हो उठी थीं दुर्गा मौसी...

"बड़ी...।" मैं खिलखिला पड़ी थी। "बड़ी नहीं मौसी बूढ़ी लगने लगी हूँ अब तो... देखो, मेरे आधे बाल भी सफेद हो गये हैं...।"

"अरी चल हट... तू बूढ़ी हो गयी तो अब तक मुझे तो पहुँच ही जाना चाहिए था ना..." हँसते हुए चाय का पानी चढ़ा दिया था। मैं सफर की थकान उतारने के लिए वहीं पड़ी ईजी चेयर में धँसकर इस उम्र में भी मुस्तैदी से काम करती मौसी को देखती रही।

कितनी ममता, कितना स्नेह, न जिन्दगी में कुछ पाने की इच्छा न खोने का दु:ख... ढेर सारे उतार चढ़ावों के बीच से गुजरा, ये झुर्रियों से भरा चेहरा न जाने अपने भीतर कितना अकेलापन समेटे था।

"ले बिटिया चाय पी ले..." चाय का कप सामने आते ही मेरी तन्द्रा भंग हुई। इन झुर्रियों के बीच कहीं कुछ था जरूर... शायद मेरा ही अपना आने वाले कल का चेहरा, नितान्त अकेला सा...

दिन तो दिल्ली की व्यस्त जिन्दगी की दौड़-भाग बखानते और इधर-उधर की गप्पें हाँकते बीत गया। शाम मौसी के साथ पूजा का थाल लिये झाड़ियों के बीच पिछवाड़े के मन्दिर जाते कितना अच्छा लग रहा था, कह नहीं सकती। मन्दिर आते ही मौसी थाल लिये अन्दर चली गईं और मैं सामने मूर्ति देखकर हाथ जोड़ने का फर्ज अदा कर, आस-पास का मुआयना करती रही।

अचानक नजर सामने के एक विशाल सूखे से पेड़ पर जड़वत् होकर रह गयी। इन शाखाओं के बीच एक मुस्कुरता चेहरा एक झलक दिखाकर ओझल हो गया। मैं बौखला गयी थी। आखिर कौन था वो... तुम... हाँ, वो तुम ही तो थे अनुराग... कैसे भूल सकती हूँ वो चेहरा जिसके हाथों में हाथ डाल इसी मन्दिर में इसी पेड़ के आस-पास, गोल माई... चक्कर माई खेलते खेलते मेरा बचपन यौवन की दहलीज पर पहुँचा था।

"चल बेटी नीरू... अरे यहाँ अकेले खड़ी क्या कर रही है। पूजा हो गई तेरी...?"

"पू...जा... हाँ... पूजा। वो मौसी तुम आँख बन्द किये जाप कर रहीं थी ना, तभी कर ली थी।" हड़बड़ा कर जवाब दिया था। और करती भी क्या? अब ये तो कह नहीं सकती थी कि तुम्हारे सारे भगवानों ने आखिर दिया ही क्या है मुझे..? अब क्या खाक पूजा करूँगी।

घर की देहलीज पर पाँव रखा ही था कि तुम्हें सामने देख बुरी तरह चौंकी थी... "तुम यहाँ... अनुराग हो ना?"

"हैलो नीरू। कैसी हो?"

"पता नहीं" इस अपने ही बेतुके से जवाब पर खिसियाने की नौबत आ गयी थी। सच तो यह था कि तुम्हें देखकर अजीब सी उथल-पुथल मची थी भेजे में। इस स्थिति के लिए मैं कदापि तैयार नहीं थी। लेकिन तुम ही शुरु हो गये थे...।

"सबसे पहले बधाई दूँ...लेखिका होने के लिए। मैंने पढ़ी हैं तुम्हारी कुछ रचनाएँ। अब तो मुझे भी सिखा दो लिखना, अपनी भावनाओं को सही अभिव्यक्ति देना हर एक को तो नहीं आता ना। मैंने भी कोशिश की थी एकाध बार, पर किन सन्दर्भों में है किन अर्थों में, सही ढंग से व्यक्त नहीं कर पाया...।"

"ये तुम बोल रहे हो अनुराग... मुझे तो समझ में ही नहीं आ रहा कि अर्थ, सन्दर्भ... भावनाएँ... ये सब तुम्हारे शब्दकोष में कहाँ से आ गये... कहते मैंने भौचक्की सी आँखें तुम्हारे चेहरे पर गड़ा दी थीं।"

"परिस्थितियाँ सब सिखा देती हैं नीरू...। तुम नहीं समझोगी।" तुम्हारा स्वर बहुत धीमा सा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था, कहीं खोता सा... और बिना मुझे बोलने का अवसर दिये चले गये थे। तुम्हारे शब्दजाल में उलझ कर रह गयी थी।

कुछ नहीं सूझा तो अखबार छानती रही। सोच भी नहीं सकती थी कि यही है वो शख्स, जिसने सालों पहले मेरी एक सखेद लौटी रचना पर व्यंग्य करते हुए कहा था - "सुना है जो कुछ नहीं बन पाता, वो लेखक जरूर बन जाता है, लेकिन अफसोस तुम शायद वो भी नहीं बन पाओगी। क्या लिखती रहती हो जब तब... वापस नहीं लौटाएँगे तो क्या अपने केबिन में सजा कर रखेंगे... न कहीं कोई अर्थ निकलते हैं, न सन्दर्भ मिलते हैं...।"

अपनी रचनाओं पर इतनी तर्कहीन टिप्पणी सुनकर मेरी तो रुलाई ही छूट गयी थी। मन ही मन छोटा सा जवाब दिया था - "अर्थ और सन्दर्भ समझना तुम्हारे बस का रोग नहीं है अनुराग। उसे समझने के लिए दिल और दिमाग दोनों लगते हैं। स जन का सुख तुम क्या जानो...?"

खैर, तब कुछ भी कहा हो, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, पर सोचती हूँ, तब जो कुछ मैंने कहा, तुम नहीं समझ पाये और शायद इसीलिए जो कुछ तुम आज कह रहे हो मैं नहीं समझ पा रही...।

जब गुत्थी कैसे भी नहीं सुलझी, कुछ पल गीत सुनने की इच्छा से रेडियो ऑन कर दिया। तभी मौसी काम निबटा कर आ गयी थीं, मैंने बिना देरी किये सारे प्रश्नों को एक के बाद एक उनके सामने बिखेर दिया। मौसी को जैसे इसी का इन्तजार था वो तुम्हारी जिन्दगी के प ष्ठ खोलती चली गयीं, बिना किसी भूमिका के...।

शादी के बाद तुम्हारे घर-परिवार से टूटते सम्बन्धों से लेकर बीबी के चले जाने के बाद, अपने दोनों बच्चों को लेकर वापस गाँव आ जाने तक की लम्बी दास्तान...।

किस्मत ने जो मजाक तुम्हारे साथ किया, सुनकर कोई भी दहल जाता। दुःख मुझे भी हुआ। मुझे मेरे प्रश्नों का जवाब भी मिल ही गया था। तभी तो मैं कहूँ कि भावनाओं से तुम्हारा रिश्ता कब से जुड़ गया। वरना मेरी भावनाओं की अंत्येष्टि तो तुम उसी दिन कर चुके थे, जिस दिन जिन्दगी के मायने तुम्हारे लिये महज सुन्दरता की परिभाषा में सिमटकर रह गए थे। एक बार फिर सालों पुराना तुम्हारा चेहरा मेरे जेहन में ज्यूं का त्यूं घूम गया....

भावनाओं की बातें करके, आज शायद तुम अपनी समझदारी और भावुकता का प्रमाण देना चाहते थे, लेकिन मैं आज भी नहीं भूली हूँ कि समझदार तो तुम तब भी थे। मेरे प्रति किये गए हर विश्वासघात को बड़े सलीके से टाल गए थे। तुमने गलती को तब भी नहीं माना था। झूठे दिलासे के लिए मुझसे कहा गया समझदारी का हर वाक्य तुम्हारे लिये जितना सहज था, मेरे लिये नहीं। उन दिलासों में छिपे नुकीले तीरों के घाव नासूर बन कर रिसते रहे हैं ...आज तक....

परिस्थितियों का सलूक सबके साथ एक जैसा नहीं हुआ करता अनुराग बस यही फर्क था तुममे और मुझमें। और शायद इसीलिए जिन्दगी की दौड़ में मैं तुमसे बुरी तरह हारी थी.....

विचार मंथन के इन क्षणों के बीच मौसी और क्या-क्या बताती रही, ध्यान ही नहीं रहा। लेकिन जैसे ही ध्यान गया, ...अगला वाक्य कानों में पिघला सीसा उडेल गया जैसे -

"तुझे यहाँ बुलानेका एक मकसद यह भी था बेटी कि अब भी वक्त है.....तू अनुराग से शादी कर ले....."

"क्या ....मैं तड़प कर उठ खड़ी हुई।" ये तुम मुझसे कह रही हो मौसी....मुझसे....

"क्या हुआ बेटी....उसकी तरफ से हां ही है....तू भी तो चाहती थी ये सब पहले कभी... भगवान ने तेरी सुन ली। अच्छा ही होगा देर सबेर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सही, तेरा भी घर बस जाएगा और बेचारे बिन माँ के बच्चों को तुझ जैसी माँ मिल जाएगी ....”

“हरगिज नहीं मौसी....कभी नहीं। गुस्से से कांप उठी थी। लगभग चीखते हुए हथेलियों को छन्न से दीवार पर दे मारा था -”

“मैंने अनुराग की पत्नी बनना चाहा था मौसी...उसके बिन माँ के बच्चों की आया नहीं.... .उसे शर्म नहीं आई हां कहते....”

मेरी तिलमिलाहट पर मौसी ने खिसियाकर चुप्पी साध ली।

मैं अपना सामान पैक कर उसी दिन वापस लौट पड़ी। स्टेशन पहुँची तो गाड़ी पूरे दो घंटे लेट थी। जितनी जल्दी हो सके मैं गाँव छोड़ना चाहती थी। लेकिन चाहने से ही तो सब नहीं होता ना। गाड़ी का इंतजार तो करना ही था।

थोड़ी ही देर बाद पीछे से “नीरू कहाँ जा रही हो” चिर-परिचित आवाज से दिल धक् से रह गया। बस यही नहीं चाहती थी मैं। हालाकि डर इस बात का नहीं था कि तुम क्या कहोगे। डर तो इस बात का था कि जो कुछ तुम कहोगे उसे सुन पाऊँगी या नहीं। मैं जानती थी कि जिस आग को बरसों से पीती आ रही हूँ, आज नहीं झेल पाऊँगी।

“तुमसे कुछ कहना चाहता था नीरू...”

“मैं मौसी से सुन चुकी हूँ...” दो टूक जवाब था मेरी ओर से।

“तुम सोच रही हो मैं अपने लिये कह रहा हूँ... लेकिन जब मौसी ने तुम्हारे बारे में सब बताया तो लगा, तुम्हारे प्रति भी मेरा कोई तो फर्ज है। इस बची हुई ही सही जिन्दगी की खुशियाँ मैं तुम्हारे साथ बांटना चाहता हूँ। तुम भी एक लेखिका हो नीरू...समझ सकती हो कि ....”

“नहीं ....तुम्हारी बात को काट दिया था मैंने...” इस बार तुम भूल कर रहे हो अनुराग... .लिखना मेरा पेशा नहीं है। जिन्दगी में यथार्थ की कड़वाहटों को भोगा है मैंने, परिस्थितियों के अन्याय को झेला है, लेखन मेरे मन की भड़ास है उसमें तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं। मेरे बारे में कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं है, मैं कितना भी सच कहूँ, जानती हूँ तुम स्वीकार नहीं कर सकोगे, क्योंकि सच स्वीकार करना तुम्हारी आदत में शामिल ही नहीं है, हो भी क्यों आखिर पुरुष हो तुम ....और किसी सच की स्वीकारोक्ति तुम्हारी शान के खिलाफ तुम्हें ठेस पहुँचा सकती है, और तुम्हारी इस कायरता को ठेस पहुँचाना मेरा मकसद कभी नहीं रहा वरना...

ओफ्...हो...ऐसा कुछ नहीं है नीरू...बहुत कड़वा बोलती हो तुम। आखिर हो क्या गया है तुम्हें...पहले तो तुम ऐसी नहीं थीं। सच नीरू... तुम्हारे प्रति कितनी श्रद्धा...कितना विश्वास है मेरे दिल में। मैं तुम्हारी खुशी चाहता हूँ।

“बको मत...” मैं फिर चीखी थी। “अपनी खुशी के लिए तुम्हारी श्रद्धा या हमदर्दी की मोहताज मैं कभी नहीं रही अनु ...रही कड़वा बोलनेकी बात तो, मैंने यही पाया है जिन्दगी में। यही तुम्हे दे रही हूँ। इस खोखली श्रद्धा और हमदर्दी के बदले स्वीकार कर सको तो अपनी स्वार्थी और लिजलिजी मानसिकता को मेरी श्रद्धांजलि स्वीकारो अनुराग...बस...इससे ज्यादा कुछ नहीं कहना मुझे तुमसे ....”

अपने पौरुष पर इतना बड़ा आघात झेलने की हिम्मत नहीं थी तुममे तभी तो तुम पैर पटकते आंधी की तरह निकल गए थे और मेरा अशांत मन जैसे एकदम शांत हो गया था। मेरे अन्दर का ज्वालामुखी फूटकर सालों का बोझ उद्वेग के इन क्षणों में उच्छृंखलता की सीमा को पार कर गया था। मेरा अहं कहीं न कहीं तुष्ट जरूर हुआ था। पता नहीं कैसी जीत का एहसास था वो...

दिल्ली वापस लौटने के पन्द्रह दिन बाद एक शाम घर लौटी तो दरवाजे के पास रोली अक्षत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लगा पीला लिफाफा मेरा इंतजार कर रहा था। खोलकर देखा, तुम्हारे विवाह का निमंत्रण...साथ में एक छोटा सा पत्र...बिना किसी संबोधन के ...

"जानता हूँ....बहुत नाराज हो। तुम्हें समझाना या समझ पाना, मेरे बस में नहीं है। खैर भूल जाओ जो हुआ। हां तुम्हें दु:खी करना मेरा मकसद हरगिज नहीं था। बस एक दोस्त होने के नाते लिख रहा हूँ कि अपने आप से इतना मत लड़ो...इस तरह तो एक दिन अपने आप को भी खो दोगी तुम। यथार्थ तो हर जगह कड़वा है...इतना विष अकेले कैसे पी पाओगी, कहाँ तक संघर्ष करोगी नीरू...."

अपना नाम तो पत्र के अंत में भी नहीं लिखा था तुमने। फिर भी उसे तुम्हारी आखिरी अमानत समझ सहेज कर मैंने डायरी में रख लिया है। बहुत दिनों बाद दिल कुछ कहना चाहता है आज...

जीवन के यथार्थ और भाग्य की विडम्बनाएं जब घुटन बन जाती हैं बहुत बैचेन हो उठती हूँ। इस घुटन को जब शब्दों की अभिव्यक्ति मिल जाती है तो दिल को एक सुकून मिलता है...एक शांति मिलती है...

शायद इसीलिए मेरी कलम एक बार फिर डायरी के पृष्ठों को खदेड़ती चली जा रही है.... तुम्हारी दूसरी शादी का जगमगा ता खूबसूरत सा कार्ड सामने पड़ा एक बार फिर मेरा मुँह चिढ़ा रहा है। कार्ड की चमक ने एक बार फिर मेरी आत्मा को झिंझोड़ कर रख दिया है। जिन्दगी हर कड़वे सच को तिलांजलि देकर अपने अहं को बरकरार रखकर, तुमने एक बार फिर अपनी कामयाबी को साबित कर दिया है। और मैं ....मैं एक बार फिर हार गयी हूँ....

*हनुमान चौराहा, ग्वालियर - ४७४०११*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. प्रतिभा त्रिवेदी

# डायनिंग टेबल सूनी है

जीवन उत्सव का दूसरा नाम है। जीवन जीना यानी आशाओं के मोती धागे में पिरोना है। इन बातों से उन दोनों की उम्र अब इतना लम्बा सफर तय कर चुकी थी कि ये सब बातें सोचना बेमानी सा लगता था। कभी ऐसा भी था जब जीवन में सोलहवाँ सावन भी मुस्कुराया था, कभी सप्तपदी के सात फेरों में इन्द्रधनुषी रंगों का शमियाना झिलमिलाया था और पता ही नहीं चला कब आकाश और अंकिता की किलकारियों से घर गूँज उठा था। शारदा देवी ने जो सपने में भी नहीं सोचा था वह सब अपने आप ही बिना माँगे उनकी झोली में आता चला गया। उनके पति जगमोहन अवस्थी प्रशासनिक अधिकारी के पद पर थे लेकिन महिमा-गरिमा से मंडित प्रभुता का दर्प उन्हें छू भी नहीं पाया था। एक ईमानदार और कर्मठ अधिकारी की छवि जो एक बार बनी तो बनती ही चली गयी।

आकाश और अंकिता की आँखें अब काफी कुछ देखना चाहती थीं और कॉफी कुछ सुनना-सीखना चाहती थीं। जब कभी अन्य अधिकारियों के परिवारों में उनका आना-जाना होता तो बच्चे संकोच से सिमट उठते थे। उन्हें ड्राइंग रूम की भव्यता किसी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजमहल का बोध करवाती तो व हद् आकार का डायनिंग टेबल देखते ही अपने आप किसी की भी भूख जाग त हो सकती थी। स्टीरियो में फूल वाल्यूम में बजता हुआ संगीत भाव विभोर कर देता। बच्चे जब उन घरों से वापस आते तो एक लम्बी सी अनकही उदासी भी साथ-साथ चली आती।

एक दिन लाड़ली अंकिता ने विद्रोह का बिगुल बजाया था जब दीपावली पर पापा ने शुक्ला अंकल के घर चलने को कहा था। प्रति-उत्तर अंकिता ने दिया था।

"नहीं पापा ! हम लोग वहाँ नहीं जाएंगे, हमें उनके घर अच्छा नहीं लगता।"

पापा ने पूछा था – क्यों भाई ऐसा क्या हो गया ? वे तो हमारे पुराने मित्रों में से एक हैं। वहाँ तो जाना ही चाहिये।

अब जवाब आकाश ने दिया था –

"पापा शुक्ला अंकल जैसा बड़ा घर और ढ़ेर सारा सामान हमारे घर क्यों नहीं है?" अंकिता भी कहाँ चूकने वाली थी।

"पापा एक शर्त पर शुक्ला अंकल के घर जाएंगे जब हमारे घर भी सुन्दर-सा डायनिंग टेबल आप लेकर आएंगे।"

क्यों डायनिंग टेबल की क्या जरूरत है ? अपना काम तो आराम से पटे पर बैठकर खाना खाने से चल जाता है, पिता ने बच्चों की चुटकी ली थी।

"नहीं पापा एकदम नहीं, हमको भी अब डायनिंग टेबल चाहिये। हम उस पर ही खाना खाएंगे और पढ़ाई भी किया करेंगे।"

इस बार बच्चों की माँ यानी शारदा देवी ने भी यही सब कहा था।

"सुनिये जी, अब हमारे-तुम्हारे दिन लद गए। अब बच्चे बड़े हो रहे हैं। वो जो कुछ चाहते हैं, वो लाकर क्यों नहीं देते। वे कई महीनों से डायनिंग टेबल की जिद किये हुए हैं।"

अब तो पापा को परास्त होना ही पड़ा था और उन्होंने वादा किया था कि अगली दीपावली पर डायनिंग टेबल जरूर आ जाएगी।

इतना सुनते ही बच्चे किलकारी मारते हुए खुशी से उछल पड़े थे। तब शारदा देवी के साथ-साथ जगमोहन जी ने भी महसूस किया था कि बच्चों की मासूम और भोली मुस्कान के सामने सब कुछ तुच्छ है।

आखिर में वह दिन भी आ गया जब डायनिंग टेबल घर आई। बच्चे खुशी से ऐसे चहक रहे थे जैसे किसी नन्हें शिशु का ही आगमन हो गया हो। वे बार-बार स्नेहवश उसे छूते तो कभी यह भी विचार विमर्श होता कि किस कुर्सी पर कौन बैठेगा। फिर यह भी आवश्यकता उत्पन्न हुई कि छुरी, काँटे और चम्मच का स्टैंड भी टेबल पर होना जरूरी है। वह तो लाना ही होगा। यदि साथ में बीचों बीच फूलों का गुलदस्ता भी रख दिया जाए तो सोने में सुहागा सिद्ध होगा। इस प्रकार येन-केन प्रकारेण डायनिंग टेबल की साज सज्जा की गई और जब माँ के द्वारा पहली बार मीठी-मीठी खीर परोसी गई तो आनंद का ठिकाना ही नहीं था।

उसके बाद तो हर नई चीज घर में साधिकार प्रवेश पाती गई। देखते ही देखते कुछ वर्षों में शारदा देवी का घर सुन्दर सुघड़ आशियाने में परिणित हो चुका था।

समय के उड़ते हुए पांखी ने अब तेजी से अपने पंख फैलाने शुरू कर दिये थे। आकाश बारहवीं के बाद इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने दिल्ली चला गया था और दो वर्षों में अंकिता भी अपनी मेडिकल की पढ़ाई करने इलाहाबाद चली गई थी।

जो बच्चे हमेशा इस घर में रौनक बनाए रहते थे, वे अब केवल छुट्टियों में ही इकट्ठे हो पाते थे। उनके आते ही डायनिंग टेबल पर अंतहीन बातों के सिलसिले निकल पड़ते थे। उन दिनों इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टेबल की पूछ-परख भी कुछ ज्यादा बढ़ जाया करती थी और उनके जाते ही फिर वही सन्नाटा-सा पसर जाता था।

इस बार शारदा देवी दीपावली पर बच्चों का उत्सुकता से इंतजार कर रही थीं क्योंकि दोनों ही बच्चों के लिए रिश्तों के प्रस्ताव छप्पर फाड़कर टपक रहे थे।

आकाश नहीं आ पाया, केवल अंकिता ही आई थी। आकाश को किसी मल्टीनेशनल कम्पनी में इंटरव्यू देने जाना था।

अंकिता से उन्होंने रिश्तों की बात चलाई थी लेकिन अंकिता ने झिझकते हुए बताया था - "मम्मी ! आप लोगों से डॉ. सुशान्त के मम्मी-पापा भी मिलना चाहते हैं, वे सभी लोग डॉक्टर हैं और इलाहाबाद में ही उनका एक बड़ा सा नर्सिंग होम भी है।"

शारदा देवी ने बिटिया की खुशी में ही अपनी खुशी की स्वीकृती की मुहर लगा दी थी। लेकिन अभी पापा से पूछना शेष था। पापा ने जैसे ही सुना तो उनके माथे पर बल पड़ गए थे। वे ठहरे ठेठ कानपुर के कान्यकुब्ज ब्राह्मण, तो दूसरी ओर डॉ. सुशान्त अग्रवाल अग्रसेन वंश परम्परा के। उस दिन पहली बार डायनिंग टेबल पर सन्नाटा पसरा था। दीपावली के अगले ही दिन लाख रोकने पर भी अंकिता इलाहाबाद लौट गई थी।

इधर आकाश को एक बड़ी फर्म में प्रतिष्ठित पद पर नौकरी मिली थी और अब उन दोनों ने देर नहीं की थी, बल्कि कुछ ही महीनों में चट मंगनी पट शादी की रस्म अदा करते हुए प्यारी सी बहू ले आए थे। अंकिता की खुशी में ही अपनी खुशी का स्वर भी मिलाना ही पड़ा था और उसकी भी धूमध-ाम से शादी हो गई।

इन्हीं खुशियों के बीच वह भी दिन आया जब आकाश को न्यूयार्क में काम करने का अवसर मिला। अब तो माता-पिता के हर्ष के मारे कदम ही जमीन पर नहीं पड़ते थे। समय की माँग के अनुसार बहू का साथ में जाना लाजिमी था। इधर अंकिता भी लगातार घर आने में असमर्थ होने लगी थी।

अब घर पर दो प्राणियों के अलावा सन्नाटे ने लम्बे पाँव पसार लिए थे। जिस डायनिंग टेबल की ख्वाहिश ने घर में सुख समृद्धि की दस्तक दी थी, वह अब उपेक्षित-सा एक कोने में पड़ा रहता था। उसके बाद कितनी ही दीवालियाँ आईं और आकर चली गईं लेकिन खिलखिलाहटें और खुशी से उमगते स्वर कहीं दूर जाकर छिप गए थे।

अब शारदा देवी जितनी बार मन में जीवन जीने की इच्छा एकत्र करतीं, उतना ही मन मरता सा प्रतीत होता। अब वे अक्सर डायनिंग टेबल पर बैठकर बहकी-बहकी अकेले में बड़बड़ाती रहतीं। उनका यह एकान्त प्रलाप भविष्य के लिए खतरे की घण्टी का संकेत था। डॉक्टर ने यही सलाह दी थी जो चीजें उन्हें उद्वेलित करती हैं वह उनकी आँखों के सामने से हटा दी जाएं। परन्तु यह क्या जगमोहन जी के लिए इतना आसान था। क्योंकि वे स्वयं भी उस टेबल के साथ भावनात्मक रूप से जुड़े हुए थे। उन्हें भी यही भ्रम होता जैसे बच्चे उनके साथ बैठे हुए बातें कर रहे हों।

डॉक्टर के परामर्श के बाद उस रात वे काफी देर तक आत्मचिन्तन करते रहे और जितना चिन्तन करते उतना ही एकाकीपन का भयावह सन्नाटा बढ़ता जाता। दोनों बच्चों का नन्हा बचपन पुकारता दिखाई देता -

फिर से कोई पकड़ ले उंगली,
जाने कब से बुला रहा हूँ ?
किस तरह कहूँ किस मजबूरी में,
मैं बचपन को भुला रहा हूँ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस कविता के कवि का नाम वे जितना याद करने की कोशिश करते, उतना ही भूलते जाते। अंत में आकाश को एक पत्र लिखना ही सर्वोत्तम उपाय लगा था क्योंकि फोन पर सारी बातें कह पाना संभव नहीं था। उन्होंने मुख्य रूप से यही लिखा -

बेटा, जीवन दोबारा लौटकर नहीं आता। हम दोनों अब ज्यादा बरस के मेहमान नहीं हैं। तुम्हें तुम्हारा बचपन याद दिला रहा हूँ। जैसे तुमने बचपन में अंकिता के साथ मिलकर अपने बालहठ से घर में डायनिंग टेबल मंगवाई थी, आज वैसी ही जिद करके मैं तुम्हें अपने घर वापस बुला रहा हूँ। बेटा, तुम्हारी माँ हर समय तुम लोगों की ही बातें करती हैं। वह उस निर्जीव बेजान टेबल को ही आकाश, अंकिता समझने लगी हैं। उनकी दिमागी हालत निरन्तर बिगड़ती जा रही है। इसीलिए तुम्हारा पिता आज तुमसे यही जिद कर रहा है कि बेटा अब देर मत करो। विदेशी धरती का मोह छोड़कर अपनी सोंधी मिट्टी की महक में डूबी माँ की ममता के आँचल में लौट आओ। इस दीपावली पर हमारी इस पुकार को अनसुना मत करना। आज इसी आशय का एक पत्र अंकिता को भी लिखने जा रहा हूँ।

इसके बाद जगमोहन जी ने पास में सोती हुई शारदा देवी की ओर स्नेह भरी नजर डाली। उन्हें ऐसा लगा जैसे आकाश, अंकिता पत्र लिखते ही उड़कर आ गए हों। उस दिन के बाद उन्हें विश्वास हो चला था कि उनके संस्कारी बच्चे इस तड़प को समझकर दीपावली के पहले ही लौट आएंगे।

दीपावली तक पूरा घर सन्नाटे की चादर ओढ़े हुआ था। पत्र को डाले हुए महीनों हो चले थे लेकिन न किसी ने फोन किया था न कोई समाचार ही आया था। देखते-देखते दीपावली का दिन भी आ गया था। जगमोहन जी को लग रहा था जैसे रिश्तों के जंगल में पत्नी के साथ अकेले खड़े हों। वे जितना अधिक सोचते उतना ही डायनिंग टेबल को देख-देखकर उनकी झुंझलाहट बढ़ती जाती। वे बार-बार अपने मन को दिलासा देते लेकिन अब सहनशक्ति जवाब दे चुकी थी। उनका क्रोध चरम सीमा पर जा पहुँचा था। बरसों पूर्व दीपावली पर यही टेबल मान-मनुहारों से लाई गई थी और आज उन्होंने प्रण सा ले लिया कि न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। यानी आज कैसे भी हो इस टेबल को बाहर फेंकना ही होगा। वे अपना निर्णय शारदा देवी को सुनाने ही जा रहे थे कि उन्हें लगा जैसे बाहर दरवाजे पर गाड़ियाँ आकर रुकी हैं। बाहर जैसे ही देखा वे बच्चों की तरह सिसक-सिसककर बिलख पड़े थे। उनके लाड़ले उनके कलेजे के टुकड़े आकाश, अंकिता गाड़ियों से अपना सामान उतार रहे थे। पापा-मम्मी को सरप्राइज देने के लिए उन्होंने योजना बनाई थी। आकाश, अंकिता बार-बार यही बात दोहरा रहे थे।

पापा आपने कैसे समझ लिया कि हम आपको भूल गए हैं ? पापा, आकाश अब अपने परिवार के साथ आप लोगों के साथ ही रहेगा। उसे कम्पनी ने इंडिया में ही शिफ्ट कर दिया है। जो संस्कार आपने हमें दिये थे, उन्हीं संस्कारों की जरूरत अब हमारे बच्चों को भी है।

आज पूरा घर खिलखिलाहटों से सराबोर हो रहा था। किचन में कुकर की सीटी दुगने जोश से बज रही थी। आज डायनिंग टेबल अपने आप में फूला नहीं समा रहा था।

*एल - १४४ ए-१, दर्पण कॉलोनी,*
*थाटीपुर, ग्वालियर - ४७४०११*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशोक सिंहासने

# दाता

हम दोनों मित्र अपनी बातों में खोए हुए थे कि अचानक एक दर्द भरी आवाज ने हमारा ध्यान भंग कर दिया - "कुछ मिलेगा बाबा? अंधे लाचार को।" हम दोनों ने सामने देखा एक बूढ़ा भिखारी जर्जर मैले कपड़ों में लिपटा लाठी से जैसे जमीन की ऊँचाई-गहराई मापने की कोशिश करते हुए सामने आकर खड़ा था। उसने फिर आवाज लगाई - "कुछ मिलेगा बाबा?" उसके आने से पहले हम दोनों अपनी-अपनी परेशानियाँ एक दूसरे को बताकर अपना-अपना मन हलका कर रहे थे।

अचानक मेरे मुँह से निकल पड़ा, हम खुद बहुत परेशान हैं बाबा। आपके पास कुछ हो तो हमें दे दो। मेरी आवाज सुन बूढ़े ने कहा - मैंने तेरी बात सुन ली है बेटा। तू अपने हाथ के चर्म रोग से बहुत परेशान है, परन्तु चिन्ता न कर मैं तुझे कुछ अवश्य दूँगा। और वह चला गया।

कुछ देर बाद पुन: आया और आवाज देकर बोला - ले बेटा इसे खा लेना, तेरी तकलीफ खत्म हो जावेगी। मै। चार दिन बाद आऊँगा, मुझे खाना खिलाना। यह कहकर वह चला गया। उसके जाने के बाद हम दोनों आपस में चर्चा करते रहे और मैंने बूढ़े की बात पर विश्वास कर उसके द्वारा दी गई जड़ीनुमा दवा उसके बताए अनुसार खा ली।

दो दिन बाद ही मैं आश्चर्य चकित था। मेरे हाथ का चर्मरोग निशान सहित ठीक हो गया। बहुत बड़े-बड़े डॉक्टरों एवं ऊँची से ऊँची दवाईयों ने जो काम नहीं किया, वह बूढ़े भिखारी की दी जड़ी ने कर दिया था। काफी ढूँढने के बाद भी वह बूढ़ा मुझे उन चार दिनों में कहीं दिखाई नहीं दिया।

ठीक चौथे दिन वह बूढ़ा पुन: मेरे दरवाजे पर आकर खड़ा था। बोला - "ला बेटा खाना खिला।" मेरी खुशी का ठिकाना न था। मैंने उसे बड़े प्रेम से बुलाया और फिर बिठाया। कुछ देर बाद खाना तैयार था। मैंने बड़े प्रेम से घर पर अंदर बिठा उसे खाना खिलाया। खाना खाकर बूढ़ा संतुष्ट हो मुझे आशीर्वाद देते हुए कहने लगा - बेटा, मैंने कई लोगों को यह दवा दी। किन्तु सभी ने ठीक हो जाने पर दुबारा जाने पर मुझे भीख के रूप में कुछ रुपये दिए और कहा - जा बाबा खाना खा लेना। पर तुमने मुझे घर पर आदर के साथ खाना खिलाकर मुझ बूढ़े अंधे का सम्मान बढ़ाया है, मेरी आत्मा को त प्त किया है। मैं तुझे कुछ देना चाहता हूँ। पर ध्यान रखना इससे दु:खी व्यक्ति की मदद करना और कोई भी प्रतिफल इसके बदले नहीं लेना।

मेरे द्वारा वचन दिये जाने पर उसने अपनी झोली से वही जड़ी निकाल कर दी और आशीर्वाद देते हुए चला गया। तब से आज तक मैं उसे ढूँढ रहा हूँ। पर वह मुझे दुबारा कहीं नहीं मिला। मैं अक्सर सोचता हूँ कि वह मुझसे भीख के रूप में कुछ ले गया या मुझे कुछ दे गया ?

*वार्ड नं. २२, बालाघाट (म.प्र.)*
*मोबा. ९३०२०७७८५५*


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिलीप कन्हारकर (अनु. संजय जोशी)

*मराठी कहानी*

# प्रतिष्ठा

बाहर का कार्य समाप्त कर जैसे ही केशव ने अपने घर में कदम रखा माँ के शब्द उसके कान पर पड़े "तुम्हे हवेली में बुलाया है।" केशव ने मन ही मन विचार किया कि आज पुन: विक्रम भैया ने परेशान किया होगा।

एक क्षण में ही केशव ने अपने अतीत में झांका, उसे याद आया ....केशव और विक्रम बचपन से ही एक दूसरे के खास दोस्त थे। यह जरूर था कि केशव और विक्रम की आर्थिक स्थिति में जमीन-आसमान का अंतर था, किन्तु उनकी मित्रता के बीच अमीर-गरीब का अंतर कभी नहीं दिखा। केशव का जन्म व बचपन किराये के मकान में दो कमरों में ही गुजरा था, जबकि विक्रम एक आलीशान हवेली में रहता था।

सुबह होते ही या तो केशव विक्रम के घर पर होता था या विक्रम केशव के घर पर। अधिकतर विक्रम ही केशव के घर ज्यादा आता-जाता था।

आंगन की साफ-सफाई व रोज निकाली जानेवाली सुन्दर रांगोली, विक्रम को बहुत अच्छी लगती थी। भोजन व रात्रि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विश्राम को यदि छोड़ा जाय तो विक्रम दिनभर केशव के घर ही रहता था।

विक्रम के घर में उसकी माँ व पिताजी थे, पिताजी को सभी लोग राव साहब के नाम से ही जानते थे। घर में नौकर-चाकरों की फौज थी, किन्तु मेहमान यदाकदा ही घर आते थे।

राव साहब का घर में रुतबा खूब चलता था, इस कारण सभी लोग उनसे बहुत डरते थे, फलस्वरूप घर में दहशत के रूप में शांति रहती थी।

राव साहब की दहशत इतनी ज्यादा थी कि वे दोनों घर में चुपचाप, गुमसुम, गूंगे की तरह मूक बनकर बैठा करते थे, मुँह से चू तक नहीं निकलती थी, ऐसी स्थिति में केशव-विक्रम का जी घबराने लगता तब वे घर छोड़कर विक्रम के घर आ जाया करते, घर में आते ही वे फिर से जोर-जोर से हंसते, गाते इत्यादि ....

विक्रम व केशव एक ही विद्यालय में एक ही कक्षा में पढ़ते थे, यद्यपि विक्रम घोड़ा-गाड़ी से स्कूल आ जा सकता था किन्तु केशव से मित्रता की वजह से वह दो-तीन मील पैदल चलकर ही विद्यालय आता-जाता था।

स्कूल की छुट्‌टी होने के बाद केशव व विक्रम मस्ती करते-करते रास्ते में आम-ईमली खाते घर आते थे। शांत बहने वाली नदी, घास, फूलों पर मंडराने वाली तितलियाँ, ये सभी बातें विक्रम को बहुत अच्छी लगती थीं उन्हें आनंद भी आता ही था। बाद में घर की याद आती व उदास मन से मन मारकर उनके कदम अपने-अपने घर की ओर चल पड़ते।

देखते-देखते उनके बचपन के दिन बीतने लगे। अब वे बड़े हो गए। केशव विक्रम ने आगे की पढ़ाई जारी रखते हुए अंवाह के महाविद्यालय में प्रवेश लिया। गाँव से कॉलेज दूर होने के कारण उन्होंने अंवाह में ही एक कमरा किराये पर लेकर उसमें ही साथ-साथ रहने लगे। कॉलेज की पढ़ाई शुरू हो चुकी थी, विक्रम को यहाँ सभी कुछ नया-नया सा लग रहा था। कॉलेज में आयोजित होने वाले काव्य सम्मेलन, कथा, चित्रकला, प्रदर्शनी इत्यादि विक्रम को मन से अच्छे लगते थे। उन सभी कार्यक्रमों में वह बढ़-चढ़कर भाग लेता था। विक्रम की व्यस्तता के कारण केशव व विक्रम की मुलाकात भी अब कभी-कभी ही होती। कथा, कहानी, नाटक, कविता के क्षेत्र में विक्रम के बढ़ रहे उत्साह के कारण विक्रम से केशव की मुलाकात शनिवार-रविवार को भी कम होने लगी।

इन बातों में केशव की रुचि न होने के कारण केशव शनिवार व रविवार को भी घर ही रहता था। एक दिन रविवार को अचानक विक्रम के पिता राव साहब इनके कमरे पर आ धमके। घर में विक्रम को न देखकर बहुत गरम हुए, उनका चेहरा तमतमाया सा था, मुँह से कुछ बड़बड़ाते हुए चले गए।

विक्रम के घर लौटने पर केशव ने यह बात विक्रम को बताई, किन्तु काम की व्यस्तता के चलते विक्रम ने बात को ज्यादा तवज्जो नहीं दी।

कॉलेज में अब एक ही नाम सबकी जुबान पर था, विक्रम विक्रम....। खेल, नाटक, कहानी, कविता सभी जगह पर विक्रम ही विक्रम नजर आने लगा, इतना सभी कुछ करते हुए विक्रम को परीक्षा में भी अच्छे मार्क्स आते थे, इस कारण उससे कुछ बोलने की भी हिम्मत किसी की नहीं होती थी।

नवंबर के महीने में काफलेज का वार्षिक स्नेह सम्मेलन था, स्नेह सम्मेलन की व्यस्तता के कारण विक्रम से मुलाकात होना असंभव सा ही हो गया, उसकी मित्र-मंडली ने "संगीत स्वयंवर" नाटक का मंचन करने की योजना बनाई। नाटक की प्रेक्टिस के कारण अब विक्रम रात को भी कमरे पर


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी-कभी ही आता, अब केशव व विक्रम की मुलाकात होना लगभग समाप्त ही हो गया।

एक दिन विक्रम के पिता राव साहब उनके कमरे में आकर खड़े हो गए, संयोग से विक्रम भी उस दिन घर ही था। विक्रम के नाटक व गाने की गूंज राव साहब तक पहुँच चुकी थी किन्तु वह विकृत रूप में। राव साहब का पुत्र नाचने वाला हो गया है, वह गाना भी गाता है, ऐसा उन्हें बताया गया था। विक्रम को देख वे आग बबूला हो गए, संताप व क्रोध के कारण उनके मुँह से शब्द नहीं निकल रहे थे। अचानक, राव साहब ने पन्द्रह मिनट में अपना सामान बांधने का विक्रम को आदेश दे दिया। अब अंवाह में रूकने का काम नहीं। विक्रम को लेकर राव साहब सीधे कमरे से बाहर निकल पड़े। मूलतः राव साहब का विक्रम का घर की हजारों बीघा खेती छोड़कर पढ़ाई के लिए शहर जाना पसंद ही नहीं था। विक्रम व केशव ने राव साहब को समझाने की बहुत कोशिश की किन्तु उनकी यह कोशिश व्यर्थ गई। राव साहब ने उनकी एक न सुनी, वे अपने निर्णय पर अडिग थे। केशव ने कहा - "राव साहब विक्रम का यह साल तो पूर्ण होने दीजिये, बाद में ले जाना।'' किन्तु केशव की इस विनती का भी राव साहब पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। विक्रम ने थोड़ा बहुत प्रतिकार करने का प्रयास भी किया किन्तु राव साहब के सामने निरर्थक साबित हुआ। विक्रम की आँखोंमें आंसू आ गए। भरी-भरी आँखों से उसने केशव को देखा किन्तु केशव भी अब असहाय था।

विक्रम राव साहब के साथ गाँव निकल गया। केशव अंवाह में ही रुका रहा। विक्रम के इस प्रकार अचानक जाने का दुःख केशव को भी था। पढ़ाई की व्यस्तता के कारण गाँव जाना कम ही होता था।

विक्रम घर पर खेती करता है इतनी ही जानकारी केशव को मिली थी। कॉलेज में अन्तिम वर्ष की परीक्षा देकर केशव भी गाँव वापस आ गया। अब इंतजार था तो केवल परीक्षा परिणाम व नौकरी के लिए आवेदन देने का।

गाँव से आने के बाद एक दिन शाम को केशव विक्रम के घर गया। तब पता चला कि विक्रम खेत पर गया हुआ है। रात को विक्रम से मुलाकात होगी ऐसा विचारकर केशव रात को खाने के बाद पुनः विक्रम के घर गया। उस समय भी विक्रम घर में नहीं था, पता करने पर मालूम हुआ कि विक्रम घर नहीं आएगा खेत पर ही रहेगा। केशव को बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह गाँव में आया हुआ है यह जानकर भी विक्रम उससे मिलने नहीं आया। केशव को बड़ा विचित्र सा अनुभव हुआ।

दूसरे ही दिन सुबह केशव विक्रम से मिलने खेत पर गया। कमरे में विक्रम है ये मालूम होने पर केशव ने कमरे में प्रवेश किया। प्रवेश करते हुए उसे बड़ा आश्चर्य हुआ, सामने बैठा व्यक्ति विक्रम ही है या और कोई, केशव देखकर हैरान था। क्योंकि उसके मन में विक्रम की जो छवि थी वह हाथ में गजरा, पान से ओंठ रंगे हुए, भारी-भरकम शरीर, गौर वर्ण की थी, विक्रम की इस छवि का वर्तमान छवि से कोई सामंजस्य नहीं था। केशव ने विक्रम से बोलने का बहुत प्रयास किया किन्तु असफल रहा। केशव दुःखी मन से घर वापस आ गया। घर आने पर मालूम हुआ कि उसका मात्र शरीर ही गाँव में आया है मन उसका अभी भी अंवाह में ही अटका हुआ है। प्रारंभ में विक्रम ने घर के लोगों को समझाने का बहुत प्रयास किया, किन्तु असफल रहा, घर में इस बात को लेकर बहुत वाद-विवाद भी हुआ था। किन्तु राव साहब के सामने विक्रम की एक नहीं चली। विक्रम की अवस्था अब "पिंजरे में कैद पक्षी" जैसी हो गई। उसने सभी से बोलना छोड़ दिया वह एकाकी रहने लगा। शून्य में नजर गड़ाकर एकटक शून्य में ही देखता रहता, निस्तेज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो गया था अब वह, उसके मन पर विपरीत प्रभाव हो गया था, वह अवसादग्रस्त रहने लगा। कभी हिंसक बन जाता, कभी जोर-जोर से चिल्लाने लगता, कभी किसी को मारने दौड़ पड़ता, ऐसी स्थिति में विक्रम को रस्से से बांधकर रखा जाने लगा, ऐसी अनेक बातें केशव के कान तक आने लगीं।

एक बार किसी काम के निमित्त केशव जब हवेली पर गया तो देखा कि दो व्यक्तियों ने केशव को पकड़कर रखा है। विक्रम की आँखों में लाल-लाल अंगारें हैं तथा वह जोर-जोर से गालियाँ दे रहा था। विक्रम का यह रूप देखकर केशव दंग सा रह गया, किन्तु केशव को देखते ही विक्रम अचानक शांत हो गया और दोनों घुटनों के बीच गर्दन रखकर सिसकियां भरने लगा। तभी से जब कभी विक्रम उग्र होता, केशव को हवेली से बुलाया जाता था। केशव विक्रम की पीठ पर हाथ फेरता तो वह शांत हो जाता।

यथासमय परीक्षा का परिणाम आ गया। केशव पास हो गया, बैंक में नौकरी लगने का ऑर्डर भी उसे मिल गया।

दूसरे दिन सभी से मुलाकात करने केशव हवेली में गया, अचानक उसके कान पर "मुझे भूल गए सांवरिया" इस गीत की पंक्तियाँ पहुँची, चौंककर उसने ऊपर देखा, खिड़की में से विक्रम झॉंक कर यह गीत गा रहा था तथा नजर उसकी शून्य की ओर थी। वापस जाते समय केशव के मन का विचार चक्र गतिशील हो गया, वह सोच रहा था कि विक्रम की इस अवस्था के लिए जिम्मेदार कौन? विक्रम को कॉलेज जीवन में विविध कलाओं से परिचित कराने वाला मैं..... अथवा राव साहब की झूठी प्रतिष्ठा ! यदि विक्रम आगे की पढ़ाई जारी रखता तो क्या उसकी अवस्था ऐसी होती? यह विक्रम का प्रारब्ध ही था! ऐसे अनेक प्रश्न केशव के मन को उद्वेलित कर रहे थे। उसके मन में प्रश्नों का जाला और गहरा होता जा रहा था।

*लेखक : कल्याण (प.) जिला ठाणे (महाराष्ट्र)*
*अनुवाद : लेले का बगीचा, लोहागढ़, लश्कर-ग्वालियर*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भगवत् भट्ट

लघुकथा

# ऐसा भी होता है

"ईश्वर की मर्जी के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिल सकता" एक सज्जन सह रेलयात्री ने बगल में बैठे यात्री से सहज भाव से कहा। यह दूसरा यात्री कुछ असभ्य व गंवार या कहें कि अक्खड़ किस्म का था। वह बोला - अरे नहीं, जो कुछ होता है वह प्रकृति करती है। ईश्वर कुछ नहीं है। वह कुछ नहीं कर सकता। जिसका अस्तित्व ही नहीं है वह क्या करेगा समझे ? यह कहकर उसने सज्जन यात्री के एक थप्पड़ जड़ दी। और हंसते हुए बोला - "यदि सब कुछ ईश्वर की ही मर्जी से होता है तो इसे भी ईश्वर की मर्जी मानो और सहन करो।"

यह सब देख सुनकर और भुगत कर ईश्वर पर विश्वास करने वाला हतप्रभ रह गया। सामनेवाले का वह कुछ बिगाड़ नहीं सकता था। वह स्वयं क्षीणकाय था। उसने हारे थके मन से कहा - "ठीक ही है, यह भी उसी की मर्जी थी।" और बेचारगी लिये शांतिपूर्वक बैठा रहा।

ट्रेन थोड़ी देर और चलती रही। एकाएक ट्रेन को जोर का झटका लगा और खिड़की का काँच वाला शटर टूट कर नीचे गिर गया। काँच के टुकड़े बिखर गए। यात्री जो खिड़की के पास बैठा था उसके चेहरे व उंगलियों पर काफी चोट आ गई। उस अक्खड़ के हाथ की तीन उंगलियाँ कट गई थी और वह हाथ भी वही था, जिस हाथ से उसने सज्जन यात्री को थप्पड़ मारा था।

आसपास के सभी यात्री यह सब देखकर आश्चर्य में पड़ गए। एक ने कहा - यह भी ईश्वर की मर्जी थी। जिसकी उंगली कटी थी, वह खामोश रह गया। शर्म से उसका चेहरा लटक गया। इलाज के लिए वह दूसरे स्टेशन पर उतर गया।

*डी.एम. १२९ दीनदयालनगर, ग्वालियर - ४७४०२०*

*मोबा. ८९८९४७३८१६१७*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिवकुमार पाण्डेय

# ओड़ा भर गोइंठा

राम-जनम पांड़े से घंटा भरि से रस्ता में खड़ा होके का बात करत रहलहा।

अरे मति पूछ! पांड़े आपा से बाहर भइल बाड़े सुदर्शन कोइरी ने जवाब दिया।

काहें, का बात हो गइल - टुन टुन दुबे ने पूछा।

बात पूछत बानी - किसनऊत टोला के छोकरा आगि बरसावत बाड़े स। पांड़े के एक कट्‌ठा खेत के फलत फूलत चना कबाड़ लीहले स।

कहिया-हमनी के त तनिको भनके ना लागल हा।

ए दूबे - अइसन बात मति करीं। एह गाँव के बच्चन बच्चन के ई बात पता बा। आ रउआ पता नइखे एकर विश्वास के करी।

तू करब, सभे करी। हम सुरुज भगवान को ओरि हाथ उठा के कहतानी - हमरा ई बात पता नइखे।

ठीक बा - त सुनीं। रउआ जानते बानीं दुतीन महीना पहिले पांड़े के दुनो बैल खोलि लीहल गइल रहलहा।

हँ इ-बात पता बा। बैल भी मिलि गइले स। इही पता बा।



CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

त इहो पता होखी बैल कइसे मिले।

पूरी बात न पता नइखे। सुना था दीयर में मिले।

और पांड़े को पाँच सात सौ रुपये पनहा देना पड़ा।

तो यह भी मालूम होगा - किसके जरिये पनहा देकर बैल छुड़ाये गये।

नहीं, यह नहीं मालूम।

का दूबे जी। गाँव में रहकर आपको पता नहीं और मैं महीने में दस से पन्द्रह दिन मामा के यहाँ का कारोबार सम्भालता हूँ फिर भी मुझे सब पता है।

तुम्हे पता होगा। मैं इस लंद फंद में नहीं पड़ता।

कइसे पड़ेंगे - जब खुद की भैंस, बैल खुलेगी तब समझ में आयेगा - लंद फंद।

अरे सुदर्शन - तुमको लग रहा है। हम बात घुमा रहे हैं। सच मानो मुझे इतना भर मालूम है, दीयर से पनहा देकर बैल वापस आये। न मैंने किसी से पूछा, न किसी ने बताया।

काहे राम जनम पांड़े से नहीं बात हुई।

हुई, रोजै मिलते हैं। वह ठहरा भड़भड़िया आदमी। कभी इधर की बात करता है कभी उधर की। कभी किसी की माँ बहन तो कभी किसी और की माँ बहन।

लेकिन टुनटुन बाबा बात पक्की कहता है। पांड़े कोई भी बात करे उसमें सोलहो आना सच्चाई होती है। अंदाज जरूर हल्का होता है।

इसी तरह बात करते रहने से गंभीर किस्म की बात भी हल्के-फुल्के से लोग लेते हैं। तुम्हारे मुँह से ही सुन रहा हूँ राम जनम पांड़े। लेकिन गाँव का हर बड़ा छोटा आदमी उसे भड़भड़िया पांड़े ही कहता है।

छोड़ो इन बातों में क्या दम है। यह बताओ किसके खिलाफ फौदारी करने जा रहा है। करने नहीं जा रहा है। कर आया है। वह भी नामजद। सुकरु के बेटा ने यह घिनौना काम किया है।

ऐं। इ तो बहुत घिनौना काम है। फलते फूलते बूँट को कबाड़कर जानवरों को खिला देना। अपराध ही नहीं पाप है पाप। कैसे-कैसे जी जांगर लगाकर खेत बोया जाता है और ये छोकरे उसे इतनी आसानी से कबाड़कर जानवर को खिला देते हैं।

इसी बीच घास को बोझ उठाये सरवन तिवारी आये - पूछा

टुनटुन पंडित से काहे भिड़े हो सुदर्शन।

नहीं, नहीं, हम लोग भिड़े नहीं। आपस में बात कर रहे हैं।

कौन सा गंभीर मसला हाथ आन पड़ा। तुम्हारे हाथ में तो सायकल है लगता है कहीं जाने की तैयारी में हो।

हँ रउती बाजार जा रहा हूँ। रामजनम पांड़े मिल गये। सेन्टर से फौदारी करके लौट रहे थे।

फौदारी - गाँव में नई बात अब तक गाँव में थाना फौदारी हुई नहीं।

हुई नहीं लेकिन अब हो गई। आखिर आदमी के सहने की ताकत भी तो होनी चाहिए।

पहेली मत बुझाओ। बात बताओ वह भी सीधी साधी।

हमें कोई पहेली नहीं बुझाना। जाकर सीधे रामजनम पांड़े से पूछ काहे नहीं लेते।

अरे वह तो भड़भड़िया है। तुम्हीं बताओ, फिर हम बतायेंगे उसकी बात में कितना दम है।

दम तो है तिवारी बाबा। भड़भड़िया है। परन्तु बात सोलहो आने सच कहता है। खरी खरी। कहने का ढंग हंसी मजाक का है इसीलिए लोग उसे गम्भीरता से नहीं लेते। - टुनटुन दुबे बोले।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सरवन तिवारी ने घस का बोझा रास्ते में पटक दिया। बोले खइनी बनाओ और बताओ बात क्या है।

बात यह है, सुदरसन से रामजनम ने बताया वह फौदारी करने नारायनागढ़ सेन्टर में गया था।

किसे खिलाफ और हुआ क्या?

अरे उसके चने की लहलहाती फसल जिसमें फूल लग रहे थे कबाड़कर कुटी काटकर जानवरों को खिला दिया गया।

यह तो बहुत ही घिनौना काम है।

मैंने भी सुना, पर इसके लिए फौदारी?

बार बार नुकसान कितना सहेगा आदमी। 'धीरज धरम मित्र और नारी, आपातकाल परखिये चारी' धीरज की भी हद होती है। अभी दू तीन महीना नहीं बीता बैल खोलकर ले गये।

इ सब किसनऊत और कनउजिया दूना टोल वाले कर रहे हैं। सुना, राम जनम को पनहा देना पड़ा तब बैल वापस मिले।

तो आपको यह भी पता होगा - यह किसका काम है।

ठीक ठीक तो नही कह सकता परन्तु किसनउत टोला के एक दो आदमी का नाम सामने आ रहा है।

तो मुझसे सुनिए। इसी टोले के सुकरू अहीर के बेटे का यह काम है।

बैलों का चुराना कि खेत कबाड़ना।

दुनों-ऊ छोकरा सकरू बदमाश छोकरा है। माँ बहन की गाली तो उसकी जबान पर रहती है। किसी का आदर नहीं करता। बाम्हन, ठाकुर, बड़-छोट, बूढ़-पुरनिया सबको एक ही लाठी हांकता है।

सुकरू तो ऐसा नहीं।

जरूरी नहीं बेटा भी आप सरीखे हो। सुकरू ने सम्भालने की कोशिश की। उसे गाँव से बाहर भेजा परन्तु वह वहाँ भी नहीं टिका।

जब अपनी सन्तान ही बेकाबू हो जाय।

अरे तिवारी, यदि बेकाबू है तो छोड़ो उसकी हाल पै। फिर उसको बचाना। गिड़गिड़ाना। दूसरों के हाथ पैर जोड़ना तो मत करो।

बाप का दिल है-क्या करें? नहीं मानता होगा।

बस इसी से बिगड़ैल लड़कों को बढ़ावा मिलता है।

तो सुकरू करे भी तो का करे।

घर से निकाल बाहर करे। खाना-पीना बन्द कर दे।

रसोई अलग कर दे-कुछ तो करना ही होगा।

सुकरू ने यदि ऐसा कुछ भी किया तो उसे ही घर से निकलना होगा। उसी का खाना-पीना बन्द हो जायेगा।

चलो बात बहुत हो गई। अपनी अपनी राह चलें। और तीनों अपने अपने मुकाम पर चल दिये। इसी बीच फौदारी की बात पूरे गाँव में फैल गई थी।

सभी का कहना था, सेन्टर में फौदारी हाने से अहिरान ठंढा पड़ेगा। माना मामूली दंड मिलेगा परन्तु उतने भर से गाँव में थुड़ी थुड़ी मच जायेगी। यह चर्चा बंगले में बैठे लोगों के बीच हो रही थी। बंगला यानी गाँव के दबंग और अब स्वर्गीय, मुखिया रहे रामटहल दूबे का बइठका - विशेष रूप से बनाया गया चौकोर, बीच में ऊँचाई, चारों और चौड़े खुले दरवाजे। आते जाते लोग बैठ जाते। अपनी सुनाते दूसरे की सुनते। खइनी खाते-चल देते।

गाँव के बड़े बुजुर्ग रामटहल बाबा के समय से ही यहाँ बैठते, चर्चा होती। रामायण, महाभारत पढ़ा जाता, अर्थ समझाया जाता।

गाँव की पंचायत भी तब यहीं बैठती। बड़ी से बड़ी बात का फैसला होता। गाँव के कई महत्वपूर्ण मामले निपटने का गवाह था यह बंगला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिना किसी जातपांत के भेदभाव के सभी लोग पंचों की बात सुनते, मानते, अमल करते।

बंगले में हो रही चर्चा के बीच सोनू दूबे बोल पड़े।

कुछ नहीं होगा सुधारू का। जघन्य अपराध किया है उसने। उसका दंड मिलना चाहिए उसे परन्तु...

किन्तु परन्तु क्या करने लगे।

इसलिए करने लगे कि सेन्टर में गाँव के पर्वत तिवारी की चलती है। वे गाँव की तरफ से न्याय पंचायत में पंच हैं। बोलता आदमी है, अपने सामने किसी की चलने नहीं देता। उसी की बात मानी जाती है फिर मामला भी इसी गाँव का है।

हाँ सुना है वह अपनी बातें मनवा के ही दम लेता है। अपने आगे सबकी बात काट देता है। तरक करता है - सब बातों का जवाब उसके पास है।

राम जनम के मामले में यदि तिवारी बाबा दखल दिए तो उनकी उदिया गुदिया बखान देगा, सात पुश्तों की कलई खोल देगा।

रामबरन ने कहा - सात पुश्त तो छोड़ दो। तिवारी के बार में ही बोलकर उनका गाँव में निकलना बन्द करा देगा।

इसी वार्तालाप के दौरान पर्वत तिवारी आते दिखे।

आईं बाबा आईं। बइठीं।

बहुत गम्भीर चर्चा चल रही है। हम आकर खलल डाल दिए।

नहीं बाबा। आप क्या खलल डालेंगे। वह तो रामजनम पांड़े की चर्चा हो रही थी।

क्या किया रामजनम ने।

सेन्टर में फौदारी दाखिल कर आया है।

किसके खिलाफ?

बाबा, सगरो गाँव जान गया है और आप अचरच से पूछ रहे हैं।

मुझे सचमुच नही मालूम। बात क्या है?

आप सेन्टर के पंच हो। आपको ही नहीं मालूम?

पंच रहने से क्या होता है? वहाँ जाने पर मालूम होगा।

सुकरू अहीर के खिलाफ दाखिल किया है।

अरे सकरू के खिलाफ नहीं उसके बिगड़ैल बेटे के खिलाफ।

हँ बाबा।

छोकरा बदमाश है। सुकरू भी परेशान है।

लेकिन बाबा गाँव भर में हल्ला है, उसका कुछ नहीं होगा।

काहे नहीं होगा? गलती करने वाले को सजा तो मिलेगी। लेकिन काहे के लिए फौदारी -

कठा दुकट्ठा फलत फूलत बूँट कबाड़कर जनावरों को लेहन डाल दिया।

इ तो बहुत घिनौना काम है। छोकरे ऐसा घिनौना काम करके पछताते भी नहीं।

पछताना होता तो करते ही क्यों?

तिवारी बाबा उठकर जाने लगे तो सोनू दूबे ने पासा फेंका - कह रहे हैं लोग कि सुकरू तिवारी बाबा के दुवार चक्कर लगा रहा है।

किसने कहा - उसका मुँह तोड़ दूँगा। फौदारी की बात मुझे यहीं बंगले में पता चली।

गुस्सा थूकि दीं तिवारी बाबा - चुनमुन कोइरी ने कहा।

काहें। किसी का कुछ भी अनरगल बात भी सुनुँ।

सुनना ही पड़ेगा। लोग बिना सिर पैर बात नहीं करते।

तुम लोगों को कोई काम नहीं - बतकूच न करो। बिना काम धाम के रोटी मिलती ही है।

रउआ त बात सुनबे ना कइनी आ उखड़ि गइनी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का बात सुननी है। बे सिर पैर की बात कोई कितना सुने।

बे सिर पैर के बात ना बाबा। हल्ला बा - बाबा किहाँ ओड़ा भरि गोईंठा आ कहैतरी भरि के सजाव दही पहुँचि गइल।

पर्वत तिवारी उखड़ गये। माँ बहन की गाली बकने लगे। गरजकर बोले - किसने कहा - नाम बताओ।

किस किस का नाम बताऊँ - एक हो तो बताऊँ भी।

तिवारी आपे से बाहर हो गये। बोले - रामजनम तो इ बात नहीं फैला रहे।

नहीं, रामजनम से तो हम लोगों की भेंट भी नहीं हुई परन्तु लोग कहते हैं तो सुनना पड़ता है।

सब बकवास है - किसी के पास कुछ काम धन्धा नहीं, दूसरों की इज्जत पगड़ी उछालने में ही मजा आता है।

बकवास ही सही बाबा, लेकिन यह तो सही है गाँव की पर पंचायत में भी आपके घर गोईंठा, दही पहुँचता रहा है।

अब तो तिवारी चुनमुन, सोनू आदि सभी बैठे लोगों पर बरस पड़े। जो मुँह से निकला - बोलने से नहीं चूके।

चुनमुन भी चुन नहीं रहे, बोले - ए बाबा रउआ बाम्हन देवता हईं आ न्याव के जगह बइठल बानीं - अइसन पवित्तर जगह बइठि के न्याव के बात सोचे के चाहीं आ करे के भी चाहीं।

हाथ पाँव पटकते तिवारी वहाँ से चल दिए। बड़बड़ाते जा रहे थे।

सोनू का कहना था - रामजनम की मुराद पूरी होगी अब वह केस जीतेगा।

वो कैसे?

अब तिवारी गोईंठा आ दही नही लेंगे और सेन्टर में सुकरू के बेटे की तरफदारी भी नहीं करेंगे।

अरे सोनू दूबे - तुम्हें बहुत गलतफहमी है तिवारी बहुत मोटी चमड़ी का आदमी है। इतनी सी बात - घर जाते जाते भूल जायेगा।

भूलेगा कैसे। हम भूलने देंगे तब न। चुनमुन कोइरी का कहना था।

इतने में रामजनम अपनी ढीली ढाली धोती ऊपर करते आ गये।

पहिले धोती ठीक कर। तब आके बइठ।

त का धोती खोलि के तोरा घरे....

चुप रह। बदजबान मति निकलिह।

अभी तोहरे कारन इहाँ गाली-गुफ्ता सुने के परलहा।

हमरा कारन - का हो गइल।

पर्वत बाबा खिसिया के बाल नोचत गइले हा।

कुछु कहते होखब - तोहार जबान खूब चले ला।

हँ। कहनी हा। रउवे सर सिफारिश करत रहनी हा।

हमार सिफारिश।

चिड़िक गइले हा बाबा। राउर फौदारी के बात उठल हा त हम कहि दीहनी हो ओड़ा भरि गोईंठा के बात...।

सुनकर रामजनम भी हँसने लगे। बैठे समस्त लोगों ने उनकी हँसी में साथ दिया।

तो गलत क्या कहा। उनको तो घूस में यही सब चाहिए।

फिर पंचायत के न्याव...

ऊ गाँव की पंचायत नहीं। ऊहाँ और गाँव के लोग भी बैठते हैं। इधर उधर किए तो इनकी सात पुश्त खोल दूंगा - पूरी जनमपत्री हमारे मुख पर ही है। और कई गाँव के लोग इनके गोईंठा और सजाव दही वाली बात जानते हैं।

और अन्त में चुनमुन कोइरी की बात पर्वत बाबा पर भारी पड़ी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुधारू की माँ और बाप को सचमुच वापस लौटना पड़ा। तिवारी बाबा ने अपने दुवार की मरती पर चढ़ने नहीं दिया। दोनों को लौटना पड़ा।

तिवारी बाबा ने दोनों को नीचे से ही चलता कर दिया। कहा - वहीं नारायनागढ़ में बात करेंगे - चिल्लाया और खरी खोटी अलग से कहा।

एक दो लोग सर सिफारिश में भी गये परन्तु इस बार उनकी भी दाल नहीं गली।

सुधारू को पचास रुपये जुर्माना सुनाया गया। यह उसके लिए भारी दंड था। पनहा में मिली रकम में से मिला हिस्सा भी परिवार के लिये भारी पड़ा। दूसरे दिन देखा गया - पर्वत तिवारी गाँव की हर गली और टोले में घूम रहे हैं। सबकी हाल-चाल जान रहे हैं। चुनमुन ने उनकी दुखती रग पर हाथ जो रख दिया था।

ओड़ा - बाँस की टोकरी

गोईंठा - गोबर से बना कंडा, उपला

सेन्टर - कई ग्राम पंचायतों को मिलाकर बनी न्याय पंचायत

बूँट - चना की फसल

सजाव दही - जमाई गयी दही

कहँटरी - मिट्टी की हांड़ी जिसमें केवल सजाव दही जमाई जाती है

*१८८, कल्पना नगर, रायसेन रोड*
*भोपाल - ४६२ ०२१ (म.प्र.)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रीमती आशा पाण्डेय

# और अम्मा जीत गयीं

आज फिर अम्मा को फोन लगाया। भाभी ने फोन उठाया। बताया - अम्मा सुबह से भागवत सुनने निकली हैं, अब तक नहीं आई हैं।

मैं इस हफ्ते तीन बार अम्मा को फोन लगा चुकी हूँ पर अम्मा हैं कि नदारद रहती हैं घर से।

यूँ तो अम्मा की याद आना एक स्वाभाविक सी बात है पर जब से पिताजी गुजरे हैं अम्मा की याद और भी ज्यादा आती है। पर अम्मा हमेशा मन्दिर या सत्संग में गयी हुई ही मिलती हैं। हालांकि अम्मा की ईशभक्ति हम लोगों के लिए कोई नयी बात नहीं, फिर भी यूँ उनकी ईश भक्ति हम सबको कभी-कभी बहुत परेशान कर डालती थी। सुबह उठते ही अम्मा नित्यप्रति पूजा पाठ करती मिलतीं। हम सबको भी अम्मा के नियमों का पालन करना पड़ता। कितनी भी भूख लगे, बिना स्नान और ध्यान के वह रसोई में न जाने देतीं और बिना भगवान् को भोग लगाये थाली भी न छूने देतीं। मेरे स्कूल या ट्यूशन से लेट हो जाने पर अम्मा घबराकर भगवान् से कितनी प्रार्थना कर चुकीं होतीं। यूँ तो मैं पढ़ाई में अव्वल थी, कक्षा में हमेशा अच्छा स्थान पाती, पर अम्मा इन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सबसे बेखबर पूरा श्रेय भगवान् को दे डालतीं। हम भी अम्मा को टेस्ट करते रहते। जब भी कोई काम न बनता तो अम्मा को कहते - "कहना जरा अम्मा अपने भगवान् से।"

अम्मा समझाती प्यार भरी डाँट से - "भगवान् का मजाक न बनाया करो, भक्त तो भगवान् को भी जीत लेते हैं। तुम सबको हमें भगवान् ने ही दिया है!"

नवदुर्गे के व्रत से लेकर सूर्य-चन्द्र ग्रहण तक अम्मा के अनिवार्य व्रत उपवास होते। बिना थके, बिना कुछ खाये पिये पूरे घर का काम आम दिन की तरह ही तन्मयता से निपटातीं। पिताजी कहते "क्यूँ इतना कष्ट देती हो शरीर को?" अम्मा कहतीं - "भगवान् की काया है।" हम अम्मा को समझाते - "अम्मा ये सूर्य-चन्द्र ग्रह-नक्षत्र हैं, हमारी प थ्वी की तरह। साइंस ने इसका पूरा अध्ययन कर लिया है।" पर अम्मा को हमारा विज्ञान समझ में नहीं आता और हमें उनकी भगवान् और उस पर उनका अटूट विश्वास।

कड़ी मेहनत और लगर के बाद आखिर मैंने पी.एम.टी. का टेस्ट पास कर ही लिया। परिणाम आते ही अम्मा ने हमें मन्दिर दौड़ाया और पूरा श्रेय फिर भगवान् को दे डाला। हम भाई-बहन नाक भौं सिकोड़ कर उनकी बात मान तो लेते पर उनकी आस्था हमेशा हमारी समझ से परे रहती। शायद पिताजी की वजह से जो अक्सर यह कहा करते - "कर्म करो डटकर, फल खाओ छककर" या "मन चंगा तो कठौती में गंगा"। ऐसा लगता कि जब फल कर्म में ही निहित है तो भक्ति का अतिरिक्त बोझ क्यों उठाया जाये। इसीलिये इन सबसे दूर रहना ही अच्छा लगता। हालांकि हम शायद नास्तिक तो नहीं थे पर अम्मा की तरह घोर आस्तिक भी नहीं।

अम्मा बतातीं - बेटा मेरे बाबू बहुत परेशान हुए मेरी शादी को लेकर क्योंकि पण्डितों ने शादी खूब लेट बताई थी। पर मैंने सोलह सोमवार व्रत किये तो मेरी शादी सोलह साल में ही हो गयी। हम मुस्कुराते रहते। अम्मा बतातीं - अदिति, तू पहली सन्तान हुई तो तेरी दादी बहुत नाखुश हुईं क्योंकि तेरी चार बुआ पहले से ही थीं। पर मैंने पुत्र कामना के लिये पूरे साल व्रत रखे। देख तेरे भगवान् ने दो भाई दिये। तेरी दादी बहुत खुश हुई।

हम जब भी परीक्षा देने जाते, अम्मा भगवान् के आले पर खड़ा करके रोली लगातीं, प्रसाद देतीं। हालांकि हमें वहाँ दो सेकण्ट खड़ा रहना भी भारी लगता, हम फटाफट हाथ जोड़ते प्रसाद लेते और निकल जाते। अम्मा पीछे से कहना न भूलतीं - "प्रबिसि नगर कीजै सब काजा, हृदय राखि कौसलपुर राजा।"

अम्मा की यादों ने बहुत देर तक सोने न दिया। जबसे पिताजी गुजरे, अम्मा मन से बहुत थकी-थकी एवं बुझी-बुझी सी रहतीं। बस मन्दिरों में ही बैठी रहतीं। कभी इस मन्दिर में कभी उस मन्दिर में। भोजन भी एक ही समय लेतीं।

पिताजी की बरसी भी आने वाली है, जाऊँगी समझाऊँगी अम्मा को, इसीलिये फोन किया था भाभी को कि अगले हफ्ते आ जाऊँगी। काम की आपाधापी तो लगी ही रहती है। एकाध हफ्ता रहूँगी अम्मा के पास जाकर - जरूर। बस एक-एक दिन काटे नहीं कट रहे थे। कब शनिवार आये। छुट्टी मैंने ले ही ली है हॉस्पिटल से।

आज जरा जल्दी ही घर से निकलना था पास के कस्बे में जननी सुरक्षा कैम्प का आयोजन होने जा रहा था। बस चप्पल डाल ही रही थी कि फोन की घंटी बजी फोन भाभी का था। बोलीं - "अम्मा की तबियत खराब है। बी.पी. बढ़ गया है, सो हॉस्पिटलाइज्ड कर दिया है।" मेरी एकदम से न जाने क्यों रुलाई सी फूट पड़ी। वो कहते हैं न 'एक तो रुआंसी ऊपर से भैया आ गये।' वैसे भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अम्मा की चिन्ता, इसलिये इस खबर ने मेरी बैचेनी बहुत बढ़ा दी। जैसे तैसे सामान बाँधा और रवाना हो गयी। शाम तक घर पहुँच गई। देखा वहाँ जाकर भाभी बिजी थीं और दु:खी भी। फ्रेश होकर मैं अस्पताल आ गयी। भैया ने बताया - "अम्मा को ब्रेन हेमरेज हो गया है।"

कन्डीशन क्रिटिकल थी। मैं एक डॉक्टर ही थी। बीमारी की गम्भीरता जानती थी। भैया को समझा कर घर भेज दिया। दो दिन से जाग रहा था वो। अम्मा कोमा में थीं। ऑपरेशन करना सम्भव न था। खतरनाक हो सकता था। बैठ गयी वहीं स्टूल डालकर देखले लगी माँ को।

अम्मा वैस ही गोरी चिट्टी, कुछ झटके स्वास्थ्य वाली पलंग पर शान्त मुद्रा में लेटी थीं। चलचित्र से कुछ दृ श्य और संवाद मन को झकझोर जाते। घर में जब भी कोई ज्योतिषी आता तो वे हाथ दिखातीं। हमेशा यह पूछतीं - ये बताओ मैं इनसे पहले मरूँगी या नहीं। वो कहता - हाँ, हाँ बइन, आप तो पहले ही जाओगी। माँ बहुत खुश होतीं। कहतीं - भगवान् ने मेरी सब सुनी है। देखना, इन्हीं के कन्धों पर जाऊंगी चढ़कर। अम्मा कितने ही जोड़े बिछुये, चूड़ी, बिन्दी-सिन्दूर दान किया करतीं। कहतीं - सुहाग अमर रहता है। उनको गहरा विश्वास था कि वो पिताजी से पहले ही जायेंगी। यहाँ तक कि जर्जर चूनर भी अलग निकाल कर रख ली थी चढ़ावे की। कहती थीं - ये चूनर उढ़ा देना ऊपर से। यू चूनर सुहागन को डाली जाती है। हमें आदत थी - अम्मा की ऐसी बातें सुनने की जो केवल बक-बक के अलावा कुछ नहीं लगती थी हमें।

अचानक अम्मा को हिचकी-सी आने लगी और श्वासों की गति कुछ तीव्र हो गयी। तुरन्त डॉक्टर साहब आ गये और उनकी धीती होती हुई श्वास को गति देने के लिए हार्ट पर प्रेशर देने लगे। हम हक्के-बक्के सिटपिटाये से खड़े थे। आज पहली बार हम भी उस भगवान् से प्रार्थना कर रहे थे जिनसे अम्मा हमेशा किया करती थीं। प्राणों की भीख और कुछ मोहलत माँग रहे थे हम सब। पर नहीं सुनी गयी हमारी फरियाद और अम्मा हमें छोड़कर चली गयीं।

सभी रिश्तेदार इकट्ठे हो गये थे। छोटा भैया भी कनाडा से आ गया था। अर्थी की तैयारी की जा चुकी थी। विधवा स्त्री के अनुरूप साजो सामान के साथ। पर मेरा मन अत्यधिक व्यथित और व्याकुल हुआ जा रहा था। अम्मा की एक और हिदायत रह-रह कर मेरे मन मस्तिष्क पर हथौड़े मार रही थी। चार दिन बाद ही पिताजी की भी पहली बरसी थी। अम्मा कहा करती थीं - "बेटा जो स्त्री पति की मृ त्यु के एक वर्ष के अन्दर उसके पीछे जाती है वो भी सुहागन कहलाती है।"

मैंने अपने टूटे हुए मनोबल को इकट्ठा किया और अम्मा की वो पीले गोटे वाली लाल जर्जर चूनर लाकर सफेद कफन को हटाकर, उनपर डाल दी। सारे रिश्तेदार हतप्रभ हो मेरी इस धृ ष्टता को धिक्कारने लगे। उन्हें क्या पता, सामाजिक परम्पराओं से ऊपर होती हैं मानवीय संवेदनाएँ।

जा रही थीं अम्मा मुस्कुराकर। मानो कह रही हों - "देखा बेटा, मेरा भगवान् और मेरा विश्वास।"

लगा, कुछ क्षणों को ही सही, अम्मा पुनर्जीवित हो गले से आ लगी हैं।

*दीनदयालनगर, ग्वालियर - २०*
*मोबा. ९४२५३४१४८१*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमलाशंकर मिश्र

*लघुकथा*

# कटहल

मैं जब-जब शर्मा साहब के बंगले से गुजरता, तब-तब मेरी आँखें उनके बंगले में उगे कटहल के पेड़ पर चली जातीं। उसकी एक-दो शाखाएँ बंगले के अहाते से बाहर निकली हुई थीं। उन पर जब कटहल लदने लगते तो उन्हें देखना, मुझे, बल्कि हर राहगीर को बहुत प्रिय लगता।

उस रोज भी मेरी आँखें कटहल की ओर गईं। किन्तु मैंने देखा कि बंगले के सामने कुछ लोग एक व्यक्ति की पिटाइ करने में जुटे हैं। पिटाई करने वालों में शर्मा साहब भी थे।

मैंने उनसे जानना चाहा कि बात क्या है? किन्तु वह कुछ बोले नहीं। उनका सारा ध्यान उस व्यक्ति की पिटाई में ही लगा हुआ था।

मैं भी जल्दी में था। मुझे अपने खुद के इलाज के लिए डॉ. सिंहल की क्लिनिक पर १२ बजे के पहले पहुँचना था और ग्यारह बज कर पचास मिनिट हो चुके थे।

क्लिनिक पर काफी भीड़ थी। एक घंटे बाद मेरा नम्बर आया। डॉक्टर साहब ने मुझे देखा, दवायें लिखीं और जल्दी ही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोगमुक्त होने का विश्वास दिलाया। फिर मैं क्लिनिक के मुख्य द्वार की ओर बढ़ा।

और तभी एक पिटा-कुचला आदमी लँगड़ाता-लँगड़ाता वहाँ आया। मुझे कुछ-कुछ लगा कि वह वही था जो डॉ. शर्मा और उनके मित्रों द्वारा पिटाई खा रहा था। मैंने इस सम्बन्ध में जब उससे पूछा तो ज्ञात हुआ कि हाँ, वह वही था और उसके द्वारा सड़क की ओर लटक रहे एक कटहल को तोड़ लिये जाने के कारण उसे दण्डित किया जा रहा था। उस दौरान उसकी इतनी पिटाई हुई कि उसकी नाक सूज गई और हाथ-पैर भी चोटिल हो गये। और इस तरह उसे प्राथमिक उपचार के लिए क्लीनिक आना पड़ गया।

तभी मैंने देखा कि रामवरण आ रहा है। रामवरण याने शर्माजी का छोटा लड़का। वह मेरे पास आया और मुझे एक कटहल थमाते हुए बोला - “पिताजी ने भिजवाया है। आप घर के सामने से निकले थे, पर रुके नहीं।” मैंने अनमने ढंग से कटहल ले लिया और ऊपरी मन से कह दिया - धन्यवाद। बस, फिर रामवरण चला गया। किन्तु मैं वहीं द्वार पर खड़ा रहा।

थोड़ी देर में पट्टी-शट्टी बँधवा कर वह पिटा-कुचला आदमी मेरे पास से गुजरा। मैंने उसे रोका और उसे वह कटहल भेंट कर दिया। किन्तु उसने उसे तुरत-फुरत दरवाजे से बाहर फेंक दिया। मैं उसकी आरक्त आँखें देखता रह गया।

*बर्गे की गोठ, जनकगंज*
*ग्वालियर - ४७४००१*
*मोबा. ९४५४५५१०५४*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



विनय षडंगी राजाराम

# वर्तमान ओड़िया कथा लेखन की पड़ताल– पारमिता शतपथी की कहानियों के बहाने

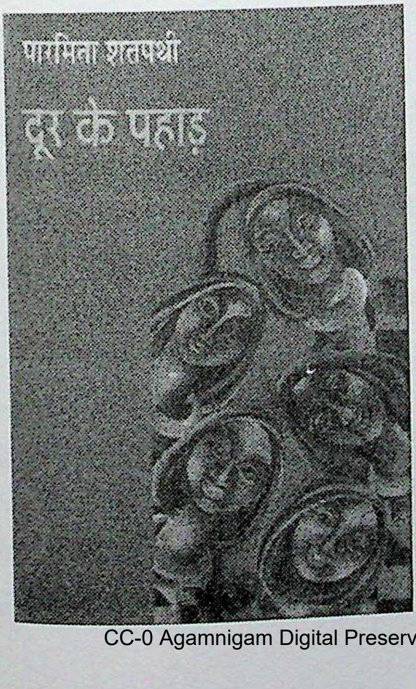


हिन्दी कथा-जगत् के दैदीप्यमान कथाकार मुंशी प्रेमचन्द ने साहित्य के उद्देश्य की चर्चा करते हुये 'कुछ विचार' नामक अपनी रचना में लिखा है - ''साहित्य का उद्देश्य हमारा मनोरंजन करना नहीं है। यह काम तो भाटों, मदारियों, विदूषकों और मसखरों का है। साहित्यकार का पद इससे बहुत ऊँचा है। वह हमारे विवेक को जाग त करता है, हमारी आत्मा को तेजोदीप्त बनाता है।''

विश्वस्तर के कथाकार प्रेमचन्द के द्वारा कही गई यह उक्ति न केवल उनके समस्त लेखन के 'प्रयोजन' को उजागर करती है, अपितु कथा साहित्य का समाज के प्रति जो उत्तरदायित्व है, उसे भी स्पष्ट करती है।

हिन्दी साहित्य में विशेषकर कथा-साहित्य के क्षेत्र में अस्सी के दशक के बाद बड़ी तेजी से यथार्थ वर्णन के नाम पर एक वाद विकसित होता चला गया जिसे संभवत: 'देह-वाद'' की संज्ञा दी जा सकती है। इस 'देह-वाद'' को प्रेमचन्द द्वारा संस्थापित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'हंस' पत्रिका के 'राजेन्द्र यादवी नव-संस्करण' ने खूब फलने फूलने का अवसर दिया। इस 'देह-वाद' के चलते नारी शरीर, नारी मन और नारी की अंतरंग भावनाओं के साथ पुरुष लेखकों से कहीं अधिक नारी लेखिकाओं द्वारा भी खूब खिलवाड़ हुआ है, हो रहा है। मृदला गर्ग, प्रभा खेतान, कृष्णा सोबती, अलका सरावगी, कृष्णा अग्निहोत्री और भी इन जैसी अनेक स्थापित-अस्थापित लेखिकाओं की पूरी जमात है। यों इस देहवाद का प्रभाव संचार माध्यमों एवं अनुवादों की सहजता के चलते भारत की प्राय: अन्य सभी भाषाओं के साहित्य पर भी खूब पड़ा है। बाँग्ला में लिखी तसलीमा नसरीन की 'आत्मकथाओं' में, मराठी नाटकों के द्विअर्थी संवादों में, कमला दास की कविताओं में, शोभा डे के अंग्रेजी उपन्यासों में, और भी अनेक भाषाओं के साहित्य में यह निरन्तर विकसित हो रहा है।

ओडिया कथा लेखिका पारमिता शतपथी की मूलतः ओडिया में लिखीं, हिन्दी में अनूदित कहानियों को पढ़कर यह समझा जा सकता है कि उनके लेखन में भी देहवाद का अच्छा खासा प्रभाव मौजूद है। यद्यपि इन कहानियों में नारी देह के स्थूल स्वरूप का चित्रण न होकर सूक्ष्म अभिव्यंजना अधिक है, तब भी स्त्री के शरीर का, मन का, विचारों का और अंतरंग भावनाओं का जो बाजार लगता है, वह भी देहवाद का ही एक प्रकार है। यों इन कहानियों में जो भाषागत सौष्ठव, शिल्प की पच्चीकारी और अभिव्यक्ति का झीनापन है, उसके कारण उनमें अभिधात्मक उन्मुक्त वर्णन के स्थान पर व्यंजनापरक ग्राह्यता का आभास अवश्य होता है।

'दूर के पहाड़' नामक कथा-संग्रह में कुल पन्द्रह कहानियाँ है। पन्द्रह में से पाँच कहानियाँ 'नारी-देह' के व्यापार की हैं, पाँच नारी की विवशता कीं। तीन कहानियों में नारी मनोविज्ञान की मुखरता है तो दो नितान्त भिन्न धरातल की श्रेष्ठ कहानियाँ भी इस संग्रह में है। संग्रह की पहली कहानी 'बाजार' मछली हाट की जीवन्तता से प्रारम्भ होती है। मछली ताजी है या बासी? कितने दाम की है? स्वाद अच्छा होगा या नहीं?

कहानी की नायिका नौकरी ढूँढती एक युवती भी किसी मछली से कम नहीं है। तमाम पूछताछ, देख-परख और मोलभाव के साथ कहानी का नायक अफसर संजय 'डेलीवेज' पर 'कम्प्यूटर डाटा एन्ट्री' के लिए कु. सरिता महान्ती को अपने कार्यालय में रख लेते हैं। लड़की स्वयं जो कहती है-" सबकुछ कर सकती है''।

संजय सर 'मछली' को पहचानने परखने की तैयारी में है। सहसा चिलिका झील का दौरा निकाल लेते हैं और सरिता महान्ती को साथ चलने को कहते हैं। सरिता तो जैसे तैयार ही थी। उसे नौकरी जो पानी है, इसलिये हर हाल में संजय सर को खुश करना है तो 'नो प्राब्लम सर' कहकर वह अपने सर को खुश कर देती है। बदले में नौकरी मिलेगी या नहीं, नहीं जानती किन्तु पाँच हजार रुपयों की गड्डी अवश्य पा जाती है। इस कहानी में अफसर संजय नौकरी पाने की लालसा में उसके चंगुल में फँसी सरिता की खरीद-फरोख्त ही नहीं करता, अपनी पत्नी मीरा की भावनाओं और विश्वास की भी बोली लगाता है। पत्नी की माँ की तबियत और अपनी बहन के विवाह की परिस्थितियों का सौदा करता है। अन्तः......घूस से प्राप्त लाख रुपयों के आधे पैसे पत्नी के हाथों में सौपकर स्वयं के लिये आनन्द, तृप्ति और शान्ति सबकुछ खरीद लेता है।

संग्रह की इस पहली कहानी के स्वाद से पाठक को अन्य कहानियों के 'रसों' का आभास अवश्य हो जाता है, जो बहुत हद तक सच भी है।

दूसरी कहानी प्रेमगर्भ' एक गरीब दम्पत्ति की व्यथा-कथा है। कथा नायक एक रिक्शा चालक


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है। रिक्शा चालक सुरेश रिक्शा खरीदने के लिये उधार देनेवाले डल्लू सेठ को इसलिये मार देता है क्योंकि वह उसकी नवोढ़ा पत्नी का भोग करना चाहता है। बल्कि उसने तो पैसे भी उसी बदनीयती से दिये थे। डल्लू सेठ के मर जाने पर सुरेश को जेल हो जाती है, जिसे छुड़ाने के असफल प्रयास में, फिर उससे मात्र एकबार मिलने के लिये उसकी पत्नी को न जाने कितने लोगों के साथ कितनी रातें गुजारनी पड़ती हैं।

विडम्बना है कि सुरेश की पत्नी सेवती अपने दैहिक शोषण को सहज स्वीकार करती जाती है कि शायद इसी के बदले उसका पति उसे वापस मिल जाये। इस कहानी की पराकाष्ठा यह है कि सेवती के अवांछित गर्भ को आजीवन कारावास भोगता उसका पति सुरेश अपना बच्चा कहता है, ताकि उसकी पत्नी पर कोई 'कुलक्षणी' का आरोप ना लगाये। फिल्मी ड्रामे की तरह घिसी-पिटी इस कहानी का यह सकारात्मक पक्ष कुछ सुकून देता है।

इसी तेवर की एक और कहानी संग्रह में ग्यारहवें क्रम पर 'छिन्न मल्लिका' नाम से संग हीत है। शरीर बेचकर गहने, कपड़े तथा अन्य सुख-सुविधाओं को सहज हासिल करने वाली एक सुन्दर युवती की कहानी है, जो अपने शरीर-सौष्ठव को वस्तु की तरह सजाकर बेचती है। इस बिकने-बिकाने की मंडी से परिचय करानेवाली भी एक संभ्रान्त युवती ही है। यह सिलसिला जैसे बस यों ही चलता रहता है, मानो नारी देह की बिक्री में ही उसकी सार्थकता है।

देह-वाद' की इन कहानियों में संग्रह की तीसरी कहानी ''सहेली'' ने मन को कुछ अधिक विचलित किया। यह विचलन संभवत: इसलिये भी हुआ कि दो सहेलियों का सम्बन्ध किसी भी घनिष्ठ पारिवारिक सम्बन्धों से ऊपर होता है, जिसकी न तो व्याख्या की जा सकती है, न समीक्षा। सहेलियों की घनिष्ठता में ऐसी दुरभिसन्धि का कोई स्थान कैसे हो सकता है?

कथा-लेखिका ने 'सहेली' नामक कहानी में इतिश्री और जया नामक दो अंतरंग सखियों की कथा को प्रस्तुत तो किया है, किन्तु उनकी अन्तरंगता में भी 'देह-व्यापार' का जो जाल बुना है वह संत्रासदायक है।......जया अपने पिता की मृ त्यु के पश्चात अपने भाई की अनुकम्पा नियुक्ति के लिये इतिश्री के पास आती है। इतिश्री के अफसर पति इस कार्य में आसानी से सहायता कर सकते हैं किन्तु सम्बन्धों के साथ खिलवाड़ न किया तो कहानी कैसे बनेगी? सो, लेखिका ने इतिश्री के अफसर पति को प्रसन्न करने के लिये जया द्वारा कैसे धीरे-धीरे फन्दा फेंका जाता है, उसका बड़ा ही रोचक वर्णन किया है। सुन्दर पत्नी के होते हुए भी स्त्री की आदिम गंध की ओर ललचाई नजर से चोरी-छुपे देखने वाले सहेली के पति को आखिर जया अपने प्रेमपाश में बाँध लेती है, जिसके बदले में उसे अपने भाई की अनुकम्पा नियुक्ति का पत्र मिल जाता है। सहेली इतिश्री इन सब खेलों से अंत तक अनजान ही नहीं, धोखे में भी है। सहेली तो धोखा देती ही है, उसका पति भी उसे धोखा देता है। किन्तु वह भोलेपन से अपनी छलनामयी सहेली जया का पुन: स्वागत करने को तत्पर है।

इस प्रकार खंडित होते सम्बन्धों के वर्णन, सामाजिक संरचना, गृ हस्थ जीवन, सखी-सहेलियों का प्रेमभाव सबकुछ चुपके से छीन लेते हैं। न जाने कितने पाठकों के मन में शंकाओं के बीज अँखुआने लगते हैं। क्या यही हमारा समाज है? एक नारी कथाकार का यह कैसा द्र ष्टिकोण है कि वह प्रत्येक नारी पात्र में एक ही विसंगतरूप देखती है- हर हाल में शरीर का बिकाऊपन।

पारमिता शतपथी ने जिस ओडिशा प्रदेश की प ष्ठभूमि से इन कहानियों को उठाया है, क्या वहाँ की लड़कियाँ, युवतियाँ, नारियाँ चाहे रिक्शेवाले की पत्नी हों या संभ्रान्त घर की बहू, हर महिला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक ही मार्ग पहचानती है - देह व्यापार का मार्ग? क्या हम ऐसे ही समाज में जीने को बाध्य हैं? क्या लेखक का यही दायित्व बोध है?

अम ता प्रीतम ने कभी कहा था, उन्हें नारी होने का गर्व है। वे नारी बनकर बारम्बार जन्म लेना चाहती हैं। उनकी कहानियों में भी खूब यथार्थ का चित्रण होता है, नारी के मन के अंतरंग क्षणों का मार्मिक आकलन होता है, किन्तु उनकी नायिकाएँ स्त्री होने का बोझ नहीं ढोती हैं, न ही स्त्रीपन का बाजार लगाती है। पारमिता शतपथी की कहानियों में यथार्थवाद के नाम पर नारीदेह का जो उपयोग किया गया है, उससे मुझे ऐसा आभास होता है, मानो सुन्दर वस्त्राभूषण में लिपटी नारी-देह की ठठरियों का वर्णन किया गया हो।

संग्रह की शीर्षक कथा 'दूर के पहाड़' की कथा में 'दूर के ढ़ोल सुहावने' के मुहावरे को लेकर एक संभ्रान्त अनब्याही महिला के हृदय की वेदना को रूपायित करने का प्रयास किया गया है।

'भंगुर' कहानी में पति-पत्नी के अनचाहे घिसटते रिश्तों की कहानी है। 'विविध अस्वप्न' अत प्त ग हिणी की अत प्त कथा है, जो बड़ी वित ष्णा के साथ अपनी ग हस्थी खींच रही है। पागल हो गये पति का काम वह 'दाल और तरकारी' बनाने की तरह पूरा कर लेती है, जिसमें कोई प्यार या कर्त्तव्य नहीं, मात्र काम को पूर्ण करने या निपटाने का भाव है। रिश्तों के खोखलेपन की इन्तहा है। 'विस्म त विहंग' असफल प्रेम की स्म ति कथा है तो 'पिंजरा' मध्यमवर्गीय नारी की पिजरें में बन्द तोते सी व्यथा कथा है। 'बयान' खण्डित और विफल प्रेम की प ष्ठभूमि पर गढ़ी गई मनौवैज्ञानिक कहानी है, बेहद अस्पष्ट अद श्य सी। ठीक इसी भावभूमि की कहानी है 'चन्द्रशिला' जिसे मनोवैज्ञानिक प्रतिश्रान्ति की कथा कह सकते हैं। 'स्वाद' और 'त प्ति' में एक संभ्रान्त विदुषी ग हिणी की स जनशील अत प्ति की कहानी है। कैसी विडम्बना है कि एक सेल्समेन जैसे 'होम डिजायनर' युवक के सम्मुख प्याज के परत की तरह अपने मन को खोलते-खुलते हुये ही मानो वह त प्ति का अहसास कर पाती है। 'मात त्व' कहानी बस्ती में जीती एक 'बेचारी' नारी के बेबस मात त्व की कहानी है जो मात त्व के नाम पर जुगुप्सा जाग त करती है।

'दूर के पहाड़' की दो कहानियों का विशेष जिक्र करना जरूरी है। क्योंकि ये कहानियाँ संग्रह की अन्य कहानियों से न केवल विषय के चुनाव की द ष्टि से भिन्न हैं, अपितु प्रस्तुतिकरण तथा उनका शिल्प-विधान भी पर्याप्त नये प्रकार का है।

कटते जंगल और मारे जाते जानवरों के प्रति संवेदनाओं को जाग त करती कहानी है 'आरण्यक'। पर्यावरण का उपभोग करने वाली नई पीढ़ी, अपने कौतुक के लिये जंगल के जीवों को मार डालनेवाली नई पीढ़ी को उन्हीं के बीच विकसित प्रेमाभिव्यंजना के माध्यम से जागरूक कर पाने की क्षमता के कारण यह कहानी नकारात्मकता के पीछे से विकसते सकारात्मक भावों की सहत अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई है। कथा की नायिका स्वयं भी मानो एक निरीह प्राणी है। उसका तथाकथित प्रेमी उसे इसीलिये तो चाहता है, क्योंकि उसे बराबरी की नौकरी करनेवाली फूहड लड़कियॉ कतई पसंद नहीं। वह तो अपनी मॉ की तरह हर हाल में खुश रहनेवाली पत्नी चाहता है, जिसे वह अपनी इच्छा से, अपने तईं 'हर हाल में' खुश रखेगा। किन्तु यह उसका दुर्भाग्य ही है कि उसकी निरीह प्रेयसी उसके द्वारा मारी गई तीन मोरनियों की जिन्दगी मॉग लेती है, प्रेम के उपहार के रूप में। 'उन तीन मोरनियों को जिन्दा कर सकते हो मेरे लिये?' कथा नायक को आघात लगता है। यह तो उसकी उपेक्षा है-'व्हाट रबिश'? पर्यावरण के प्रति जो गहरी संवेदना इस कहानी में दिखाई देती है, उसका लक्ष्यार्थ कहीं-न-कहीं नारी भी है। यही इस कहानी की विशेषता भी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संग्रह की श्रेष्ठ कहानी है, इसकी अंतिम कहानी – 'कारगिल की गोद'। इस संग्रह की सार्थकता इसी कहानी से है। इस कहानी को लिखकर पारमिता ने जैसे कथा साहित्य के कारगिल की चोटी जीत ली। स्म तियों को वर्तमान के साथ जोड़ते हुए जो अनूठी शैली इस कहानी में विकसित हुई है, वह अद्‌भुत है। यह सार्थक कहानी का मार्मिक उदाहरण है।

कारगिल युद्ध में युद्धबंदी बनने के बाद अमानवीय यातनाओं के साथ मारे गये युवा पुत्र के विछोह की ऐसी मार्मिक और सजीव अभिव्यक्ति हुई है कि पढ़नेवाला भी क्षण-प्रतिक्षण कहानी के भीतर डूबता चला जाता है। कहानी का हर मोड़ एक नये आतंकित दुःख के साथ आता है, बहुत सारा मर्मान्तक दुःख झेलकर पाठक को आगे बढ़ने को मजबूर करता है। प्रत्येक परिच्छेद आतंक का ऐसा भयानक रूप प्रस्तुत करता है कि दिल दहल जाता है।

जो माँ नाभीनाल से निकला चार बूँद खून देखकर व्याकुल हो जाती थी, वही मॉं अपने बेटे के कटे-पिटे शरीर को देखकर कैसे धैर्य धारण करेगी?

"मुन्ना रे, मेरे लाड़ले, तू कहाँ है?"

दुनियाभर की नदियाँ, नाले, तालाब कहॉं सूख गये। मेरे लाड़ले! एक बूँद पानी तक नहीं दिया तुझे उन्होंने! छह दिन, छह रातें – बूँद भर पानी के लिये तरसता रहा तू।

'बेटे रे! क्या बातें कर रहे हैं ये लोग.... एक-एक करके निकाली है तेरी आँखें।''

स्म ति और आत्मालाप से व्याकुल कर देने वाले संवादों के सहारे कहानी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों अमूर्त होती जाती है-निर्वैयक्तिक। ....सार्वजनीन होती जाती है कहानी। एक पुत्र या एक माँ की नहीं, कई पुत्रों और माँओं की कहानी बन जाती है। कई माँए धीरे-धीरे एक 'कारगिल माँ' में बदल जाती हैं।..... "उसे जरा रजाई ओढ़ा देना।''

"तुम निश्चित होकर लौट जाओ, वह मेरे पास आराम से सोएगा।'' कारगिल माँ विश्वास के साथ कहती है।

नई तरह से कही गई यह कहानी अपने कथ्य और शिल्प दोनों के लिये लम्बे समय तक याद की जाती रहेगी। पारमिता शतपथी को 'देहवाद' के भूल-भुलैये से बाहर निकलकर ऐसी ही सार्थक और सशक्त कहानियों से कथा-संसार को सम द्ध करने का भाव विकसित करना होगा तभी वे प्रेमचन्द जैसे पित पुरुष के ऋण से उत्ऋण हो सकेंगी।

पारमिता शतपथी का शिल्प विधान अत्यन्त उत्कृष्ट है। भाषा में रवानगी है, शब्दों के चयन में जीवन्तता है। हिन्दी और ओड़िया भाषा के गहन ज्ञाता एवं अनुभवी अनुवादक श्री राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने ऐसा जीवन्त अनुवाद प्रस्तुत किया है कि कहानियाँ पढ़ते समय मूल भाषा का ही आस्वाद मिलता है। भारतीय ज्ञानपीठ का प्रकाशन है, अतः त्रुटिरहित एवं साफ-सुथरा है।

कुल मिलाकर 'दूर के पहाड़' कहानी संग्रह का हिन्दी में स्वागत तो होना ही चाहिये, क्योंकि इस कहानी संग्रह के बहाने वर्तमान ओडिया साहित्य के कथा संसार का, ओडिया समाज में व्याप्त संगति-विसंगतियों का तथा ओडिशा के साहित्य जगत् के प्रगतिशील द ष्टिकोण का भी आभास मिलता है।

**'दूर के पहाड़' कहानी संग्रह : मूल-ओड़िया**
**लेखिका – पारमिता शतपथी**
**हिन्दी अनुवादक – श्री राजेन्द्र प्रसाद मिश्र**
**प्रकाशक – भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली**

*अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. कामिनी

# जीवन का बहुरंगी दस्तावेज : अंतहीन यात्रा

साहित्य की सृ जन यात्रा में श्री जगदीश तोमर का नाम सम्मान से लिया जाता है। वे समकालीन कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। 'काँच की दीवार' एवं 'अपने समय के लिए' उनके चर्चित काव्य संग्रह हैं। वर्तमान में तोमरजी प्रेमचन्द स जन पीठ, उज्जैन के निदेशक हैं। उनका 'अंतहीन यात्रा' कहानी संग्रह शिल्पायन, दिल्ली से प्रकाशित है। इस संग्रह में सत्रह कहानियाँ संकलित हैं। 'अपनी-अपनी परिधि' से लेकर 'अंतहीन यात्रा' तक की इन कहानियों में जीवन के विविध रंग हैं। जीवन के यथार्थ का स्पन्दन है। यह कहानी संग्रह, भाव सुमनों का सुरभित पुष्पगुच्छ है और हर पुष्प की अलग-अलग सुगंध है। मानव मूल्यों की आस्था का सजग प्रहरी है यह कथा संग्रह। राहुल आदित्य राय के शब्दों में 'अंतहीन यात्रा कहानी संग्रह जीवन और समाज के विविध रंगों की कथा सुनाते हुए विश्वास और प्रेम की तरंग पैदा करता है।

कहानी का अपना मिजाज होता है। अपने तेवर होते हैं। जीवन में जो कुछ टूट रहा है, छूट रहा है, वह पीड़ा ही तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानी है। कहानी मनुष्य के जन्म और जीवन से जुड़ी है। दूसरों को समझते-समझते स्वयं को समझने की कोशिश में लिखी जाती है कहानी। कहानी समय की माँग है, आवश्यकता है। केवल समय जीवित रहता है, हम सब तो बहुत पीछे छूट जाते हैं। समय जीवित है, इसलिए कहानी सदैव जीवित रहेगी क्योंकि कहानी जीवन का उत्सव है और संघर्ष भी। कहानी अपने समय की सच्चाईयाँ बयान करती है। वह अपने समय की चिंताओं से मुँह नहीं मोड़ सकती है। कहानी जीवन के अनुभवों का निष्कर्ष है।

साहित्य-सृजन एक अनुष्ठान है। पावन यज्ञ है। मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा साहित्यकार का सबसे बड़ा दायित्व है। 'अंतहीन यात्रा' कहानी संग्रह में लेखक मानव मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध है। अस्मिता और अस्तित्व की साक्षी हैं संग्रह की कहानियाँ। अभिव्यक्ति और चिन्तन की चमक है इनमें। कथ्य, शिल्प, संवाद और उद्देश्य की दृष्टि से कहानियाँ सफल हैं। भाषा में रवानी है, अपनी व्यंजना शैली है। पात्र - पाठक से संवाद करते हुए रूबरू हैं। संवाद कथानक को गति प्रदान करते हैं। जमीर को जगाती हैं ये कहानियाँ। घटनाओं में परिवर्तन की आहट सुनाई देती है। भीड़ में दूर से अलग दिखने वाले रचनाधर्मी हैं जगदीश तोमर। इनकी हर कहानी मन को आंदोलित करती है। जिज्ञासा उत्पन्न करती है और प्रारंभ से अंत तक बाँधने की क्षमता रखती है। कहानीकार की दृष्टि समाज के हर पहलू , हर कोण तक गई है, जिसमें समाज की खुशी और गम , गरीबी-अमीरी, संस्कृति , राजनीति, और धार्मिक स्वरूप गुंफित हैं। आसपास की कहानी। कोई एक क्षण, छोटी सी कोई घटना कहानी बन गई, जिसमें घर-परिवार है, रिश्तों की गर्माहट है। खीझ है, उलाहने हैं, विसंगतियाँ हैं। समाज और जीवन के प्रतिबिम्ब इन कहानियों में दिखाई देते हैं जो कहानी की जीवन्तता और सार्थकता का प्रमाण हैं। इसी से 'अंतहीन यात्रा' की कहानियाँ, इनकी हैं, उनकी हैं, सबकी हैं।

'अपनी अपनी परिधि कहानी में पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति की टकराहट है। विपुला पाश्चात्य संस्कृति में ढली हुई युवती है और सुलू को जो उसकी सहेली है अपने रंग में रंगना चाहती है, किन्तु सुलू उस वातावरण को पसन्द नहीं करती, नहीं जुड़ पाती है। वह अपने पति, पुत्र की चिन्ता करती हुई अपने घर की तरफ लौटती है। अपनी संस्कृति की तरफ। वह अपनी जड़ों को नहीं छोड़ पाती। वास्तविकता यह थी कि मि. कान्त के अति आधुनिक तौर-तरीकों ने सुलू को बहुत बोझिल बना दिया था। 'धरती का दर्द' कहानी नेताओं की स्वार्थपरता और वादाखिलाफी से रूबरू कराती है। बुढ़िया का यह कथन 'बेटा तूने अपने नेताये नहीं दिखायो।' उद्वेलित करता है। धरती का दर्द लेखक का दर्द बन जाता है और मुझे 'अपने बालसखा के मनुष्य होने पर शक हो रहा है।' यहीं चरम सीमा के साथ कहानी का अन्त होता है। 'निष्काशन' और 'किस्सा पांडे परिवार का' पारिवारिक समस्याओं पर केन्द्रित कहानियाँ हैं। जिसमें बुजुर्ग पीढ़ी की व्यथा-कथा अभिव्यक्त हुई है। जनरेशन गैप वाली मानसिकता का सजीव चित्रण है, जो आज की ज्वलंत समस्या है। 'चट्टान की पहली चीख' में खोखलेपन और शून्यता को उजागर किया गया है। यह कहानी मनुष्य की संवेदना को झकझोरती है। इसमें बुजुर्गों के साये की जरूरत को व्यक्त किया गया है। पांडे परिवार के किस्से में मोहिनी के माध्यम से यह कहलवाकर कि ' मैं भी यहाँ के एकान्त से बहुत परेशान हो गई हूँ और निवेदी के लिये तो मम्मी, पापा का साया बहुत जरूरी है। 'साँझ के सूरज की तमतमाहट' शीर्षक कहानी में गुरु और शिष्य की बिगड़ती हुई स्थिति का वर्णन है। आदर्श परम्परा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का ह्रास हो रहा है। मुरली पण्डित को उनके अपने शिष्य रंगबिहारी के रूखे व्यवहार से चोट पहुँचती है। यह भेंट पण्डितजी को नारकीय यातना से कम नहीं लगती है। अन्त में पण्डितजी तय करते हैं कि वह किसी साले से मिलने नहीं जायेंगे और आज ही जबलपुर के लिये रवाना हो जायेंगे। 'एक आदमी की फौज' कहानी में बड़े साहब का अपने भ त्य सूरत के प्रति आतंकपूर्ण रवैया सोचने के लिये विवश करता है। 'पिल्ले कहीं के, हट जा मेरी आँखों के सामने से, रोज आ जाता है जैसे इसके बाप का घर हो।' भाषा पर लेखक का पूर्ण अधिकार है। पात्रानुकूल भाषा पात्रों के चरित्र को स्पष्ट करने में सहायक है। सतीश बाबू द्वारा सूरत के पिता के साथ जाकर मदद करना, कहानी में भावुकता पैदा करता है।

'नई मस्जिद' कहानी, संग्रह की श्रेष्ठ कहानी है। इसमें धार्मिक कट्टरता, उन्माद और पाखण्ड का चित्रण है। धर्म की आड़ में होने वाले गलत कार्यों का पर्दाफाश है। यदि डॉ. इस्मत बानो जैसी उदार और नेक औरत आगे आने की कोशिश करती है तो उसे धर्म के नुमाइन्दों द्वारा ललकारा जाता है - 'बुर्का पहनकर आओ बानो, वरना अपने कुफ्र की सजा भुगतने के लिये तैयार रहो', ये तथाकथित धर्माचार्य बन्दिशें लगाते हैं। यह धार्मिक उन्माद फसाद फैलाता है और इन्सानियत सिसकियाँ भरती है। इसी कहानी में वह मोड़ आश्चर्यजनक स्थिति पैदा करता है जब एक हिन्दू माँ नई मस्जिद के निर्माण में एक हजार रुपये का योगदान देकर अपनी सदाशयता का परिचय देती है। यह माँ हिन्दू संस्कृति की उदारता का प्रतीक है। हिन्दू-मुस्लिम एकता कायम रखना ही कहानी का मूल प्रतिपाद्य है। मुस्लिम पात्र उर्दू भाषा बोलते हैं। इस दृष्टि से 'नई मस्जिद' कहानी कलात्मक है।

'मजहब से परे' कहानी भी मुस्लिम परिवार की कहानी है, जो साम्प्रदायिक सद्भाव का संदेश देती है। फूफीजान और रिपु साहब के पुराने सम्बन्धों की प्रगाढ़ता और प्रेम, इसमें उद्घाटित हुआ है।इस सद्भावना की आज के परिवेश में बेहद आवश्यकता है। ये परस्पर भावनात्मक सम्बन्ध एक दूसरे को जोड़ते हैं, समाज को जोड़ते हैं और राष्ट्र को मजबूत बनाते हैं। हमारी परम्परायें आस्थायें और विश्वास ही तो राष्ट्र की प्राणवायु हैं।

'स्कूल चल रहा है' कहानी वर्तमान शिक्षा पद्धति और स्कूलों की दुर्दशा और अधिकारियों की मनमानी पर प्रश्नचिन्ह है। 'पाककला की कक्षा में प्रिन्सिपल महोदया के चरित्र के माध्यम से स्कूल में चलने वाले 'कुकिंग प्रेक्टिकल में अच्छे अंक प्राप्त करने के बहाने छात्राओं के आर्थिक शोषण का चित्रांकन है। यहाँ तक कि इस कृत्य में मंत्री तक शामिल है, जैसे भ त्य का यह कथन 'साहब बोला है कि एक किलो फिस पकौड़े जल्दी कोठी पर भेज दो।' कहानीकार की पैनी नजर चारों तरफ देखती है और उस बुराई को प्रस्तुत करती है। व्यवस्था का दु:ख भारी है। कष्टप्रद दवं त्रासदायक। इसी क्रम में 'माया मोह' कहानी नारी मनोविज्ञान की कहानी है। प्रभाजी की ग हस्थी की चिंतायें, अज्ञात भय आदि टेंशन स्त्री की मनोदशा को प्रकट करते हैं। 'मैना फिर कैद हो गई' प्रतीकात्मक कहानी है। 'तीन बूढ़े' कहानी में तीन बुड्ढ़ों की रसिकता और बदनियती की पोल खोली गई है। बूढ़ों का मनोविज्ञान और उनका आचरण बखूबी विश्लेषित किया गया है। 'मैं पागल नहीं हूँ' कहानी अंधविश्वास और गलतफहमी की भाव भूमि पर लिखी गई है। अंधविश्वास के शिकार कुँवर सा. का डिप्रेशन अंतत: मौत में बदल जाता है। कहानी दुखान्त है। वसुधा पर दुख: का पहाड़ टूट पड़ता है। सरसुतिया का अट्टहास कहानी की वेदना को बढ़ाता है।

'अंतहीन यात्रा' संग्रह की अंतिम कहानी है। संग्रह का नामकरण इसी शीर्षक से किया है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखक ने। यह कहानी स्त्री और पुरुष के आधे-अधूरे प्रेम की कहानी है। बड़ी शालीनता से प्रेमी युगल अपने प्यार का इजहार करते हैं। संवाद प्रभावित करते हैं -

- ठीक है, शुभ्रा। अब हर सप्ताह तुम्हारे पास एक कविता पहुँचा करेगी।
- वचन देते हो?
- हाँ, वचन दिया
- कोई कविता सुनाओ -शुभ्रा ने धीरे से कहा।
- दूसरी कविता सुनाओ।
- तुम्हारे दूर होने पर/ यह संसार लोगों की भीड़ भरा/ श्रीहीन जंगल-सा लगता है।

कहानी का अंत, सुखांत है। 'आगे के इस सफर में हमारे रास्ते में जगह-जगह रौशनी के श्वेत कमल खिले होंगे और दिशायें मुक्तिगान गा रही होगीं।

निष्कर्ष रूप में 'अंतहीन यात्रा' कहानी संग्रह की कहानियों में जीवन का राग है, रोष है, आक्रोश है। व्यवस्था पर चोट है, चिन्ता है। सामाजिक बदलाव का उद्घोष है। विकृतियों पर प्रहार है। शुभकामनायें हवा में बोने की अभिलाषा है।

पुस्तक का आवरण प ष्ठ सादा, मोहक और आकर्षक है। पाठकों द्वारा इन कहानियों का स्वागत होगा, ऐसा मुझे विश्वास है। 'अंतहीन यात्रा' कहानी संग्रह पठनीय, विचारणीय एवं संग्रहणीय है। इन कहानियों पर चर्चा होनी चाहिये।

**कृति/अंतहीन यात्रा**
**लेखक - जगदीश तोमर**
**प्रकाशन - शिल्पायन, दिल्ली ३२**
**प ष्ठ ११२, मूल्य १४०/-**

*प्राचार्य, गोविन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय*
*सेवड़ा (दतिया)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ. सुरुचि मिश्रा

# भूभल : भारतीय संस्कृति की ओर ले जाता मीनाक्षी स्वामी का सशक्त उपन्यास

सुस्थापित रचनाकार मीनाक्षी स्वामी ने जीवन की विसंगतियों को समाजशास्त्रीय आँख से देखकर, उन्हें संवेदनाओं के संश्लिष्ट स्वरूप में कायान्तरित करने का कौशल एक नितांत असंक्राम्य मुहावरे में अर्जित किया है। वे अनुभवों को संवेदनाओं के ऐसे संभव और संप्रेष्य रूप में अभिव्यक्त करती हैं कि पाठक अविकल सत्ततपाठ के लिये विवश हो जाते हैं। यही कौशल उनके इस उपन्यास 'भूभल' में भी दिखाई देता है।

सुप्रसिद्ध रचनाकार मीनाक्षी स्वामी का नवीनतम चर्चित उपन्यास 'भूभल', स्त्री सरोकारों की सूक्ष्म जाँच पड़ताल करते हुये अंत में सामाजिक चेतना में रूपान्तरित होकर क्रांति का शंखवाद करता है। यह उपन्यास कथानक , भाषा, शिल्प, संवाद और प्रस्तुति में इधर लिखे गये उपन्यासों से बेहद नया, प्रभावी और औपन्यासिक संरचना की द्रष्टि से नई अनुगूंज लिये है। 'भूभल' का अर्थ है चिनगारियों से युक्त गर्म राख, निरन्तर प्रज्वलित रखने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिये इसमें कंडा (उपला) दबा दिया जाता है और जब चाहे हवा देकर इसे फिर से लौ बनाया जा सकता है। आग के बने रहने में गहरा प्रतीकार्थ है। भीतर की आग ही मनुष्य को कुछ कर गुजरने के लिये प्रेरित करती है, यही सिद्धहस्त लेखिका की सफलता है।

कानून और न्याय की व्यवस्था के अनेक विरोधाभासों का मार्मिक और तार्किक शब्दांकन मीनाक्षी जी ने बड़े ही कौशल से उकेरा है। जैसे ममता, रिया और उर्मिला का प्रकरण। इनके माध्यम से कानून के इस कड़वे पहलू से उपन्यास इस तरह परिचित कराता है कि दिल धक से रह जाता है, पैरों तले की धरती खसक जाती है और स्त्री के पक्ष में दिखने वाले कानून का असली छद्म खुलकर सामने आ जाता है। खासकर उन युवतियों के सामने जो प्रगतिशीलता और आधुनिकता के नाम पर संस्कारों से दूर हो रही हैं। उन्हें तथाकथित आधुनिकता के विकृत परिणामों का वीभत्स चेहरा दिखाकर भ्रमित और पथभ्रष्ट होने से रोकने के प्रयत्न में लेखिका पूरी तरह सफल है। इसे पढ़ने वाली युवतियाँ अवश्य ही वर्जेनिटी का महत्व समझेंगीं। इसे युवा पीढ़ी के पाठ्यक्रम में अवश्य ही सम्मिलित किया जाना चाहिए।

'भूभल', बेरहम व्यवस्था और अत्याचार की तीखी धूप में जलती नारी की उस गुहार को अपनी सर्जनात्मक शक्ति बनाकर प्रस्तुत करता है। नारी अस्मिता और स्वतन्त्रता से जुड़ा अहम प्रश्न है दैहिक स्वतन्त्रता का, जिसमें निरन्तर एक ही सवाल उठता है कि स्त्री अपने चाहने पर किसी पुरुष से सम्बन्ध बना पाती है या नहीं। मगर इससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसे स्त्री विमर्श के दौरान उपेक्षित ही छोड़ दिया जाता है, यह अहम प्रश्न है कि अपने न चाहने पर स्त्री किसी पुरुष को सम्बन्ध बनाने से रोक पाती है या नहीं? यह स्त्री की गरिमा, मर्यादा और अस्मिता से जुड़ा अहम वैश्विक प्रश्न है। उपन्यास इस केन्द्र के इर्द-गिर्द घूमता है और स्त्रियों के बेरहम शिकार में जाने-अनजाने शामिल हर पक्ष को कठघरे में खड़ा करता है।

किसी भी महिला के साथ जबरिया यौन सम्बन्ध वैश्विक परिदृश्य का दिल दहला देने वाला सच है। इसका सामाजिक पहलू तो कड़वा है ही, कानूनी पहलू स्त्री के पक्ष में खड़ा होने के बावजूद उसे शिकार बनाने के इस खेल में अनजाने ही शामिल हो जाता है। उपन्यास में इस कड़वे निर्वसन सत्य को बेबाकी से सामने रखा गया है। हृदय विदारक हादसों की अनुगूँज और पीड़ित स्त्रियों की कराहें पूरे उपन्यास में ध्वनित होती हैं जो पाठक के मन मस्तिष्क को इस तरह झकझोर कर रख देती हैं कि उसका मन समाज के अन्तर्विरोधों से उद्वेलित हो जाता है, उसकी आत्मा करुण क्रन्दन करने लगती है। न्यायतन्त्र के विरोधाभासों को लेखिका ने इस कौशल से उकेरा है कि पाठक आक्रोशित हो कुछ कर गुजरने को बेचैन हो जाता है।

यह एक साहसिक, विचारोत्तेजक और मार्मिक उपन्यास है। इसकी विषयवस्तु बिल्कुल नयी है और प्रस्तुतिकरण अद्भुत। भाषा का प्रवाह और कथ्य के प्रति जिज्ञासा पाठक को इस तरह बाँध लेती है कि एक बार शुरू करने के बाद पूरा पढ़ना पाठक की विवशता हो जाती है।

इस नायिका प्रधान उपन्यास की नायिका है कंचन। वह स्वाभिमानी, आत्मविश्वास से लबरेज, उसूलों की पक्की, अन्याय और भेदभाव से अपने दृढ़ चरित्र व मनोबल के सशक्त और तेजस्वी अस्त्र से जूझने वाली है। बाल्यावस्था से ही शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करने वाली कंचन शिक्षा पूरी करके न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति के साथ आरम्भ होती है। कंचन की मुख्य यात्रा जिसमें प्रभाव है, संघर्ष है, सामाजिक और मुख्य रूप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से कानूनी विवशताएँ हैं, जटिलताएँ हैं - कंचन इनसे जूझती है, टकराती है, मगर न तो टूटती है न ही बिखरती है। वरन् अपने भीतर मौजूद चेतना की अग्नि से इनके प्रवाह को मोड़कर अपने समय और समाज के बीच, उसे लौ को प्रज्वलित रखती है, जो समय आने पर दीपशिखा में परिवर्तित हो जाती है।

यही स्त्री चेतना है जिसे अपने द ढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति से वह सामाजिक चेतना में बदल देती है।

यह उपन्यास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू भी है स्त्री पुरुष को साथ लेकर चलने का आग्रह। स्त्री विमर्श का आशय, जो वैचारिक संक्रमण के चलते, पुरुष विरोध के दुराग्रह में बदल गया है, उसका विरोध दर्ज कराते हुए उपन्यास में सबको, समूचे समाज को साथ लेकर चलने का आह्वान है। यह सुखद संकेत है जो क्षमाशीलता, उदारता जैसे स्त्रियोचित संस्कारों में भी प्राण फूँकता है जो तथाकथित नारीवादी आग्रह के चलते कुचले जा रहे हैं। वह नारीवाद और स्त्री विमर्श के नये आयामों को प्रस्तुत करता है और खाँचे में बँटते समाज को पुनः जोड़ कर सशक्त बनाना चाहता है। उपन्यास समाज के इस भ्रम को दूर करता है कि कई समस्याएँ केवल समाज की आधी आबादी की हैं। वरन् स्त्री की समस्या से पुरुष भी पीड़ित होता है याने समस्या पूरे समाज की आधी आबादी की है। वरन् स्त्री की समस्या से पुरुष भी पीड़ित होता है। याने समस्या पूरे समाज की है। जैसे कि "पर ये भी तो है कि दोनों से मिलकर समाज बना है, एक की प्रॉब्लम हो तो दूसरा भी पीड़ित होता है।"(प ष्ठ १८३)

स्त्री की ताकत, पुरुष विरोध नहीं वरन् उसकी संकीर्ण मानसिकता और स्त्री के प्रति दुराग्रह को सकारात्मक दिशा में ले जाने में है। यही उसकी सफलता भी है और आदर्श स्वरूप भी। नायिका कंचन इसके प्रति द ढ़ प्रतिज्ञ है और इसे व्यावहारिक जामा भी पहनाती है। समाज, व्यक्ति से बड़ा है और संगठन की शक्ति से पोषित होता है। जैसे "इतने अपराधियों को कानून नहीं तोड़ पाया, मगर प्रकाश को जनमत ने तोड़ दिया।" (प ष्ठ १९४)

उपन्यास की कथावस्तु सटीक है, घटनाएँ आसपास की और स्वाभाविक। मीनाक्षीजी जैसी कुशल रचनाकार हर छोटे-बड़े पात्र के साथ पूरी शिद्दत के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं। चाहे वह कंचन के बाबूजी का सकारात्मक सोच भरा चित्रण हो, कंचन की अम्मा के पारिवारिक दायित्व का और रूढ़िवादी सोच का हो अथवा उसकी भाभी शोभा का चटपटा और मणि के साथ रागात्मक चित्रण।

दक्ष लेखिका ने इसी तरह बड़ी सहजता से व्यवस्था पर चोट की है। जैसे "पूरा केस तो वकीलों पर निर्भर है, जज आखिर न्याय करे तो कैसे?" (प ष्ठ १५७) "कोर्ट कचहरी तो अमीरों और ताकतवरों के लिए है। वकील फीस नहीं लेंगे तो क्या करेंगे। उनका पेशा है वे कोई सोशल वर्कर थोड़े हैं। ...पूरी दुनिया में ऐसा ही है। आखिर वकील अपने क्लाइंट को बचाने के लिए ही तो होते हैं। उनकी पढ़ाई का बेस ही यही है।" (प ष्ठ १५७)

इतनी मार्मिक चोट के लिए लेखिका को साधुवाद।

गहरी बातें भी लेखिका ने बड़ी सहजता और कलात्मकता के साथ कहीं हैं। जैसे "कंचन के वहाँ पहुँचते ही शान्ति पल भर को सन्नाटे में बदली, पर सन्नाटे ने तुरन्त पैंतरा बदला और फुसफुसाहट के रूप में बिखर गया।" "बाबूजी की थकान साइकिल पर ही टंगी रही। बच्चों की हँसी-खुशी आँगन से बाहर निकली। वह दरवाजे और साईकिल तक पहुँची तो साईकिल पर टँगी बाबूजी की थकान गायब हो गई।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपन्यास की प ष्ठभूमि कानूनी है। कानून जैसे शुष्क विषय पर काव्यात्मकता और कलात्मकता आस्वाद कायम रहने से उपन्यास बेजोड़ हो गया है। इसमें सामाजिक और प्राकृतिक प्रतीकों को भली-भाँति सहेजा गया है। खास तौर पर गुलमोहर के बिम्ब का पूरे उपन्यास में सहजता से चलना इसे अद्‌भुत कृति बना देता है। प्रकृति के ऐसे साक्षी भाव की हिन्दी की औपन्यासिक कृतियों में यदा-कदा ही देखने को मिलते हैं। जैसे "शाम को देर तक कंचन गुलमोहर के पेड़ से लिपटकर रोती रही और काका के होने के एहसास से मन को भरमाती रही।" (प ष्ठ ३२) "बूँदों के तेज थपेड़ों से गुलमोहर के पौधे पिटे-पिटे से लग रहे थे। पत्तियाँ सहमकर सिमट गई थीं, आपस में चिपक गई थीं। उन पर से गिरती पानी की अनवरत धारा, गुलमोहर के आँसुओं सी लगी उसे।"(प ष्ठ १९९)

मुहावरों का भी स्वाभाविक, प्रवाहमय और यथास्थान शोभन प्रयोग हुआ है। "न कपास न पूनी जुलाहों से लठमलठ" (प ष्ठ ६६), "साँप-छछून्दर की सी गति हो गई उसकी न उगलते बना न निगलते।" (प ष्ठ १५०)

भाषा में बिम्ब के साथ लेखकीय चिन्तन का विनियोग है। इससे कई बार पाठकों के साथ तादात्म्य स्थापित करते हुए जो दलीलें दी गई हैं, वे पाठकों के विचारों को उद्वेलित करके विचार विमर्श को जन्म देती हैं। "स्त्री के दर्द से उसके साथ जुड़ा पुरुष भी तो घायल होता है, इसीलिए तो पुरुष से बदला लेने के लिए सम्बन्धित स्त्री के साथ जबरदस्ती करना... ओह...।" (प ष्ठ १८३)

भाषा पात्रों के अनुरूप है। जैसे "रामकिशोर खींसे निपोरकर बोला - अरे वो हम भी जानते हैं। चाल-चलन खराब होता तो तुम्हें जोर-जबरदस्ती की जरूरत ही क्यों पड़ती? फिर तो मामला यूँ ही फिट हो जाता ना, है ना।" (प ष्ठ १५०)

डॉ. मीनाक्षी स्वामी ने अपने लेखकीय कौशल से पात्रों का मनोविश्लेषण बहुत गहराई से किया है। जैसे "ऐसी पूछताछ तो गैर करते हैं। अपने तो भरोसा करते हैं, कुछ नहीं पूछते।" (प ष्ठ २३९)

समग्र रूप में 'भूभल' उपन्यास के अर्थ में एक ऐसा दस्तावेज है जो जनचेतना, जनशक्ति से सामाजिक क्रान्ति का विश्वास जगाता है, शंखनाद करता है। "कोमल और नन्हीं बूँदें जब संगठित होती हैं तो चट्टानों को भी काटकर रख देती हैं।" (प ष्ठ २५५) "जनमत ने दाँतों तले उंगली दबा ली। इतनी ताकत है उसमें और वही अनभिज्ञ था अपनी ताकत से।" (प ष्ठ २५६)

इस साहसिक, विचारोत्तेजक और मार्मिक कथ्य की संवेदनशील और कलात्मक प्रस्तुति के लिए डॉ. मीनाक्षी स्वामी बधाई की पात्र हैं।

'भूभल' उपन्यास
लेखिका - मीनाक्षी स्वामी
सामयिक प्रकाशन, दिल्ली

*निराला नगर, बस स्टेंड के पीछे*
*बिलासपुर (छ.ग.)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu



अनामिका 'त्रिवि'

# दर्द का रिश्ता

राजीव ने एक ऑटो को आवाज दी। वह आया और उसने उसे गाँधीनगर चलने को कहा। ऑटो में बैठ राजीव अपनी माँ को उसके द्वारा लाया गया उपहार देने के बारे में सोच मन ही मन खुश हुआ। अचानक ही उसे बरसों पहले की बात याद हो आई। घर में कोई औरत-आदमी आए थे। औरत के चेहरे से ही शालीनता और सरलता झलक रही थी। वहीं आदमी का चेहरा कठोर और सख्त था। उसे याद है उस दिन माँ ने कुछ जल्द ही उसे खाना खिला कर सुला दिया था। पर बाहर हॉल से आती आवाज से उसकी नींद टूट गई थी। वह इतना ही सुन पाया था कि वह आदमी उसकी माँ से कह रहा था कि मेरा बेटा मुझे लौटा दो। जब सुबह उठ राजीव ने माँ से रात वाली बात जानना चाही तो माँ टाल गई। इस बात को हुए दिन बीतते गए। एक दिन जब राजीव स्कूल से लौटा तो माँ से बिना कुछ कहे चुप-चाप अपने बिस्तर पर जा गिरा। तब माँ ने उससे पूछा, क्या हुआ तब राजीव ने कहा कि जब तक वह उसे उस रात वाली बात के बारे में नहीं बताएगी तब तक वह न तो माँ से बात करेगा और न ही खाना खाएगा। तब माँ ने उसे एक वचन देकर मनाया था और तभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाकर उसने खाना खाया था। उस दिन के बाद से न कभी राजीव ने माँ से और न माँ ने राजीव से उस रात वाली बात के बारे में कुछ कहा। पर राजीव को याद है आज वह वचन पूरा हो गया। वह सेना में भर्ती हो गया। राजीव का आज वह वचन भी पूरा हो गया है, जो उसने अपनी माँ को दिया था। आज वह अपनी ट्रेनिंग खत्म कर वापस आ रहा है। अब वह उस रात वाली बात को जानने के लिए बेताब है। तभी एक भारी सी आवाज के कारण राजीव का ध्यान टूट जाता है और वह देखता है ऑटो वाला उसे उतरने तथा उसके पैसे देने के लिए कह रहा है।

राजीव ऑटो से उतरकर उसका किराया दे एक लाल बिल्डिंग के पास आकर खड़ा होता है। राजीव को गेट खोलते हुए ऐसा लगता है कि जैसे बरसों पुरानी मंजिल वह रात वाली बात आज उसके कितने करीब है। आखिर आज उसे वह बात पता चल ही जाएगी। राजीव अन्दर जाता है वहाँ पायल और माँ उसके इंतजार में बैठे हैं, माँ राजीव को देख खुशी से उठकर उसके सर पर हाथ फेरती है। राजीव माँ और पायल को उपहार दे हाथ-मुँह धोने चला जाता है। तब तक पायल खाने की टेबल लगाती है। राजीव के आते ही तीनों एक साथ बैठ खाना खाते हैं। माँ राजीव को बताती है कि जिस तारीख में पायल और तुम्हारी सगाई हुई थी, वही तारीख तुम्हारी शादी के लिए भी तय हुई है। यह बता माँ वहाँ से चली जाती है। राजीव और पायल खाना खत्म कर बालकनी में बैठ बातें करते हैं तभी पायल को जैसे कुछ याद आया और वो हॉल में जाकर अपने पर्स से एक सफेद लिफाफा लाकर राजीव को देते हुए कहती है, जब वह दोपहर में माँ की खाने में मदद करने आई थी, तब माँ ने उसे यह लिफाफा देते हुए कहा था कि रात में जब तुम खाना खा लो तो यह मैं तुम्हें दे दूँ। राजीव जल्दी से लिफाफा खोलकर पढ़ता है।

प्रिय बेटे,

राजीव

पायल अब तुम्हारे जीवन का एक हिस्सा है। इसलिए उसे भी यह बात पता होनी चाहिए। आज मैं तुम्हें उस रात वाली बात बताने जा रही हूँ, जिसकी सुनने की इच्छा तुम्हें बरसों से थी। उस रात जो औरत-आदमी आए थे वे कोई और नहीं बल्कि तुम्हारे दादा-दादी थे। बात उन दिनों की है, जब तुम्हारे पिता आर्मी की ट्रेनिंग पूरी कर घर वापस आए थे। मैं और तुम्हारे पिता एक दूसरे को बहुत पहले से जानते थे और एक दिन हमने घरवालों की मर्जी के खिलाफ मन्दिर में जाकर शादी कर ली थी। तुम्हारी दादी ने तो हमें अपना लिया था पर तुम्हारे दादाजी ने कभी इस रिश्ते को स्वीकार नहीं किया और हमें घर से चले जाने को कहा। अभी हमारी गृहस्थी को एक साल भी नहीं हुआ था कि तुम्हारे पिताजी एक युद्ध में शहीद हो गए। मैं तो टूट ही गई थी, पर तुम्हारे लिए अपने आप को हिम्मत देती रही। उस वक्त मेरी जिन्दगी का बस एक मकसद था कि तुम्हारी परवरिश मैं अच्छे से अच्छे तरीके से करूँ। तुम्हें याद है उस रात मैंने तुम्हें जल्द सुला दिया था। क्योंकि मुझे तुम्हारे दादाजी का पत्र मिला था। वह यहाँ आकर तुम्हें ले जाना चाहते थे। मैं उनका पूरा मान-सम्मान करती थी। पर मैं अपनी जिन्दगी से तुम्हें अलग करने के बारे में सोच भी न सकती थी। तुम्हारे दादाजी के अनुसार मुझसे शादी करने के कारण तुम्हारे पिता की मौत हुई और वह तुम्हें अपने साथ ले जाना चाहते थे और तुम्हें भी तुम्हारे पिता की तरह सेना में भर्ती करना चाहते थे। पर बेटा उस वक्त मेरी जिन्दगी में तुम्हारे सिवाए कोई नहीं था और तुमसे दूर होने का सदमा में बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। पर उस दिन से मैंने ठान लिया था कि तुम्हारे दादाजी का सपना मैं तुम्हें अपने पास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रखकर पूरा करूँगी। आज वह सपना सच हुआ। तुम्हारे दादाजी आज भी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। तुम सेना में भर्ती हो गए हो बिल्कुल अपने पिता की तरह। कल की तारीख में तुम्हारे पिता अपनी ट्रेनिंग पूरी कर अपने घर गए थे। कल तुम अपने दादाजी के पास चले जाना। उनको उनका खोया बेटा फिर मिल जायेगा। आज मेरे जीवन का ध्येय पूरा हो गया। आज मैं इस घर को छोड़ कहीं दूर जा रही हूं। तुम्हें तुम्हारे माता-पिता स्वरूप दादा-दादी के पास छोड़। तुम और पायल सदा खुश रहना।

चिट्ठी पढ़ राजीव और पायल आँख में आँसू लिए माँ के कमरे की तरफ दौड़ते हैं, वहाँ न तो पिताजी की फोटो थी और न हीं माँ की छोटी सी सन्दूक। जिससे राजीव समझ जाता है कि उसकी माँ उसे छोड़ कहीं दूर चली गई।

८, न्यू फ्रेंड्स सोसाइटी, कोलार रोड
भोपाल - ४६२०१६
मोबा. ९९८१७३६९४९


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कु. शीतल राठौर

# जिम्मेदारी

फोन की घंटी बजी। संकल्प ने फोन उठाया। सामने से आवाज आई - हरियाणा से इंस्पेक्टर ऋतुराज चौधरी बोल रहा हूँ। दरअसल हमें एक लाश मिली है जिनकी जेब से ये फोन निकला है। हम तो उसे लावारिश समझकर उसका अन्तिम संस्कार करने वाले थे। फिर भी हमने सोचा इस नम्बर पर एक बार फोन लगा लिया जाये। जिस पुरुष की ये लाश है उसके हाथ पर महिपाल लिखा है। और उसकी हालत एक भिखारी जैसी हो रही थी। उसके पास से एक बेग भी मिला है जिसमें पुराने से एक जोड़ कपड़े रखे थे और एक डायरी थी। उसमें कुछ कविताएँ और शायरी लिखी हैं।

संकल्प ने कहा - इंस्पेक्टर साहब वो मेरे पिताजी हैं। प्लीज आप उनका अन्तिम संस्कार मत करना। मैं और मेरा भाई अपने पिताजी को लेने आ रहे हैं। हम कल तक पहुँच जायेंगे। फिर फोन रखकर संकल्प रोने लगा। मैं उसके पास गई और उससे पूछने लगी - क्या हुआ बेटा! तू क्यों रो रहा है और तू पिताजी को लाने की बात क्यों कर रहा था? वो तो हमें आज से पाँच साल पहले ही अकेला छोड़कर चले गये अपने दोस्तों के साथ। तभी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संकल्प ने कहा - माँ! इस बार पिताजी हमें हमेशा के लिए छोड़कर चले गये हैं। यह सुनकर मेरे तो होश ही उड़ गये। मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। मैं भी रोने लगी। मेरा रोना सुनकर मेरी बेटी सोनाक्षी व बेटा विकल्प और उसकी पत्नी भी बाहर आ गये।

संकल्प ने सभी को पिताजी के न रहने की बात बताई। सभी रोने लगे। कुछ देर बाद संकल्प ने विकल्प से कहा - भैया हमें अभी हरियाणा के लिए निकलना होगा। वरना वो पुलिस वाले पिताजी का अन्तिम संस्कार कर देंगे। तभी भैया ने कहा - संकल्प, तू माँ के पास ही रह, मैं पिताजी को लाता हूँ। माँ को सम्भालने वाला भी यहाँ होना चाहिए। विकल्प और उसके मामा के दो लड़के राहुल और लोकेश तीनों ने उसी समय ट्रेन पकड़ ली।

इधर संकल्प भी बहुत रो रहा था। क्योंकि उसका अपने पिताजी से विशेष लगाव था। मैंने उसे हिम्मत बँधाई पर मुझे कौन हिम्मत देगा? मैं एक कोने में बैठकर अतीत में खो गई। मेरे माँ-बाबा ने मेरा और मेरी बहन दोनों का विवाह साथ में कराया था। विकल्प के पिता बहुत सुन्दर थे इसलिए देखते ही मैंने शादी के लिए हाँ कर दी थी और मेरी शादी विकल्प के पिताजी से हो गई है। वह बहुत ही खुशमिजाज प्रवृ त्ति के थे और उनकी सोच थी कि मनुष्य जीवन एक ही बार मिलता है, इसका जी भर कर आनन्द उठा लो, खूब मौजमस्ती कर लो। उन्हें लिखने का भी शौक था। परन्तु उन्होंने कभी भी परिवार का उत्तरदायित्व नहीं समझा। वो अपनी सोच के अनुसार ही जीवन जीते थे। जब उनकी इच्छा हुई तो कमाया, उनकी इच्छा हुई तो नहीं कमाया। ऐसे में एक साल बीत गया और विकल्प का जन्म हो गया। विकल्प को लेकर मैं अपने पिताजी के यहाँ आ गई और वहीं किराये का मकान लेकर रहने लगी। विकल्प के पिताजी भी वहीं आ गये। परन्तु विकल्प के होने के बाद भी उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को नहीं समझा। हमारा घरखर्च मेरे पिताजी के दिये हुए पैसे से चल रहा था। विकल्प के पिताजी को मैंने बहुत समझाया कि वो अपने दोस्तों का साथ छोड़, शराब छोड़ दें, अपनी जिम्मेदारियों को समझें, पर उन्होंने मेरी एक ना सुनी।

दो साल बाद मुझे जुड़वा बच्चे हुए - संकल्प और सोनाक्षी। अब तो जिम्मेदारियाँ और बढ़ गई थीं। फिर भी विकल्प के पिताजी देर रात तक घर नहीं आते थे। कभी-कभी तो दो-दो दिन तक घर नहीं आते थे। एक बार इसी बात को लेकर मेरे भाई रोहन ने अपने जीजाजी को खूब खरी-खोटी सुनाई, दोनों में खूब हाथा-पायी हो गई। मैंने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की। तभी रोहन ने जोर से उनके पैर पर एक डंडा मारा जिससे उनके पैर की हड्डी टूट गयी। उन्हें अस्पताल ले जाया गया। एक महीने बाद जब वो थोड़े चलने-फिरने लगे तो मुझसे कहने लगे - मुझे ये जीवन तुम्हारी जिम्मेदारियाँ उठाने और तुम्हारे भाईयों से मार खाने के लिए नहीं मिला है। मैं तुम्हें छोड़कर हमेशा के लिए जा रहा हूँ। मुझे ढूँढने की कोशिश भी मत करना। यह कहकर वे एक बेग में कुछ कपड़े लेकर चले गये। मैंने उन्हें रोकने की बहुत कोशिश की पर उन्होंने मेरी एक ना सुनी और वो चले गये। उनके जाने के बाद मैं बहुत निराश हो गई। मैंने सोचा मैं अकेले तीन-तीन बच्चों को कैसे पालूँगी। फिर मैंने सोचा, वैसे भी विकल्प के पिताजी ने कौन सी जिम्मेदारी निभाई है। मैं अकेली अपने बच्चों को पालूँगी और उन्हें पढ़ा-लिखाकर एक अच्छा इंसान बनाऊँगी। मैंने अपने पिताजी को कहा - पिताजी मैं नौकरी करना चाहती हूँ। वैसे भी मैंने बी.ए. कर रखा था।


CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिताजी की अच्छी जान-पहचान थी। तो उन्होंने मुझे एक स्कूल में नौकरी दिलवा दी। धीरे-धीरे मैंने अपने पिताजी से घर खर्च लेना बन्द कर दिया। क्योंकि अब मैं खुद कमाने लग गई थी। तीनों बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ रहे थे। मेरी नौकरी से बच्चों की फीस भर जाती थी। पर घर बहुत मुश्किल से चल पाता था। इसलिए मैंने सिलाई करना भी शुरु कर दिया। परन्तु कुछ ही दिनों में मेरी तबीयत खराब हो गई। क्योंकि पहले घर का काम फिर नौकरी, फिर सिलाई, जिससे मुझे आराम करने की फुर्सत ही नहीं मिलती थी।

मेरी ये परेशानी विकल्प ने समझी और उसने मुझसे कहा - माँ, आप अब सिलाई नहीं करेंगी, क्योंकि अब मैं भी बच्चों को ट्यूशन पढ़ाऊँगा। मुझे एक परिवार ऐसा मिल भी गया है। उसके तीन बच्चे हैं जिन्हें मैं घर जाकर पढ़ाऊँगा। मैंने उसे समझाया कि अभी तो खुद तेरी पढ़ने की उम्र है? इतनी छोटी उम्र में तू कैसे पढ़ायेगा। पर विकल्प नहीं माना।

मुझे ऐसा लगा, मेरा बेटा अभी से बड़ा हो गया है जो अभी से अपमी माँ की जिम्मेदारियाँ बाँटने लगा है। देखते ही देखते मेरे तीनों बच्चे बड़े हो गए। विकल्प इंजीनियर बन गया था। उसकी नौकरी भी लग गई थी। अब मेरी इच्छा थी कि विकल्प के लिए अच्छी बहू ले आऊँ। इसी सिलसिले में हम जयपुर गये। वहाँ कुछ दिन रुके, एक दिन मैं जयपुर घूमने गयी। तभी मुझे वहाँ विकल्प के पिताजी दिखे। मैं उनके पास गयी। मैंने उनसे पूछा - आप कैसे हो? उन्होंने मुझसे पूछा कौन? मैंने कहा मैं आपकी पत्नी सरला।

उनकी हालत देखकर मेरी आँखों से आँसू निकलने लगे। उनके कपड़े फटे हुए थे। उन्हें आँखों से भी दिखाई नहीं दे रहा था। मैं और विकल्प उन्हें अपने साथ घर ले आए। मुझसे उनकी हालत देखी नहीं गई। उस समय मैं वो सब भूल गई जो उन्होंने मेरे साथ किया था। विकल्प मुझसे बोला - माँ जब पिताजी ने आपका साथ नहीं दिया तो आप अब उन्हें घर क्यों ले आईं? मैंने विकल्प से कहा - बेटा उन्होंने तो कभी अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाई पर मैं जीवन के अन्त समय में उनका साथ देकर अपनी जिम्मेदारी निभाना चाहती हूँ। क्या तुम दोनों इसमें मेरा साथ दोगे? तब विकल्प ने कहा - माँ आपको जो ठीक लगे वो करो हम आपका साथ हमेशा देंगे।

फिर मैंने उन्हें डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने कहा - आपके पति को मोतियाबिन्द की वजह से कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। इनका ऑपरेशन करना पड़ेगा। मैंने उनका ऑपरेशन करवा दिया। एक दो महीनों में ही वे पूरी तरह स्वस्थ हो गये। संकल्प और सोनाक्षी तो पिताजी के आ जाने से बेहद खुश थे। तभी मैंने विकल्प का विवाह कर दिया। हम सब खुशी-खुशी रह रहे थे तभी एक दिन विकल्प के पिताजी अचानक कहीं चले गये थे। वो एक पत्र छोड़ गये थे जिसमें लिखा था "मुझे परिवार, रिश्ते, नाते ये सब बनावटी लगते हैं। मेरा यहाँ दम घुटता है। मैंने आजाद पंछी की तरह अपना जीवन व्यतीत किया है। मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता, मैं आजाद ही रहना चाहता हूँ। मैं यह घर छोड़कर जा रहा हूँ, हमेशा के लिए।"

इस घटना के बाद मेरा मनोबल भी टूट गया और मैंने भी उन्हें ढूँढने की कोशिश नहीं की। मैंने भी सोच लिया, उन्हें आजाद पंछी की तरह ही जीवन व्यतीत करने दो। फिर भी संकल्प और सोनाक्षी अपने पिताजी को घर वापस लाने की जिद कर रहे थे। पर मैंने उनकी बात नहीं मानी। इस घटना को पाँच वर्ष हो गए। और आज उनकी मृत्यु का समाचार आया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगले दिन विकल्प अपने पिताजी का पार्थिव शरीर लेकर आ गया। उनके शरीर से बहुत बदबू आ रही थी। मैंने विकल्प से पूछा तो उसने मुझे बताया कि माँ पिताजी हरियाणा की गलियों में भीख माँग-माँग कर अपना गुजारा कर रहे थे। एक पान की गुमटी के बाहर सो जाया करते और शराब पीकर इधर-उधर घूमते रहते थे। गुमटी वाला बता रहा था कि पिताजी रात शराब पीकर सोए तो सुबह उठे ही नहीं। उन्होंने उनके पास जाकर देखा तो वे मर चुके थे। फिर उन्होंने पुलिस को बुलाया। पुलिस ने उनकी तलाशी ली तो उनकी जेब से हमारा फोन नम्बर निकला और बेग से यह डायरी निकली। मैंने डायरी खोली तो उसमें लिखा था - सरला! मैं जानता हूँ कि मेरी गलती माफी के लायक नहीं है, क्योंकि मैंने तुम्हारे साथ बहुत बुरा किया है, कभी भी अपनी जिम्मेदारियों को नहीं समझा, बच्चों के भविष्य के बारे में भी कभी नहीं सोचा। मैं हमेशा अपनी जिम्मेदारियों से भागता रहा। जिसकी सजा मुझे भगवान् ने दे दी है। मेरे लीवर खराब हो चुके हैं और अब मैं कुछ दिन ही और जी पाऊँगा। मेरा अन्त समय निकट है। आखिरी बार अपने परिवार को देखने की बहुत इच्छा थी, पर मेरी हिम्मत नहीं हुई घर वापस आने की। मैंने सोच लिया था, यही मेरी सजा है कि मैं अपने परिवार से दूर रहकर ही मर जाऊँ। जब तुम्हें मेरा यह पत्र मिलेगा तो हो सकता है मैं इस दुनिया को छोड़कर चला जाऊँ। इसे मेरी अन्तिम भूल समझकर माफ कर देना। बच्चों को बहुत-बहुत प्यार देना और तुम हमेशा खुश रहना। मुझ जैसे गैर जिम्मेदार पति के लिए कभी मत रोना।

- तुम्हारा महिपाल।

उनका पत्र पढ़कर मैं बहुत रोई। मेरे पिताजी ने मुझे हिम्मत बँधाई और कहा - बेटा तू अन्तिम बार महिपाल के दर्शन कर ले। महिपाल की लाश दो-तीन दिन पुरानी हो चुकी है और उसमें से बदबू आ रही है। इस आदमी ने तुझे कभी सुख नहीं दिया। इसके लिए तू आँसू मत बहा।

तब मैंने पिताजी से कहा - पिताजी शायद मेरे भाग्य में यही लिखा था। इसमें इनका कोई दोष नहीं। इन्होंने अपनी जिम्मेदारियों को कभी नहीं समझा परन्तु अन्तिम समय में इन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया। मेरे लिए यही बहुत है। आज इनका अन्तिम संस्कार करके हम अपनी एक और जिम्मेदारी निभाएँगे।

*बसन्तविहार, १-१९/१९, उज्जैन*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शीतल रघुवंशी

# तलाश

उस दिन वह बहुत खुश थी क्योंकि वह उसके जीवन का बहुत महत्वपूर्ण दिन था। आज उसका बारहवीं कक्षा का परिणाम आने वाला था। वह गहरे ध्यान में बैठी सोच रही थी कि अब उसे आगे क्या करना है। तभी उसकी माँ ने आवाज लगाई - तन्वी बेटा! तेरी सहेली पूजा आई है।

कैसी हो तन्वी? तन्वी ने कुछ नहीं कहा। पूजा ने फिर पूछा - रिजल्ट कब तक आयेगा? इस पर तन्वी ने कहा - पाँच बजे तक। फिर दोनों सहेलियाँ बातें करने लगीं। देखते-देखते पाँच बज गये। फिर दोनों अपना परिणाम देखने गईं। तन्वी कक्षा में प्रथम रही और उसके ७५ प्रतिशत बने थे। पूजा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुई। तन्वी शुरू से ही मेधावी छात्र रही है परन्तु उसके पिताजी नहीं थे जिस कारण उनकी स्थिति आर्थिक रूप से सक्षम नहीं थी। फिर भी बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर वह अपनी व अपने छोटे भाई की पढ़ाई का खर्च चलाती थी।

आगे की पढ़ाई जारी रखते हुए उसने बी.ए. में प्रवेश ले लिया। ऐसा लगा जैसे तीन वर्ष तीन क्षण में ही गुजर गये हों और वो ग्रेजुएट हो गई। कुछ समय बाद एक सरकारी स्कूल में उसकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

नौकरी लग गई और वेतन भी अच्छा मिलने लगा जिससे उनकी आर्थिक स्थिति थोड़ी अच्छी हो गई। तन्वी ने पढ़ाई जारी रखते हुए एम.ए. में प्रवेश ले लिया। नौकरी भी अच्छी चल रही थी, उसने अपने स्कूल के पास ही एक घर ले लिया। उनके घर में सामने वाले घर में एक लड़का रहता था सन्दीप। जो सुन्दर, पढ़ा-लिखा और सभ्य था। दोनों में साधारण वार्तालाप चलता था। देखते-देखते दो वर्ष का समय बीत गया और तन्वी ने एम.ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया।

उसका छोटा भाई भी डॉक्टरी की अन्तिम वर्ष की पढ़ाई कर रहा था। उसकी पढ़ाई के खर्च के लिए तन्वी ने लोग ले रखा था।

तन्वी और उसकी माँ खुश थे। सन्दीप कभी-कभी तन्वी के घर आया-जाया करता था। आज सन्दीप मिठाई का डिब्बा लेकर तन्वी के घर आया था। सन्दीप ने बताया - आज उसकी नौकरी एक सरकारी कॉलेज में लग गई है। वह बहुत खुश था। वह अपने माता-पिता की एकमात्र सन्तान था। सन्दीप ने तन्वी से कहाकि मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ। कल चार बजे मैं तुम्हारा पास वाले मन्दिर में इन्तजार करूँगा। संयोग से उस वक्त तन्वी की माँ घर पर नहीं थीं। तन्वी कुछ कह नहीं पाई और सन्दीप चला गया।

तन्वी को रातभर नींद नहीं आई। वो ये सोचती रही कि आखिर क्या बात हो गई जो सन्दीप ने उसे इस तरह बुलाया। सुबह हुई। वो स्कूल से घर लौट रही थी। रास्ते में मन्दिर आया। एक पल तो उसकी इच्छा हुई कि वह क्यों जाए मन्दिर? फिर वह सन्दीप की मनोवृत्ति को जानने के उद्देश्य से मन्दिर चली गयी। तभी सन्दीप आया, उसे देखकर वह बहुत खुश हुआ और कहा - मैं बहुत खुश हूँ कि तुम मुझसे मिलने यहाँ आईं।

तन्वी ने पूछा - तुमने मुझे यहाँ क्यों बुलाया है? तब सन्दीप ने कहा - जब तुम इस घर में रहने आईं थीं और गृहप्रवेश पर जब तुम्हारे घर सत्यनारायण की कथा थी तब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था और उस दिन से ही मैं तुम्हें पसन्द करता हूँ। क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगी? तन्वी का जीवन नीरस व रंगहीन था उसने अपनी जिन्दगी में कभी दोस्त भी नहीं बनाया था। और फिर वह भी सन्दीप को दो साल से जानती थी। सन्दीप बहुत अच्छा और नेकदिल लड़का था। उसने मौन रहकर ही स्वीकृति दे दी।

उस दिन से दोनों ही अच्छे मित्र बन गये और खुश रहने लगे। एक दिन सन्दीप ने हिम्मत करके उसके सामने शादी का प्रस्ताव रख ही दिया। लेकिन तन्वी ने इनकार कर दिया और कहा कि मेरे जीवन के फैसले मेरी माँ ही करती है, तुम उन्हीं से बात कर लो।

सन्दीप अगले ही दिन तन्वी की माँ के पास गया और उसने अपने दिल की बात तन्वी की माँ को कह दी। परन्तु तन्वी की माँ ने कहा कि बेटा तुम बहुत अच्छे इंसान हो और शायद तुमसे अच्छा जीवनसाथी भी तन्वी को नहीं मिल सकता। परन्तु एक महीना पहले ही मैं तन्वी का रिश्ता पक्का कर चुकी हूँ। मैं इस बारे में तन्वी से बात करने ही वाली थी, वो लड़का इंजीनियर है और बहुत सम्पन्न परिवार है। तन्वी वहाँ खुश रहेगी। सन्दीप ने कहा - मैं भी तन्वी को खुश रखूँगा। परन्तु तन्वी की माँ अपनी बात पर अडिग रही और उसने सन्दीप से कहा - तुम खुद किराये के मकान में रहते हो, मामूली सी नौकरी करते हो तुम क्या खुश रखोगे मेरी बेटी को? उसने अपने जीवन में आज तक कोई खुशी नहीं देखी, मैं अब उसे खुश देखना चाहती हूँ। मैं उसकी शादी मानव से ही करूँगी।

बेचारी तन्वी कुछ बोल न सकी और चुपचाप मानव से शादी कर ली। मानव एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अच्छा लड़का था और वो भी तन्वी से बहुत प्यार करता था। एक दिन वो अपनी कार से अपने ऑफिस जा रहा था, तभी एक बस ने कार को जोर से टक्कर मार दी। मानव बुरी तरह घायल हो गया और अस्पताल पहुँचते ही उसकी मृत्यु हो गयी।

एक बार फिर तन्वी का जीवन नीरस हो गया। तन्वी के सास-ससुर ने तन्वी को घर से निकाल दिया। तन्वी अपनी माँ के पास आकर रहने लगी। सन्दीप आज भी उसे चाहता था। तन्वी मानव के बच्चे की माँ बनने वाली थी। जब यह बात सन्दीप को पता चली तो उसने तन्वी के सामने उसे और उसके बच्चे को अपनाने की पेशकश की, तब तन्वी ने उसे उत्तर दिया कि मैं पहले तुमसे प्यार करती थी परन्तु तुमसे माँ की वजह से शादी नहीं कर पायी। मैंने तुम्हारा दिल दुखाया था पर आज मैं दिल से मानव को चाहती हूँ और आने वाले सात जन्म के लिए मैं उसकी हो चुकी हूँ। हम सिर्फ एक वर्ष साथ में रहें परन्तु उस एक साल में मानव ने मुझे जीवन भर की खुशियाँ दे दीं और मैं उसके बच्चे को उनके जैसा नेकदिल बनाना चाहती हूँ। मुझे माफ करना, मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती!

*हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय*
*उज्जैन*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रेरणा परिहार

# बूढ़े वृक्ष

अनुराग जैसे ही गाड़ी स्टार्ट कर महाविद्यालय के मुख्य द्वार से बाहर आया, मुख्य सड़क के मोड़ पर अचानक उसके सामने एक बूढ़ा कृषकाय विकलांग व्यक्ति आ खड़ा हुआ। गिड़गिड़ा कर कहने लगा - 'बाबूजी! पाँच दस रुपया होय तो दई दो। म्हने घणी चायना है।

अनुराग ने अचकचा कर अपनी गाड़ी को एकदम ब्रेक लगाए। जोर से ब्रेक लगाने से गाड़ी के पहियों से चीं, चर्र की कर्कश ध्वनि वातावरण में तैर गई।

अनुराग का मुख क्रोध से तमतमा गया। आने-जाने वाले लोगों का ध्यान इस घटना की ओर गया। सभी ध्यान से मुड़कर देखने लगे।

क्रोध भरी द ष्टि से उस व्यक्ति की ओर देखकर अनुराग उस पर बरबस ही बरस पड़ा। बोला-क्या मरने का विचार है तुम्हारा? मुझे क्यों मुसीबत में डालना चाहते हो। मरना ही है तो कहीं और स्थान पर जाओ। मुझे क्यों उलझााना चाहते हो!

नी बाबूजी! हूँ कोई के तकलीफ नी देणो चऊं। म्हारे दो-पाँच रुपया होय तो दई दो। हूँ म्हारी नानी (छोरी) तुने जउंआ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या? कहाँ जाना है तुम्हें? माँगते क्यों हो? बड़े अजीब आदमी हो। लोग खाने के लिये माँगते है और तुम लड़की के घर जाने के लिये माँग रहे हो।

हाँ, बाबूजी! केई करु। टेम-टेम की बात है। हूँ भूखो रई लूँगा। ने दो-दो, पाँच-पाँच रुपया भेला करी ने किरायो भेलो (इकट्ठा) करुँगा। म्हारे महारी नानी (लड़की) का घरे जाणो है।

अब अनुराग का माथा ठनका । उसने ध्यान से उसे देखा। वह व्यक्ति भिखारी तो कहीं से भी नहीं लगता था। अच्छी शक्ल-सूरत, अच्छे कपड़े किन्तु मैले-कुचैले अवश्य हो रहे थे। दाढ़ी बढ़ी हुई थी। किसी भी द ष्टि से वह भिखारी तो दिखाई नहीं देता था। उसने विचार किया। शायद वह व्यक्ति किसी परेशानी का शिकार था।

अनुराग के भीतर के संवेदनशील मन में छुपा बैठा कलाकार गायक कवि लेखक अचानक जाग त हो उठा।उसे अपने आप पर झुंझलाहट हो रही थी कि मैं इतना निष्ठुर संवेदना विहीन कैसे हो गया? जो इस दुर्दिन से ग्रस्त प्राणी पर इतना क्रोध कर बैठा। हे परमपिता! मुझे क्षमा करें, भगवान क्षमा करें।

अब अनुराग ने उसे ध्यान से देखकर उसकी सहायता करने का मन बना लिया था। उसकी ओर देखकर बोला-

-बाबा! क्या नाम है आपका?

-बाबूजी! म्हारो नाम रामकिशन है।

-कहाँ रहते हो?

-देवास कने गाँम है, म्हारो बैरागढ़

-वहाँ से यहाँ तक कैसे आये?

-पगे-पग आयो बाबूजी।

-इस आयु में, ऐसी हालत में वहाँ से उज्जैन तक पैदल ही चलकर आ गये?

-कई केरु बाबूजी किराया का पैसा भी नी था।

-तो घर से क्यों चले

-वाँ रई ने भी कई करतो बाबूजी, बहू-बेटा की मार खई-खई ने धापी गयो।

-क्यों? बहू-बेटे मारते हैं?

-हाँ, बाबूजी, घणा मारे। रोटी बी नी दे टेम से। घणा तरसावे

यह कहते हुए उसकी आँखे भर आई। आँखों से आँसू की बूँदें उसके गालों पर लुढक आई। अनुराग का मन पसीज गया। स्वयं द्रवित होकर बोला- बाबा! आप रोयें नहीं सब ठीक होगा। घबरायें नहीं। यह बाबा महाकाल की नगरी है। यहाँ सबके दुखों का निवारण होता है। चिंता न करें। बतायें आप को कहाँ जाना है?

-बाबूजी, म्हरे नलखेड़ा कने बड़ागाँव जाणो है।

-कितना किराया लगता है वहाँ का?

-सित्तर रुपया लागे है बाबूजी।

-आपके पास कितने रुपये है अभी?

-पन्द्रह रुपया है, बाबूजी।

-इतने से रुपयों में कैसे जाएँगे?

-दो-दो, पाँच-पाँच रुपया माँगी ने। कई थोड़ो पगे-पग चली ने पोंची जाउ बाबूजी।

कुर्ते की बाँह से अपने आँसू पोंछ कर बोला।

-इस अवस्था में विकलांग होकर कैसे पहुँचोगे बाबा? खैर चिन्ता ना करें। कुछ खया कि नहीं आपने?

-कई नी खायो बाबूजी, दो दन हुई गया।

-अरे। ऐसे कैसे चलेगा। चलो बैठो पीछे। सबसे पहले कुछ खा लो।

-किस्तर खऊं बाबूजी फेर किरायो भेलो नी होयगा। वह बोला।

-चिंता न करें बैठे जल्दी से। मुझे फिर दूसरी जगह जाना है काम से। आओ जल्दी ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-बाबूजी । वह संकोच में अचकचा कर खड़ा रह गया।

-आओ, आओ घबराओ मत मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाउंगा। भोलेनाथ सब भला ही करेंगे। घबराओ मत। मैं बुरा आदमी नहीं हूँ।

-हो अबे कई बुरो होयगा। बाबूजी हाडक्या तो मसाण में चल्या है।

-चिन्ता ना करें। जल्दी बैठें।

वह व्यक्ति संकोच के भार से दबा हुआ मोटर साइकिल की पिछली सीट पर बैठ गया। अनुराग ने गाड़ी घर की ओर मोड़ दी कि उसे ध्यान आया कि उसकी जेब में दस-पन्द्रह रुपये थे। इतने में इस व्यक्ति का किराया और भोजन कैसे होगा? चलो एटीएम से निकालता हूँ। यह सोचकर गाड़ी ऋषिनगर पेट्रोल पंप की ओर मोड़ दी। एटीएम से रुपये निकाले और पुन: उस व्यक्ति को पीछे बिठाकर घर की ओर चला। रास्ते में उसने पूछा- बाबा, कौन-कौन हैं, आपके घर में?

-बाबूजी, दो बेटा है, दोई की लाडी है। छोरा छोरी घर बार, जमीन, जायदाद, गायां, भैंसा सब कई हैं। पण म्हारा वास्ते कई कोनी।

-दोनों लड़के खेती करते है?

- नी बाबूजी, एक बेटो छोटो वालो फौज में है। ने मोटो खेती करे।

-छोटे को पता है। ये सब जो आपके साथ होता है?

-नी मालम बाबूजी। ऊ तो बापड़ो कस्मीर में है।

-उसकी बहू

-वा भी बाबूजी सबका राग में राग मिलावे है।

-उनके बच्चे भी ऐसा ही करते हैं?

-हाँ, बाबूजी। वी कई जाणे। जो घर में मोटा करे ऐसोज वी भी करे।

अनुराग सोचने लगा। कैसा है हमारा समाज और उसकी मानसिकता। जिन वृक्षों ने अपने अपने मस्तक पर सर्दी, गर्मी और बरसात को झेलकर अपने आश्रित पखेरुओं को प्रकृति की सभी विषमताओं से बचाये रखा, अपने फल-फूल से उन्हें पोषित किया, वही पखेरु पंख आने पर उसी व क्ष के पत्तों को नोच-नोच कर धरती पर फेंक रहे हैं। इसके तने के रेशे-रेशे को अपनी चौंच से खींच-खींच कर केवल अपने आनन्द के लिये बिखेर रहे हैं।

अपनी जड़ों से कट-कट कर कैसे जीवित रह पायेगा हमारा समाज? क्या होगा कल?

घर पास आ गया था। यंत्रवत उसके अंग गाडी के क्लच व ब्रेक पर चले गये। गाड़ी धीरे-धीरे होकर द्वार के सामने खड़ी हो गई।

-आओ, बाबा उतरो अपना घर आ गया।

-पण बाबूजी म्हारे तो जाणो है।

-हाँ, हाँ चले जाना। कुछ थोड़ा खालो। फिर मैं तुम्हे बस स्टेण्ड के लिये टेम्पो में बैठा दूँगा।

-आपको यो एसान कां उतारुँगा, बाबूजी?

-चिन्ता ना करो। यह कोई अहसान नहीं है, आप पर। यह तो भोलेनाथ का आदेश है कि मैं आपकी कुछ मदद करुँ।

-भगवान आपको भलो करें, बाबूजी। ठण्डी साँस भरकर वह व्यक्ति बोला।

-ईश्वर पर भरोसा रखो बाबा। संसार की चिन्ता न करो। आओ अन्दर चलते हैं।

अनुराग ने दरवाजा खटखटाया। भीतर से उसकी बेटी ने आकर द्वार खेला। बोली-आ गये, पापा! बहुत देर लगा दी। कहाँ थे? और ये आपके साथ कौन है?

-सब बताऊँगा बेटा। थोड़ा धीरज रखो। जाओ पहले पानी पिलाओ और एक थाली परोस कर लाओ।

-पर पापा?

-बेटा! सारे प्रश्नो के उत्तर बाद में माँगना। पहले थली परोस कर लाओ। अनुराग ने कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-जी पापा, अभी लाई। प्रगति ने कहा।

प्रगति अनुराग की बड़ी बेटी थी। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत।

-आईये बाबा। अनुराग ने बाबा से कहा - बैठिये।

बाबा नीचे जमीन पर बैठने लगा।

-नहीं, नहीं, नीचे नहीं पलंग पर बैठिये।

-अरे बाबूजी।

-नहीं उपर बैठो। चिन्ता न करो।

बूढ़ा बाबा सकुचाते हुये पलंग पर बैठ गया।

तभी प्रगति भोजन की थाली लेकर आ गई।

-बाबा, अपने हाथ मुँह धो लिजिये।

-हाँ, बाबूजी

प्रगति के हाथ से पानी का गिलास लेकर बाबा ने बाहर आकर अपने हाथ धोये और वापस पलंग पर बैठ गया। प्रगति ने उसके सामने टी-टेबल पर खाली गिलास रखा। भोजन की थाली अपनी ओर खींचकर भोजन करने लगा।

अनुराग बड़े ध्यान से उसे देख रहा था। बूढ़ा बाबा भगवान को हाथ जोड़कर यादकर रहा था। उसकी आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे। कुछ देर बाद उसने अपनी धोती के छोर से आँसू पोंछे और थाली में रखी रोटी का कौर तौड़कर बरबस ही मुँह में रखने लगा। अनुराग अनुभव कर रहा था कि बहुत भूखा होने पर भी बूढ़ा बाबा जबरन मुख में कौर ठूँसकर चबाने का प्रयास कर रहा था। आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। अनुराग चुपचाप उसे देख रहा था।

कुछ देर बाद उसने थाली का सारा भोजन समाप्त कर दिया और हाथ घोने के लिये उठने लगा।

-बाबा, और ले लीजिये। अनुराग ने आग्रह किया।

-नी, बाबूजी, पेट भरई गयो।

-अच्छा ठीक है।

बूढ़े बाबा ने हाथ धोये। धोती के छोर से हाथ-मुँह पोछे और चलने को तैयार हो गया।

-आओ, बाबा! मैं तुम्हें टेम्पो स्टेण्ड तक छोड़ दूँ। कहकर अनुराग उसके साथ बाहर आया। पुन: उसे गाड़ी पर बैठाकर सर्किट हाउस की ओर चल पड़ा।

सर्किट हाउस के पास उसने उस वृद्ध को उतारा। अपनी जेब से उसने एक सौ रुपये का नोट निकाला और उस वृद्ध की ओर बढ़ा दिया।बोला-लो, बाबा अब आप अन्य किसी से मत माँगना। यहाँसे टेम्पो मिल जायेगा जो तुम्हें देवासगेट छोड़ देगा। वहाँ तुम्हें नलखेड़ा जानेवाली बस मिल जायेगी।

-अच्छी बात है, बाबूजी। भगवान तमारो भलो करें।

आँखों में आँसू लिये वह वृद्ध चलता जा रहा था और अनेकानेक आशीषभरे वचनों को बुदबुदाता जा रहा था।

अनुराग सोच रहा था। हे परमपिता यह तेरा कैसा खेल है। जो वक्ष हमें सुख पहुँचाते हैं, जिनके फल-फूल और पत्तियों से हम अपने शरीर को पुष्ट और स्वस्थ बनाते हैं, जिनके तले हम सर्दी, गर्मी और ठण्ड से बचकर अपना बचपन गुजारते हैं, जिनकी डालियों पर खेल कूद कर आनन्द लूटते हैं, बड़े होकर हम उन्हीं वृक्षों की जाड़ों को खोदने लग जाते हैं। क्योंकि अब हम समझदार हो गये हैं। अपनी लाभ-हानि स्वयं समझते हैं। और ये वृक्ष अब बूढ़े हो गये हैं। परन्तु क्या होते हैं? ये बूढ़े वृक्ष हमने कभी सोचा है।

*एम-७, महाशक्ति नगर, देवास रोड*
**उज्जैन**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रेहाना बेगम

# फैसला

विभा सुन्दर, सुशील एवं शिक्षित महिला थी। एम.ए. की पढ़ाई कर लेने के पश्चात् उसे सरकारी स्कूल में नौकरी मिल गई थी। उसका व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था। विभा के अलावा उसके घर में एक बड़ा भाई व छोटी बहन भी थी। एक दिन विभा के लिए एक बहुत अच्छा रिश्ता आया। लड़का बैंक में मैनेजर था। वह सम्पन्न परिवार से था। विभा के माता-पिता को वीरेन्द्र पसन्द आ गया। परन्तु विभा व वीरेन्द्र एक दूसरे को देख नहीं पाये। दोनों ही शर्मीले स्वभाव के थे। दोनों का रिश्ता पक्का हो गया और तीन महीने बाद उनकी शादी थी।

शादी करके विभा वीरेन्द्र के घर आ गयी। शादी की प्रथम रात ही वीरेन्द्र बहुत शराब पीकर घर पर आया और उसे बिल्कुल होश नहीं था। विभा ये सब देखकर आश्चर्य में पड़ गयी कि इतना सुन्दर, शिक्षित युवक भी ऐसा हो सकता है। वह रात भर रोती रही। सुबह हुई तो वीरेन्द्र ने विभा से माफी माँगी और फिर दोबारा ऐसा न करने का आश्वासन दिया। विभा ने सोचा वीरेन्द्रको एक मौका देना चाहिए। उसने ये बात घर में किसी को नहीं बताई। एक महीने का समय बीत गया। विभा अपनी नौकरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर जाने लगी। तभी वीरेन्द्र ने कहा तुम नौकरी नहीं करोगी। विभा ने कहा - क्यों? वीरेन्द्र ने कहा - मुझे तुम्हारा नौकरी करना पसन्द नहीं है। विभा ने फिर कहा - ये बात तुम मुझसे शादी के पहले कह देते तो अच्छा होता। मैं ये नौकरी नहीं छोड़ूँगी। अपना फैसला सुनाकर विभा नौकरी पर चली गई।

विभा के जेठ अच्छे संस्कारी व्यक्ति थे। उन्होंने वीरेन्द्र को समझाया कि यदि बहू नौकरी करना चाहती है तो उसे करने दो। कुछ दिन बाद विभा और वीरेन्द्र दस दिन के लिए मनाली घूमने गये। मनाली पहुँचकर विभा को ऐसा लगा जैसे उसका कोई स्वप्न पूरा हो गया हो। वीरेन्द्र के मनाली में कुछ मित्र रहते थे। वीरेन्द्र ने विभा से कहा - मैं दो घंटे में अपने दोस्तों से मिलकर आता हूँ। परन्तु रात के नौ बज गये। वीरेन्द्र अपने मित्रों से मिलकर नहीं लौटा। पूरी रात विभा वीरेन्द्र के लौटने का इन्तजार करती रही। वीरेन्द्र नहीं लौटा। तभी एक होटल के वेटर ने विभा को बताया कि आपके साथ आये थे वे शराब के नशे में होटल के बाहर पड़े हैं।

विभा तुरन्त दौड़कर बाहर गई तो देखा वीरेन्द्र शराब के नशे में पड़ा है। विभा ने वीरेन्द्र को उठाया और कमरे में ले गयी। वीरेन्द्र को होश आया तो विभा को गालियाँ देने लगा। विभा बेचारी कुछ न कर सकी। वीरेन्द्र ने कुछ देर बाद विभा से कहा कि मुझे एक जरूरी काम से जाना है और तुम मुझे अपना ये सोने का हार दे दो, मैं शाम को ला दूँगा। विभा पहले से ही डरी हुई थी तो वो हार विभा ने वीरेन्द्र को दे दिया। वीरेन्द्र हार लेकर चला गया। चार दिन बीत गये पर वह लौटकर नहीं आया।

विभा ने यह बात अपने माता पिता को बता दी। विभा के माता-पिता तुरन्त मनाली आ गये और अपनी बेटी को साथ लेकर आ गये। विभा को उसके परिजनों से पता चला कि वीरेन्द्र एक शराबी लड़का और वह जुआ भी खेलता है। उसने विभा का सोने का हार भी जुए में गँवा दिया। विभा के माता-पिता और भाई-बहन ने विभा को वीरेन्द्र से तलाक लेने की सलाह दी।

विभा ने कुछ समय सोचने के लिये माँगा। विभा ने अपनी नौकरी अभी तक नहीं छोड़ी थी। अत: वह आर्थिक रूप से सक्षम थी। कुछ दिनों पश्चात् उसे पता चला कि वह माँ बनने वाली है। यह बात वीरेन्द्र को भी पता चली। तब वीरेन्द्र विभा के घर आया और उसने विभा सें माफी माँगी। विभा ने कहा कि पहले भी तुम माँफी माँग चुके हो और तुमने मुझसे वादा किया था कि तुम दुबारा शराब नहीं पीओगे। परन्तु तुमने मनाली में जो मेरे साथ किया वो मैं कभी नहीं भूल सकती। तब वीरेन्द्र ने कहा कि मुझे माफ कर दो, मेरे लिये ना सही अपने होने वाले बच्चे के लिये। मैं फिर शराब नहीं पिऊँगा। इस बार माफ कर दो। एक आखिरी अवसर मुझे दे दो। विभा ने वीरेन्द्र की बात मान ली और विभा वीरेन्द्र के घर चली गई।

कुछ महीने पश्चात् विभा ने एक पुत्र को जन्म दिया। विभा और वीरेन्द्र दोनों खुश थे। किन्तु वीरेन्द्र फिर भी नहीं बदला। उसने अपने दोस्तों के साथ फिर शराब पीना शुरु कर दी।

इस बार विभा ने अपने बच्चों के भविष्य की खातिर वीरेन्द्र को सुधारने के लिये सबसे पहले उसको उसकी गलत संगत से निकालने के लिये अपना और अपने पति दोनों का स्थानांतरण पास के शहर में करवा लिया। वीरेन्द्र भी अपने बेटे सोनू को बहुत प्यार करता था तो उसने भी अपनी सारी बुरी आदतें छोड़ दीं। दो वर्ष पश्चात् विभा को एक और पुत्र हुआ जिसका नाम मोनू रखा गया। वीरेन्द्र, विभा अपने दोनों पुत्रों के साथ खुश थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पन्द्रह वर्ष बीत जाते हैं। एक दिन विभा को मालूम होता है कि उसे स्तन केन्सर है। वीरेन्द्र विभा दोनों बुरी तरह टूट जाते हैं। विभा सोचती है कि वो अब कुछ ही दिन की मेहमान है। उसके बाद उसके बच्चो का क्या होगा? ये सोचकर वो हर पल चिंता में रहने लगी जिससे उसकी तबीयत और खराब रहने लगी। सोनू-मोनू हालांकि छोटे थे परन्तु घर के वातावरण ने उन्हें बड़ा कर दिया था। वो अपनी माँ को समझाते थे कि हम तुम्हें कुछ नहीं होने देंगे। वे दोनों अपनी माँ को बिस्तर से नीचे पैर नहीं रखने देते थे। सारा घर का काम वीरेन्द्र, सोनू, और मोनू कर लेते थे।

वीरेन्द्र बम्बई के अस्पताल गया और उसने डॉक्टरों से सलाह ली तो पता चला कि विभा का इलाज सम्भव है। ये सुनकर वीरेन्द्र बहुत खुश हुआ और विभा का आपरेशन बम्बई में करवा दिया। दो-तीन महीने के बाद विभा एकदम ठीक हो गई और अब तो घर का कामकाज भी करने लगी। अब विभा-वीरेन्द्र और उनके दोनों बेटे खुशी से जीवन बिताने लगे। देखते-देखते पाँच वर्ष बीत गये। सोनू इंजीनियर बन गया व मोनू डॉक्टर। सोनू को प्रिया नाम की लड़की से प्रेम हो गया जो उसके साथ पढ़ती थी। सोनू ने प्रिया को विभा से मिलवाया और विभा ने दोनों की शादी करवा दी। मोनू की शादी अपने पड़ोस की लड़की नेहा से कर दी।

अब विभा दोनों जिम्मेदारी से मुक्त हो गई और उसका परिवार खुशहाल था। विभा सोच रही थी कि जीवन के उन कठिन पलों में यदि वो वीरेन्द्र से तलाक ले लेती तो आज उसके पास ये खुशहाल परिवार न होता। हर सुख-दुःख में साथ देनेवाला पति वीरेन्द्र न होता। विभा को अपने लिये फैसले पर गर्व था।

जिन्दगी के छठे दशक में दोनों एक दूसरे के साथ है और खुश भी।

*हिन्दी अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय*
*उज्जैन (म.प्र.)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिखा पंवार

# अन्तर का दर्द

रात्रि के दस बजे का समय। अचानक दरवाजे पर ठक-ठक की आवाज आई। पापा ने पूछा - कौन है ? उधर से मंद आवाज आई - दरवाजा खोल यार, हउं छे अन्तर। पापा ने आवाज स्पष्ट नहीं होने से पुनः पूछा तो उसने वही उत्तर दोहराया। इस बार लग गया कि यह तो अन्तर बा की ही आवाज है। पर इस समय थोड़ा आश्चर्य हुआ। एकदम विश्वास भी नहीं हुआ क्योंकि गाँव में चोर परिचित आवाज लगाकर दरवाजा खुलवा लेते हैं और लूट की वारदात करते हैं। पापा को पूरा विश्वास हो गया तो उठकर दरवाजा खोला। सामने अन्तर बा खड़े थे। वह घबराया हुआ बिना बोले ही दरवाजे के अन्दर घुस कर बैठ गया। बैठकर बोला - झट बायनो (दरवाजा) लगाइदे यार। पापा ने दरवाजा बन्द कर दिया। अन्तर बा ने आश्वस्त होकर पापा को पूरी घटना बता दी। बोला - हउं तो थाकी गयो थो न, घर में सोई गयो थो यार। थोड़ी देर पेला म्हारो जंवाई दारू पी न आयो न लडाई करन लग्यो। हउं समझान गयो तो म्हारे मारयो यार। हउं भागीन थारा पास आयो।घटना सुनते-सुनते अन्तर बा का जीवन किसी फिल्म जैसा मेरे दिमाग में चलने लगा। अन्तर बा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बताये जा रहा था। मेरे कानों में उनकी आवाज तो आ रही थी पर मेरे दिमाग में उनके बारे में पापा द्वारा १५ दिन पहले बताया गया उनका सम्पूर्ण जीवन चक्र घूम रहा था।

मैं अन्तर बा को बचपन से जानता हूँ। उन दिनों वह अन्तरलाल के नाम से जाने जाते थे। उम्र लगभग १७-१८ के आस-पास थी। इकहरा बदन, चेहरे पर चमक, गजब की चुस्ती-फुर्ती देखते ही बनती थी। वह बेहद ईमानदार व परिश्रमी थे। लो उसे अन्तरिया नाम से ही बुलाते थे। इन सबके होते हुए भी उन्होंने किस्मत ऐसी पाई कि गाँव के ही एक सेठजी के यहाँ उनको नौकरी करना पड़ती थी। वह करता तो मजदूरी ही था। लेकिन वह मजदूरी को नौकरी कहकर बड़ा खुश होता था।

गाँव के सेठजी की माली हालत सामान्य से कुछ अधिक थी। सेठजी का खेती-बाडी के साथ ब्याज बट्‌टे का छोटा सा व्यवसाय था। लोगों को पैसा उधार देता था पर उनके जेवर गिरवी रखने के बाद। कुछ साल में ही अन्तर ने सेठजी का विश्वास अर्जित कर लिया। सेठजी ने खेती बाडी का काम अन्तर को सौंप दिया व स्वयं अब बेफिक्र हो गया। गाँव के लोग अन्तर जैसे ईमानदार व मेहनती मजदूर को अपने यहाँ काम करने के लिए सेठजी से अधिक रुपया देने के प्रस्ताव रखने लगे परन्तु अन्तर पर लालच का कोई असर नहीं होता। उसे तो बस अपनी बात बनी रहे इसकी ही चिन्ता थी। अन्तर अब सेठजी के खेत में मजदूरों से काम करवाता। देखरेख व फसलों को पानी आदि देने के काम के साथ ही पकी फसल को सेठ के कोटे तक सुरक्षित पहुँचाने के बाद ही घर जाने लगा। काम करने वाले मजदूरों को यदि पारिवारिक कार्यों के लिए रुपयों पैसों की जरूरत होती थी तो अन्तर सेठजी से ही रूपया उधार दिलवा दिया करता था। सेठजी को दो तरफा फायदा होने लगा। एक तो मजदूर खुशी से काम पर आते साथ ही उधार दिया पैसा ब्याज सहित मजदूरी से काट लिया करता था।

सेठजी की माली हालत दिनोंदिन अच्छी होने लगी। एक शाम को भोजन करते समय सेठानी से बोले कि अन्तर बड़ी ही ईमानदारी से सब काम करता है और विवाह के लायक हो गया है। हमें कोई लड़की देखकर अन्तर का विवाह कर देना चाहिये। कुछ दिनों तक सेठजी ने उसके लायक लड़की तलाशने का काम किया। पड़ौसी गाँव के विश्राम बा की लड़की से बात चलायी। विश्राम बा भी मजदूरी ही करता था। वह सेठजी को मना तो नहीं कर सकता था। जैसे ही सेठजी ने बात की, वह तैयार हो गया। कुछ दिनों के बाद अन्तर का विवाह हो गया। अब सेठजी के घर और खेत में अन्तर और उसकी पत्नी मिलकर काम करने लगे। अन्तर के सहयोग से सेठजी की खूब कमाई होने लगी। समय बीतता चला जा रहा था। अन्तर को दो लड़कियाँ और एक लड़का हुआ। अन्तर ने अपनी क्षमता अनुसार बच्चों को बड़े प्यार से लालन-पालन कर बड़ा किया। लड़कियों को तो वह पढ़ा नहीं पाया लेकिन लड़के को दसवीं कक्षा तक पढ़ाया।

सेठजी का बड़ा लड़का सरकारी विभाग में अफसर है और दूसरा लड़का वद्ध पिता के साथ ही खेती और ब्याज का व्यवसाय करने लगा। वह बड़ी ही बारीकी से हिसाब रखता। कभी-कभी तो वह हिसाब में गड़बड़ी भी कर दिया करता था। अन्तर भी उसके तरीके से परेशान होने लगा। पर सेठ ने पाला पोसा तो कहने की हिम्मत नहीं होती थी। अन्तर ने अपने लड़के को किसी महकमे में चपरासी की नौकरी दिलवा देने का आग्रह सेठ के अफसर बेटे से कर दिया। लड़के को उस अफसर के घर ही काम पर भेज दिया। कुछ दिनों में किसी विभाग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में एक चपरासी की आवश्यकता होने पर अन्तर के लड़के मोहन को रखवा दिया। अन्तर की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। जैसे मोहन चपरासी नहीं बड़ा अफसर बन गया हो।

अन्तर सेठजी के यहाँ मेहनत तो करता रहा पर उम्र अपना असर दिखाने लगी। समय इतनी तेजी से निकल गया कि अन्तरलाल कब अन्तर बा बन गया मालूम ही नहीं पड़ा। अन्तर बा में अब थकान भी दिखाई देने लगी। सेठजी की उम्र अब ८५ साल पार कर गई। सेठजी की तबियत भी अब ठीक नहीं रहने लगी। कुछ दिनों बाद सेठ का देहान्त हो गया। सेठ के लड़के ने अपनी आदत में सुधार नहीं किया। उसे कमाने का लालच हो गया। अन्तर बा की आयु भी ६५-७० साल की हो गई। अत: अपनी ईमानदारी पर दाग न लगे इसलिए एक दिन हिम्मत करके अपने स्वास्थ्य का वास्ता देकर अपना हिसाब करने का आग्रह सेठ के लड़के से किया। लड़के ने टालते-टालते लगभग छ: माह और निकाल दिये। जब हिसाब किया तो अन्तर बा से रूपये लेने निकाल दिये। अन्तर बा ने लाख समझाने की कोशिश की लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। लड़के द्वारा बताये रूपये अन्तर बा को चुकाने पड़े। अन्तर बा मेरे घर के सामने से दिन में दो-चार बार रोज निकलते थे। कभी-कभी घर आकर मुझसे कह भी दिया करते थे कि बेटा आज तो चाय पिला दे या खाना खिला दे। इसके कारण अन्तर बा से अच्छा परिचय था।

हिसाब करने के बाद अन्तर बा मेरे घर आये और चाय या खाना कुछ भी नहीं मांगा। कुछ देर बैठने के बाद मम्मी से कहा - बेटा मैं कल से तेरे घर काम पर आऊँगा मुझे काम पर लगा लेना। जो भी मन में आए दे देना। मम्मी ने सोचा कि बाबा की उम्र अधिक हो गई है ये ऐसे ही कह रहे होंगे। उनको कहा कि विचार कर जवाब देंगे। दूसरे दिन अलसुबह दरवाजा ठोकने की आवाज आई। दरवाजा खोला तो सामने अन्तर बा दिखे। मैंने मम्मी को आवाज दी कि अन्तर बा आए हैं। चाय पिला दे। मम्मी ने अगले दिन की सारी बात पापा को बतायी। पापा ने मम्मी से कहा कि बुजुर्ग आदमी है जो मर्जी से करे वह करने देना, नहीं तो आराम ही करने देना। पर अपने भरोसे आये हैं तो उनका दिल मत दुखाना।

अन्तर बा ने काम करना प्रारम्भ कर दिया। हमने सोचा कि अन्तर बा इस उम्र में काम अधिक नहीं कर पायेगा। पर अन्तर बा तो सुबह से शाम तक काम में ही लगा रहा। अन्तर बा के काम का सिलसिला साल भर तक चलता रहा। एक दिन अन्तर बा की तबियत कुछ ठीक नहीं रही। उसने अपने लड़के व भाई को तबियत की जानकारी देकर इलाज के लिए बुलाने की इच्छा प्रकट की। वे नौकरी के सिलसिले में दूर के अन्य शहर में पदस्थ थे। गाँव में उपलब्ध चिकित्सक से योग्य इलाज तो पापा ने करवा ही दिया था फिर भी बा की इच्छा को ध्यान में रखकर पापा ने उनकी मैली सी डायरी में नम्बर ढूँढकर मोबाइल से बात करवा दी। उन्होंने बीमार होने की बात को बिल्कुल भी गंभीरता से नहीं लिया। अपने सभी काम निपटा कर अपने हिसाब से कुछ देर के लिए वे अन्तर बा से मिलने आये। अन्तर बा की खुशी देखते ही बनती थी। अन्तर बा अपने भाई व पुत्र को लेकर हमसे मिलवाने आये। कुछ देर तक बातें करने के बाद वे चले गए। अन्तर बा वापस काम पर आ गए। कई दिनों तक काम करने के बाद एक दिन अन्तर बा एक व्यक्ति को हमसे मिलवाने आया। साथ आए व्यक्ति को देखकर ही हम समझ गए कि यह अच्छा नहीं हो सकता है। शराबी व बदमाश दिख रहा था। अन्तर बा ने परिचय करवाया कि ये मेरे दामाद हैं और इन्दौर में फेक्टरी में काम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते हैं। अन्तर बा ने अपनी लड़की और दामाद के लिए छुट्‌टी लेकर उनके खाने रहने की सारी व्यवस्था जुटाई थी।

मेरा ध्यान टूटा तो मैंने देख कि अन्तर बा हमारे सामने रो रहा है। पापा ने मम्मी से कहा कि इनको पानी पिलाओ। मम्मी ने अन्तरबा को पानी लाकर दिया। पानी पी लेने के बाद रोटी खाई या नही पूछा। अन्तर बा ने बताया रोटी खाकर सोया ही था कि दामाद आ गया और पूरी बात बता दी। तनाव दूर करने के लिए उनको चाय पिला दी।

पापा ने कहा कि सुबह पुलिस थाने में खबर कर देंगे। कुछ देर बातें करते रहे और कहा कि मैं यहीं आपके घर में ही सोना चाहता हूँ। मैंने मम्मी से कहा कि अन्दर के एक कमरे में पलंग बिस्तर पर अन्तर बा को सोने की व्यवस्था कर देते हैं। अन्तर बा को अपने भाई पर बहुत विश्वास था। अत: फोन पर घटना बताकर अभी लेने आ जाने के लिए कहा। भाई ने कहा कि सुबह ही आ सकता हूँ। मैंने अन्तर बा को निश्चिंत हो कर सो जाने के लिए कहा। सुबह अन्तर बा की नींद जल्दी ही खुल गई। पापा भी उठ गए और अन्तर बा से कहा कि थाने पर फोन से सूचना दे देते हैं ताकि दिन में और कोई मगजमारी नहीं करे। उनकी स्वीकृति के बाद पापा ने फोन का स्पीकार ऑन कर पुलिस थाने का नम्बर मिलाया। उधर से आवाज आयी - "नमस्कार पुलिस थानें से आरक्षक शेरसिंह बोल रहा हूँ, बताइये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।" पापा समझ गए कि फोन गलत जगह लग गया है और कोई मजाक कर रहा है। पापा ने फोन रख दिया क्योंकि आमतौर पर पुलिस की भाषा से हम परिचित थे ही। पापा अपनी डायरी में पुलिस थाने का नम्बर ढूँढ ही रहे थे कि फोन पर घंटी घनघनाई। पापा ने फोन का चोंगा उठाकर कान में लगाया ही था कि उधर से कड़क आवाज आई - क्यों बे सुबह-सुबह तेरे घर किसी ने डाका डाल दिया है जो थाने पर फोन लगा दिया। साले को मालूम नहीं कि रात भर गश्त करना पड़ती है। बता क्यों लगाया थाने पर फोन। हम समझ गए कि पहले सही नम्बर ही मिलाया था। थाने के फोन की कालर आइडी में हमारा नम्बर आ गया था। अत: पूरी बात बताना पड़ी। उधर से आवाज आई - ठीक है यहाँ आकर रिपोर्ट लिखा देना। ग्यारह बजे बाद अन्तर बा का भाई भी आ गया। दोनों ने बातें की और अन्तर बा ने अपने भाई से कहा मैं अब तेरे साथ ही चलूँगा।

भाई अन्तर बा को साथ लेकर चला गया। जाते-जाते अन्तर बा मेरे सामने ही दहाडें मारकर रोने लगा। अन्तर बा को इस तरह रोते तो ठीक उनके चेहरे पर उदासी तक देखने को नहीं मिलती थी। मैं अन्तर बा के अन्तर के दर्द को अच्छी तरह समझ चुकी थी। दु:खी मन से मैंने और मम्मी पापा ने अन्तर बा को पहली बार इस हालत में घर से बिदा किया।

*कुक्षी, धार (म.प्र.)*

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu


# कार्यालय ग्वालियर विकास प्राधिकरण, ग्वालियर (म.प्र.)

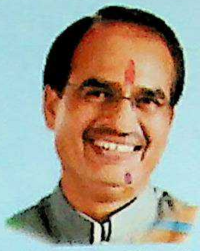

मा. श्री शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री म.प्र. शासन

मा. श्री रविन्द्र सिंह राजपूत
अध्यक्ष, ग्वा. वि. प्राधि. ग्वा.

मा. श्री जितेन्द्र सिंह गुर्जर
उपाध्यक्ष, ग्वा.वि.प्र., ग्वालियर

मा. श्री राकेश जादौन
उपाध्यक्ष, ग्वा.वि.प्र., ग्वालियर

## व्यवसायियों के लिए खुशखबरी

# माधव प्लाजा व्यवसायिक कॉम्पलैक्स

## बुकिंग प्रारम्भ

### आकर्षण

- बेसमेन्ट पार्किंग लगभग 60,000 वर्गफुट।
- सुपर विल्टअप एरिया लगभग डेढ़ लाख वर्गफुट।
- प्रवेश–निर्गम पृथक–पृथक।
- नगर तथा ग्राम निवेश एवं नगर निगम द्वारा स्वीकृत।

### विशेष

- कॉम्पलैक्स में लिफ्ट एवं एस्कैलेट (स्वचलित सीढ़ी) की सुविधा।
- कॉम्पलैक्स निर्माण में भूकम्प रोधी तकनीकी का उपयोग।
- ग्वालियर व्यवसायिक दृष्टि से सबसे सुरक्षित व सुविधाजनक स्थल।

### विशेष आकर्षण

- शहर के हृदय स्थल महाराज बाड़े के समीप।
- विशाल पार्किंग स्थल।
- मध्यप्रदेश का भव्य व विशालतम व्यवसायिक तीन मंजिला कॉम्पलैक्स।
- डेढ़ लाख वर्गफुट से अधिक उपयोगिता क्षेत्र।

–: आवेदन प्राप्ति स्थल :–

## बैंक ऑफ बड़ोदा

गस्त का ताज़िया / सांई बाबा मन्दिर के पास (खेड़ापति कॉलोनी) / गेरू वाला बंगला, बारादरी चौराहा, मुरार, ग्वालियर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

## बेटी है तो कल है

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation ... -MoE-2025-Grant

Graphics Park, Ujjain - 98270-70070